लोकविजय-यन्त्र

[सानुवाद और विस्तृत विवेचन सहित]

देश, नगर, ग्राम और राष्ट्रका फलबोधक ग्रन्थ

सम्पादक

डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री

ज्योतिषाचार्य (वाराणसी), न्याय-काव्य-ज्योतिष तीर्थ (कलकत्ता),
एम० ए० (संस्कृत, हिन्दी और प्राकृत एवं जैनालॉजो), पी-एच० डी० (भागलपुर),
डी० लिट्० (मगध); साहित्यरत्न (इलाहाबाद)
अध्यक्ष, संस्कृत-प्राकृत विभाग,
एच० डी० जैन कालेज, आरा (मगध विश्वविद्यालय)

वीर सेवामंदिर ट्रस्ट-प्रकाशन

लोकविजय-यन्त्र

[सानुवाद और विस्तृत विवेचन सहित]

देश, नगर, ग्राम और राष्ट्रका फलबोधक ग्रन्थ

सम्पादक

डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री

ज्योतिषाचार्य (वाराणसी), न्याय-काव्य-ज्योतिष तीर्थ (कलकत्ता),
एम० ए० (संस्कृत, हिन्दी और प्राकृत एवं जैनालॉजी), पी-एच० डी० (भागलपुर)
डी० लिट्० (मगध); साहित्यरत्न (इलाहाबाद)
अध्यक्ष, संस्कृत-प्राकृत विभाग,
एच० डी० जैन कालेज, आरा (मगध विश्वविद्यालय)

वीर सेवामंदिर ट्रस्ट

प्रकाशक :
मंत्री, वीर सेवामन्दिर-ट्रस्ट,
ट्रस्ट-संस्थापक-प्रवर्त्तक
आचार्य जुगलकिशोर मुख्तार 'युगवीर'

●

प्राप्ति स्थान
मंत्री, वीर सेवामन्दिर-ट्रस्ट,
चमेली-कुटीर, १/१२८, डुमराँव कॉलोनी,
अस्सी, वाराणसी–५ (उ० प्र०)

●

प्रथम संस्करण : ११०० प्रति
चैत्र शुक्ला १३ , वीर निर्वाण सं० २४९७,
८ अप्रेल १९७१, महावीर-जयन्ती
मूल्य : दस रुपए

●

मुद्रक :
बाबूलाल जैन फागुल्ल
महावीर प्रेस, भेलूपुर, वाराणसी–१

जिनके जीवनका क्षण-क्षण ज्ञानाराधनमें व्यतीत हुआ और जिनकी
प्रबल प्रेरणासे इस ग्रन्थका सम्पादन पूर्ण हुआ; उन ज्ञान-
तपस्वी, साहित्यमहारथी आचार्य स्वर्गीय पण्डित
श्री जुगलकिशोरजी मुख्तारकी पावनस्मृतिमें
यह प्रयास
सविनय
समर्पित
है

श्रद्धावनत
नेमिचन्द्र शास्त्री

ग्रन्थानुक्रम

●

प्रकाशकीय

इतः पूर्व वीरसेवामन्दिर ट्रस्टसे सात महत्त्वपूर्ण ग्रन्थोंका प्रकाशन हो चुका है। सन् १९६३ में **युगवीर-निबन्धावली प्रथम भाग**' और '**तत्त्वानुशासन**', सन् १९६४ में '**समाधिमरणोत्साहदीपक**', १९६७ में '**देवागम**' (आप्तमीमांसा) सानुवाद और '**युगवीर-निबन्धावली द्वितीय भाग**', १९६९ में '**जैन तर्कशास्त्रमें अनुमानविचार**' तथा गत दिसम्बर १९७० में '**प्रमाण-नय-निक्षेप प्रकाश**' ये सात कृतियाँ प्रकट हो चुकी हैं और जिन्हें पाठकोंने विशेष आदृत किया है।

हमें प्रसन्नता है कि आज उसी क्रममें एक अन्य—बिलकुल नये और दुर्लभ ग्रन्थका प्रकाशन हो रहा है। यह ग्रन्थ है '**लोकविजय यन्त्र**'। यह ज्योतिषकी अत्यन्त प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण अप्रकाशित कृति है। यह ट्रस्ट-संस्थापक स्वर्गीय आचार्य जुगलकिशोर मुख्तार 'युगवीर' को कैसे और कहाँसे प्राप्त हुई, इसका पूरा परिचय तथा इतिहास इसके सुयोग्य सम्पादकने अपनी विस्तृत प्रस्तावनामें दिया है।

इसके सम्पादक, अनुवादक और विवेचक विश्रुत विद्वान् **डाक्टर नेमिचन्द्र शास्त्री** ज्योतिषाचार्य, न्याय-काव्य-ज्योतिप तीर्थ, एम. ए. (संस्कृत, हिन्दी और प्राकृत), पी. एच. डी., डी. लिट्. अध्यक्ष, संस्कृत-प्राकृत विभाग एच. डी. जैन कालेज आरा (मगध विश्वविद्यालय) हैं। आपने एकमात्र प्राप्त प्रतिके आधारसे इसका सम्पादन, अनुवाद और विवेचन जिस विद्वत्ता, योग्यता और परिश्रमके साथ किया है वह अत्यन्त प्रशंसनीय है। ग्रन्थपर लिखी आपकी विद्वत्तापूर्ण एवं विस्तृत प्रस्तावना 'मन्दिरपर कलश' की उक्तिको चरितार्थ करती और बहुमुखी अध्ययन तथा शास्त्रज्ञताको सूचित करती है। निश्चय ही उनकी यह अनुपम कृति सब ओरसे समादृत एवं अभिनन्दनीय होगी। हम इस महत्त्वपूर्ण और लोकप्रिय कृतिको समुपस्थित करनेके लिए डाक्टर शास्त्रीको ट्रस्टकी ओरसे हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

आदरणीय पद्मभूषण श्री पं० **सूर्यनारायण** व्यासने अपना प्राक्कथन लिखकर प्रस्तुत ग्रन्थका महत्त्व बढ़ाया है। इसके लिए हम उनके भी हृदयसे आभारी हैं।

२ मार्च १९७१,
वाराणसी—५,

(डा०) **दरबारीलाल कोठिया**
एम. ए., पी. एच. डी. न्यायाचार्य
मंत्री, वीरसेवामन्दिर-ट्रस्ट,

प्राक्कथनम्

प्रायः वृष्टिकी विपुलता और अनावृष्टिके कारण देशके विभिन्न भागोंकी जनताको कष्टका सामना करना पड़ता है, इसी प्रकार अवर्षण तथा वर्षाके खिंच जानेपर भी जनता और कृषकोंको चिंतित, व्यथित हो जाना पड़ता है। यह सर्वविदित है कि मेट्रो लाजिकल रिपोर्टपर जो समाज, और सरकार आधार रखती हैं वह कितनी 'निरर्थक तथा सत्य-तथ्यसे दूर होती है यह अनुभव करनेका सभीको प्रायः अवसर मिलता रहता है।

इसके विपरीत भारतके विभिन्न भागोंमें ऐसे लोग भी हैं जो साक्षर कम रहते हुए भी आकाशको देखकर, प्राकृतिक-लक्षणोंके परीक्षणके आधारपर वर्षा होनेके सही समयको सहज बतलाते हैं, उनका पारंपरिक-अनुभवजन्य ज्ञान ही सहायक होता है। अनेक जानकार वर्षाके कई मास पूर्व आनेवाली वर्षाके मास, दिन, समय आदि भी सफलतापूर्वक बतला सकते हैं, जो बात यांत्रिक साधनोंसे सुलभ नहीं हो पाती वह अनुभवके आधारपर जान ली जाती है। आजके युगमें समाज और सरकारका विशिष्ट-वर्ग ऐसे अनुभवोंकी अवहेलना करता जा रहा है, धीरे-धीरे यह पारंपरिक-ज्ञान देशसे विलुप्त होता जा रहा है। घाघ, और भड्डुकीके अनुभव आज मखौलके विषय बन गए हैं, अंधश्रद्धाकी सीमामें सिमिटते जा रहे हैं, जबकि किसान उनपर आस्था रखकर लाभ उठाता है।

ज्योतिःशास्त्रमें वर्षा और वायु-प्रयोग-परीक्षणके अनेक उदाहरण हैं। प्राकृतिक-तत्वोंका गहराईसे अध्ययन कर उनसे परिणाम प्राप्त करनेके प्रयास किए हैं। और उनमें तथ्यानुभूति की है, किंतु हमारा शासन अभिनव-विज्ञान और उनके प्रयोगोंको प्रश्रय देता है, अपने सभी पुराने प्रयोगों, विचारों एवं अनुभवोंको एकांत उपेक्षावृत्तिसे ही देखता है।

अवंती नगरीमें विक्रमके शासनकालमें कर्पूर नामक एक विद्वान् रहा है, उसकी निर्मित 'कर्पूर-चक्र' नामक रचनासे विदित होता है कि वह आनेवाले, सुकाल-दुष्कालका विवरण सही प्रकारसे बतला सकता था, आज यह रचना उपलब्ध नहीं है। अन्य ग्रंथोंमें प्राप्त संदर्भोसे उसकी विशेषताओंका पता चलता है। वैसे ज्योतिषमें वृष्टि और वायु-विज्ञानपर कई ग्रंथ प्राप्त हैं, उनमें अनेक अनुभूत प्रयोग और लक्षण बतलाए हुए हैं, गगनचांदी बादलोंके रूप-रंग, जातियाँ और संचरणका गवेषणात्मक वर्णन उपलब्ध है, कादम्बिनी, और वराहमिहिरकी बृहत्संहिताके वायु-वृष्टि-विज्ञानको देखकर आधुनिक-प्रकृति-विज्ञानियोंको भी दाँतों तले अंगुलि दबाना पड़ेगा, कितनी गहराईमें उतरकर इन आचार्योंने प्राकृतिक-तत्वोंका विवेचन-अध्ययन-अन्वेषण किया है।

जिन लोगोंने वैदिक मण्डूक-सूक्ति या पर्जन्य सूक्त पढ़ा होगा, उसके मर्मको समझनेका प्रयत्न किया होगा, वे अनुभव करेंगे कि प्रकृतिके तत्त्वों—लक्षणोंको देखकर सद्योवृष्टिका गहन विचार वैदिक समाजने भी किया था, इसी तरह गर्ग, पराशर, कश्यप आदिसे लेकर वराहमिहिरतक यह परम्परा रही है।

ज्योतिर्विज्ञानके अनुसार कार्तिक पूर्णिमासे ही वायु-वर्षा, सुभिक्ष-दुर्भिक्षका पूर्व परीक्षण किया जाता था, वर्षाके विषयमें स्पष्ट रूपसे स्थिति समझ ली जाती थी। और सावधानीके उपाय योजित किये जाते थे, आकाशीय लक्षण, प्रकृति पर्यवेक्षण तथा ग्रहोंके अनुकूल या प्रतिकूल संचार तथा उनसे उत्पन्न होनेवाले प्रभावोंको सही रूपमें समझनेका प्रयास किया जाता था, आजका वायुशास्त्री केवल वायुके संचार एवं उससे

उत्पन्न प्रभावको पकड़नेका प्रयत्न करता है। ग्रहोंकी गति-विधि, और उनसे उत्पन्न होनेवाली वातावरणीय स्थितिका एक सफल गणना-शास्त्री बहुत समय पूर्व ही परिवर्तनोंके परिणामों—प्राकृतिक-प्रभावोंको प्रस्तुत करता रहा है। आजका ऋतुविज्ञानी मेघमालाके शतशः भेदों-विभेदों, प्रभावों-परिवर्तनोंका ज्ञान शायद ही उतना रखता हो, जितना पुरातन आचार्योंने गहन अध्ययन एवं अनुभवोंसे जाना था, जिन्हें अनुराग हो वे कादम्बिनीका एक बार परिशीलन करें। मेट्रोलॉजीके समक्ष हमारा यह प्रकृतिविज्ञान उपेक्षित हो गया है।

हजारों वर्ष पूर्व वेदमें बतलाया गया है कि सागरसे सूर्य अपनी किरणोंसे पानी ऊपर खींचता है। मेघोंको प्रदान करता है, सौर तेजसे जलके परमाणु सूक्ष्मरूप लेकर ऊपर आकर्षित होते हैं, और आकाशीय-वायुके परमाणुसे मिलकर मेघरूप ले लेते हैं। दो हजार वर्ष पूर्व महाकवि कालिदासने भी यही बतलाया है कि "धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः"। ये मेघ वायुसे प्रेरित होकर जिस प्रदेश या देशमें प्रवाहित होते हैं, वहाँ उतनी मात्रामें वर्षण कर देते हैं। कालिदासके 'मेघदूत' का मार्ग ही 'मानसून' का निर्धारित पथ है। इस जलको कब, कितनी मात्रामें वर्षण कर देते हैं, इसे निमित्तज्ञान कहा गया है। वृष्टिप्रबोधमें बतलाया है कि यह निमित्त-ज्ञान भौम, अन्तरिक्ष और दिव्यके भेदसे तीन प्रकारका होता है। देश-मानव, पशु-पक्षि, कीट-पतंग वृक्ष-लता आदिके द्वारा जो वर्षा-ज्ञान किया जाता है वह 'भौम' होता है। वात-पित्त-कफ-प्रकृतिके मानवकी चेष्टाओंसे, कीट-पतंग-भृंग-पशु-पक्षियोंकी विशिष्ट चेष्टाओंसे वर्षाका ज्ञान हो जाता है, ये अन्ध-श्रद्धाके विषय नहीं हैं, वर्षाकी निकटताका आभास इनकी चेष्टाओंसे सही होता है। ये संवेदनशील हो उठते हैं, बृहत्संहिता, मयूरचित्रक, वसंतराजशाकुन आदि ग्रंथोंमें इनका विस्तारसे वर्णन है। जब वर्षाकी वायु न आती हो तब मछलियाँ पानीमें नीचे बैठती जाती है, मेंढक शोर करने लगते हैं, तब वर्षा रुक जाती है। इसीप्रकार जब वर्षा आने लग जाती है तब बिल्ली अपने नाखूनोंसे जमीन खुतरने लगती है, जंग लगे बर्तनोंमें बदबू आने लगती है, बच्चे जमीनपर पुल बनाने लगते हैं, गुफाओंमें भाप भरने लगती है, चीटियाँ अण्डे लेकर निकल पड़ती हैं, चिड़ियाँ धून्डमें नहाने लगती हैं, जुगनू जमीनपर उड़ने लगते हैं, सर्प पेड़ोंपर चढ़ने लगते हैं, कुत्ते बाहर भागते दिखाई देते हैं, गाएँ मकानमें न जाने लगें, आदमीको अधिक निद्रा आने लगे, इत्यादि लक्षण वर्षाके आगमनके होते हैं, इसतरह भौम-लक्षण उत्पन्न होते हैं।

अन्तरिक्ष-लक्षण भी इसीप्रकार होते हैं। वायु जोरसे प्रवाहित होने लगे, मेघोंका छाए रहना, संध्याको सिन्दूरी रंगके बादल बनना, दिशाएँ धूमिल या जलती-सी प्रतीत हों, इन्द्रधनुष दिखाई देने लगे, वैशाख शुक्ला ५ को आकाश मेघाच्छन्न हो जाए, (और यदि गर्जनके साथ बरस जाए तो आगेके लिए अन्नका संग्रह कर ले), सूर्यके उदयास्तके समय चारों ओर मण्डल बन जाए, बिजली भी मण्डल बनाने लगे, तो वर्षा पर्याप्त होती है, इसतरह वात-चक्रके विस्तारपूर्वक अध्ययनसे वर्षाका व्यवस्थित निर्णय विदित होता है। वर्षाके 'गर्भका भी वर्णन है, विद्युत्-शक्ति और मेघके संसर्गसे वर्षाका गर्भ होता है, और ६॥ मासके पश्चात् वर्षाका प्रसव होता है। जिस नक्षत्रपर गर्भ होता है ६॥ मास बाद जब वही नक्षत्र आए तब वर्षा आ जाती है।

सावधानीपूर्वक इसका अध्ययन किया जाए तो पूरी वर्षाके मास, दिन, समयका भी महीनों पूर्व पता चल जाता है। अंतरिक्ष-अध्ययनके और भी अनेक विधान हैं, जिसे दिव्य-ज्ञान कहते हैं, यहं ग्रहोंके संचार, उदयास्त—वक्र-मार्ग आदि ग्रहोंकी गति-विधिसे सम्बन्धित रहते हैं, शुक्रास्त-गुरुके उदय, अगस्त्यके उदय, शनि-भौमके राशि-चार आदिसे भी गणना की जाती है। ग्रहण सूर्यके चिन्होंपर नाडिके क्रमोंसे भी यह विचार किया जाता है। ज्योतिषका जानकार जानता है कि बुध-शुक्र समीपमें आ जाएँ तो समस्त भूमिको जलमय बना देते हैं, और इनके बीचमें अगर सूर्य पहुँच जाए तो सागरका जल भी साँस लेता है। मंगलके राशि-चारमें वर्षा होती है, सूर्यके पीछे रहनेवाले आगे बढ़ जाएँ तो अधिक वृष्टि करते हैं, यदि मंगल आगे जा

रहा हो, और सूर्य पीछे रहता हो तो वर्षा रुक जाती है, या कम होती है, यदि शनि अतिचारी हो, मंगल-शनि वक्र हो गए हों तो हाहाकार मच जाता है। वर्षमें कुछ महीनोंकी पूर्णिमाका वायु-परीक्षण किया जाए तो उससे भी वर्षाका ज्ञान प्राप्त होता है। भौम ज्ञानसे एक क्षेत्र-विशेषकी वर्षाका पता लग सकता है, और अंतरिक्ष लक्षणोंसे विशेष भाग-मण्डलका तथा दिव्य-लक्षणोंसे प्रदेश भरका पता मिल जाता है, यह वैज्ञानिक है। इसका जितनी गहराई—सूक्ष्मतासे अध्ययन किया जाए वायु और वर्षाका सही ज्ञान मिल जाता है। हमारे देशमें इसी विज्ञानके आधारपर शताब्दियोंसे प्रयोग किए गए हैं, और सफल सिद्ध हुए हैं।

हमारे समक्ष ऐसी ही एक महत्त्वपूर्ण रचना 'लोकविजय यंत्र' प्रस्तुत है। उसमें अंक-संख्याके निर्धारण द्वारा मानवके सुख-दुःख समर्घ-महर्घ, वर्षा-वायु, सुभिक्ष-दुर्भिक्ष, रोग, धन-धान्य-रस निष्पत्ति, समृद्धि आदिकी सही जानकारी प्राप्त करनेका प्रयास किया गया है, इसमें ग्रहोंके ध्रुवाङ्कोंके माध्यमसे निर्णय प्राप्त किए गए हैं। अवश्य ही यह यांत्रिक प्रक्रिया उपयोगी एवं मौलिक है। इसमें देशको—मेघ महोदयके अनुसार तीन भागोंमें विभाजित किया गया है—जलमय, जंगलमय, एवं मिश्र। इस प्रकार देश और कालका पर्यालोचनकर तथ्य प्राप्त किए हैं। लोकविजय यंत्रकी कल्पना जैन गणना-क्रमसे है, यह बहुत सुंदर और महत्त्वपूर्ण होते हुए भी इसका निर्माण कूर्मपद्धतिसे है, और यह पद्धति वैज्ञानिक है। दिशाके साथ देशके ध्रुवांक लेकर यंत्रका निर्माण किया गया है। और संवत्सरके राजासे लेकर दशाक्रमसे परिगणितकर परिणाम प्राप्त करनेका प्रयास किया गया है। इसमें दिशांक, देशांक, और नगरांककी बहुत व्यापक सारिणी दी गई है। ध्रुवांक प्राप्त करनेकी पद्धति भी है। इनकी नक्षत्रानुरूप दशा-अन्तर-प्रत्यंतर और सूक्ष्म दशा प्राप्तकर उनके फलाफलका व्यवस्थित विवेचन किया गया है। यह ग्रंथ यंत्रके तथा ध्रुवांकोंके माध्यमसे समस्त देश-दिशाओं और समयका सुव्यवस्थित निरूपण करता है। वृष्टि और सुभिक्ष-दुर्भिक्ष—सुख-दुःख रोग-भय आदिका निदान प्रस्तुत करता है। वास्तवमें यह बहुत उपयोगी है। इसकी विस्तृत व्याख्या और सुन्दर-विवेचन कर, सहृदय-विद्वान् गणना-विचक्षण श्री डॉ० नेमीचंद्रजी शास्त्रीने एक उत्तम ग्रंथको जनोपयोगी बना दिया है। अवश्य ही इस विज्ञानमें अनुराग रखने वाले विद्वज्जन इसके प्रयोग-परीक्षण द्वारा देश और समाजको सही पथ-प्रदर्शनकर सकेंगे, डॉ० शास्त्रीजीके साथ ही ग्रंथ-प्रकाशकोंको भी मैं धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने इस मौलिक रचनाको समाजके लिए सुलभ बना दिया है।

सू. ना. व्यास

१५—२—७१
भारती भवन
उज्जैन, म० प्र०

प्रस्तावना

ज्योतिषशास्त्रकी व्युत्पत्ति—"ज्योतिषां सूर्यादिग्रहाणां बोधकं शास्त्रम्" अर्थात् सूर्यादि ग्रह और कालबोधकशास्त्रके रूपमें की गयी है। इसमें प्रधानतः ग्रह, नक्षत्र, धूमकेतु आदि ज्योतिःपदार्थोंका स्वरूप, संचार, परिभ्रमणकाल, ग्रहण और ग्रहस्थिति प्रभृति समस्त सिद्धान्तोंका निरूपण एवं ग्रह-नक्षत्रोंकी गति, स्थिति और संचारानुसार शुभाशुभ सूचक फलोंका प्रतिपादन किया जाता है। कुछ मनीषियोंका अभिमत है कि नभोमण्डलमें स्थित ज्योतिः सम्बन्धी—विषयक विद्या ज्योतिर्विद्या है। इस विद्याका विश्लेषण और विवेचन जिस शास्त्रमें निबद्ध रहता है, वह ज्योतिषशास्त्र है। इस ज्योतिषशास्त्रका विकास इस देशमें क्रमशः हुआ है। अतः 'लोकविजययन्त्र' का वर्ण्य विषय, उसका महत्व एवं उसके रचनाकालपर विचार करनेके पूर्व ज्योतिष-सिद्धान्तोंके विकासपर विचार करना आवश्यक है।

भारतीय ज्योतिष सिद्धान्तोंका विकास

भारतीय ज्योतिष सिद्धान्तके अन्तर्गत स्कन्धत्रय—सिद्धान्त, संहिता और होरा अथवा स्कन्धपञ्चक—सिद्धान्त, होरा, संहिता, प्रश्न और शकुन ये पाँच अंग माने गये हैं। यदि इस विराट् पञ्चस्कन्धात्मक परिभाषाका विश्लेषण किया जाय तो आजका मनोविज्ञान, जीवविज्ञान, पदार्थविज्ञान, रसायनविज्ञान, चिकित्साविज्ञान, भूगर्भविज्ञान, वनस्पतिविज्ञान इत्यादि इसके अन्तर्गत समाविष्ट हो जाते हैं।

आरम्भमे ज्योतिः पदार्थों—ग्रह, नक्षत्र, तारों आदिके स्वरूप-विज्ञान तक ही ज्योतिषकी विषय-सीमा निर्धारित थी। जब सृष्टिके आदिमें मनुष्यकी दृष्टि सूर्य और चन्द्रमा पर पड़ी तो उसने इनसे भयभीत होकर इन्हें देवत्व रूप प्रदान किया और दैवी शक्तिके रूपमें इनका अध्ययन और मनन प्रारम्भ किया। पर आगे चलकर विज्ञानके रूपमें ज्योतिषका अध्ययन प्रारम्भ हुआ।

भारतीय ज्ञान-विज्ञानका आकर-ग्रन्थ वेद है। वैदिक संहिताओंमें ज्योतिष-विषयक चर्चा सूत्ररूपमें उपलब्ध होती है। संहिताओंकी अपेक्षा शतपथ ब्राह्मण, तैत्तिरीय ब्राह्मण, ऐतरेय ब्राह्मण, बृहदारण्यक, आदि ग्रन्थोंमें ज्योतिषके सिद्धान्त अधिक विकसित रूपमें प्राप्त हैं। वेदोंके पश्चात् षड्वेदाङ्गमें ज्योतिषको स्वतन्त्र स्थान प्राप्त हुआ और व्यावहारिक एवं शास्त्रीय इन दोनों दृष्टिबिन्दुओंसे ज्योतिष-सिद्धान्तोंका प्रतिपादन होने लगा।

दिनकी चर्चा और अन्य कालबोधक अवयव

ऋग्वेदमें दिनको केवल व्यवहार-निर्वाहके लिए समयरूपमें माना गया है; किन्तु ब्राह्मण और आरण्यकोंमें दिनका विवेचन ज्योतिषकी दृष्टिसे किया गया है। दिनकी वृद्धि कैसे और कब होती है? वह कितना बड़ा होता है? वृद्धि-ह्रासका मध्यम मान कितना है? और स्पष्ट मान आनयनके लिए किस प्रक्रिया-विधिका उपयोग करना चाहिए? आदि विषयोंका निरूपण विद्यमान है। कालबोधक अवयवोंमें त्रुटि, लव, क्रान्ति आदि सूक्ष्मतर अवयवोंका विवेचन भी प्राप्त होता है। दिनगणनाकी प्रक्रियाके साथ सावन, चान्द्र-सौर आदिके स्वरूप और आनयन-प्रक्रियाका कथन भी संहिताग्रन्थोंमें उपलब्ध है। दैनिक कार्योंके सम्पादनार्थ 'अहोरात्र'के घट्यात्मक, पलात्मक, विपलात्मक मानोंकी विधियाँ भी ऋग्वेदके अनेक मन्त्रोंसे ध्वनित होती हैं। यज्ञ-यागादि धार्मिक क्रियाओंके सम्पादनार्थ समयके सूक्ष्म अवयवोंका उपयोग किया जाता था। कुछ

विधि-विधान ऐसे थे जो वर्षों चलते थे, पर कुछ इस प्रकारके भी प्रचलित थे, जिनकी समाप्ति क्षणों या लवोंमें होती थी। ज्योतिषके विकासकी दृष्टिसे वैदिककालमें ग्रहोंमें सूर्य और चन्द्रके अतिरिक्त भौमादि पञ्चग्रहोंका भी निर्देश किया गया है। ऋग्वेदमें वर्षको द्वादश चान्द्रमासोंमें विभक्तकर प्रत्येक तीसरे वर्ष चान्द्र और सौर वर्षका समन्वय करनेके लिए एक अधिमास जोड़नेकी परम्परा भी प्रचलित थी। यथा—

द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि कउ तच्चिकेत।
तस्मिन्त्साकं त्रिशता न शंकवोऽर्पिताः षष्टिर्न चलाचलासः॥

ऋ० सं० १।१६४।४८

अधिमासके सम्बन्धमें ऋग्वेदमें बताया है कि जो व्रतावलम्बन करके अपने-अपने फलोत्पादक बारह महीनोंको जानते हैं और उत्पन्न होनेवाले तेरहवें मासको भी जानते हैं[1]।

स्पष्ट है कि राज-काज, सभ्यता आदिकी वृद्धि होने पर लगातार चान्द्रमास गणना सदोष प्रतीत हुई और मास-व्यवस्थाको व्यवहारोपयोगी बनाये रखनेके लिए अधिमासकी कल्पना करनी पड़ी। यही कारण है कि तैत्तिरीय ब्राह्मणमें तेरह महीनोंके निम्नलिखित नाम आये हैं—(१) वरूण (२) अरूणरज (३) पुण्डरीक (४) विश्वजित् (५) अभिजित् (६) आर्द्र (७) पिन्वमान (८) उन्नवान् (९) रसवान् (१०) इरावान् (११) सर्वौषध (१२) संभर (१३) महस्वान्[2]।

संहिताओंमें सौर वर्षका प्रचार था और सावन एवं चान्द्र दिनोंका भी ग्रहण होता था। ज्योतिषके सावन, चान्द्र, सौर, नाक्षत्र और बार्हस्पत्य इन पाँच मानोंमेंसे आदिके तीन मान संहिताग्रन्थोंमें उपलब्ध हैं। एक सूर्योदयसे दूसरे सूर्योदय तकके कालको सावन दिन माना जाता है। सावन संज्ञा यज्ञोंके सम्बन्धसे उत्पन्न हुई है। सोमयागमें एक अहोरात्रमें सोमके तीन सावन होते हैं। कालमाधव और माधवाचार्यने बताया है—"सावनशब्दोऽहोरात्रोपलक्षकः सोमयागे सवनत्रयस्याहोरात्रसम्पद्यत्वात्"। अतः सवनके सम्बन्धसे सावन निष्पन्न हुआ है। इसी प्रकार चन्द्रमा और सूर्य सम्बन्धी कालोंको क्रमशः चान्द्र और सौर कहा गया है।

अहोरात्रमें होनेवाले एक सोमयागको वेदमें 'अह' कहते हैं। छः अहोंके समूहको 'षडह' और पाँच 'षडह' समूहको मास कहते हैं। अतएव स्पष्ट है कि दिनके लिए 'अह' शब्दका प्रयोग सोमयागके सम्बन्धसे हुआ है। माधवाचार्यके उल्लेखसे सावन वर्ष और मासके दिनोंकी संख्याका भी ज्ञान होता है। लिखा है—"अहोरात्रसाध्य एकः सोमयागो वेदेष्वहःशब्देनाभिधीयते तादृशानामहर्विशेषाणां गणः षडहः... ....षडहेन पञ्चकेन एको मासः सम्पद्यते तादृशैर्द्वादशभिर्मासैः साध्यं संवत्सरसत्रम्"।

उपर्युक्त उद्धरणसे यह अवगत होता है कि वैदिक कालमें चान्द्र, सौर और सावन गणना प्रचलित थी।

ऋग्वेदमें युगशब्दका प्रयोग सतयुग[3], त्रेतादियुगके रूपमें तो मिलता ही है, पर पञ्चवर्षात्मक युगके

---

१. वेदमासो धृतव्रतो द्वादश प्रजावतः। वेदाय उपजायते। ऋ० सं० १।२५।८

२. अरूणोरजाः पुण्डरीको विश्वजिदभिजित्।
आर्द्रः पिन्वमानोन्नवान् रसवानिरावान्॥
सर्वौषधः संभरो महस्वान्॥ —तै० ब्रा० ३।१०।१

३ तदूचुषे मानुषेमा युगानि कीर्तेन्यं मघवा नाम बिभ्रत्।
उपप्रयन्दस्युहत्याय वज्री यद्ध सूनुः श्रवसे नाम दधे॥ ऋ० सं० १।१०३।४
इस मन्त्रकी व्याख्या करते हुए सायणाचार्यने लिखा है—"मनुष्याणां सम्बन्धीनि इमानिदृश्यमानानि युगानि अहोरात्रसंघनिष्पाद्यानि कृतत्रेतादीनि सूर्यात्मना निष्पादयतीति शेषः।"

रूपमें भी उपलब्ध होता हैं। ऋग्वेदके एक मन्त्रमें दीर्घतम[1] नामक ऋषिकी एक आख्यायिका आयी हैं। उसमें बताया है कि ममताके पुत्र दीर्घतम नामके ऋषि अश्विन्के प्रभावसे अपने दुःखोंसे छूटकर स्त्री-पुत्रादि कुटुम्बियोंके साथ दशयुग पर्यन्त सुखसे जीवित रहे। यहाँ 'दशयुग' शब्द विचारणीय है। यदि पाँच वर्ष युगका मान स्वीकृत किया जाय, जैसा कि वेदाङ्ग ज्योतिषमें प्रचलित था तो ऋषिकी आयु पचास वर्षकी आती है; जो बहुत थोड़ी प्रतीत होती है और यदि युगका मान दश वर्ष कल्पना कर लिया जाय तो सौ वर्षकी आयु आती हैं। वैदिक कालके अनुसार यह आयु भी सम्भव प्रतीत नहीं होती। दूसरी बात यह है कि युगका दश वर्ष मान कहीं अन्यत्र प्राप्त नहीं होता। सायणाचार्यने इस युग-समस्याको सुलझानेका प्रयास किया है—"दशयुगपर्यन्तं जीवन् उक्तरूपेण पुरुषार्थसाधकोऽभवत् अथवा जीवन् उत्तररूपेण पुरुषार्थसाधकोऽभवत्"।

उनकी इस व्याख्यासे ज्ञात होता है कि दीर्घतम ऋषिने अश्विन्के प्रभावसे दुःखसे छुटकारा प्राप्तकर जीवनके अवशेष दश युग—५० वर्ष सुखसे व्यतीत किये। अतएव ऋग्वेदके समयमें पञ्चवर्षात्मक युगका प्रचार भी हो गया था। इसी प्रकार ऋतु, मास, तिथि, अयन आदिका व्यवहार भी वैदिक कालमें प्रचलित था। शतपथ ब्राह्मणमें उत्तरायण और दक्षिणायनके सम्बन्धमें एक नयी सूचना मिलती है। वस्तुतः अयनका अर्थ चलना है। ज्योतिषमें वर्षको दो बराबर भागोंमें विभाजित किया जाता है, जिनमेंसे एकको उत्तरायण और दूसरेको दक्षिणायन कहते हैं। जब क्षितिजपरका सूर्योदयबिन्दु उत्तरकी ओर दिनोदिन हटता रहता है तो उत्तरायण रहता है और जब यह बिन्दु दक्षिणकी ओर बढ़ता है तो दक्षिणायन कहलाता है। शतपथ ब्राह्मणमें वसन्त, ग्रीष्म और वर्षा देवऋतुएँ बतायी हैं। शरद, हेमन्त और शिशिर पितरऋतु हैं। जब उत्तरकी ओर सूर्य रहता हैं तो ऋतुएँ देवोंमें गिनी जाती हैं और जब दक्षिणकी ओर रहता है तो पितरोंमें। इससे ध्वनित होता है कि शतपथ ब्राह्मणके अनुसार उत्तरायण तब होता था जब सूर्योदय पूर्व बिन्दुसे उत्तरकी ओर हटकर होता था[2]।

तैत्तिरीय संहिता[3]में छः-छः महीनेका उत्तरायण और दक्षिणायन बताया है।

मासगणनाका प्रचार अमान्त और पूर्णिमान्त दोनों ही रूपमें था। जब महीनेका अन्त अमावस्यासे होता है तो उसे अमान्त मास कहते हैं। पूर्णिमासे अन्त होने पर पूर्णिमान्त कहलाता है। अमान्त मासका प्रारम्भ तब माना जाता है जब सूर्य और चन्द्रमाके भोगांशोंका अन्तर शून्य होता है और शून्य अन्तरसे मास प्रारम्भ करना अधिक स्वाभाविक जान पड़ता है। समस्त ज्योतिषमें अमान्तसे मास-गणना प्रारम्भ होती है। अधिमास भी अमावस्यासे प्रारम्भ होकर अमावस्यामें ही समाप्त होता है। तैत्तिरीय संहिताके एक मन्त्रमें दोनों प्रकारकी मास-गणनाओंका उल्लेख आया है। बताया है कि अमावस्यासे मासोंको समाप्त करके एक दिनको कुछ लोग छोड़ देते हैं अर्थात् अनुष्ठान नहीं करते, क्योंकि वे अमावस्यासे ही मास-गणना करते हैं। कुछ व्यक्ति पूर्णिमासीसे मासोंको समाप्त करके एक दिन व्रतानुष्ठान नहीं करते, क्योंकि वे पूर्णमासीसे मासोंकी गणना करते हैं।[4]

---

१. दीर्घतमा मामेतयो जुजुर्वान् दशमे युगे।
अपामर्थं यतीनां ब्रह्मा भवति सारथिः ॥—ऋ० सं० १.१५८.६

२. वसन्तो ग्रीष्मो वर्षाः ते देवाः ऋतवः। शरद्धेमन्तः शिशिरस्ते पितरो……स (सूर्यः) यत्रोदगावर्तते। देवेषु तर्हि भवति… यत्र दक्षिणावर्तते पितृषु तर्हि भवति ॥—शत. ब्रा. २.१.३.

३. तस्मादादित्यः षण्मासो दक्षिणेनैति षडुत्तरेण॥ तै० सं० ६-५-३

४. अमावस्यया मासान्संपाद्याहरुत्सृजंति अमावास्यया हि मासान् संपश्यंति।
पौर्णमास्या मासान्संपाद्याहरुत्सृजंति पौर्णमास्या हि मासान्संपश्यंति ॥—तै० सं० ७।५।६।१५

४ : लोकविजय यन्त्र

इस प्रकार काल-बोधक अवयवोंका विकास वैदिक कालमें हो चुका था। साथ ही नक्षत्र, राशि, ग्रह-कक्षा, सप्तग्रह, सूर्य-चन्द्र गतिका अध्ययन भी वैदिककालमें प्रचलित था। नक्षत्रोंके सम्बन्धमें ऋग्वेदसंहितामें तीन-चार उल्लेख प्राप्त होते हैं। एक मन्त्रमें बताया है कि सर्वशक्तिमान् सूर्यके आगमनसे नक्षत्र और अन्धकार चोरकी तरह भागते हैं, पर ऋग्वेदसंहिताके ही एक दूसरे मन्त्रमें चन्द्रमार्गमें पड़ने वाले तारासमूहके लिए नक्षत्र शब्द आया है। बताया है—

अथो नक्षत्राणामेषामुपस्थे सोम आहितः[1] ॥

तैत्तिरीय संहिता[2] में कृत्तिकासे आरम्भ कर भरणी पर्यन्त सत्ताइस नक्षत्रोंके नामोल्लेख एवं उनके देवताओंके कथन भी आये हैं। अथर्ववेद संहिता[3] में बताया है कि चन्द्रमा तारोंके सापेक्ष एक भगण अर्थात् एक चक्कर २७$\frac{1}{3}$ दिनमें लगाता है। २७$\frac{1}{3}$ से निकटतम पूर्ण संख्या २७ है अतएव चन्द्रमार्ग या उसके आस-पासमें पड़ने वाले तारोंमेंसे २७ तारे ग्रहण कर लिये गये; जो आकाशमें चन्द्रमाके निकट पड़ते थे। २७ से कुछ अधिक रहनेके कारण कभी-कभी २८ तारे भी ग्रहण कर लिये जाते थे, जो चन्द्रमार्गमें पड़ते थे। इस प्रकार वैदिककालमें नक्षत्रोंकी पूर्ण जानकारी थी और उनका उपयोग भी व्रत-अनुष्ठानोंमें होता था।

ऋग्वेदमें सूर्य और चन्द्रके साथ गुरु, बुध, मंगल, शुक्र और शनिके नाम भी प्राप्त होते हैं। ऋग्वेदमें बताया है कि महाप्रबल पाँच देव विस्तीर्ण द्युलोकके मध्यमें रहते हैं। मैं उन देवोंके सम्बन्धमें स्तोत्र रचना करता हूँ। ऋग्वेदके दशम मण्डलके ५५ वें सूक्तमें भौमादि पाँच ग्रहोंकी ओर संकेत किया है। ऋग्वेदके एक मन्त्रसे यह भी ध्वनित होता है कि प्रति बीस मासमें नौ मास शुक्र प्रातःकाल पूर्व दिशाकी ओर दिखलाई पड़ता है, जिससे ऋषिगण स्नान, पूजा आदिके समयको ज्ञातकर अपने दैनिक कार्योंको सम्पन्न करते थे। शुक्रके पास वृहस्पति भी २–३ महीने तक भ्रमण करता था। पश्चात् शुक्र अपनी शीघ्र गतिके कारण वृहस्पतिसे आगे निकल जाता था। और इसका फल यह होता कि शुक्र पूर्वकी ओर उदित होता और वृहस्पति उसी कालमें पश्चिमकी ओर अस्त होता। इस अस्त और उदयकी चर्चासे स्पष्ट है कि शुक्र और वृहस्पतिका ग्रहोंके रूपमें वैदिक कालमें अवश्य परिज्ञान था। ऋग्वेदके कई मंत्रोंमें[4] शुक्र और वृहस्पतिकी चर्चा आयी है। शतपथ ब्राह्मणमें तो शुक्रके सम्बन्धमें महत्त्वपूर्ण उल्लेख प्राप्त हैं।[5]

राशि या ग्रह-कक्षा सम्बन्धी उल्लेख भी वैदिक वाङ्मयमें उपलब्ध हैं। बताया है—

द्वादशारं नहि तज्जराय वर्वर्ति चक्रं परिद्यामृतस्य।
आपुत्रा अग्ने मिथुनासो अत्र सप्त शतानि विंशतिश्च तस्थुः[6] ॥

इस मंत्रमें "द्वादशारं" शब्द द्वादश राशियोंका बोधक है। यद्यपि स्वर्गीय डा० सम्पूर्णानन्दजीने "द्वादशार" शब्दको द्वादश मास बोधक माना है, राशिबोधक नहीं। हमारी दृष्टिमें उनका यह कथन तर्क-सङ्गत नहीं है। यतः मन्त्रके आगे वाले भागमें तीन सौ साठ दिन वर्षमें माने हैं, जो द्वादश राशियोंके ही सम्भव हैं, द्वादश महीनोंके नहीं। चान्द्र मासमें २९$\frac{1}{2}$ दिन होते हैं, अतः द्वादश मासमें ३५४ दिन ही सम्भव

---

१. अथो नक्षत्राणामेषामुपस्थे सोम आहितः ॥—ऋ० सं० १०.८५.२; अथ० सं० १४.१.२.

२. कृत्तिका नक्षत्रमग्निर्देवताऽग्नेरूचस्थ प्रजापतेर्धातुः सोमस्यर्चे त्वारुचे त्वा··· ··· ··· ··· ···देवतापभरणी—नक्षत्रं यमो देवता·························॥—तै० सं० ४.४.१०.

३. अथर्ववेद संहिता १९.७.२ से लेकर ५ तक

४. ऋ० सं० ४.४.५०;५,७३,३;५,७३,१.

५. शत. ब्रा० ४.२.१.

६. ऋ० १.१६४.११.

हैं, ३६० नहीं। अतएव द्वादश राशि मान लेनेमें ३६० दिन या अंशसंख्या निष्पन्न हो जाती है। अतएव "द्वादशार" शब्दको राशिबोधक मानना उचित है। युक्तिसे भी यह सिद्ध होता है कि आकाश-मण्डलका राशि एक स्थूल अवयव है और नक्षत्र सूक्ष्म अवयव। जब सौर जगत्के सूक्ष्म अवयव नक्षत्रोंका इतनी गम्भीरताके साथ ऊहापोह किया गया हो, तब स्थूलावयव राशिके सम्बन्धमें कुछ भी विचार नहीं किया हो, यह कैसे सम्भव है? अतएव राशि-विचार और ग्रह-कक्षा सम्बन्धी तथ्योंकी जानकारी वैदिक कालमें विद्यमान थी। तैत्तिरीय संहितामें बताया है कि सूर्य आकाशकी, चन्द्रमा नक्षत्र-मण्डलकी, वायु अन्तरिक्षकी परिक्रमा करते हैं और अग्नि देवका पृथ्वीपर निवास है[1]। इससे यह ध्वनित होता है कि सूर्य, चन्द और नक्षत्र कक्षाएँ क्रमशः ऊपर-ऊपर स्थित हैं। तैत्तिरीय ब्राह्मण[2]के एक मन्त्रमें विश्व व्यवस्थाका वर्णन आया है, जिसमें सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र आदिकी कक्षाएँ भी अङ्कित हैं।

स्वतन्त्र रूपमें ज्योतिषका विकास

स्वतन्त्र रूपमें ज्योतिषका विवेचन 'वेदाङ्ग' ज्योतिषसे आरम्भ होता है। यज्ञोंकी तिथि, मुहूर्त्त, शोभन-काल, नक्षत्र आदिके परिज्ञानके लिये वेदांग ज्योतिषकी रचना की गयी। इस ग्रन्थके रचना-कालके सम्बन्धमें मत-भिन्नता है। प्रो० मैक्समूलरने इसका रचनाकाल ई० पूर्व ३००, प्रो० वेबरने ई० पू० ५००, कोल ब्रुक-ने ई० पू० १४१० और प्रो० ह्विटनीने ई० पू० १३३८ बतलाया है। लोकमान्य तिलकने अपने 'ओरायन' ग्रन्थमें अयन और सम्पात नक्षत्रके गणितानुसार इसका रचना-काल ई० पू० १४०८ स्थिर किया है। पर निष्पक्ष दृष्टिसे विचार करने पर उपलब्ध वेदाङ्ग ज्योतिषका सङ्कलन ई० पू० ५०० वर्षके पहले नहीं हुआ है। वेदाङ्ग ज्योतिषमें ऋग्वेदाङ्ग ज्योतिष, यजुर्वेदाङ्ग ज्योतिष और अथर्ववेदाङ्ग ज्योतिष ये तीन ग्रन्थ सङ्कलित हैं। ऋग्वेदाङ्ग ज्योतिषके सङ्कलनकर्त्ता लगध नामक ऋषि हैं। इसमें ३६ कारिकाएँ हैं। किसी-किसी सङ्कलनमें ४२ से ४४ तक करिकाएँ भी उपलब्ध हैं। यजुर्वेदाङ्ग ज्योतिषमें ४९ कारिकाएँ हैं जिनमें ३६ कारिकायें तो ऋग्वेदाङ्ग ज्योतिषकी हैं और शेष १३ नई कारिकायें आयी हैं। अथर्ववेदाङ्गमें १६२ श्लोक हैं, जो फलितकी दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण हैं। वेदाङ्ग ज्योतिषके अध्ययनसे निम्नलिखित पाँच सिद्धान्तोंकी उत्पत्ति पर प्रकाश पड़ता है। यह सत्य है कि वेदाङ्ग ज्योतिषके सङ्कलनकाल तक ज्योतिषकी विभिन्न शाखाओंका विकास नहीं हुआ था।

(१) पञ्चवर्षात्मक युगकी मान्यता।
(२) तिथि-नक्षत्रोंका शुभाशुभत्वकी दृष्टिसे विवेचन।
(३) गणित और फलितका साध्य-साधनके रूपमें कथन।
(४) ज्योतिष-घटनाओंकी गणनाका नियम।
(५) विषुव-विचार।

वेदाङ्ग ज्योतिषका अच्छा संस्करण डा० श्याम शास्त्रीने मैसूरसे प्रकाशित किया है, जिसमें सूर्य-प्रज्ञप्ति और ज्योतिष्करण्डककी सहायता लेकर उपर्युक्त पाँचों सिद्धान्तोंका विश्लेषण किया गया है। ज्यो-तिषके सिद्धान्तग्रन्थोंका आरम्भ वराहमिहिरके समयमें होना है। वराहमिहिरने पञ्चसिद्धान्तिका नामक एक ग्रन्थ लिखा है, जिसमें ई० सन्की छठीं शताब्दीसे पूर्वमें प्रचलित पौलिश, रोमक, वाशिष्ठ, सौर और पैतामह इन पाँच सिद्धान्तोंका सङ्कलन किया है। गणित ज्योतिषकी दृष्टिसे आर्यभट प्रथमका नाम उल्लेख-

---

१. तै. सं. ७.५,२३,
२. तै. ब्रा, ३.११.१.

नीय है। इसने ई० सन् ४९९ में आर्यभटीय ग्रन्थ लिखा है, जिसमें अङ्कगणित, रेखागणित और बीजगणित के मौलिक सिद्धान्तोंके साथ काल और भचक्रका ज्योतिषकी शैलीमें विवेचन किया है।

उपर्युक्त कथनसे यह निष्कर्ष निकलता है कि वेदाङ्गकाल तक ज्योतिषकी समस्त शाखाओंकी उत्पत्ति नहीं हुई थी। वेद और वेदांगोंमें जो सिद्धान्त समाहित हैं, उनकी गणना विषयकी दृष्टिसे सिद्धान्त और संहिताके मिश्रित रूपमें की जा सकती है। सिद्धान्त ज्योतिषके विषयका वास्तविक विकास आर्यभटसे आरम्भ होता है। भास्कर-प्रथमके निर्देशसे[1] ज्ञात होता है कि आर्यभटने दो ग्रन्थ लिखे थे। उन्होंने एक ग्रंथमें युगकी गणना अर्धरात्रिक निबद्ध कर ध्रुवाङ्कोंको पठित किया था। द्वितीय ग्रंथमें युग-गणना औदयिक प्रतिपादित की है तथा इसी आधार पर ध्रुवाङ्क, भगण आदि पठित किये हैं। आज आर्यभटका एक आर्यभटीय ग्रन्थ ही उपलब्ध है जिसमें १२१ पद्य हैं, जिन्हें चार खण्डोंमें विभक्त किया गया है। सिद्धान्त ज्योतिषकी परिभाषाकी स्थापना सर्वप्रथम अर्यभटीयमें ही मिलती है। सृष्ट्यादिसे इष्ट दिन पर्यन्त अहर्गण बनाकर ग्रहानयनकी प्रक्रियाके प्रसंगमें ग्रहोंकी मध्यमा और स्पष्टा गतियोंके विवेचन आये हैं तथा उपयोगी ज्या, परिधि, व्यास, वर्ग, वर्गक्षेत्र, घन, घनफल, वर्गमूल, घनमूल, त्रिभुज-क्षेत्रफल, त्रिभुजाकार शङ्कुका घनफल, वृत्तका क्षेत्रफल, गोलका घनफल, विषम चतुर्भुज क्षेत्रके कर्णोंके सम्पातसे भुजकी दूरी और क्षेत्रफल तथा सभी प्रकार के क्षेत्रोंकी मध्यम लम्बाई और चौड़ाई ज्ञात कर क्षेत्रफलानयनकी विधियोंका प्रतिपादन किया है। संख्या लिखनेकी अक्षर-विधि तो अद्भुत है ही; पर परिधिके षष्ठांशकी ज्या उसकी त्रिज्याके समान होती है, यह कथन उस युगकी अपेक्षा विशेष महत्वपूर्ण है। आर्यभटने परीक्षणविधि द्वारा बतलाया कि व्यासार्धको छः से गुणा करने पर त्रिगुण व्यास होगा, उससे वृत्त-परिधि-मान बड़ा रहता है; क्योंकि पूर्ण ज्यासे चापमान बड़ा होता है। पूर्ण ज्या सरल रेखा है और उसका चाप वक्र रेखा है, जो सरल रेखासे अधिक है। अतएव बीस हजार व्यासमें बासठ हजार आठ सौ चौबीस परिधि होती है। इस विधिसे परिधि और व्यासका सम्बन्ध चतुर्थ दशमलव अङ्क तक शुद्ध आ जाता है।

ग्रहगणितको अवगत करनेके लिए वृत्त, त्रिभूज और चतुर्भुजकी रचना-विधि, समतलके परखनेकी विधि, लम्बक-प्रयोगविधि, शंकु और छायासे छायाकरणानयनकी रीति, दीपक और उससे बनी हुई शंकु की छायासे दीपककी ऊँचाई और दूरी जाननेकी विधि, एक ही रेखापर स्थित दीपक और दो शंकुओंके सम्बन्धविशेषका परिज्ञान, समकोण त्रिभुजके भुजों और करणके वर्गोंका सम्बन्ध एवं शर-जीवा गणित आदि भी विवेचित हैं। श्रेणिव्यवहारके नियमोंमें एक-एक बढ़ती हुई संख्याओंके वर्गों और घनोंका योगफल आनयनसम्बन्धी सिद्धान्त विशेष महत्त्वपूर्ण हैं।

आर्यभट और ब्रह्मगुप्तने शुद्ध गणितके विकासके साथ ग्रहगणितके नियमोंका भी प्रतिपादन किया। षष्ठी शताब्दीमें पञ्चसिद्धान्तिकामें संकलित सौर और पौलिश सिद्धान्तोंसे अनेक महत्त्वपूर्ण नियमोंपर प्रकाश पड़ता है। इसके अतिरिक्त सूर्यसिद्धान्त, ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त, खण्डखाद्यक, शिष्यधीवृद्धितन्त्र आदि सिद्धान्त ग्रन्थ भी मौलिक तथ्योंपर प्रकाश डालते हैं।

ग्रहगणितके आनयनमें बीजगणितके सिद्धान्तोंका उपयोग आवश्यक है। अतएव आर्यभट, पद्मनाभ, श्रीधर एवं भास्कर द्वितीयने स्वतन्त्र ग्रन्थ तो लिखे हैं, किन्तु सिद्धान्त ग्रन्थोंमें भी बीजगणितके एकवर्णसमीकरण, अनेकवर्ण समीकरण, करणी, कल्पित राशियाँ, समानान्तर गणित, गुणोत्तरगणित, व्युत्क्रम, घातांक और

---

१. निबन्धः कर्म्मणां प्रोक्तो योऽसावौदयिको विधिः।
अर्द्धरात्रेऽस्त्वयं सर्वो यो विशेषः स कथ्यते ॥—भास्कर प्रथम पद्य २१।

लघुगणकोंके सिद्धान्त आदि भी निबद्ध हैं। बारहवीं शताब्दीमें भास्कर द्वितीयने सिद्धान्तशिरोमणि जैसे उच्चकोटिके ग्रन्थका निर्माणकर ज्योतिशास्त्रकी अपूर्व सेवा की। यह ग्रन्थ दो भागोंमें विभक्त है—(१) गणिताध्याय और (२) गोलाध्याय, गणिताध्यायमें अर्हगण, भगण और मध्यम, स्पष्ट गतियोंके साधनके साथ शृङ्गोन्नति ग्रहयुति, ग्रहण, उदयास्त, आदिका आनयन किया गया है। भास्करने उदयान्तर, चरान्तर और भुजान्तर संस्कारोंकी व्यवस्था प्रतिपादित कर ग्रहगणितकी दिशामें सूक्ष्मताका समावेश किया। भास्कराचार्यने ही करणकुतूहलकी रचनाकर तन्त्रकी दिशाकी ओर एक नया कदम उठागा। कल्पित वर्षका युग मानकर उस युगके भीतर ही किसी अभीष्ट दिनका अहर्गण लाकर ग्रहानयन किया गया है।

फलित ज्योतिषका विकास

फलित ज्योतिषकी दृष्टिसे वेदांगज्योतिष आदि ग्रन्थोंके अतिरिक्त वाराहमिहिरने वाराहीसंहि-ा और बृहज्जातक ग्रन्थोंका प्रणयनकर संहिता और जातक गन्थोंका प्रारम्भ किया। इन दोनों ग्रन्थोंमें पूर्वाचार्योंके जो तद्विषयक सिद्धान्त अंकित किये गये हैं, उनसे यह ज्ञात होता है कि जातकसम्बन्धी अनेक ग्रन्थ षष्ठशतीके पहले भी लिखे जा चुके हैं। सत्याचार्यके मतको वाराहमिहिरने पूर्ण मान्यता प्रदान की है। इस शास्त्रका अन्य नाम होराशास्त्र है। इसमें जन्मकालीन ग्रहोंकी स्थिति, क्रिया, गति एवं युतिके अनुसार व्यक्तिके भविष्य का निरूपण किया जाता है। यह कर्मफल सूचक शास्त्र है। वाराहमिहिरने होराकी व्युत्पत्ति अंकित करते हुए लिखा है—

> होरेत्यहोरात्रविकल्पमेके,
> वाञ्छन्ति पूर्वापरवर्णलोपात्।
> कर्मार्जितं पूर्वभवे सदादि,
> यत्तस्य पंक्ति समभिव्यनक्ति[१]॥

अर्थात्—लग्न, होरा और जातक ये तीनों एक दृष्टिसे पर्यायवाची हैं। दिन या रात्रिमें क्रान्तिवृत्तके किसी विशेष प्रदेशके क्षितिजमें लगनेके कारण लग्न-स्थानकी संज्ञा भी होरा या जातक मानी गयी हैं। जातकशास्त्र व्यक्तिके कर्म-फलोंका प्रतिपादन करता है। इस शास्त्रमें व्यक्तिकी गति, क्रिया और शीलता इन तीनोंका विशेष विचार किया जाता है। गतिका अभिप्राय जातककी गतिविधियों, जीवनके उन्नत-अवनत आरोह-अवरोहों एवं भविष्णुताके सम्बन्धमें विवेचन करना है। क्रियाशब्द पुरुषार्थका सूचक है। व्यक्ति अपने जीवनमें किस समय कैसा पुरुषार्थ कर सकेगा तथा उसके पुरुषार्थमें कब कैसी विघ्न-बाधाएँ उत्पन्न होंगी आदिका विचार क्रिया द्वारा किया जाता है। शीलसे तात्पर्य बाह्य और आन्तरिक व्यक्तित्वसे है। अतः शरीराकृति, रूप-रंग, संस्थान, रोग, व्याधियाँ, शारीरिक सुख, पारिवारिक सुख, मानसिक सुख, संतोष, शान्ति, आर्थिक स्थिति, शिक्षा, प्रतिभा आदिका कथन अपेक्षित है।

भारतीय ज्योतिष परम्पराकी दृष्टिसे जातक-जीवन एक भचक्र है और चक्रवत् ही इसका समुचित अध्ययन सम्भव है। भचक्रके गणितीय अध्ययनकी प्रक्रियामें पिण्ड और ब्रह्माण्डीय सौर मण्डलकी विद्यमान समता और सन्तुलनको ध्यानमें रखकर भारतीय आचार्योंने बारह राशियोंके समान जीवनको भी द्वादशात्मक वृत्तमें बाँटा है। इसी द्वादशात्मक भचक्रके पूर्ण और अंशात्मक नाभिरूप बिन्दुओंपर ग्रहोंके तात्त्विक भोगों के परिणाम जीवनके भिन्न-भिन्न समयोंमें कौन-कौनसे परिवर्तन ला सकेंगे; यह जाननेकी प्रक्रिया जातकशास्त्र है।

---

१. बृहज्जातक १।३

जातक-शास्त्रको अवगत करनेके हेतु आत्मा और कर्मके सम्बन्धको जान लेना आवश्यक है। जातक-तत्त्वका सम्यक् ज्ञान कर्मसम्बन्धी मान्यताको अवगत किये बिना सम्भव नहीं। श्री के० एस० कृष्णमूर्तिने ज्योतिषको कर्म-फल द्योतक शास्त्र बतलाते हुए लिखा है—

"Karma is a Sanskrit word, "Kri" means 'action' or 'deed'. Any mental or physical action is called Karma; every action produces its reaction or result which is known as Karma. Thus Karma includes both the action and the result governed by the irresistible law of "Causation".

So under the law of Karma, there is nothing as a chance or an accident The so-called chances and accidents are in reality the products of some definite causes which we may not be awarc of before hand. That which appears to be accidental or providential to a non-astrological mind is a natural aud incuitable incident to an astrologer. Hence, chances, luck or misfortunc are governed absolutely by the law of causation or Karma".[१]

अर्थात् 'कर्म' संस्कृत शब्द है और यह कृञ् धातुसे निष्पन्न है, जिसका अर्थ क्रिया करना या कार्य करना है। कोई भी मानसिक या शारीरिक क्रिया कर्म कही जाती है। पुरातन कर्मकी संज्ञा प्रारब्ध है। यहाँ यह ध्यातव्य है कि समस्त सञ्चितका नामप्रारब्ध नहीं। किन्तु जितने भागका भोगना आरम्भ हो गया है, प्रारब्ध है; जो अभी हो रहा है या जो अभी किया जा रहा है, वह क्रियमाण है। इस प्रकार इन तीन तरहके कर्मोंके कारण आत्मा अनेक जन्मों, पर्यायोंको धारणकर संस्कारोंका अर्जन करता चला आ रहा है।

आत्माके साथ अनादिकालीन कर्मप्रवाहके कारण लिंगशरीर और भौतिक स्थूलशरीरका सम्बन्ध है। जब एक स्थानसे आत्मा इस भौतिक शरीरका त्याग करता है, तो लिंगशरीर या सूक्ष्मशरीर उसे अन्य स्थूल शरीरकी प्राप्तिमें सहायक होता है। इस स्थूल भौतिक शरीरमें यह विशेषता है कि इसमें प्रवेश करते ही आत्मा जन्म-जन्मान्तरोंके संस्कारोंकी निश्चित स्मृतिको खो देता है। यही कारण है कि ज्योतिषमें प्राकृत ज्योतिषके आधार पर बताया गया है कि यह आत्मा मनुष्यके वर्तमान स्थूल शरीरमें रहते हुए भी एकसे अधिक जगतके साथ सम्बन्ध रखता है। मानवका भौतिक शरीर प्रधानतः ज्योतिः, मानसिक और पौद्गलिक इन तीन उपशरीरोंमें विभक्त है। यह ज्योतिःउपशरीर द्वारा नाक्षत्र जगतसे, मानसिक उपशरीर द्वारा मानसिक जगत्से और पौदगलिक उपशरीर द्वारा भौतिक जगत्से सम्बद्ध है। अतः मनुष्य प्रत्येक जगत्से प्रभावित होता है और अपने भाव, विचार और क्रिया द्वारा प्रत्येक जगत्को प्रभावित करता है। अतएव कर्मसंस्कारोंके कारण घटित होने वाली घटनाओं एवं अन्य सम्भावनाओंका अध्ययन करनेके लिए जातक शास्त्रमें व्यक्तिके व्यक्तित्वको बाह्य और आन्तरिक दो भागोंमें विभक्त किया गया है। बाह्य व्यक्तित्वके अन्तर्गत शरीर, शारीरिक रोग, शरीरजन्य प्रभाव आदि परिगणित हैं। यह व्यक्तित्व भौतिकताके साथ सम्बद्ध होने पर भी आत्माकी चैतन्य क्रियाके साथ इस प्रकार सम्बद्ध है जिससे पूर्व जन्ममें किये गये संस्कारों के फलस्वरूप विचार, भाव, और क्रियाओंकी अभिव्यक्ति होती है तथा वर्तमान जीवनके अनुभवों और क्रिया-प्रतिक्रियाओं द्वारा घटित होने वाले संयोग और घटनाओंकी सूचना प्राप्त होती है। शनैः शनैः यह व्यक्तित्व विकसित होकर आन्तरिक व्यक्तित्वमें मिलनेका प्रयास करता है। आन्तरिक व्यक्तित्वमें अनेक बाह्य व्य-

---

१. कृष्णमूर्ति, पद्धति, मद्रास संस्करण, पृ० १७।

क्तित्वोंकी स्मृतियों, अनुभवों और प्रवृत्तियोंका संश्लेषण रहता है, जिससे विभिन्न प्रकारके संयोग, घटनाएँ एवं फलोपभोग प्राप्त होते हैं।

मनुष्यका अन्तःकरण इन दोनों व्यक्तित्वोंके मिलानेका कार्य करता है। जातकमें बाह्य व्यक्तित्वके तीन भेद माने गये हैं--विचार, भाव और क्रिया। इसी प्रकार आन्तरिक व्यक्तित्वके भी ये तीन भेद स्वीकार किये गये हैं। बाह्य व्यक्तित्वके उक्त तीन भेद और आन्तरिक व्यक्तित्वके उक्त तीनों भेदोंको सन्तुलित रूप देनेका कार्य अन्तःकरणके द्वारा होता है। दूसरे शब्दोंमें यों कहा जा सकता है कि प्रत्येक व्यक्तित्वके तीनों रूप एक मौलिक अवस्थामें आकर्षण और विकर्षणकी प्रकृति द्वारा अन्तःकरणकी सहायतासे सन्तुलित रूपको प्राप्त होते हैं। मनुष्यकी उन्नति और अवनति इस सन्तुलनके आधार पर ही निर्णीत की जाती है। जातक-शास्त्रके अनुसार मानव जीवनके बाह्य व्यक्तित्वके तीन रूप और आन्तरिक व्यक्तित्वके तीन रूप और एक अन्तःकरण इन सातके प्रतीक निम्नलिखित सात ग्रह हैं—

(१) बृहस्पति (२) मंगल (३) चन्द्रमा (४) शुक्र (५) बुध (६) सूर्य (७) शनि

उक्त ग्रहोंके अनुसार मनुष्योंके भावी फल भिन्न-भिन्न रूपमें अभिव्यक्त होते हैं। यतः प्रत्येक प्राणीके जन्म-जन्मान्तरोंके सञ्चित, प्रारब्ध और क्रियमाण कर्म विभिन्न प्रकारके हैं। अतः प्रतीक रूप ग्रह अपने-अपने प्रतिरूप्यके सम्बन्धमें विभिन्न प्रकारके तथ्य प्रकट करते हैं। प्रतिरूप्योंकी सच्ची अवस्था बीजगणितकी अव्यक्त मानकल्पना द्वारा निष्पन्न अङ्कोंके समान प्रकट हो जाती है।

बाह्य व्यक्तित्वके प्रथम रूप विचारका प्रतीक बृहस्पति है। यह प्राणीमात्रके शरीरका प्रतिनिधित्व करता है और शरीरसञ्चालनके लिए रक्त प्रदान करता है। जीवित प्राणीके रक्तमें रहनेवाले कीटाणुओंकी चेतनासे इसका सम्बन्ध है। गुरु द्वारा मनुष्यकी आत्मिक, अनात्मिक और शारीरिक कार्यगतियोंका विश्लेषण किया जाता है, क्योंकि मनुष्यके व्यक्तित्वके किसी भी रूपका प्रभाव शरीर, आत्मा और बाह्य जड़ चेतन पदार्थ पर, जो शरीरसे भिन्न हैं, पड़ता है। उदाहरणार्थ बाह्य व्यक्तित्वके प्रथमरूप विचारको लिया जा सकता है। मनुष्यके विचारका प्रभाव शरीरके साथ उसकी चेतन-शक्तियोंपर भी पड़ता है। इतना ही नहीं उसके विचारसे गृह, कार्यालय, व्यवसाय, शिक्षालय भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहते हैं। अतएव प्रथम रूपके प्रतीक बृहस्पतिसे निम्नलिखित तथ्योंकी जानकारी प्राप्त करनी चाहिए।

अनात्मा—इस दृष्टि-बिन्दुसे बृहस्पति व्यापार, कार्य, वे स्थान और व्यक्ति, जिनका सम्बन्ध धर्म और कानूनसे है—मन्दिर, पुजारी, मंत्री, न्यायालय, न्यायाधीश, विश्वविद्यालय, धारासभाएँ, जनताके उत्सव, दान, सहानुभूति आदिका प्रतिनिधित्व करता है। अतएव जातकशास्त्रमें सामान्यतः बृहस्पतिसे उक्त तथ्योंका विचार किया जाता है।

आत्मा—इस दृष्टिकोणसे यह ग्रह विचार, मनोभाव और इन दोनोंके मिश्रित रूप उदारता, स्वभाव, सौन्दर्य-प्रेम, भक्ति, शक्ति एवं व्यवस्था-बुद्धि इत्यादि आत्मिक भावोंका प्रतिनिधित्व करता है।

शारीरिक दृष्टिसे बृहस्पतिके प्रभाव द्वारा पैर, जँघा, जिगर, पाचन-क्रिया, रक्त, स्नायु-संस्थान आदिका विचार किया जाता है। सामान्यतः जठराग्निका विचार भी गुरु द्वारा होता है।

बाह्य व्यक्तित्वके द्वितीय रूपका प्रतीक मङ्गल है। यह इन्द्रियज्ञान और आनन्द-इच्छाका प्रतिनिधित्व करता है। जितने भी उत्तेजक और संवेदनाजन्य आवेग हैं उनका यह प्रधान केन्द्र है। बाह्य आनन्ददायक वस्तुओंके द्वारा यह क्रियाशील होता है और आनन्ददायक अनुभवोंकी स्मृतियोंको जागृत करता है। वाञ्छित

वस्तुओंकी प्राप्ति तथा उन वस्तुओंकी प्राप्तिके उपायों—कारणोंकी क्रियाका सूचक है। प्रधानरूपसे मङ्गलको इच्छाओंका प्रतीक माना गया है।

अनात्मिक दृष्टिकोणसे यह सैनिक, डाक्टर, रसायनशास्त्री, नाई, वढ़ई, लोहार मशीनका कार्य करने-वाले, मकान बनानेवाले राज और मजदूर, खेल एवं खेलके सामान आदिका प्रतिनिधि है।

आत्मिक दृष्टिकोणसे यह बहादुरी, दृढ़ता, आत्मविश्वास, क्रोध, युद्ध-वृत्ति एवं प्रभुत्व प्रभृति भावों और विचारोंका प्रतिनिधि है।

शारीरिक दृष्टिकोणसे यह बाहरी सिर—खोपड़ी, नाक एवं कपोलका प्रतीक है। इसके द्वारा संक्रामक रोग, घाव, खरोंच, ऑप्रेशन, रक्तदोष उदर-पीड़ा आदि अभिव्यक्त होते हैं। बाह्य व्यक्तित्वके तृतीय रूपका प्रतीक चन्द्रमा हैं। यह मानवपर शारीरिक प्रभाव डालता है और विभिन्न अङ्गों तथा उनके कार्योंमें सुधार करता है। मानसिक विकास और चरित्रगत विशेषताओंकी सूचना भी इसीके द्वारा प्राप्त होती है।

अनात्मिक दृष्टिकोणकी अपेक्षासे यह श्वेत रंग, जहाज, बन्दरगाह, मछली, जल, तरल पदार्थ, मुक्ता, पाषाण, नर्स, दासी, भोजन, रजत एवं बैंगनी रंगके पदार्थों पर प्रभाव डालता है।

आत्मिक दृष्टिकोणकी अपेक्षासे—यह संवेदन, आन्तरिक इच्छा, उतावलापन, भावना, विशेषतः गृह-जीवन सम्बन्धी भावना, कल्पना, सतर्कता एवं लाभ-इच्छा पर प्रभाव डालता है।

शारीरिक दृष्टिसे उदर, पाचन संस्थान, आँतें, स्तन, गर्भाशय एवं गुह्य अंगोंपर इसका प्रभाव पड़ता है।

आन्तरिक व्यक्तित्वके प्रथमरूप विचारका प्रतीक शुक्र है। यह सूक्ष्म मानव चेतनाओंकी विधेय क्रियाओंका प्रतिनिधित्व करता है। पूर्ण बली शुक्र निस्वार्थ प्रेमके साथ प्राणीमात्रके प्रति भ्रातृत्व भावनाका विकास करता है।

अनात्मिक दृष्टिबिन्दुकी अपेक्षासे सुन्दर वस्तुएँ आभूषण, मनोरञ्जनकी सामग्री, नृत्य, गान, वाद्य, शृंगारिक पदार्थ, कलात्मक वस्तुएँ एवं भोगोपभोगकी सामग्री आदि पर प्रभाव पड़ता है।

आत्मिक दृष्टिसे स्नेह, सौन्दर्य-बोध, आनन्दानुभूति, परखबुद्धि, कार्य-अर्हता एवं जिज्ञासा आदिपर इसका प्रभाव पड़ता है।

शारीरिक दृष्टिसे गला, गुर्दा, आकृति, वर्ण, केश, वीर्य, शक्ति प्रभृतिसे सम्बद्ध है। साधारणतः शरीर संचालित करनेवाले अंगोंपर इसका विशेष प्रभाव पड़ता है।

आन्तरिक व्यक्तित्वके द्वितीय रूपका प्रतिनिधि बुध है। यह प्रधानरूपसे आध्यात्मिक शक्तिका प्रतीक है। इसके द्वारा आन्तरिक प्रेरणा, सहेतुक निर्णयात्मक बुद्धि, वस्तुपरीक्षण शक्ति, समझ और बुद्धि-मानी आदिका विश्लेषण किया जाता है। बुधद्वारा आन्तरिक व्यक्तित्व का गम्भीर अध्ययन किया जा सकता है।

अनात्मिक दृष्टिसे विद्यालय, महाविद्यालय सम्बन्धी शिक्षण, विज्ञान, वैज्ञानिक और साहित्यिक स्थान प्रकाशन-स्थान, सम्पादक, लेखक, प्रकाशक, पोस्ट-मास्टर, व्यापारी एवं बुद्धिजीवियोंपर इसका विशेष प्रभाव पड़ता है। पीत रंग और पारा धातुका भी यह प्रतीक माना गया है।

आत्मिक दृष्टिसे विवेक, स्मरण-शक्ति, तार्किक प्रतिभा, कला, कला उत्पादनकी शक्ति एवं मेधाका विचार किया जाता है।

शारीरिक दृष्टिसे यह मस्तक संस्थान, स्नायु क्रिया, जिह्वा, वाणी, हाथ एवं अङ्गुलियोंके के आकार प्रकारका प्रतिनिधि है।

आन्तरिक व्यक्तित्वके तृतीय रूपका प्रतीक सूर्य है। इसकी सात किरण मानी गयी हैं, जो कार्य रूपसे भिन्न-भिन्न होती हुई भी इच्छाके रूपमें पूर्ण होकर प्रकट होती हैं। मनुष्यके विकासमें सहायक तीनों प्रकारकी चेतनाओंके सन्तुलित रूपका यह प्रतिनिधि है। पूर्ण इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति, सदाचार, विश्राम, शान्ति, जीवनको उन्नति एवं विकासका द्योतक है।

अनात्मिक दृष्टिकोणकी अपेक्षासे प्रभावक व्यक्ति—शासक, मंत्री, एम० पी०, एम० एल० ए०, सेनापति, न्यायाधीश, मण्डलाधिकारी, आविष्कारक, पुरातत्त्ववेत्ता, उच्च शिक्षाधिकारी आदिपर अपना प्रभाव डालता है।

आत्मिक दृष्टिसे यह प्रभुता, ऐश्वर्य, प्रेम, उदारता, महत्त्वाकांक्षा आत्मविश्वास, आत्मनियंत्रण, विचार और भावनाओंका सन्तुलन एवं सहृदयताका प्रतीक है।

शारीरिक दृष्टिसे हृदय, रक्त-संचालन, नेत्र, रक्त-वाहिका छोटी-छोटी नसें, दांत, कान, आदि अंगोंका प्रतिनिधि है।

अन्तःकरणका प्रतीक शनि है। यह बाह्य चेतना और आन्तरिक चेतनाको मिलानेमें पुलका काम करता है। प्रत्येक नवजीवनमें आन्तरिक व्यक्तित्वसे जो कुछ प्राप्त होता है और जो मनुष्यके व्यक्तिगत जीवनके अनुभवोंसे मिलता है उससे यह मनुष्यको वृद्धिगत करता है। यह प्रधान रूपसे अहं भावनाका प्रतीक होता हुआ भी व्यक्तिगत जीवनके, विचार, इच्छा और कार्योंमें सन्तुलन उत्पन्न करता है।

अनात्मिक दृष्टिसे कृषक, हलवाहक, पत्रवाहक, चरवाहा, कुम्हार, माली, मठाधीश, कृपण, पुलिस अफसर, उपवास करनेवाले साधु-संन्यासी आदि व्यक्ति तथा पहाड़ी स्थान, चट्टानी-प्रदेश, बन्जर-भूमि, गुफा, प्राचीन ध्वस्त स्थान, श्मसानघाट, कब्र स्थान एवं चौरस मैदान आदिका प्रतिनिधि है।

आत्मिक दृष्टिसे तत्त्वज्ञान, विचार-स्वातंत्र्य, अध्ययन, मनन-चिन्तन, कर्त्तव्य-बुद्धि, आत्म-संयम, धैर्य, दृढ़ता, गम्भीरता, निर्मलता, सतर्कता एवं विचारशीलताका प्रतीक है।

शारीरिक दृष्टिसे अस्थि-समूह, बड़ी आँतें, मांस-पेशियाँ, घुटनेसे नीचेके अंग आदिपर इसका प्रभाव पड़ता है।

इस प्रकार जातकपद्धतिमें सौर जगत्‌के उक्त सात ग्रहोंको मानव-जीवनके विभिन्न अंगोंका प्रतीक माना गया है। इन ग्रहोंमें सूर्य और चन्द्रकी प्रधानता है। ये दोनों मन और शरीरके विकास पर प्रभाव डालते हैं।

सूर्यसिद्धान्त और वराहमिहिरके सिद्धान्तोंसे ज्ञात होता है कि शरीर कक्षा-वृत्तके द्वादश भाग—मस्तक, मुख, वक्ष- स्थल, हृदय, उदर, कटि, वस्ति, लिंग, जंघा, घुटना, पिंडली और पैर क्रमशः मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन संज्ञक हैं। इन १२ राशियोंमें भ्रमण करने वाले ग्रहोंमें आत्मा रवि, मन चन्द्रमा, धैर्य मंगल, वाणी बुध, विवेक गुरु, वीर्य शुक्र और संवेदन शनि है। इस प्रकार वराहमिहिरके अनुसार सप्त ग्रह और द्वादश राशियोंकी स्थिति देहधारी प्राणियोंके शरीरके भीतर ही पायी जाती है। शरीर स्थित इस सौर-चक्रका भ्रमण आकाश स्थित सौर मण्डलके समान ही होता है। अतएव व्यक्त सौर जगतके ग्रहोंकी गति, स्थिति, क्रिया आदिके अनुसार अव्यक्त शरीर स्थित सौर जगतके ग्रहोंकी गति, स्थिति, क्रिया आदिको अभिव्यक्त करते हैं। बताया है—

"एते ग्रहा बलिष्ठाः प्रसूतिकाले नृणां स्वमूर्त्तिसमम्।
कुर्युर्देहं नियतं बहवश्च समागता मिश्रम्॥

ग्रहरश्मियोंका प्रभाव

जातक शास्त्रमें काल—समयको पुरुष या ब्रह्म माना गया है और ग्रहरश्मियोंवश इस पुरुषके उत्तम, मध्यम, उदासीन एवं अधम ये चार अङ्ग-विभाग किये हैं। त्रिगुणात्मक प्रकृतिके द्वारा निर्मित समस्त जगत सत्त्व, रजस् और तमोमय है। जिन ग्रहोंमें सत्त्व गुण अधिक रहता है उनकी किरणें अमृतमय हैं, जिनमें तमोगुण अधिक रहता है उनकी विषमय, जिनमें रजोगुण अधिक रहता है उनकी किरणें उभयगुण मिश्रित एवं जिनमें तीनों गुणोंकी अल्पता रहती है उन ग्रहोंकी गुणहीन किरणें मानी गयी हैं। ग्रहोंके शुभाशुभत्वका विभाजन भी किरणोंके गुणोंके आधारपर ही हुआ है। आकाशमें प्रतिक्षण अमृतरश्मि सौम्य ग्रह अपनी गतिसे जहाँ-जहाँ गमन करते हैं उनकी किरणें भूमण्डलके उन-उन प्रदेशों पर पड़कर वहाँके निवासियोंके स्वास्थ्य, बुद्धि आदि पर अपना सौम्य प्रभाव डालती हैं। विषमय किरणों वाले क्रूर ग्रह अपनी गतिसे जहाँ विचरण करते हैं वहाँ वे अपने दुष्ट भावसे वहाँके निवासियोंके स्वास्थ्य और बुद्धि पर अपना कुप्रभाव डालते हैं। मिश्रितरश्मि ग्रहोंके प्रभाव मिश्रित एवं गुणहीन रश्मि ग्रहोंके प्रभाव अकिञ्चित्कर होते हैं। जन्मके समय जिन-जिन रश्मि ग्रहोंकी प्रधानता होती है, जातकका मूल स्वभाव वैसा ही बन जाता है।

आचार्य वराहमिहिरने बताया है कि जिन व्यक्तियोंका जन्म कालपुरुषके उत्तमाङ्ग—अमृतमय रश्मियोंके प्रभावसे होता है, वे बुद्धिमान, सत्यवादी, अप्रमादी, स्वाध्यायशील, जितेन्द्रिय, मनस्वी एवं सच्चरित्र होते हैं, जिनका जन्म काल-पुरुषके मध्यमांग—रजोगुणाधिक्य मिश्रित, रश्मियोंके प्रभावसे होता है, वे मध्यम बुद्धि, तेजस्वी, शूरवीर, प्रतापी, निर्भय, स्वाध्यायशील, साधु अनुग्राहक एवं दुष्ट निग्राहक होते हैं। जिनका जन्म उदासीन अंग गुणत्रयकी अल्पतावाली ग्रह-रश्मियोंके प्रभावसे होता है वे उदासीन बुद्धि, व्यवसायकुशल, पुरुषार्थी, स्वाध्यायरत एवं सम्पत्तिशाली होते हैं, एवं जिनका जन्म अधमांग—तमोगुणधिक्य रश्मि वाले ग्रहोंके प्रभावसे होता है वे विवेकशून्य, दुर्बुद्धि, व्यसनी, सेवाव्रती एवं हीनाचरण वाले होते हैं। अतएव स्पष्ट है कि मनुष्यके गुण-स्वभावका अंकन पूर्वोपार्जित कर्मसंस्कारके अनुसार ग्रहरश्मियोंके प्रभावसे घटित होता है। जिस ग्रहनक्षत्रके वातावरकी प्रधानता रहती है अथवा जिनके तत्त्वविशेषके प्रभावमें व्यक्ति उत्पन्न होता है उस व्यक्तिमें ग्रहके अनुसार उसी तत्त्वकी प्रमुखता समाविष्ट हो जाती है। देशकृत और कालकृत ग्रहोंके संस्कार इस बातके सूचक हैं कि काल या किसी स्थान विशेषके वातावरणमें उत्पन्न एवं पुष्ट होने वाला प्राणी उस काल या उस स्थान पर पड़ने वाली ग्रहरश्मियोंकी अपनी निजी विशेषता रखता है। अतएव व्यक्तित्वमें समाविष्ट ग्रहविशेष वैयक्तिक विशेषताओंको स्पष्ट करते हैं।

ग्रहरश्मियोंका प्रभाव केवल मनुष्यपर ही नहीं पड़ता; किन्तु वन्य, स्थलज एवं उद्भिज आदि पर भी पड़ता है। अमृतरश्मियोंके प्रभावसे जड़ी-बूटियोंमें रोगनिवारणकी शक्ति उत्पन्न होती है तथा मुक्ता आदिकी उत्पत्तिका कारण भी ग्रहरश्मियाँ हैं। अतएव जातक पद्धतिमें कालपुरुषके विचारके अन्तर्गत ग्रहरश्मियों और भचक्रका विश्लेषण किया जाता है।

जातक तत्त्वके सिद्धान्त

१. लग्न—नवांशादि षोडश वर्ग या षड् वर्ग।

२. ग्रहयोग—ग्रहोंकी विभिन्न स्थितियोंसे उत्पन्न योगविशेष।

३. ग्रह-युति—ग्रहोंके द्विसंयोगी, त्रिसंयोगी, चतुःसंयोगी आदि भेद और उनका फल।

४. दृष्टि—ग्रहदृष्टिके अनुसार फलादेश।

५. बलाबल—षड्बल विचार।

६. महादशाविचार

७, अन्तर्भुक्तिविचार।

लग्न—नवांशादिके विचारके पूर्व राशि और ग्रहोंका स्वरूप, उनकी विभिन्न संज्ञाएँ एवं लग्नादि द्वादश भावोंके स्वरूपका परिज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। अतएव जातकतत्त्वको अवगत करनेके लिए केन्द्र, पणफर, आयोक्लिम, त्रिकोण उपचय, चतुरस्र, मारक, एवं नेत्रत्रिक संज्ञाओंको समझना आवश्यक है। फलप्रतिपादनके लिए अथवा जातक सिद्धान्तोंको ज्ञात करनेके लिए प्रारम्भिक बातोंकी जानकारी अपेक्षित है।

कुण्डलीको दृष्टिसे ग्रहोंका शुभाशुभत्व

जिस-भावमें जो राशि हो, उस राशिका स्वामी ही, उस भावका स्वामी या भावेश कहलाता है। षष्ठ, अष्टम और द्वादश भावके स्वामी जिन भावों—स्थानोंमें रहते हैं, अनिष्टकारक होते हैं। किसी भाव का स्वामी स्वग्रही हो तो उस स्थानका फल अच्छा होता है। ग्यारहवें भावमें सभी फल शुभदायक होते हैं। किसी भावका स्वामी पापग्रह हो और वह लग्नसे तृतीय स्थानमें स्थित हो तो शुभफल कारक होता है। किन्तु जिस भावका स्वामी शुभग्रह हो और वह तृतीय स्थानमें स्थित हो तो मध्यमफल देता है। जिस भावमें शुभग्रह रहता है उस भावका फल उत्तम और जिसमें पापग्रह रहता है उस भावके फलका ह्रास होता है।

१।४।५।७।९।१०। स्थानोंमें शुभग्रहोंका रहना शुभ है। जो भाव अपने स्वामी शुक्र, बुध और गुरु द्वारा युक्त अथवा दृष्ट हों अथवा अन्य किसी ग्रहसे युक्त अथवा दृष्ट न हों तो वह शुभफल देता है। जिस भावका भावेश शुभग्रहसे युक्त अथवा दृष्ट हो अथवा जिस भावमें शुभग्रह स्थित हो या जिस भावको शुभग्रह देखता हो उस भावका शुभफल होता है। जिस भावका स्वामी पापग्रहसे युक्त अथवा दृष्ट हो या पापग्रह स्थित हो तो उस भावके फलका ह्रास होता है।

भावाधिपति मूलत्रिकोण, स्वक्षेत्रगत मित्रग्रही और उच्चका हो तो उस भावका फल शुभ होता है। किसी भावके फलविशेषको ज्ञात करनेके लिए यह देखना आवश्यक है कि उस भावका भावेश किस भावमें स्थित है। और किस भावके भावेशका किस भावमें स्थित रहनेसे क्या फल होता है। सूर्य, मंगल, शनि और राहु क्रमशः अधिक-अधिक पापग्रह हैं। ये ग्रह अपनी—पापग्रहोंकी राशियों पर रहनेसे विशेष अनिष्टकर एवं शुभग्रह और मित्रग्रहोंकी राशियोंमें रहनेसे अल्प-अनिष्टकारक तथा अपनी उच्च राशियोंमें स्थित रहनेसे सामान्यतः शुभफलदायक होते हैं। चन्द्रमा, बुध, शुक्र, केतु और गुरु ये क्रमशः अधिक-अधिक शुभग्रह माने गये हैं। ये शुभग्रहोंकी राशियोंमें रहनेसे अधिक शुभ तथा पापग्रहोंकी राशियोंमें रहनेसे अल्प शुभफलकी सूचना देते हैं। केतु फल-विचार करनेमें प्रायः पापग्रह माना गया है। अष्टम और द्वादश भावोंमें सभी ग्रह अनिष्ट-कारक होते हैं।

गुरु षष्ठ भावमें शत्रुनाशक, शनि अष्टम भावमें दीर्घायुकारक एवं मंगल दशम स्थानमें उत्तम भाग्यका सूचक होता है। राहु, केतु, और अष्टमेश जिस भावमें रहते हैं उस भावको बिगाड़ते हैं। गुरु अकेला, द्वितीय, पंचम और सप्तम भावमें स्थित हो तो धन, पुत्र और स्त्रीके लिए सर्वथा अनिष्टकारक होता है। जिस भावका जो गृह कारक माना जाता है यदि वह अकेला उस भावमें स्थित हो तो उस भावको नष्ट करता है। जातकतत्त्वके परिज्ञानार्थ गणित-मान द्वारा देशान्तर और कालान्तर संस्कार कर सर्वप्रथम लग्न-का साधन करना चाहिए। एक लग्न उतने कालखण्डका नाम है जितनेमें किसी एक राशिका उदय होता है। अहोरात्रमें बारह राशियोंका उदय होता है। अतएव एक दिन-रातमें बारह लग्नोंकी कल्पना की गई है। लग्न-साधनके हेतु सर्वप्रथम अपने स्थानका उदयमान निकालना आवश्यक है।

संहिता साहित्य

ज्योतिषका तीसरा स्कन्ध संहिता है। संहितामें राष्ट्र और देश विषयक शुभाशुभ फलको अवगत करनेकी विधि लिखी रहती है। इसके विषयका सम्बन्ध राष्ट्र या देशके साथ है, किसी व्यक्तिके साथ नहीं। संहिता-ग्रन्थ लोककल्याणकी दृष्टिसे विशेष महत्त्वपूर्ण हैं। इन ग्रन्थोंमें भूशोधन, दिक्शोधन, शल्योद्धार, मेलापक, आयाद्यानयन, ग्रहोपकरण, इष्टिकाद्वार, गेहारम्भ, गृह-प्रवेश, जलाशय-निर्माण, उल्कापात एवं ग्रहोंके उदयास्तका फल आदि अनेक बातोंका वर्णन रहता है। संहितास्कन्धका प्रादुर्भाव वैदिककालमें ही हो चुका था। इस स्कन्धके अनेक प्रमेयोंका वर्णन वैदिक साहित्यमें मिलता है। वेदाङ्ग ज्योतिषका प्रमुख वर्ण्य विषय तो संहिता ही है। संहितामें मुहूर्त्त, प्रश्न, स्वप्न, शकुन एवं निमित्तोंका वर्णन भी है।

संहिता-ग्रन्थोंमें उपलब्ध सबसे प्राचीन ग्रन्थ वाराही-संहिता है। भट्टोत्पलने इस ग्रन्थ पर जो टीका लिखी है, उससे गर्ग-संहिता, पराशर-संहिता, देवल-संहिता, काश्यप-संहिता, भृगु-संहिता, वशिष्ठ-संहिता, बृहस्पति-संहिता, मय-संहिता, ऋषिपुत्र-संहिता आदिके निर्देश प्राप्त होते हैं। इतना ही नहीं भट्टोत्पलने व्यास, भानुभट्ट, विष्णुगुप्त, विष्णुचन्द्र, यवन, रोम, सिद्धासन, नन्दी, नग्नजित और भद्रबाहुके अनेक निर्वचन दिये हैं, जिससे संहितास्कन्धकी समृद्धिका परिज्ञान प्राप्त होता है।

संहिता-ग्रन्थोंमें प्रमुख रूपसे आये हुए प्रमेय, सूर्य, चन्द्र, राहु, भौम, गुरु, शुक्र, शनि और केतुके गमनफल, अगस्त्य और सप्त ऋषियोंके उदयादि फल, नक्षत्र व्यूह, ग्रहोंके युद्ध और समागम फल, शृंगारक—सूर्य या किसी नक्षत्रके पास एक ही समयमें सब या कुछ ग्रहोंके एकत्र होनेसे निष्पन्न धनुष अथवा शृंगारिक आकृतियोंके फल, मार्गशीर्षादि मासोंमें पर्जन्योंके गर्भधारण और तदनुसार पर्जन्यवृष्टिके फल, चन्द्रमासे रोहिणी, स्वाती, आषाढ़ और भाद्रपदाके योगसे फल, सद्योवर्षण, कुसुमफल-लक्षण, सन्ध्या दिग्दाह, भूकम्प, उल्का, परिवेष, इन्द्रधनुष, गन्धर्व नगर, प्रतिसूर्य और निर्घात आदिका विवेचन-विश्लेषण पाया जाता है। धान्यादिकोंके मूल्य, इन्द्रध्वज और नीराजनका कथन, खञ्जन पक्षीके दर्शनका फल तथा दिव्य, भौम और अन्तरिक्ष उत्पातोंका वर्णन भी समाहित रहता है।

राजोपयोगी पुष्यस्नान, पट्टलक्षण, खड्ग लक्षण, वृक्षायुर्वेद, प्रासादलक्षण, वज्रलेप, वास्तुप्रतिष्ठा, गो, कुक्कुर, कुक्कुट, कूर्म, अज, पद्मराग आदिकी परीक्षा, दीपलक्षण, शकुन विचार आदिका वर्णन भी किया जाता है।

संहिता-साहित्यका विकास ई० सन्की चतुर्थ शताब्दीसे लेकर १४वीं शताब्दी तक निरन्तर होता रहा है। इन ग्रन्थोंमें वर्षा और कृषि उत्पत्तिके साथ सुभिक्ष, दुर्भिक्ष, उद्योग, वाणिज्य, कल-कारखाने, वैज्ञानिक अनुसन्धान आदि प्रमेय भी विवेचित होने लगे और संहिता-स्कन्धमें जीवनका आवश्यक प्रत्येक प्रमेय समविष्ट हो गया। यात्रा, शकुन, स्वप्न, अष्टाङ्गनिमित्त, उत्पात, उल्का, परिवेश, मेघाकृति, सन्ध्याकृति, प्रभञ्जन, मेघगर्भ, ग्रहाचार, ग्रह-युद्ध, ग्रह-अस्त, ग्रहोदय, ग्रहवक्र प्रभृति विषय भी संहिताके वर्ण्य विषय बन गये। यों तो इस स्कन्धका मूल रूप ज्योतिष-विषयक यन्त्रोंमें पाया जाता है। ज्योतिषके ये यन्त्र तन्त्रप्रणाली द्वारा निर्मित यन्त्रोंकी अपेक्षा भिन्न हैं। इस प्रणालीका वास्तविक रहस्य प्राणियोंकी कार्य सिद्धिको अवगत करना है। वर्षा विचार और फसल उत्पत्तिके सम्बन्धमें विभिन्न प्रणालियों द्वारा निष्कर्ष प्रस्तुत करना भी यन्त्रोंका लक्ष्य है। छठी शताब्दीमें यन्त्र-प्रणाली विकसित होकर संहिताके रूपमें परिणत हो गयी है, यह अध्ययनसे स्पष्ट है। यन्त्रोंका वर्ण्य-विषय निम्न प्रकार है—

(१) अकाल—समय पर वर्षाका न होना।

(२) सुकाल—समय पर वर्षाका होना।
(३) यथोचित मात्रामें धान्य-अनाजका उत्पन्न होना।
(४) रोग एवं महामारियोंका सद्भाव एवं अभाव।
(५) शान्ति और वैर-विरोधका सद्भाव एवं अभाव।
(६) अनुकूल रूप
(७) अनुकूल रस
(८) अनुकूल गन्ध
(९) अनुकूल स्पर्श
(१०) अनुकूल शब्द

यहाँ अनुकूल शब्दका तात्पर्य समृद्धि-शान्ति एवं परराष्ट्र भयके अभावसे है। संहिता ग्रन्थोंमें वर्षाके हेतु देश, वायु और देव ये तीन माने गये हैं। जिस देशमें जब जलयोनिके जीवोंके पुद्गलोंका विनाश एवं उत्पत्ति हो उस समय वहाँ वर्षा होती है। वर्षा कालमें अनुकूल वायुका रहना भी अच्छी वर्षाके लिए आवश्यक है। वर्षाके समय प्रचण्ड पवनके चलनेसे वर्षा नष्ट हो जाती है। अतः 'सर्वतोभद्र' कुलालचक्र, तोरणचक्र आदि, यन्त्रों द्वारा वर्षाकी स्थितिका ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। कुम्भचक्रके रचयिताने उक्त परिज्ञानके लिए ग्रहोंके ध्रुवाङ्क भी पठित किये हैं तथा अन्य निमित्तों द्वारा वर्षाकी स्थितिका परिज्ञान प्राप्त किया है।

अक्षय तृतीयाके दिन छाया प्राप्तकर उसकी गणितविधिसे राष्ट्रके शुभाशुभत्व पर विचार किया है। इस प्रकार वाराही-संहिताके समानान्तर ही प्राचीन समयमें ध्रुवाङ्क बोधक कुछ सारणियाँ प्रचलित थीं, जिनके आधार पर कृषि-उत्पत्ति, वर्षा-ज्ञान, राष्ट्र-शान्ति, राष्ट्र-उपद्रव आदिका विचार किया जाता था। इन विषयोंमें प्रामाणिकता लानेके लिए गणित-क्रियाका अवलम्बन भी ग्रहण किया गया है।

संहितामें प्रतिपाद्य विषयोंका निर्देश करते हुए लिखा है कि उल्का, परिवेष, विद्युत्, अभ्र, सन्ध्या, मेघ, वात, प्रवर्षण, गन्धर्व नगर, गर्भ-लक्षण, यात्रा, उत्पात, ग्रहचार, ग्रहयुद्ध, स्वप्न, मुहूर्त्त, तिथि, करण, शकुन, पाक, ज्योतिष, वास्तु, इन्द्र सम्पदा, लक्षण, व्यञ्जन, चिह्न, लग्न, विद्या, औषध, प्रश्न, ग्रहोंके बला-बल, विरोध, उनके वर्ण, स्थितियाँ एवं अरिष्ट आदिका विचार किया गया है। उल्कासे तात्पर्य आकाशसे पतित होनेवाले अग्निकणोंसे है। कुछ मनीषी आकाशसे पतित होनेवाले उल्का-काण्डोंको टूटे ताराके नामसे अभिहित करते हैं। संहिता स्कन्धमें बताया है कि उल्का एक उपग्रह है। इसके आनयनका प्रकार यह है कि सूर्याक्रान्त नक्षत्रसे पञ्चम विद्युन्मुख, अष्टम शून्य, चतुर्दश सन्निपात, अष्टादश केतु, एकविंशति उल्का, द्वाविंशति कल्प, त्रयोविंशति वज्र और चतुर्विंशति निघात संज्ञक हैं। अतएव विद्युन्मुख, शून्य, सन्निपात, केतु, उल्का, कल्प, वज्र और निघात ये आठ उपग्रह माने जाते हैं। इन उपग्रहोंके अनुसार राष्ट्रके शुभाशुभ फलका निर्देश किया है। वस्तुतः उल्काएँ ऐसा उपग्रह हैं, जो सूर्यके चारों ओर अपने-अपने कक्षमें परिभ्रमण करती हैं। इनमें सूर्य जैसा आलोक रहता है। पवनसे अभिभूत होकर उल्काएँ पृथ्वी पर पतित होती हैं। संहिताशास्त्र उल्कापतनके आकार, प्रकार, दीप्ति, दिशा आदिसे शुभाशुभका विचार करता है।

परिवेष—'परितो विष्यते व्याप्यतेऽनेन' अर्थात् चारों ओरसे व्याप्त होकर मण्डलाकार हो जाना परिवेष है। इसका वास्तविक आशय यह है कि सूर्य या चन्द्रकी किरणें जब वायु द्वारा मण्डलीभूत हो जाती हैं तब आकाशमें नाना वर्णकी आकृति विशिष्ट मण्डालाकार बन जाती है। इसीको परिवेष कहते हैं। यह

परिवेष रक्त, नील, पीत, कृष्ण, हरित आदि विभिन्न रङ्गोंका होता है और इन रङ्गोंके अनुसार ही फल निरूपण किया जाता है।

विद्युतका अर्थ है विजली, तडित्, शम्पा, सौदामिनी आदि। विद्युत्के वर्णकी अपेक्षा चार भेद हैं—कपिला, अति लोहिता, सिता और पीता। कपिल वर्णकी विद्युत् होनेसे वायु, लोहित वर्णकी होनेसे आतप, पीत वर्णकी होनेसे वर्षा और सिता वर्णकी होनेसे दुर्भिक्ष होता है।

अभ्र—आकाशके रूप, रंग, आकृति प्रभृतिके द्वारा फलाफलका विवेचन भी आया है। आकाश—तिथि, नक्षत्र और लग्न विशेषमें जिस रूप रंगकी आकृतिका दिखलाई पड़ना है उसीके अनुसार भावी शुभा-शुभ फल होते हैं। सन्ध्याके रूप रंगका वर्णन भी संहिता-ग्रन्थोंमें आया है। अर्ध अस्तमित और अर्ध उदित सूर्य जिस समय होता है वही प्रकृत सन्ध्याकाल है। सामान्यतः दिवा और रात्रिके सन्धि-कालका एक एक दण्ड सन्धि-काल माना गया है। इस सन्ध्याके रूप, रंग, आकृतिका शुभाशुभ फलके साथ सम्बन्ध बतलाया है।

संहिता-ग्रन्थोंमें गर्भका आशय है कि ज्येष्ठ शुक्ला अष्टमीसे चार दिन तक मेघ वायुसे गर्भ धारण करते हैं। उन दिनों यदि मन्द वायु प्रवाहित हो और आकाशमें सरस मेघ दिखलाई पड़ें तो शुभ फल होता है। मतान्तरसे कार्तिक मासके शुक्ल पक्षके उपरान्त गर्भ दिवस माना जाता है। गर्ग ऋषिका मत है कि मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षकी प्रतिपदाके उपरान्त जिस दिन चन्द्रमा और पूर्वाषाढ़ाका योग होता है उसी दिन गर्भ लक्षण समझना चाहिए। इस दिन होने वाली वर्षा, चलने वाला पवन एवं सूर्यका तेज शुभाशुभ फलका द्योतक है

यात्रा-प्रकरणमें मुख्यरूपसे राजाकी विजय-यात्राका निरूपण किया गया है। यात्राके समयमें होने वाले शकुन-अपशकुनों द्वारा शुभाशुभ फल प्रतिपादित है। दिग्विजयके हेतु यात्रा करने के लिए तिथि, नक्षत्र वार, योग और करणका भी विधान है।

स्वभावसे विपरीत घटित होने वाली घटनाओंको उत्पात कहा है। उत्पात तीन प्रकारके हैं—दिव्य, अन्तरिक्ष और भौम। नक्षत्रोंका विकार, उल्का निर्घात, पवन आदि दिव्य उत्पात्के अन्तर्गत हैं। गन्धर्व-नगर, इन्द्र-धनुष आदि अन्तरिक्ष उत्पात हैं। चर वस्तुओंका स्थिररूपमें दिखलाई पड़ना और स्थिर वस्तुओंका चररूपमें दर्शन होना भौम उत्पात है। उत्पातोंका विस्तारपूर्वक वर्णन संहिताग्रंथोंमें आया है।

ग्रहाचारमें सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु इन ग्रहोंके गमन द्वारा शुभाशुभ फल अवगत करनेकी प्रक्रिया वर्णित है। समस्त नक्षत्रों और राशियोंमें ग्रहोंकी उदय-अस्त, वक्री, मार्गी आदि अवस्थाएँ वर्णित कर राष्ट्रव्यापी फलोंका कथन किया गया है।

ग्रह-युद्धके चार भेद बतलाये हैं—भेद, उल्लेख, अंश-मर्दन और अपसव्य। भेद युद्धमें वर्षाका नाश, नेताओंमें संघर्ष और राष्ट्रमें अशान्ति होती है। उल्लेख युद्धमें शस्त्र-भय, मंत्री-विरोध और दुर्भिक्ष होता है। अंश-मर्दन युद्धमें आन्तरिक कलह, संक्रामक रोग, अन्न-कष्ट एवं परराष्ट्रभय रहता है। अपसव्य युद्धमें शासकोंमें संघर्ष, मतभेद, महँगाई, अन्न-वस्त्र-कष्ट एवं रसादि पदार्थोंकी उत्पत्तिका अभाव होता है। इस सन्दर्भमें प्रत्येक ग्रहके आक्रन्द और यायी भेद बतलाकर पूर्वाह्न, अपराह्न, मध्याह्नके आधार पर ग्रह-युद्धोंका फलादेश वर्णित है। इसी प्रकार संयोगी ग्रहों द्वारा फल-निर्देशपर प्रकाश डाला गया है। जब बुधके आगे शुक्र रहता है तो महावृष्टि और शुक्रके आगे बुधके रहनेसे अल्प वृष्टि होती है। बुध, शुकके मध्यमें सूर्य या अन्य ग्रह आ जायें तो वर्षा नहीं होती। बुध, बृहस्पति और शुक्र ये तीनों ग्रह एक ही राशि पर स्थित हों और इन पर गुरुकी दृष्टि पड़ती हो तो अच्छी वर्षा होती है और सुभिक्ष होता है। सूर्य, शुक्र और बुधके एक

राशि पर रहनेसे अल्पवृष्टि; सूर्य, शुक्र और बृहस्पतिके एक राशि पर रहनेसे अतिवृष्टि; शनि, शुक्र और मंगलके एक राशि पर रहनेसे साधारण वृष्टि एवं शनि, राहु और मंगलके एक राशि पर रहनेसे अनावृष्टि अथवा ओलोंकी वृष्टि होती है। शुक्र, मंगल, शनि और बृहस्पति ये चारों ग्रह एक राशि पर स्थित हों तो वर्षाकी कमी रहती है और अन्नका सङ्कट रहता है। इस ग्रह स्थितिसे कई स्थानोंमें भूकम्प आता है तथा राजनीतिक स्थिति बिगड़ती है। इस प्रकार ग्रह युद्ध और ग्रह स्थितिके फलका विस्तारपूर्वक विवेचन संहिता-ग्रन्थोंमें किया गया है।

मुहूर्तका विचार भी संहिताके अन्तर्गत है। व्रत, पूजा, उपवास, अनुष्ठान, विवाह आदि संस्कार सभी कार्योंके लिए शुभ मुहूर्तोंका विवेचन किया गया है। शुभ मुहूर्तके अभावमें किसी भी मांगलिक कृत्यका सम्पादन करना उचित नहीं, क्योंकि समयका प्रभाव प्रत्येक जड़ एवं चेतन पदार्थ पर पड़ता है। अतएव गर्भाधानादि षोडश संस्कार, प्रतिष्ठान, गृहारम्भ, गृह-प्रवेश, यात्रा प्रभृति, व्यावहारिक कार्योंके लिए मुहूर्त्तोंका विचार करना आवश्यक बताया है। प्राचीन कालमें मुहूर्त-विचार संहिता-ग्रन्थोंका एक अंग था। परन्तु उत्तर कालमें संहितोक्त अन्य विषयोंका लोप और मुहूर्तका प्राधान्य हो गया, जिससे मुहूर्त-विषयक ग्रंथोंको लोग मुहूर्त-ग्रंथ कहने लगे। मुहूर्त-ग्रंथोंके प्रमुख विषय निम्न लिखित हैं—

(१) त्याज्य प्रकरण—शुभ कार्योंमें वर्जित तिथि, नक्षत्रादि।

(२) तिथि, वार, नक्षत्र, योग और संक्रान्तिका शुभाशुभत्व।

(३) संस्कारोंके मुहूर्त।

(४) विवाहमें वधू-वरकी कुण्डलियोंके मिलान।

(५) वास्तु प्रकरण—गृह-निर्माणार्थ भूमिशुद्धि, भूमिका शुभाशुभत्व, ग्रहनिर्माणमें संस्थान-संरचना मुहूर्त आदि।

(६) यात्रा-प्रकरण—यात्राके हेतु नक्षत्र, तिथि आदिके विचारके साथ चन्द्रमाका शुभाशुभत्व।

(७) नक्षत्र-प्रकरण—कृषि आरम्भ करनेके हेतु नक्षत्र-शुद्धि, बुआई, कटाई, दँवाई आदिके नक्षत्र हल चलानेके लिए शुभ नक्षत्र तथा राज्याभिषेक आदिके मुहूर्त्त।

नक्षत्रोंके नाम और उनके देवता, अश्विन्यादि नक्षत्रोंकी अश्वादि कल्पित योनियाँ और स्थिर, चरादि संज्ञाएँ राशियोंकी मेषादि संज्ञाओंसे बोधित होने वाले मेषादि प्राणी और राशियोंके भौमादि स्वामी, तिथियोंकी नन्दादि संज्ञाएँ और तिथियोंके स्वामी इत्यादि बातोंके आधारपर भिन्न-भिन्न कार्योंमें नक्षत्रोंका शुभाशुभत्व माना गया है। यथा—चर नक्षत्रोंमें स्थिर कार्य करना और स्थिर नक्षत्रोंमें चर कार्य करना अशुभ है। वधू-वरके नक्षत्र रोहिणी और उत्तराषाढ़ा हों तो उनकी सर्प और नकुल योनि होनेसे परस्पर शत्रुत्व रहता है।

मुहूर्त्त-विषयक साहित्य

मुहूर्त्त-विषयक साहित्यका विकास वाराही संहिताके कालसे होने लगता है। शक संवत् ५६० में लल्लने रत्नकोषकी रचना की है, जिसके आधारपर श्रीपतिने शक संवत् ९६१ में रत्नमाला नामक ग्रंथ लिखा है। इस ग्रन्थकी शक संवत् ११८५ में माधवने एक टीका लिखी है, जिस टीकामें ब्रह्मशम्भु, योगेश्वर, श्रीधर आदि ग्रन्थकारोंके नामोंके अतिरिक्त 'भास्कर,' 'व्यवहार,' 'भीम पराक्रम,' दैवज्ञवल्लभ,' 'आचारसार,' 'त्रिक्रिमशत,' 'केशव व्यवहार', 'तिलक व्यवहार', 'योग मात्रा,' विद्याधरीविलास,' 'विवाह पटल', 'विश्वकर्मशास्त्र' आदि अनेक ग्रन्थोंके उल्लेख प्रस्तुत किये हैं, जिनसे मुहूर्त्त विषयक शास्त्रकी समृद्धिका अनुमान लगाया जा सकता है। स्वतन्त्ररूपसे भोजके 'राजमार्त्तण्ड', विद्वज्जनवल्लभ', कालिदास चतुर्थके 'ज्योतिर्वि-

दाभरण', केशवके 'विवाहवृन्दावन', शारङ्गधरके 'विवाह पटल', नारायणके 'मुहूर्त्त मार्त्तण्ड', रामभटके 'मुहूर्त्त चिन्तामणि', विट्ठलदीक्षितके 'मुहूर्त्त कल्पद्रुम' एवं रघुनाथके' मुहूर्त्तमाला' आदि प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं।

विषयकी दृष्टिसे संहिता स्कन्धका विस्तार विक्रम संवत्की दशवीं शतीके आसपास विशेष रूपसे हुआ है। शकुन और निमित्त भी इस शास्त्रके अंग बन गये। नरपति ज्योतिर्विदने शक संवत् १०९७ में 'नरपतिजयचर्या' नामक एक वृहद् ग्रन्थ लिखा है। इस ग्रन्थमें स्वरोदय, सारोद्धार तथा विभिन्न प्रकारके शकुनोंका कथन आया है।

वसन्तराजने 'वसन्तराजशाकुन' नामक एक स्वतन्त्र ग्रन्थ रचा है। इसी प्रकार वल्लालसेनके अद्भुतसागरमें शकुन और निमित्त विषयक प्रभूत सामग्री आयी है।

ज्योतिष विद्याका विकास क्रमशः हुआ है और अंग विद्या भी इस शास्त्रमें समाविष्ट हो गयी। शारीरिक लक्षणोंको ज्ञातकर मानसिक और आध्यात्मिक विकासका परिज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। जिस प्रकार मनोविज्ञानका सम्बन्ध चित्तवृत्तियों और संवेदनाओंके विकाससे है; सृष्टिविज्ञानका सम्बन्ध मन, बुद्धि और शरीरके निर्माणक तत्त्वोंके विश्लेषण और विवेचनसे है; उसी प्रकार अंगविद्याका सम्बन्ध मनुष्यके आन्तरिक और बाह्य व्यक्तित्वके अध्ययनसे है। यों तो सभी प्राणियोंके शरीरका निर्माण पौद्गलिक परमाणुओंसे होता है और सभीकी आकृति एक समान दिखलायी पड़ती है, परन्तु इस एकताके बीच भी विविधता और विषमताका समवाय रहता है। अतः जो विभिन्न जन्म-जन्मान्तरोंके संस्कारोंसे अर्जित इस विविधताको अवगत कर लेता है, वही अंगविद्याका ज्ञाताभावी शुभाशुभफलोंको निरूपण करनेमें समर्थ होता है। वस्तुतः बराहमिहिरके पूर्वसे ही अंगविद्याका विकास आरम्भ हो गया था और अठारहवीं शती तक इस विद्याका पूर्ण विकास होता गया। इस प्रकार ज्योतिषकी विभिन्न शाखाओंका विकास उत्तरोत्तर होता गया और वर्षाविज्ञान तथा कृषि सम्बन्धी ज्ञान भी संहिताशास्त्रके अन्तर्गत संकलित किया गया है।

जैनाचार्योंका ज्योतिषके विकासमें योगदान

ज्योतिषकी प्रत्येक शाखाके विकासमें जैनाचार्योंने अपूर्व योगदान दिया है। जैन परम्परा बतलाती है कि आजसे लाखों वर्ष पूर्व कर्मभूमिके प्रारम्भमें प्रथम कुलकर प्रतिश्रुतिके समयमें जब मनुष्योंको सर्वप्रथम सूर्य और चन्द्रमा दिखलायी पड़े तो वे सशंकित हुए और अपनी उत्कंठा शान्त करनेके लिए उक्त प्रतिश्रुति नामक कुलकर-मनुके पास गये। कुलकरने जिज्ञासा शान्त करते हुए सूर्य, चन्द्रादि ग्रहोंकी शिक्षा दी और तभीसे ज्योतिषका विकास आरम्भ हुआ।

आगमिक दृष्टिसे ज्योतिष शास्त्रका विकास विद्यानुवादांग और परिकर्मोंसे माना जाता है। समस्त गणित सिद्धान्त ज्योतिष परिकर्मोंमें अंकित था और अष्टांग निमित्तका विवेचन विद्यानुवादांगमें समाहित था। षटखण्डागम धवलाटीकामें रौद्र, श्वेत, मैत्र, सारभट, दैत्य वैरोचन, वैश्वदेव, आभिजित, रोहण, बल, विजय, नैऋत्य, वरुण, अर्यमान् और भाग्य ये पन्द्रह मुहूर्त्त आये हैं। मुहूर्त्तोंकी नामावली वीरसेन स्वामीकी अपनी नहीं है, किन्तु पूर्व परम्परासे प्राप्त पद्योंको उन्होंने उद्धृत किया है। यह मुहूर्त्त चर्चा पर्याप्त प्राचीन है, इसका विचार ई० पूर्व प्रथम शतीके साहित्यमें भी उपलब्ध है।

प्रश्नव्याकरणमें नक्षत्रोंकी मीमांसा की गयी है। समस्त नक्षत्र कुल, उपकुल और कुलोपकुलों में विभक्त उपलब्ध होते हैं। यह वर्णन-प्रणाली ज्योतिषके विकासपर यथेष्ट प्रकाश डालती है। यतः नक्षत्रोंके नामोंके साथ उनके स्वभाव, गुण और आकृति आदिका भी बोध होता है। यहाँ धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपद, अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिरा, पुष्य, मघा, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, विशाखा, मूल एवं उत्तराषाढ़ा ये नक्षत्र कुलसंज्ञक;

श्रवण, पूर्वाभाद्रपद, रेवती, भरणी, रोहिणी, पुनर्वसु, आश्लेषा, पूर्वाफाल्गुनी,-हस्त, ज्येष्ठा एवं पूर्वाषाढ़ा ये नक्षत्र उपलकुल संज्ञक एवं अभिजित्, शतभिषा, आर्द्रा और अनुराधा कुलोपकुल संज्ञक हैं। इस वर्णनका मुख्य प्रयोजन मासफल निरूपण है।

समवायाङ्गमें नक्षत्रोंकी ताराएँ, उनके दिशा द्वार आदिका कथन आया है। बताया है—"कत्तिआइया सत्तणक्खत्ता पुव्वदारिआ। महाइया सत्तणक्खत्ता दाहिणदारिआ। अणुएहा-इया सत्तणक्खत्ता अवरदारिआ। धणिट्ठाइया सत्तणक्खत्ता उत्तरदारिआ" अर्थात् कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य और आश्लेषा ये सात नक्षत्र पूर्वद्वार, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी: हस्त, चित्रा, स्वाति और विशाखा ये सात नक्षत्र दक्षिणद्वार; अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, अभिजित् और श्रवण ये सात नक्षत्र पश्चिमद्वार एवं धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, रेवती, अश्विनी और भरणी ये सात नक्षत्र उत्तरद्वारवाले हैं। समवायांग १/६, २/४, ३/२, ४/३, ५/९ में आयी हुई ज्योतिष चर्चाएँ भी महत्त्वपूर्ण हैं।

ठाणांगमें चन्द्रमाके साथ स्पर्श योग करनेवाले नक्षत्रोंका कथन आया है। कृत्तिका, रोहिणी, पुनर्वसु, मघा, चित्रा, विशाखा, अनुराधा और ज्येष्ठा ये आठ नक्षत्र चन्द्रमाके साथ स्पर्श योग करते हैं। इस योग-का फल विभिन्न तिथियोंके अनुसार विभिन्न प्रकारका घटित होता है। इसी प्रकार नक्षत्रोंकी विभिन्न संज्ञाओं द्वारा भी राष्ट्र, समाज और व्यक्ति के फलोंका परिज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। ठाणांगमें अंगारक, काल, लोहिताक्ष, शनैश्चर, कनक, कनक-कनक कनक वितान, कनक सन्तानक, सोमहित, आश्वासन, कज्जीवग, कर्वट, अयस्कर, दँदुयन, शंख, शंखवर्ण, इन्द्राग्नि, धूमकेतु, हरि, पिंगल, बुध, शुक्र, बृहस्पति, राहु, अगस्त, भानवक, काश, स्पर्श, धुर, प्रमुख, विकट, विसन्धि, विमल, पीपल, जटिलक, अरुण, अगिल, काल, महाकाल स्वस्तिक, सौवास्तिक, वर्द्धमान आदि ८८ ग्रहोंके नाम बताये गये हैं। समवायांगमें भी ८८ ग्रहोंके नाम प्राप्त होते हैं। प्रश्नव्याकरणमें सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु या धूमकेतु इन नौ ग्रहोंके सम्बन्धमें प्रकाश डाला गया है।

समवायांगमें ग्रहणके कारणोंका भी निर्देश मिलता है। इसमें राहुके दो भेद बताये गये हैं—नित्य-राहु और पर्वराहु। 'नित्यराहुको कृष्णपक्ष और शुक्लपक्षका कारण तथा पर्वराहुको चन्द्रग्रहणका कारण माना गया है। सूर्यके ध्वजदण्डसे केतुका ध्वजदण्ड उन्नत होनेके कारण यही सूर्यग्रहणका कारण बनता है। दिनवृद्धि और दिनह्रासके सम्बन्धमें भी समवायांगमें विचार उपलब्ध होता है। सूर्य जब दक्षिणायनमें निषधपर्वतके आभ्यान्तर मण्डलसे निकलता हुआ ४४वें मण्डल—गमनमार्गमें आता है, उस समय $\frac{8}{61}$ मुहूर्त दिन कम होकर रात बढ़ती है—उस समय २४ घटी का दिन और ३६ घटीकी रात होती है। उत्तर दिशामें ४४ वें मण्डल —गमन मार्ग पर जब सूर्य आता है तब $\frac{8}{61}$ मुहूर्त दिन बढ़ने लगता है और इस प्रकार जब सूर्य ९३वें मण्डल पर पहुँचता है तो दिन परमाधिक ३६ घटीका होता है। यह स्थिति आषाढ़ी पूर्णिमाको आती है।

इस प्रकार आगमिक साहित्यमें ज्योतिष सम्बन्धी सिद्धान्तोंका कथन प्राप्त होता है। ऋतु, अयन, दिनमान, दिनवृद्धि, दिनह्रास, नक्षत्रमान, नक्षत्रोंकी विविध संज्ञाएँ, ग्रहोंके मण्डल, विमानोंके स्वरूप, विस्तार ग्रहोंकी आकृतियाँ आदि सिद्धान्त समाविष्ट हैं।

गणित-ज्योतिषकी चर्चाओंके समान ही फलित-ज्योतिषकी चर्चाएँ भी प्राप्त होती हैं। ऐतिहासिक विद्वान् गणित-ज्योतिषसे भी फलितको भी प्राचीन मानते हैं। अतः अपने कार्योंकी सिद्धिके लिए समयशुद्धिकी आवश्यकता आदिकालसे ही मानवको रही होगी। यही कारण है कि आगम ग्रन्थोंमें फलित-ज्योतिषके प्रमुख सिद्धान्त तिथि, नक्षत्र, योग, करण, वार आदिका शुभाशुभत्व उपलब्ध है।

जैन ज्योतिष-साहित्यका सांगोपांग परिचय प्राप्त करनेके लिए इसे निम्नांकित चार कालखण्डोंमें विभाजित किया जा सकता है—

१ आदिकाल—ई० पू० ३००–६०० ई० तक। २ पूर्व मध्यकाल—६०१ई०–१००० ई० तक। ३ उत्तरमध्यकाल—१००१ ई०–१७८० ई० सन् तक। ४ अर्वाचीनकाल—१७०१ ई०—१९७० ई० तक।

आदिकालकी जैन ज्योतिष रचनाएँ

आदिकालकी रचनाओंमें सूर्यप्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति, अंगविज्जा, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, त्रिलोकप्रज्ञप्ति, एवं ज्योतिष्करण्डक आदि उल्लेखनीय हैं।

सूर्यप्रज्ञप्ति प्राकृतभाषामें लिखित एक प्राचीन रचना है। इसपर मलयगिरिकी संस्कृत टीका है। इस रचनामें उपलब्ध होनेवाले ज्योतिषसिद्धान्त ई० पू० ३०० के लगभगके हैं। इसमें पञ्चवर्षात्मक युग मानकर तिथि, नक्षत्रादिका साधन किया गया है। युगारम्भ भगवान् महावीरकी शासनतिथि श्रावण कृष्ण प्रतिपदा अभिजित् नक्षत्रसे माना गया है। वेदांग ज्योतिष के समान पञ्चांगकी व्यवस्था भी प्रतिपादित है।

चन्द्रप्रज्ञप्तिमें सूर्यके गमन मार्ग, आयु, परिवार आदिके कथनके साथ पञ्चवर्षात्मक अयनों, नक्षत्र, तिथि और मास आदिकी आनयन प्रक्रिया भी अंकित है। यह ग्रन्थ गणित-ज्योतिषके सिद्धान्तोंकी दृष्टिसे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसमें श्रेणी-व्यवहार गणितके अनेक उपयोगी सिद्धान्त आये हैं। सर्वधन, आदिधन, मध्यधन और चयानयनकी विधि भी निरूपित है। पाटीगणित और रेखागणितके नियमोंके साथ वृत्त, दीर्घ-वृत्त और वर्त्तुल क्षेत्रोंका भी कथन आया है। ग्रहोंकी मध्यमा और स्पष्ट गतियाँ भी अंकित हैं। मध्यमा गति-से ग्रहका जो स्थान मालूम होता है, वह वास्तविक ग्रहस्थानसे दूर रहता है। अतः इस ग्रन्थमें वास्तविक ग्रहस्थानका आनयन भी किया गया है। इस ग्रन्थका विषय साधारणतः सूर्यप्रज्ञप्तिके समान है। विषयकी अपेक्षा यह सूर्यप्रज्ञप्तिसे अधिक महत्वपूर्ण है। इसमें सूर्यकी प्रतिदिनकी योजनात्मिका गति निकाली गई है तथा उत्तरायण और दक्षिणायनकी वीथियोंका अलग-अलग विस्तार निकालकर सूर्य और चन्द्रकी गति निश्चित की गई है। इसके चतुर्थ प्राभृतमें चन्द्र और सूर्यका संस्थान तथा तापक्षेत्रका संस्थान विस्तारसे बताया गया है। इसमें समचतुस्र, विषमचतुस्र आदि विभिन्न आकारोंका खंडन कर सोलह वीथियोंमें चन्द्रमाको समचतुस्र गोल आकार बताया गया है। इसका कारण यह है कि सुषमा-सुषमाकालके आदिमें श्रावणकृष्ण प्रतिपदाके दिन जम्बूद्वीपका प्रथम सूर्य पूर्व दक्षिण-अग्निकोणमें और द्वितीय सूर्य पश्चिमोत्तर वायव्यकोणमें चला। इसी प्रकार प्रथम चन्द्रमा पूर्वोत्तर-ईशान कोणमें और द्वितीय चन्द्रमा पश्चिम दक्षिण नैऋत्य कोणमें चला। अतएव युगादिमें सूर्य और चन्द्रमाका समचतुस्र संस्थान था, पर उदय होते समय ये ग्रह वर्तुलाकार निकले, अतः चन्द्रमा और सूर्यका आकार अर्धकपीठ—अर्ध समचतुस्र गोल बताया गया है।

चन्द्रप्रज्ञप्तिमें छाया साधन किया गया है और छायाप्रमाणपरसे दिनमान भी निकाला गया है। ज्योतिषकी दृष्टिसे यह विषय बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। यहाँ प्रश्न किया गया है कि जब अर्धपुरुष प्रमाण छाया हो, उस समय कितना दिन व्यतीत हुआ और कितना शेष रहा। इसका उत्तर देते हुए कहा है कि ऐसी छायाकी स्थितिमें दिनमानका तृतीयांश व्यतीत हुआ समझना चाहिए। यहाँ विशेषता इतनी है कि यदि दोपहरके पहले अर्धपुरुष प्रमाण छाया हो तो दिनका तृतीय भाग गत और दो तिहाई भाग अवशेष तथा दोप-हरके बाद अर्धपुरुष प्रमाण छाया हो तो दो तिहाई भाग प्रमाण दिन गत और एक भाग प्रमाण दिन शेष समझना चाहिए। पुरुष प्रमाण छाया होने पर दिनका चौथाई भाग गत और तीन चौथाई भाग शेष, डेढ़

पुरुष प्रमाण छाया होने पर दिनका पंचम भाग गत और चार पंचम भाग (⅘ भाग) अवशेष दिन समझना चाहिए।[1]

इस ग्रन्थमें गोल, त्रिकोण, लम्बी, चौकोर वस्तुओंकी छाया परसे दिनमानका आनयन किया गया है। चन्द्रमाके साथ तीस मुहूर्त तक योग करनेवाले श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वा—भाद्रपद, रेवती, अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिरा, पुष्य, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूल और पूर्वाषाढ़ ये पन्द्रह नक्षत्र बताए गए हैं। पैंतालीस मुहूर्त्त तक चन्द्रमाके साथ योग करनेवाले उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, पुनर्वसु, मुहूर्ततक चन्द्रमाके साथ योग करनेवाले शतभिषा, भरणी, आर्द्रा, आश्लेषा, स्वाति और ज्येष्ठ ये छः नक्षत्र बताये गये हैं।

चन्द्रप्रज्ञप्तिके १९वें प्राभृतमें चन्द्रमाको स्वतः प्रकाशमान बतलाया है तथा इसके घटने-बढ़नेका कारण भी स्पष्ट किया गया है। १८ वें प्राभृतमें पृथ्वीतलसे सूर्यादि ग्रहोंकी ऊँचाई बतलाई गयी है।

ज्योतिष्करण्डक एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसमें अयनादिके कथनके साथ नक्षत्र-लग्नका भी निरूपण किया गया है। यह लग्न-निरूपणकी प्रणाली सर्वथा नवीन और मौलिक है—

लग्गं च दक्खिणाय विसुवे सुवि अस्स उत्तरं अयणे।
लग्गं साई विसुवेसु पंचसु वि दक्खिणे अयणे॥

अर्थात् अश्विनी और स्वाति ये नक्षत्र विषुवके लग्न बताये गये हैं। जिस प्रकार नक्षत्रोंकी विशिष्ट अवस्थाको राशि कहा जाता है, उसी प्रकार यहाँ नक्षत्रोंकी विशिष्ट अवस्थाको लग्न बताया गया है।

इस ग्रंथमें कृत्तिकादि, धनिष्ठादि, भरण्यादि, श्रवणादि, एवं अभिजित् आदि नक्षत्र-गणनाओंकी विवेचना की गयी है। ज्योतिष्करण्डका रचनाकाल ई० पू० ३०० के लगभग है। विषय और भाषा दोनों ही दृष्टियोंसे यह ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है।

अंगविज्जाका रचनाकाल कुषाण-गुप्त युगका सन्धिकाल माना गया है। शरीरके लक्षणोंसे अथवा अन्य प्रकारके निमित्त या चिन्होंसे किसीके लिये शुभाशुभ फलका कथन करना ही इस ग्रंथका वर्ण्य विषय है। इस ग्रंथमें कुल साठ अध्याय हैं। लम्बे अध्यायोंका पटलोंमें विभाजन किया गया है। आरम्भमें अध्यायोंमें अंगविद्याकी उत्पत्ति, स्वरूप, शिष्यके गुण-दोष, अंगविद्याका माहात्म्य प्रभृति विषयोंका विवेचन किया है। गृह-प्रवेश, यात्रारम्भ, वस्त्र, यान, धान्य, चर्या, चेष्टा आदिके द्वारा शुभाशुभ फलका कथन किया गया है। प्रवासी घर कब और कैसी स्थितिमें लौटकर आयेगा, इसका विचार ४५ वें अध्यायमें किया गया है। ५२वें अध्यायमें इन्द्रधनुष, विद्युत, चन्द्रग्रह, नक्षत्र, तारा, उदय, अस्त, अमावस्या, पूर्णमासी, मंडल, वीथी, युग, संवत्सर, ऋतु, मास, पक्ष, क्षण, लव, मुहूर्त्त, उल्कापात, दिशादाह आदि निमित्तोंसे फलकथन किया गया है। सत्ताईश नक्षत्र और उनसे होनेवाले शुभाशुभ फलका भी विस्तारसे उल्लेख है। संक्षेपमें इस ग्रंथमें अष्टांग निमित्तका विस्तारपूर्वक विभिन्न दृष्टियोंसे कथन किया गया है।[2]

लोकविजय-यन्त्र भी एक प्राचीन ज्योतिषकी रचना है। यह प्राकृतभाषामें ३० गाथाओंमें लिखा गया है। इसमें प्रधानरूपसे सुभिक्ष, दुर्भिक्षकी जानकारी बतलायी गयी है। आरम्भमें मंगलाचरण करते हुए कहा है—

पणमिय पयारविंदे तिलोयनाहस्स जगपईवस्स।
वुच्छामि लोयविजयं जंतं जंतूण सिद्धिकरं॥

---

१. चन्द्रप्रज्ञप्ति—९।५

२. अंगविज्जा—१० पृ० २०६-२०९।

जगत्पति नाभिराजके पुत्र त्रिलोकनाथ ऋषभदेवके चरणकमलोंमें प्रणाम करके जीवोंकी सिद्धिके लिये लोकविजय-यन्त्रका वर्णन करता हूँ।

इसमें १४५ से आरम्भकर १५३ तक ध्रुवांक बतलाये गये हैं। इन ध्रुवांकोंपरसे ही अपने स्थानके शुभाशुभफलका प्रतिपादन किया गया है। कृषिशास्त्रकी दृष्टिसे भी यह ग्रंथ महत्वपूर्ण है।

कालकाचार्य—यह भी निमित्त और ज्योतिषके प्रकाण्ड विद्वान् थे। इन्होंने अपनी प्रतिभासे शककुल-के साहिको स्ववश किया था तथा गर्दभिल्लको दण्ड दिया था। जैन परम्परामें ज्योतिषके प्रवर्तकोंमें इनका मुख्य स्थान है, यदि यह आचार्य निमित्त और संहिताका निर्माण न करते, तो उत्तरवर्त्ती जैन लेखक ज्योतिष-को पापश्रुत समझकर अछूता ही छोड़ देते।

वराहमिहिरने बृहज्जातकमें कालकसंहिताका उल्लेख किया है[1]। निशीथचूर्णि, आवश्यकचूर्णि आदि ग्रन्थोंसे इनके ज्योतिषज्ञानका पता चलता है।

उमास्वातिने अपने तत्त्वार्थसूत्रमें जैन ज्योतिषके मूल सिद्धान्तोंका निरूपण किया है। इनके मतसे ग्रहोंका केन्द्र सुमेरु पर्वत है, ग्रह नित्य गतिशील होते हुए मेरुकी प्रदक्षिणा करते रहते हैं। चौथे अध्यायमें गृह, नक्षत्र प्रकीर्णक और तारोंका भी वर्णन किया है। संक्षेप रूपमें आई हुई इनकी चर्चाएँ ज्योतिषकी दृष्टिसे महत्वपूर्ण हैं।

इस प्रकार आदिकालमें अनेक ज्योतिष ग्रंथोंकी रचनाएँ हुई। स्वतंत्र ग्रंथोंके अतिरिक्त अन्य विषय—धार्मिक ग्रन्थों, आगम ग्रन्थोंकी चूर्णियों, वृत्तियों और भाष्योंमें भी ज्योतिषकी महत्वपूर्ण बातें अंकित की गयीं। तिलोयपण्णत्ति में ज्योतिर्मंडलका महत्वपूर्ण; वर्णन आया है। ज्योतिर्लोकाधिकारमें अयन, गमनमार्ग, नक्षत्र एवं दिनमान आदिका विस्तारपूर्वक विवेचन किया है।

पूर्वमध्यकाल

पूर्वमध्यकालमें गणित और फलित दोनों ही प्रकारके ज्योतिषका यथेष्ट विकास हुआ। इसमें ऋषि-पुत्र, महावीराचार्य, चन्द्रसेन, श्रीधर प्रभृति ज्योतिर्विदोंने अपनी अमूल्य रचनाओंके द्वारा इस साहित्यकी श्रीवृद्धि की।

भद्रबाहुके नामपर अर्हच्चूड़ामणिसार नामक एक प्रश्नशास्त्र सम्बन्धी ७४ प्राकृत गाथाओंमें रचना उपलब्ध है। यह रचना चतुर्दश पूर्वधर भद्रबाहुकी है, इसमें तो सन्देह है। हमें ऐसा लगता है कि यह भद्र-बाहु वराहमिहिरके भाई थे, अतः संभव है कि इस कृतिके लेखक यह द्वितीय भद्रबाहु ही होंगे। आरम्भमें वर्णोंकी संज्ञाएँ बतलायी गयी हैं। अ इ ए ओ, ये चार स्वर तथा क च ट त प य श ग ज ड द ब ल स ये चौदह व्यंजन आलिंगित संज्ञक हैं। इनका सुभग उत्तर और संकट नाम भी है। आ ई ऐ औ ये चार स्वर तथा ख छ ठ थ फ र ष घ झ ट, ध भ व ह ये चौदह व्यंजन अभिधूमित संज्ञक हैं। इनका मध्य, उत्तराधर और विकट नाम भी है। उ ऊ अं अः ये चार स्वर तथा ङ ञ ण न म ये व्यंजन दग्ध संज्ञक हैं। इनका विकट, संकट, अधर और अशुभ नाम भी है। प्रश्नमें सभी आलिंगित अक्षर हों, तो प्रश्नकर्त्ताकी कार्य सिद्धि होती है। प्रश्नाक्षरोंके दग्ध होनेपर कार्य सिद्धिका विनाश होता है। उत्तर संज्ञक स्वर उत्तर संज्ञक व्यंजनों में संयुक्त होनेसे उत्तरतम और उत्तराधर तथा अधर स्वरोंसे संयुक्त होनेपर उत्तर और अधर संज्ञक होते हैं। अधर संज्ञक स्वर दग्ध संज्ञक व्यंजनोंमें संयुक्त होनेपर उत्तराधरतर संज्ञक होते हैं। दग्ध संज्ञक स्वर दग्ध-

---

१. भारतीय ज्योतिष—११ पृ० १०७।

संज्ञक व्यञ्जनोंमें मिलनेसे दग्धतम संज्ञक होते हैं।[1] इन संज्ञाओंके पश्चात् फलाफल निकाला गया है। जय-पराजय, लाभालाभ, जीवन-मरण, आदिका विवेचन भी किया गया है। इस छोटी-सी कृतिमें बहुत कुछ निबद्ध कर दिया गया है। इस कृतिकी भाषा महाराष्ट्री प्राकृत है। इसमें मध्यवर्ती क, ग और त के स्थान पर 'य' श्रुति पायी जाती है।

करलक्खण

यह सामुद्रिक शास्त्रका छोटा-सा ग्रंथ है। इसमें रेखाओंका महत्त्व स्त्री और पुरुषके हाथोंके विभिन्न लक्षण अंगुलियोंके बीचके अन्तराल पर्वोके फल, मणिबन्ध, विद्यारेखा, कुल, धन ऊर्ध्व, सम्मान, समृद्धि, आयु धर्म, व्रतानुष्ठान आदि रेखाओंका वर्णन किया है। भाई-बहन, सन्तान आदिकी द्योतक रेखाओंके वर्णनके उपरान्त अंगुष्ठके अधोभागमें रहनेवाले 'यव'का विभिन्न परिस्थितियोंमें प्रतिपादन किया गया है। यवका यह प्रकरण नौ गाथाओंमें पाया जाता है। इस ग्रंथका उद्देश्य ग्रंथकारने स्वयं ही स्पष्ट कर दिया है।

इअ करलक्खणमेयं समासओ दंसिअं जइजणस्स
पुव्वायरिग्गहिं णरं परिक्खऊणं वयं दिज्जा ॥६१॥

यतियोंके लिये संक्षेपमें करलक्षणोंका वर्णन किया गया है। इन लक्षणोंके द्वारा व्रत ग्रहण करने वालेकी परीक्षा कर लेनी चाहिए। जब शिष्यमें पूरी योग्यता हो, व्रतोंका निर्वाह कर सके तथा व्रती जीवन-को प्रभावक बना सकें, तभी उसे व्रतोंकी दीक्षा देनी चाहिए। अतः स्पष्ट है कि इस ग्रंथका उद्देश्य जन-कल्याणके साथ नवागत शिष्यकी परीक्षा करना ही है। इसका प्रचार भी साधुओंमें रहा होगा।

ऋषिपुत्र और उनकी रचनाएँ

ऋषिपुत्रका नाम भी प्रथम श्रेणीके ज्योतिर्विदोंमें परिगणित है इन्हें गर्गका पुत्र कहा गया है। गर्ग मुनि ज्योतिषके धुरन्धर विद्वान् थे, इसमें कोई सन्देह नहीं। इनके सम्बन्धमें लिखा मिलता है।

जैन आसीज्जगद्वंद्यो गर्गनामा महामुनिः।
तेन स्वयं निर्णीतं यं सत्पाशास्त्र केवली ॥
एतज्ज्ञानं महाज्ञानं जैनर्षिभिरुदाहृतम्।
प्रकाश्य शुद्धशीलाय कुलीनाय महात्मना।

संभवतः इन्हीं गर्गके वंशमें ऋषिपुत्र हुए होंगे। इनका नाम ही इस बातका साक्षी है कि यह किसी ऋषिके वंशज थे अथवा किसी मुनिके आशीर्वादसे उत्पन्न हुए थे। ऋषिपुत्रका एक निमित्तशास्त्र ही उपल-लब्ध है। इनके द्वारा रची गयी एक संहिताका भी मदनरत्न नामक ग्रंथमें उल्लेख मिलता है। ऋषिपुत्रके उद्धरण बृहत्संहिताकी भट्टोत्पली टीकामें उपलब्ध हैं।

ऋषिपुत्रका समय वराहमिहिरके पहले होना चाहिए; यतः ऋषिपुत्रका प्रभाव वराहमिहिरपर स्पष्ट है। यहाँ दो-एक उदाहरण देकर स्पष्ट किया जाता है।

ससलोहिवण्णहोवरि संकुण इत्ति होइ णायव्वो।
संगामं पुण घोरं खग्गं सूगे णिवेदई ॥ —ऋषिपुत्र निमित्तशास्त्र
शशिरुधिकरीनभे भानौ नभस्थले भवन्ति संग्रामाः। —वराहमिहिर

अपने निमित्तशास्त्रमें पृथ्वीपर दिखाई देनेवाले, आकाशमें दृष्टिगोचर होनेवाले और विभिन्न प्रकारके

---

१. अर्हच्चूडामणिसार, १२, गाथा १-८

शब्द श्रवण द्वारा प्रकट होनेवाले इन तीन प्रकारके निमित्तों द्वारा फलाफलका अच्छा निरूपण किया है। वर्षोत्पात, देवोत्पात, राजोत्पात, उल्कोत्पात, गन्धर्वोत्पात इत्यादि अनेक उत्पातों द्वारा शुभाशुभत्वकी मीमांसा बड़े सुन्दर ढंगसे की है।

हरिभद्रकी ज्योतिष रचना

लग्नशुद्धि या लग्नकुंडिका नामकी रचना हरिभद्रकी मिलती है। हरिभद्र दर्शन, कथा और आगम शास्त्रके बहुत बड़े विद्वान् थे। इनका समय आठवीं शती माना जाता है। इन्होंने १४४० प्रकरण-ग्रन्थ रचे हैं। इनकी अबतक ८८ रचनाओंका पता मुनि जिन-विजयजीने लगाया है। इनकी २६ रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। रचनाके अध्ययनसे ऐसा लगता है, यह ग्रन्थ 'समराइच्च कहा' के रचयिता हरिभद्रका नहीं है; अन्य कोई हरिभद्र इसके रचयिता हैं।

लग्नशुद्धि प्राकृत भाषामें लिखी गयी ज्योतिष रचना है। इसमें लग्नके फल, द्वादश भावोंके नाम, उनसे विचारणीय विषय, लग्नके सम्बन्धमें ग्रहोंका फल, ग्रहोंका स्वरूप, नवांश, उच्चांश आदिका कथन किया गया है। जातकशास्त्र या होराशास्त्रका यह ग्रन्थ है। उपयोगिताकी दृष्टिसे इसका अधिक महत्व है। ग्रहोंके बल तथा लग्नकी सभी प्रकारसे शुद्धि, पापग्रहोंका अभाव, शुभग्रहोंका सद्भाव वर्णित है।

महावीराचार्य—ये धुरन्धर गणितज्ञ थे। ये राष्ट्रकूट वंशके अमोघवर्ष नृपतुंगके समयमें हुए थे, अतः इनका समय ई० सन् ८५० माना जाता है। इन्होंने ज्योतिषपटल और गणितसार संग्रह नामके ज्योतिष ग्रन्थोंकी रचना की है। ये दोनों ही ग्रन्थ गणितज्योतिषके हैं ? इन ग्रन्थोंसे इनकी विद्वत्ताका ज्ञान सहज ही में किया जा सकता है। गणितसारके प्रारम्भमें गणितकी प्रशंसा करते हुए बताया है कि गणितके बिना संसारके किसी भी शास्त्रकी जानकारी नहीं हो सकती है। कामशास्त्र, गान्धर्व, नाटक, सूपशास्त्र, वास्तुविद्या, छन्द-शास्त्र, अलंकार, काव्य, तर्क, व्याकरण, कलाप्रभृतिका यथार्थज्ञान गणितके बिना सम्भव नहीं है, अतः गणित विद्या सर्वोपरि है।

इस ग्रन्थमें संज्ञाधिकार, परिकर्म व्यवहार, कलासवर्ण व्यवहार, प्रकीर्ण व्यवहार, त्रैराशिक व्यवहार, मिश्रक व्यवहार, क्षेत्र-गणित व्यवहार, खात व्यवहार, एवं छाया व्यवहार नामके प्रकरण हैं। मिश्रक व्यवहार में समकुट्टीकरण, विषमकुट्टीकरण और मिश्रकुट्टीकरण आदि अनेक प्रकारके गणित हैं। पाटीगणित और रेखागणितकी दृष्टिसे इसमें अनेक विशेषताएँ हैं। इसके क्षेत्रव्यवहार प्रकरणमें आयतको वर्ग और वर्गको वृत्तमें परिणत करनेके सिद्धान्त दिये गये हैं। समत्रिभुज, विषमत्रिभुज, समकोण, चतुर्भुज, विषमकोण चतुर्भुज, वृत्तक्षेत्र, सूचीव्यास, पंचभुजक्षेत्र एवं बहुभुजक्षेत्रोंका क्षेत्रफल तथा घनफल निकाला गया है।

ज्योतिष पटलमें ग्रहोंके चार क्षेत्र, सूर्यके मण्डल, नक्षत्र और ताराओंके संस्थान, गति, स्थिति और संख्या आदिका प्रतिपादन किया है।

चन्द्रसेन—के द्वारा "केवलज्ञानहोरा" नामक महत्वपूर्ण विशालकाय ग्रन्थ लिखा गया है। यह ग्रन्थ कल्याणवर्माके पीछेका रचा गया प्रतीत होता है। इसके प्रकरण सारावलीसे मिलते-जुलते हैं, पर दक्षिणमें रचना होनेके कारण कर्णाटक प्रदेशके ज्योतिषका पूर्ण प्रभाव है। इन्होंने ग्रन्थके विषयको स्पष्ट करनेके लिए बीच-बीचमें कन्नड़-भाषाका भी आश्रय लिया है। यह ग्रन्थ अनुमानतः चार हजार श्लोकोंमें पूर्ण हुआ है। ग्रन्थके प्रारम्भमें कहा है—

होरा नाम महाविद्या वक्तव्यं च भवद्धितम्।
ज्योतिर्ज्ञानैकसारं भूषणं बुधपोषणम्॥

इन्होंने अपनी प्रशंसा भी प्रचुर परिमाणमें की है—

आगमः सदृशो जैनः चन्द्रसेनसमो मुनिः।
केवली सद्दशी विद्या दुर्लभा सचराचरे॥

इस ग्रन्थमें हेमप्रकरण, दाम्यप्रकरण, शिलाप्रकरण, मृत्तिकाप्रकरण, वृक्षप्रकरण, कार्पास-गुल्म बल्कल-तृण-रोम-चर्मपटप्रकरण. संख्याप्रकरण, नष्टद्रव्यप्रकरण, निर्वाहप्रकरण, अपत्यप्रकरण, लाभालाभप्रकरण, स्वरप्रकरण, स्वप्नप्रकरण, वास्तुप्रकरण, भोजनप्रकरण, दोहददोक्षाप्रकरण, अंजनविद्याप्रकरण, एवं विष-विद्याप्रकरण आदि हैं। ग्रन्थको आद्योपान्त देखनेसे अवगत होता है कि यह संहिता-विषयक रचना है, होराविषयक नहीं।

श्रीधर—ये ज्योतिषशास्त्रके मर्मज्ञ विद्वान हैं। इनका समय दशवीं शतीका अन्तिम भाग है। ये कर्णाटक प्रान्तके निवासी थे। इनकी माताका नाम अब्बोका और पिताका नाम बलदेवशर्मा था। इन्होंने बचपनमें अपने पितासे ही संस्कृत और कन्नड़-साहित्यका अध्ययन किया था। प्रारम्भमें ये शैव थे, किन्तु बादमें जैन धर्मानुयायी हो गये थे। इनकी गणितसार और ज्योतिर्ज्ञानविधि संस्कृत भाषामें तथा जातकतिलक कन्नड़-भाषामें रचनाएँ हैं। गणितसारमें अभिन्न गुणक, भागहार, वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल, भिन्न, समच्छेद, भागजाति, प्रभागजाति, भागानुबन्ध, भागमात्रजाति, त्रैराशिक, सप्तराशिक, नवराशिक, भाण्डप्रतिभाण्ड, मिश्रकव्यवहार, एकपत्रीकरण, सुवर्णगणित, प्रक्षेपकगणित, समक्रयविक्रय, श्रेणीव्यवहार, खातव्यवहार, चिति-व्यवहार, काण्ठकव्यवहार, राशिव्यवहार, एवं छायाव्यवहार आदि गणितोंका निरूपण किया है।

ज्योतिर्ज्ञानविधि प्रारम्भिक ज्योतिषका ग्रन्थ है। इसमें व्यवहारोपयोगी मुहूर्त्त भी दिये गये हैं। आरम्भमें संवत्सरोंके नाम, नक्षत्रनाम, योग, करण, तथा उनके शुभाशुभत्व दिये गये हैं। इसमें मासशेष, मासाधिपतिशेष, दिनशेष एवं दिनाधिपतिशेष आदिकी अद्भुत प्रक्रियाएँ बतायी गयी हैं।

जातकतिलक कन्नड़-भाषामें लिखित होरा या जातकशास्त्र सम्बन्धी रचना है। इस ग्रन्थमें लग्न ग्रह, ग्रहयोग एवं जन्मकुण्डली सम्बन्धी फलादेशका निरूपण किया गया है। दक्षिण भारतमें इस ग्रंथका अधिक प्रचार है।

चन्द्रोन्मीलन

चन्द्रोन्मीलन प्रश्न भी इस कालकी एक महत्वपूर्ण प्रश्नशास्त्रकी रचना है। इस ग्रंथके कर्त्ताके संबंधमें भी कुछ ज्ञात नहीं है। ग्रंथको देखनेसे यह अवश्य अवगत होता है कि इस प्रश्नप्रणालीका प्रचार खूब था। प्रश्नकर्त्ताके प्रश्नवर्णोंका संयुक्त, असंयुक्त, अभिहत, अनभिहत, अभिघातित, अभिधूमित, आलिंगित और दग्ध इन संज्ञाओंमें विभाजन कर प्रश्नोंका उत्तर दिया गया है। केरल प्रश्नदलमें चन्द्रोन्मीलनका खण्डन किया गगा है। "प्रोक्तं चन्द्रोन्मीलनं शुक्लवस्त्रैस्तच्चाशुद्धम्" इससे ज्ञात होता है कि यह प्रणाली लोकप्रिय थी। चन्द्रोन्मीलन नामका जो ग्रंथ उपलब्ध है, यह साधारण है। पर प्रश्नशास्त्रको दृष्टिसे इसका पर्याप्त मूल्य है।

उत्तरमध्यकाल

उत्तरमध्यकालमें फलित ज्योतिषका बहुत विकास हुआ। मुहूर्त्तजातक, संहिता, प्रश्न, सामुद्रिकशास्त्र प्रभृति विषयोंकी अनेक महत्वपूर्ण रचनाएँ लिखी गयी हैं। दुर्गदेवके नामसे यों तो अनेक रचनाएँ मिलती हैं, पर दो रचनाएँ प्रमुख हैं—'रिट्ठसमुच्चय' और अर्घकाण्ड। दुर्गदेवका समय सन् १०३२ माना गया है।

रिट्ठसमुच्चयकी रचना अपने गुरु संयमदेवके वचनानुसार की है। ग्रन्थमें एक स्थानपर संयमदेवके गुरु संयम-सेन और उनके गुरु माधवचन्द्र बताये गये हैं। रिट्ठसमुच्चय शौरसेनी प्राकृतमें २६१ गाथाओंमें रचा गया है। इसमें शकुन और शुभाशुभ निमित्तोंका संकलन किया गया है। लेखकने रिष्टोंके पिंडस्थ, पदस्थ और रूपस्थ नामक तीन भेद किये हैं। प्रथम श्रेणीमें अंगुलियोंका टूटना, नेत्रज्योतिकी हीनता, रसज्ञानकी न्यूनता, नेत्रोंसे लगातार जलप्रवाह एवं जिह्वा न देख सकना आदिको परिगणित किया है। द्वितीय श्रेणीमें सूर्य और चन्द्रमा-का अनेकों रूपोंमें दर्शन, प्रज्वलित दीपकको शीतल अनुभव करना, चन्द्रमाके त्रिभंगी रूपमे देखना, चन्द्र-लांछनका दर्शन न होना इत्यादिको ग्रहण किया है। तृतीयमें निजछाया, परच्छाया, तथा छायापुरुषका वर्णन है। प्रश्नाक्षर, शकुन और स्वप्न आदिका भी विस्तारपूर्वक प्रतिपादन किया गया है।

अर्घकाण्डमें तेजी-मंदीका ग्रहयोगके अनुसार विचार किया गया है। यह ग्रंथ भी १४९ प्राकृत गाथाओंमें लिखा गया है।

मल्लिसेण—संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाओंके प्रकांड विद्वान् थे। इनके पिताका नाम जिनसेन था, ये दक्षिण भारतके धारवाड जिलेके अन्तर्गत गदगतालुका नामक स्थानके रहनेवाले थे। इनका समय ई० सन् १०४३ माना गया है। इनका आयसद्भाव नामक ज्योतिष ग्रंथ उपलब्ध है। प्रारम्भमें ही कहा है—

सुग्रीवादिमुनीन्द्रैः रचितं शास्त्रं यदात्रसद्भावम्।
तत्सम्प्रत्यार्थाभिर्विरच्यते मल्लिषेणेन॥
ध्वज-धूम-सिंह-मण्डल-वृषखरगजवायसा भवन्त्यायाः।
ज्ञायन्ते ते विद्वद्भिरिहैकोत्तरगणनया चाष्टौ॥

इन उद्धरणोंसे स्पष्ट है कि इनके पूर्व भी सुग्रीव आदि जैन मुनियोंके द्वारा इस विषयकी और रच-नाएँ भी हुई थीं, उन्हींके सारांशको लेकर आयसद्भाव की रचना की गयी है। इस कृतिमें १९५ आर्याएँ और अन्तमें एक गाथा, इस तरह कुल १९६ पद्य हैं। इसमें ध्वज, धूम, सिंह, मण्डल, वृष, खर, गज और वायस इन आठों आर्योंके स्वरूप और फलादेश वर्णित हैं।

भट्टवोसरि

"आयज्ञानतिलक" नामक ग्रंथके रचयिता दिगम्बराचार्य दामनन्दीके शिष्य भट्टवोसरि हैं। यह प्रश्नशास्त्रका महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमें २५ प्रकरण और ४१५ गाथाएँ हैं। ग्रंथकर्त्ताकी स्वोपज्ञ वृत्ति भी है। दामनन्दीका उल्लेख श्रवणबेल्गोलके शिलालेख नं० ५५ में पाया जाता है। ये प्रभाचन्द्राचार्यके सधर्मा या गुरु-भाई थे। अतः इनका समय विक्रम संवत्की ११ वीं शती है[1] और भट्टवोसरिका भी समय इन्हीं के आसपास है।

इस ग्रन्थमें ध्वज, धूम, सिंह, गज, खर, श्वान, वृज, ध्वांक्ष इन आठ आयों द्वारा प्रश्नोंके फला-देशका विस्तृत विवेचन किया है। इसमें कार्य-अकार्य, जय-पराजय, सिद्धि-असिद्धि आदिका विचार विस्तार-पूर्वक विद्यमान है। प्रश्नशास्त्रकी दृष्टिसे यह ग्रन्थ अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उदयप्रभदेव—इनके गुरुका नाम विजयसेन सूरि था। इनका समय ई० सन् १२२० बताया जाता है। इन्होंने ज्योतिष विषयक "आरम्भ सिद्धि" अपरनामा "व्यवहार चर्या" ग्रन्थकी रचना की है। इस ग्रन्थ पर वि० सं० १५१४में रत्नशेखर सूरिके शिष्य 'हेमहंस गणि'ने एक विस्तृत टीका लिखी है। इस टीकामें इन्होंने मुहुर्त संबंधी साहित्यका

१. प्रशस्तिसंग्रह, प्रथम भाग, संपादक—जुगलकिशोर मुख्तार, प्रस्तावना पृ० ९५-९६ तथा पुरातन-वाक्य-सूचीकी प्रस्तावना पृ० १०१-१०२।

अच्छा संकलन किया है। लेखकने ग्रन्थके प्रारम्भमें ग्रन्थोक्त अध्यायोंका संक्षिप्त नामकरण निम्नप्रकार दिया है।

देवज्ञदीपकालिकां व्यवहारचर्यामारम्भसिद्धिमुदयप्रभदेवानाम् शास्तिक्रमेण तिथिवारम-योगराशिगोचर्यकार्यागमवास्तुविलग्नभिः।

हेमहंसगणिने व्यवहारचर्या नामकी सार्थकता दिखलाते हुए लिखा है—

"व्यवहारशिष्टजनसमाचारः शुभतिथिवारमादिषु शुभकार्यकरणादिरूपस्तस्यचर्या।" यह ग्रंथ मुहूर्त्तचिन्तामणिके समान उपयोगी और पूर्ण है। मुहूर्त्त विषयकी जानकारी इस अकेले ग्रन्थके अध्ययन से की जा सकती है।

राजादित्य—इनके पिताका नाम श्रीपति और माताका नाम वसन्ता था। इनका जन्म कोडिमण्डल के "युविनबाग" नामक स्थानमें हुआ था। इनके नामान्तर राजवर्म, भास्कर और वाचिराज बताये जाते हैं। ये विष्णुवर्धन राजाकी सभाके प्रधान पण्डित थे, अतः इनका समय सन् ११२० के लगभग है। यह कवि होनेके साथ साथ गणित और ज्योतिषके माने हुए विद्वान थे। "कर्णाटक कवि चरिते"के लेखकका कथन है कि कन्नड़-साहित्यमें गणितका ग्रंथ लिखनेवाला यह सबसे बड़ा विद्वान् था। इनके द्वारा रचित व्यवहार गणित, क्षेत्र गणित, व्यवहाररत्न तथा जैन गणित सूत्रटीकोदाहरण और लीलावती ये गणित ग्रन्थ उपलब्ध हैं।

पद्मप्रभसूरि—नागौरकी तपागच्छीय पट्टावलीसे पता चलता है कि ये वादिदेवसूरिके शिष्य थे। इन्होंने "भुवनदीपक" या "ग्रहभावप्रकाश" नामक ज्योतिषका ग्रन्थ लिखा है। इस ग्रंथ पर सिंहतिलक सूरिने वि० सं० १३३६ में एक विवृति लिखी है। "जैन साहित्य नो इतिहास" नामक ग्रंथमें इनके गुरुका नाम विबुधप्रभ सूरि बताया है। भुवनदीपकका रचनाकाल वि० सं० १२९४ है। यह ग्रंथ छोटा होते हुए भी अत्यन्त उपयोगी है। इसमें ३६ द्वार-प्रकरण हैं। राशि स्वामी, उच्चनीचत्व मित्र शत्रु, राहुका ग्रह, केतुस्थान, ग्रहोंके स्वरूप, द्वादश भावोंसे विचारणीय बातें, इष्टकाल ज्ञान, लग्न सम्बन्धी विचार, विनष्ट-गृह, राजयोगका कथन, लाभालाभ विचार, लग्नेशकी स्थितिका फल, प्रश्न द्वारा गर्भ विचार, प्रश्न द्वारा प्रसवज्ञान, यगजविचार, मृत्युयोग, चौर्यज्ञान, द्रेष्काणादिके फलोंका विचार विस्तारसे किया है। इस ग्रंथमें कुल १७० श्लोक हैं। इसकी भाषा संस्कृत है।

नरचन्द्र उपाध्याय—ये कातद्रुहगच्छके सिंहसूरिके शिष्य थे। इन्होंने ज्योतिषशास्त्रके कई ग्रंथोंकी रचना की है। वर्तमानमें इनके बेड़ा जातकवृत्ति, प्रश्नशतक, प्रश्न चतुर्विंशतिका, जन्मसमुद्र-टीका, लग्न-विचार और ज्योतिषप्रकाश उपलब्ध हैं। नरचन्द्रने सं० १३२४में माघ सुदी ८ रविवारको बेड़ाजातक वृत्तिकी रचना १०५० श्लोक प्रमाणमें की है। ज्ञानदीपिका नामकी एक अन्य रचना भी इनकी मानी जाती है। ज्योतिषप्रकाश संहिता और जातक संबंधी महत्वपूर्ण रचना है।

अट्ठ कवि या अर्हद्दास—ये जैन ब्राह्मण थे। इनका समय ईस्वी सन् १३००के आस पास है। अर्हद्दासके पिता नागकुमार थे। अर्हद्दास कन्नड़ भाषाके प्रकाण्ड विद्वान थे। इन्होंने कन्नड़में अट्ठमत नामक ज्योतिषका महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखा है। शक् संवत्की चौदहवीं शताब्दीमें भास्कर नामके आन्ध्र कविने इस ग्रंथका तेलगू भाषामें अनुवाद किया था। अट्ठमतमें वर्षाके चिन्ह, आकस्मिक लक्षण, शकुन, वायुचक्र, गृहप्रवेश, भूकम्प, भूजात-फल, उत्पात लक्षण, परिवेषलक्षण, इन्द्रधनु-लक्षण, प्रथम गर्भ लक्षण, द्रोण संख्या, विद्युत लक्षण, प्रतिसूर्य लक्षण, संवत्सरफल, ग्रहद्वेष, मेघोंके नाम, कुल-वर्ण, ध्वनिविचार, देशवृष्टि, मासफल, राहुचन्द्र नक्षत्रफल, संक्रान्तिफल आदि विषयोंका निरूपण किया गया[1] है।

---

१. अभूद्भृगुपुरे वरे गणकचक्रचूडामणिः, यन्त्रराज, अ० ५, श्लोक ६७।

महेन्द्रसूरि—ये भृगुपुर निवासी मदनसूरिके शिष्य फिरोजशाह तुगलकके प्रधान सभापण्डित थे। इन्होंने नाड़ीवृत्तके धरातलमें गोलपृष्ठस्थ सभी वृत्तोंका परिणमन करके यन्त्रराज नामक ग्रहगणितका उपयोगी ग्रन्थ लिखा है। इनके शिष्य मलयेन्दुसूरिने इसपर सोदाहरण टीका लिखी है। इस ग्रन्थमें परमाक्रान्ति २३ अंश ३५ कला मानी गयी है। इसकी रचना शक संवत् १२९२ में हुई है। इसमें गणिताध्याय, यन्त्रघटनाध्याय, यन्त्ररचनाध्याय, यन्त्रशोधनाध्याय, और यन्त्रविचारणाध्याय ये पाँच अध्याय हैं। क्रमोत्क्रमज्यानयन, भुजकोटिज्याका चापसाधन, क्रान्तिसाधक धुज्याखंडसाधन, धुज्याफलानयन, सौम्य गणितके विभिन्न गणितोंका साधन, अक्षांशसे उन्नतांश साधन, ग्रंथके नक्षत्र ध्रुवादिकसे अभीष्टवर्षके ध्रुवादिकका साधन, नक्षत्रोंके दृक्कर्म-साधन, द्वादश राशियोंके विभिन्न वृत्तसंबंधी गणितोंका साधन, इष्ट शंकुसे छायाकरण साधन यन्त्रशोधन प्रकार और उसके अनुसार विभिन्न राशि नक्षत्रोंके गणितका साधन, द्वादशभाव और नवग्रहोंके स्पष्टीकरणका गणित एवं विभिन्न यन्त्रों द्वारा सभी ग्रहोंके साधनका गणित बहुत सुन्दर ढंगसे बताया गया है। इस ग्रन्थमें पंचांग निर्माण करनेकी विधिका निरूपण किया है।

भद्रबाहु संहिता

भद्रबाहु संहिता अष्टांग निमित्तका एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसके आरम्भके २० अध्यायोंमें निमित्त और संहिता विषयका प्रतिपादन किया गया है। ३०वें अध्यायमें अरिष्टोंका वर्णन किया गया है। इस ग्रन्थका निर्माण श्रुतकेवली भद्रबाहुके वचनोंके आधारपर हुआ है। विषयनिरूपण और विषयवस्तुकी दृष्टिसे इसका रचनाकाल ८-९वीं शतीके पश्चात् नहीं हो सकता है। हाँ, लोकोपयोगी रचना होनेके कारण उसमें समय-समयपर संशोधन और परिवर्तन होता रहा है। अतः इस ग्रन्थमें पीछेके आचार्योंने भी प्रक्षिप्त अंश जोड़ दिये हैं।

इस ग्रंथमें व्यंजन, अंग, स्वर, भौम, छन्न, अन्तरिक्ष, लक्षण एवं स्वप्न इन आठों निमित्तोंका फल-निरूपण सहित विवेचन किया गया है। उल्का, परिवेशष, विद्युत, अभ्र, सन्ध्या, मेघ, वात, प्रवर्षण, गन्धर्व-नगर, गर्भलक्षण, यात्रा, उत्पात, ग्रहचार, ग्रहयुद्ध, स्वप्न, मुहूर्त, तिथि, करण, शकुन, पाक, ज्योतिष, वास्तु, इन्द्रसम्पदा, लक्षण, व्यंजन, चिह्न, लग्न, विद्या, औषध, प्रभृति सभी निमित्तोंके बलाबल, विरोध और पराजय आदि विषयोंका विस्तारपूर्वक विवेचन किया गया है। यह निमित्तशास्त्रका बहुत ही महत्वपूर्ण और उपयोगी ग्रन्थ है। इससे वर्षा, कृषि, धान्यभाव, एवं अनेक लोकोपयोगी बातोंकी जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

केवलज्ञानप्रश्नचूडामणि

"केवलज्ञानप्रश्नचूडामणि" के रचयिता 'समन्तभद्र'का समय १३वीं शती है। ये समन्त विजयप्पके पुत्र थे। विजयप्पके भाई नेमिचन्द्रने प्रतिष्ठातिलककी रचना आनन्द संवत्सरमें चैत्रमासकी पंचमीको की है। अतः समन्तभद्रका समय १३वीं शती है। इस ग्रन्थमें धातु, मूल, जीव, नष्ट, मुष्टि, लाभ, हानि, रोग, मृत्यु, भोजन, शयन, शकुन, जन्म, कर्म, अस्त्र, शल्य, वृष्टि, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, सिद्धि, असिद्धि, आदि विषयोंका प्ररूपण किया गया है। इस ग्रन्थमें अ च ट त प य श अथवा आ ए क च ट प य श इन अक्षरोंका प्रथम वर्ग; आ, ऐ ख छ उ थ फ र ष इन अक्षरोंका द्वितीय वर्ग; इ ओ ग ज ड द ब ल स इन अक्षरोंका तृतीय वर्ग; ई औ घ झ भ व ह, न अक्षरोंका चतुर्थ वर्ग और उ ऊ ण न म अं अः इन अक्षरोंका पंचम वर्ग बताया गया है। प्रश्नकर्त्ताके वाक्य या प्रश्नाक्षरोंको ग्रहणकर संयुक्त, असंयुक्त, अभिहित और अभिघातित इन पाँचों द्वारा तथा आलिंगित अभिधूमित और दग्ध इन तीनों क्रियाविशेषणों द्वारा प्रश्नोंके फलाफलका विचार किया

गया है। इस ग्रन्थमें मूक प्रश्नोंके उत्तर भी निकाले गये हैं। यह प्रश्नशास्त्रकी दृष्टिसे अत्यन्त उपयोगी है।

हेमप्रभ—इनके गुरुका नाम देवेन्द्रसूरि था। इनका समय चौंदहवीं शतीका प्रथमपाद है। संवत् १३०५ में त्रैलोक्य प्रकाशकी रचना की गयी है। इनकी दो रचनाएँ उपलब्ध हैं—"त्रैलोक्यप्रकाश" और "मेघमाला"।

"त्रैलोक्यप्रकाश" बहुत ही महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमें ११६० श्लोक हैं। इस एक ग्रन्थके अध्ययनसे फलित ज्योतिषकी अच्छी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। आरंभमें ११० श्लोकोंमें लग्नज्ञानका निरूपण है। इस प्रकरणमें भावोंके स्वामी, ग्रहोंके छः प्रकारके बल, दृष्टिगोचर, शत्रु, मित्र, वक्री-मार्गी, उच्च-नीच, भावोंको संज्ञाएँ, भावराशि, ग्रहबल विचार आदिका विवेचन किया गया है। द्वितीय प्रकरणमें योग-विशेष—धनी, सुखी, दरिद्र, राज्यप्राप्ति, सन्तानप्राप्ति, विद्याप्राप्ति आदिका कथन है। तृतीय प्रकरणमें निधिप्राप्ति घर या जमीनके भीतर रखे गये धन और उस धनको निकालनेकी विधिका विवेचन है। यह प्रकरण बहुत ही महत्वपूर्ण है। इतने सरल और सीधे ढंगसे इस विषयका निरूपण अन्यत्र नहीं है। चतुर्थ प्रकरण भोजन और पंचम ग्रामपृच्छा है। इन दोनों प्रकरणोंमें नामके अनुसार विभिन्न दृष्टियोंसे विभिन्न प्रकारके योगोंका प्रतिपादन किया गया है। षष्ठ पुत्रप्रकरण है, इसमें सन्तानप्राप्तिका समय, सन्तान संख्या, पुत्र-पुत्रियोंकी प्राप्ति आदिका कथन है। सप्तम प्रकरणमें छठे भावसे दाम्पत्य संबंध और नवममें विभिन्न दृष्टियोंसे स्त्री-सुखका विचार किया गया है। दशम प्रकरण स्त्रीजातकमें स्त्रियोंकी दृष्टिसे फलाफलका निरूपण किया गया है। एकादशमें परचक्रगमन, द्वादशमें गमनागमन, त्रयोदशमें युद्ध, चतुर्दशमें सन्धिविग्रह, पंचदशमें वृक्षज्ञान, षोडशमें ग्रहदोष-ग्रहपीड़ा, सप्तदशमें आयु, अष्टादशमें प्रवहण और एकोनविंशमें प्रवज्याका विवेचन किया है। बीसवें प्रकरणमें राज्य या पदप्राप्ति, इक्कीसवेंमें वृष्टि, बाइसवेंमें अर्घकाण्ड, तेइसवेंमें स्त्रीलाभ, चौबीसवेंमें नष्ट वस्तुकी प्राप्ति एवं पच्चीसवेंमें ग्रहोंके उदयास्त, सुभिक्ष-दुर्भिक्ष, महर्घ, समर्घ और विभिन्न प्रकारसे तेजी मंदीकी जानकारी बतलाई गई है। इस ग्रंथकी प्रशंसा स्वयं ही इन्होंने की है।[1]

श्री मद्देवेन्द्रसूरीणां शिष्येण ज्ञानदर्पणः।
विश्वप्रकाशकश्चक्रे श्रीहेमप्रभसूरिणा॥

श्री देवेन्द्रसूरि के शिष्य श्री हेमप्रभ सूरिने विश्वप्रकाश और 'ज्ञान दर्पण' ग्रन्थको रचा।

'मेघमाला' की श्लोक संख्या १०० बतायी गयी है। प्रो० एच० डी० वेलंकारने जैनग्रंथावलीमें उक्त प्रकारका निर्देश किया है।

रत्नशेखर सूरिने "दिनशुद्धि दीपिका" नामक एक ज्योतिष ग्रंथ प्राकृत भाषामें लिखा है। इनका समय १५ वीं शती बताया जाता है। ग्रंथके अन्तमें निम्न प्रशस्ति-गाथा मिलती है।

सिरिवयरसेणगुरुपट्ट–वाहीसिरिहैमतिलयसूरीणं।
पापपसाया एसा, रयणसिहरसूरिणा विहिया॥ १४४॥

वज्रसेन गुरुके पट्टधर श्री हेमतिलक सूरिके प्रसादसे रत्नशेखर सूरिने दिनशुद्धि प्रकरणकी रचना की।

इसे "मुनिमणभवणपयासं" अर्थात् मुनियोंके मन रूपी भवनको प्रकाशित करनेवाला कहा है। इसमें कुल १४४ गाथाएँ हैं। इस ग्रंथमें पारद्वार, कालहोरा, वारप्रारम्भ, कुलिकादियोग, वर्ज्यप्रहार, नन्दमद्रादि

---

१. जैन ग्रंथावली १५, पृ० ३५६।
त्रैलोक्य प्रकाश, १६, श्लोक० ४३०।

संज्ञाएँ, क्रूरतिथि, वर्ज्यतिथि, दग्धतिथि करण, भद्राविचार, नक्षत्रद्वार, राशिद्वार, लग्नद्वार, चन्द्रअवस्था, शुभरवियोग, कुमारवियोग, राजयोग, अनन्दादियोग, अमृतसिद्धियोग, उत्पादियोग, लग्नविचार, प्रयाणकालीन शुभाशुभविचार, वास्तुमहूर्त, षडष्टकादि, राशिकूट, नक्षत्रयोनि विचार, विविध मुहूर्त, नक्षत्र दोष विचार, छाया साधन और उसके द्वारा फलादेश एवं विभिन्न प्रकारके शकुनोंका विवेचन किया गया है। यह ग्रंथ व्यवहारोपयोगी है।

चौदहवीं शताब्दीमें ठक्कुर फेरूका नाम भी उल्लेखनीय है। इन्होंने "गणितसार" और 'जो इस सार' ये दो ग्रंथ महत्वपूर्ण लिखे हैं। 'गणितसार' में पाटीगणित और परिकर्माष्टककी मीमांसा की गयी है। जोइस सारमें नक्षत्रोंकी नामावलीसे लेकर ग्रहोंके विभिन्न योगोंका सम्यक् विवेचन किया गया है।

उपर्युक्त ग्रंथोंके अतिरिक्त हर्षकीर्ति कृत 'जन्मपत्र-पद्धति', जिनवल्लभकृत 'स्वप्नसंहितका', जयविजयकृत शकुनदीपिका, पुण्यतिलककृत "ग्रहायुसाधन", गर्गमुनिकृत 'पासावली', समुद्रकविकृत सामुद्रिक शास्त्र, मानसागरकृत मानसागरी पद्धति, जिनसेनकृत निमित्तदीपक आदि ग्रंथ भी महत्वपूर्ण हैं। ज्योतिषसार, ज्योतिषसंग्रह, शकुनसंग्रह, शकुनदीपिका, शकुनविचार, जन्मपद्धति, ग्रहयोग, ग्रहफलनामके अनेक ऐसे संग्रह ग्रंथ उपलब्ध हैं, जिनके कर्त्ताका पता ही नहीं चलता है।

अर्वाचीनकालका ज्योतिष वाङ्मय

अर्वाचीनकालमें कई अच्छे ज्योतिर्विद हुए हैं। जिन्होंने जैन ज्योतिष साहित्यको बहुत आगे बढ़ाया है।[1] यहाँ प्रमुख लेखकोंका उनकी कृतियोंके साथ परिचय दिया जाता है। इस युगके सबसे प्रमुख मेघविजयगीण हैं। ये ज्योतिषशास्त्रके प्रकांड विद्वान् थे। इनका समय वि० सं० १७३० के आसपास माना गया है। इनके द्वारा रचित 'मेघमहोदय' या 'वर्षप्रबोध', 'उदयदीपिका', 'रमलशास्त्र' और 'हस्तसंजीवन' आदि मुख्य हैं। 'वर्षप्रबोध' में १३ अधिकार और ३५ प्रकरण हैं। इसमें उत्पातप्रकरण, कर्पूरचक्र, पद्मिनीचक्र, मण्डलप्रकरण, सूर्य और चन्द्रग्रहणका फल, मास, वायु-विचार, संवत्सरका फल, ग्रहोंके उदयास्त और वक्री, अयन-मास-पक्ष विचार, संक्रान्तिफल, वर्षके राजा, मन्त्री, धान्येश, रसेश आदिका निरूपण, आय-व्यय विचार, सर्वतोभद्रचक्र एवं शकुन आदि विषयोंका निरूपण किया है। ज्योतिष विषयकी जानकारी प्राप्त करनेके लिये यह रचना उपयोगी है।

"हस्त संजीवन" में तीन अधिकार हैं। प्रथम दर्शनाधिकारमें हाथ देखनेकी प्रक्रिया, हाथकी रेखाओं परसे ही मास, दिन, घड़ी, फल आदिका कथन एवं हस्तरेखाओंके आधारपरसे ही लग्नकुण्डली बनाना तथा उसका फलादेश निरूपण करना वर्णित है। द्वितीय स्पर्शनाधिकारमें हाथकी रेखाओंके स्पर्श परसे ही समस्त शुभाशुभ फलका प्रतिपादन किया गया है। इस अधिकारमें मूल प्रश्नोंके उत्तर देनेकी प्रक्रिया भी वर्णित है। तृतीय विमर्शनाधिकारमें रेखाओं परसे ही आयु, सन्तान, स्त्री, भाग्योदय, जीवनकी प्रमुख घटनाएँ, सांसारिक सुख, विद्या, बुद्धि, राज्यसम्मान और पदोन्नतिका विवेचन किया गया है। यह ग्रन्थ सामुद्रिक शास्त्रकी दृष्टिसे महत्वपूर्ण और पठनीय है।

उभयकुशल—का समय १८वीं शतीका पूर्वार्द्ध है। ये फलित ज्योतिषके अच्छे ज्ञाता थे। इन्होंने विवाहपटल और चमत्कारचिन्तामणिटबा नामक दो ग्रन्थोंकी रचना की है। ये मुहूर्त्त और जातक, दोनों ही विषयोंके पूर्ण पंडित थे। चिन्तामणिटबामें द्वादश भावोंके अनुसार ग्रहोंके फलादेशका प्रतिपादन किया गया है। विवाहपटलमें विवाहके मुहूर्त्त और कुण्डली मिलानका सांगोपांग वर्णन किया गया है।

---

१. केवलज्ञानप्रश्नचूडामणिकी प्रस्तावना भाग, १७।

लब्धचन्द्रगणि—खतरगच्छीय कल्याणनिधानके शिष्य थे। इन्होंने वि० सं० १७५१ में कार्तिक मासमें जन्मपत्रीपद्धति नामक एक व्यवहारोपयोगी ज्योतिषका ग्रन्थ बनाया है। इस ग्रन्थमें इष्टकाल, भयात, भभोग, लग्न, नवग्रहोंका स्पष्टीकरण, द्वादशभाव, तात्कालिक चक्र, दशबल, विंशोत्तरी दशा साधन आदिका विवेचन किया गया है।

बाघती मुनि—ये पार्श्वचन्द्रगच्छीय शाखाके मुनि थे। इनका प्रारंभ समय वि० सं० १७८३ माना जाता है। इन्होंने तिथिसारिणी नामक ज्योतिषका महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखा है। इसके अतिरिक्त इनके दो-तीन फलित ज्योतिषके भी मुहूर्त्त सम्बन्धी उपलब्ध ग्रन्थ हैं। इनका सारणी ग्रन्थ, मकरन्द सारणीके समान उपयोगी है।

यशस्वतसागर—इनका दूसरा नाम जसवंतसागर भी बताया जाता है। ये ज्योतिप, न्याय, व्याकरण और दर्शन शास्त्रके धुरन्धर विद्वान् थे। इन्होंने ग्रहलाघवके ऊपर वार्तिक नामकी टीका लिखी है। वि० सं० १७६२ में जन्मकुण्डली विषयको लेकर "यशोराज-पद्धति" नामक एक व्यवहारोपयोगी ग्रंथ लिखा है। यह ग्रंथ जन्मकुण्डलीकी रचनाके नियमोंके सम्बन्धमें विशेष प्रकाश डालता है। उत्तरार्द्धमें जातकपद्धतिके अनुसार संक्षिप्त फल बतलाया है।

इनके अतिरिक्त विनयकुशल, हरिकुशल, मेघगण, जिनपाल, जयरत्न, सूरचन्द्र, आदि कई ज्योतिषियोंकी ज्योतिष सम्बन्धी रचनाएँ उपलब्ध हैं। जैन ज्योतिष साहित्यका विकास आज भी शोधटीकाओंका निर्माण एवं संग्रहग्रंथोंके रूपमें हो रहा है।[1] संक्षेपमें अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित, त्रिकोणमितिगणित, प्रतिभागणित, पंचांगनिर्माणगणित, जन्मपत्रनिर्माणगणित आदि गणित-ज्योतिषके अंगोंके साथ होराशास्त्र, संहिता,[2] मुहूर्त, सामुद्रिक शास्त्र, प्रश्नशास्त्र, स्वप्नशास्त्र, निमित्त शास्त्र, रमणशास्त्र, पासाकेवली प्रभृति फलित अंगोंका विवेचन जैन साहित्यमें किया गया है। जैन ज्योतिष साहित्यके अब तक पांच सौ ग्रंथोंका पता लग चुका है।[3]

लोकविजयका ज्योतिषमें स्थान

संहिता-विषयक साहित्यमें जब राष्ट्रीय फलादेशका विवेचन करना आवश्यक हो गया और वर्षा, कृषि एवं राष्ट्र सम्बन्धी शुभाशुभ फलोंका प्रतिपादन इस शास्त्रका विषय बन गया तो स्वतन्त्र रूपमें ऐसे ग्रंथोंका निर्माण होने लगा, जिनमें राष्ट्र-कल्याणकी चर्चा निबद्ध रहती थी। वाराही संहितामें राष्ट्रीय नियमोंका समावेश तो है ही, पर कृषि और वर्षाका विचार भी किया गया है। संहिता-ग्रंथोंमें वर्षा और कृषिका विचार निम्नलिखित चार निमित्तोंसे किया गया है:—

१ भौतिक या भौम निमित्त—देश, मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, पतंग प्रभृति द्वारा वर्षाके ज्ञान होनेको भौतिक निमित्त या भौम निमित्त कहते हैं।

२ आन्तरिक्ष निमित्त—वायु, बादल, विद्युत, गर्जन, तर्जन, सन्ध्या, दिग्दाह, प्रतिसूर्य, तारा, कुण्डल आँधी, गन्धर्वनगर, इन्द्र धनुष, वायु धारण, आदिसे वर्षाके ज्ञान होनेको आन्तरिक्ष निमित्त कहते है।

३ दिव्य निमित्त—सूर्य-चन्द्रग्रहण, पुच्छल तारे, सूर्यके चिन्ह, सप्तनाड़ीचक्र, ग्रहोंके उदयास्त, संक्रान्ति आदिसे वृष्टिज्ञान प्राप्त करनेको दिव्य निमित्त कहते हैं।

---

१. भद्रबाहु-संहिताका प्रस्तावना अंश, १८.

२. महावीर स्मृतिग्रंथके अन्तर्गत "जैन ज्योतिषकी व्यावहारिकता" शीर्षक निबन्ध, पृ० १९६—१९७,१९.

३. वर्णी अभिनन्दन ग्रंथके अन्तर्गत भारतीय ज्योतिषका पोषक जैन ज्योतिष, पृ० ४०८—४८४. २०.

४ मिश्रनिमित्त—कार्तिकसे आश्विन तक बारह महीनोंके प्रत्येक दिनके तथा विशेष रूपसे अक्षयतृतीया, आषाढ़ीपूर्णिमा, होलिका, दीपावली, विजयादशमीके शकुनों तथा चिन्होंसे वर्षा ज्ञान करनेको मिश्रनिमित्त कहते हैं।

इन निमित्तोंमें भौमनिमित्तकी अपेक्षा आन्तरिक्ष निमित्त और आन्तरिक्षको अपेक्षा दिव्यनिमित्त इस प्रकार उत्तरोत्तर एक दूसरेसे अधिक बलवान् है। अतः भौमनिमित्तका फल थोड़ी दूर तक, आन्तरिक्षका फल मण्डल तक, दिव्य निमित्तका फल एक प्रदेश या प्रान्त तक और मिश्र निमित्तका फल सर्वत्र होता है। भौम निमित्तोंसे वृष्टिका परिज्ञान तत्काल किया जाता है।

साधारणतः संहिता-ग्रंथोंमें निम्नलिखित प्रमेयोंका विवेचन आवश्यक माना जाता है :—

१. वृष्टि-विज्ञान
२. कृषिकी उन्नति और प्रगति
३. जय-पराजय सम्बन्धी परिज्ञान
४. अष्टाङ्ग-निमित्त
५. विद्युत-उल्का, मेघ, परिवेष–दिग्दाह, संध्या-स्वरूप, गन्धर्वनगर, मेघगर्भ, उत्पातका वर्णन.
६. अंग-स्फुरण एवं अंग-विद्या
७. ग्रहानुसार फल-विवेचन
८. उदय अस्त एवं ग्रहोंके मार्गानुसार फलकथन
९. स्वप्न एवं उनके फलादेश
१०. रोग-विज्ञान

संहिताके इन प्रमेयोंका वर्णन इतने संश्लिष्ट रूपमें किया जाता है जिससे प्रत्येक प्रमेयके विषयमें पूरी जानकारी नहीं हो पाती है। फलतः वर्षा एवं कृषिके विचारके लिए स्वतन्त्र रूपमें कुछ ग्रंथ लिखे गए। लोक-विजय-यन्त्र इसी उद्देश्यकी पूर्तिके लिए लिखा गया है। वर्षा और कृषिके विचारके लिए ज्योतिषमें यह सबसे प्रमुख और महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। अभी तक ऐसा कोई आर्ष-ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है जो इस विषय पर अधिकारी और पूर्ण माना जा सके। सामाजिक सुख-शान्ति एवं कष्ट विपत्तिको अवगत करनेके लिए यह ग्रंथ विशेष सहायक है। समग्र भारतीय ज्योतिषमें इसका महत्वपूर्ण स्थान है। इसके रचयिता एवं रचना कालका निश्चित परिज्ञान नहीं है फिर भी इसकी शैली, भाषा, एवं वर्ण्य-विषयके आधारपर इसकी प्राचीनतामें सन्देह नहीं रहता। प्रयास करने पर भी लोक-विजय-यन्त्रकी कोई हस्तलिखित प्रति उपलब्ध नहीं हो सकी। इस ग्रंथका प्रकाशन 'वृहज्ज्योतिषार्णव' के 'मिश्र-स्कन्ध' के 'चक्रावली' संग्रहमें 'प्राचीन जैन गाथा' के नामसे उल्लिखित हैं। 'मेघ-महोदय' ग्रंथमें भी इस चक्रकी गाथाएँ उपलब्ध होती हैं। इन्हीं गाथाओंको व्यवस्थित रूप देकर इस ग्रंथका संस्करण उपस्थित किया जा रहा है। यह सत्य है कि वर्षा ज्ञानके लिए ज्योतिष शास्त्रमें 'सप्तनाड़ी चक्र' 'समुद्र-चक्र' 'आय-चक्र' 'कुलाल-चक्र' 'द्वादश-नाड़ी चक्र' 'शंख-चक्र' आदि प्रधान हैं। इन सभी चक्रोंकी अपेक्षा यह लोक-विजय-यन्त्र अधिक प्रामाणिक और महत्वपूर्ण है।

इस यन्त्रके रचयिताने अक्षय-तृतीयाके दिन प्रथम तीर्थङ्करकी पारणा-वेलासे गणित कर दिशा-विदिशाओंमें स्थापित किए गए ध्रुवाङ्कोंके आधारसे फलादेशका आनयन किया है। नौ कोठोंसे शुद्ध चक्र बनाकर मध्यके कोष्टकमें एक सौ पैंतालिसका अङ्क लिखे। तत्पश्चात् उसमें दिशा-विदिशाके क्रमसे एक-एक अङ्क बढ़ाकर प्रदक्षिणारूप एक सौ तिरेपन तकके ध्रुवाङ्क स्थापित करे। इस क्रममें देशोंका विचार उज्जयिनीसे किया जाता है। क्योंकि रेखांशके निकट यही नगरी पड़ती है। अतः मध्य-प्रदेशका ध्रुवाङ्क एक सो पैंतालिस

है। पूर्व दिशाके देशोंका ध्रुवाङ्क एक सौ छियालिस, अग्निकोणके देशोंका ध्रुवाङ्क एक सौ सैंतालिस, दक्षिणके देशोंका ध्रुवाङ्क एक सौ अड़तालीस, नैऋत्यकोणके देशोंका ध्रुवाङ्क एक सौ उन्चास, पश्चिमके देशोंका ध्रुवाङ्क एक सौ पचास, वायुकोणके देशोंका ध्रुवाङ्क एक सौ इक्यावन, उत्तरके देशोंका ध्रुवाङ्क एक सौ बावन, और ईशान कोणके देशोंका ध्रुवाङ्क एक सौ तिरेपन है।

यन्त्र बनानेकी प्रक्रियामें देशाङ्क भी पठित किए गए हैं। पूर्व दिशाका देशाङ्क दो, अग्नि-कोण का तीन, दक्षिण दिशाका चार, नैऋत्य कोणका पाँच, पश्चिम दिशाका छः, वायु कोणका सात, उत्तर दिशाका आठ और ईशान कोणका नौ देशाङ्क है। देशाङ्क और दिशाङ्कोंके संयोगसे यन्त्र बनाकर नगरोंके फलादेशका ज्ञान करना चाहिए। पूर्वमें एक सौ पैंतालीससे एक सौ तिरेपन तक, जो ध्रुवाङ्क पठित हैं उनकी दिशाङ्क संज्ञा है।

लोक-विजय-यन्त्रमें देश, ग्राम, नगर और दिशाके ध्रुवाङ्कोंका परिज्ञान कर अपने नगरकी दशा निकाल लेनी चाहिए और इस दशाके आधारपर फलादेश अवगत कर लेना चाहिए। इसका स्पष्टीकरण निम्न प्रकार किया जा सकता है।

लोक-विजय यन्त्र में पठित देश, ग्राम, नगर और दिशाके ध्रुवाङ्क अवगत कर अपने नगरके ध्रुवाङ्कमें दिशाका ध्रुवाङ्क जोड़कर इस योगफलमें अश्विन्यादिसे गिनकर शनि नक्षत्र संख्याको जोड़ देनेसे जो योगफल आवे उसमें नौका भाग देनेसे एकादि शेषमें वर्तमान संवत्सरके राजासे विंशोत्तरी दशा-क्रमसे फल ज्ञात करना चाहिए। यहाँ शनि नक्षत्र संख्याको जोड़ देनेका कारण यह है कि संवत्सर पर शनिका प्रभाव विशेष पड़ता है। वर्षा, सुभिक्ष, उत्पात, व्यापार, रोग, आकस्मिक भय आदिका सम्बन्ध शनि और बृहस्पतिसे अधिक है। वर्तमान संवत्सरका स्वामी बृहस्पतिसे सम्बन्ध रखता है। पर गुरु नक्षत्रको जोड़ा नहीं जाता। क्योंकि भावी फलादेशके लिए शनि नक्षत्र की अपेक्षा अधिक रहती है। यदि उदाहरणार्थ आरामें वि० सं० २०२७ में वर्षा, सुभिक्ष एवं रोगादि की स्थिति ज्ञात करनी हो तो आराका दिशा ध्रुवाङ्क एक सौ तिरेपन, देश ध्रुवाङ्क नौ है। शनि 'भरणी' नक्षत्रमें है। अतः अश्विनीसे गिनने पर दो संख्या आई। अतएव, १५३ + ९ + २ = १६४ ÷ ९ = १८ भागफल और शेष ७। संवत्सिराधिपति भौम है। अतः भौमसे विंशोत्तरी दशा के अनुसार गणना की तो राहु की दशा आई। इस दशाके अनुसार, वर्षाकी कमी एवं धन-सम्पत्ति आदिका विनाश आता है। तथा प्रजाको नाना प्रकारके कष्ट भी सहन करने पड़ते हैं। चौपायोंको सुख रहता है, तृणकी उत्पत्ति अधिक रहती है। व्यापारियोंको कष्ट होता है। चोर और लुटेरोंका उपद्रव अधिक बढ़ता है। इस प्रकार इस ग्रन्थमें प्रत्येक नगर और ग्रामका फलादेश निकाला गया है, जो ज्योतिषके विषयकी दृष्टिसे पर्याप्त उपयोगी और अनुभूत है।

वर्ण्य-विषय—इस ग्रन्थमें तीस गाथाएँ हैं। प्रथम गाथामें आदि-जिनेन्द्रको नमस्कार कर 'लोक-विजय-यन्त्र'के वर्णन करनेकी प्रतिज्ञा की है। द्वितीय गाथामें ऋषिभेश्वर स्वामीके पारणा-समयसे गणित करके दिशा-विदिशाओंमें स्थापित किए जाने वाले ध्रुवाङ्कोंके कथनका संकल्प किया है। तृतीय गाथामें लोक-विजय-यन्त्रके निर्माणमें सहायक ध्रुवाङ्क पठित किए गए हैं। ध्रुवाङ्कोंके क्रममें दिशाङ्क और देशाङ्क दोनों ही प्रकारके ध्रुवाङ्कोंकी संख्या निर्धारित की गई है। अतः इस ग्रन्थकी तीसरी गाथा विशेष महत्वपूर्ण है और यही इस ग्रन्थका प्राण-तत्त्व है। यन्त्र-निर्माणकी समग्र विधि भी इसी गाथामें प्रतिपादित है। चौथी गाथामें यन्त्रसे फलादेश निकालनेकी विधिका निरूपण किया गया है। तथा विंशोत्तरी दशाक्रमानुसार देश और नगर के फलादेशका प्रतिपादन किया गया है। इस गाथामें बताया है कि लोक-विजय यन्त्रमें पठित देश और दिशाके ध्रुवाङ्कोंमें अश्विनी आदि जिस नक्षत्र पर शनि हो उतनी संख्या जोड़कर योगफलमें ९ का भाग देने

पर जो शेष रहे उसे वर्तमान संवत्सरके राजासे आरम्भ कर विंशोत्तरी दशा-क्रमसे गणना करने पर देश और नगरके विंशोत्तरी दशा आती है। इस दशाके अनुरूप ही शुभाशुभ फल, वृष्टि, सुभिक्ष, दुर्भिक्ष, आदि का निरूपण किया जाता है।

पञ्चम गाथामें ग्राम और नगरके ध्रुवाङ्क निकालनेकी विधि प्रतिपादित है। बताया है कि जो-जो अङ्क जिस-जिस देशके हैं वे ही उस देशके अन्तर्गत ग्राम और नगरके ध्रुवाङ्क समझने चाहिए। इन ध्रुवाङ्कोंके द्वारा ही गणितज्ञ विद्वान् सूर्यादि ग्रहोंका फल अवगत करते हैं। इस पाँचवीं गाथाका प्रमुख वर्ण्य-विषय ग्राम और नगरके ध्रुवाङ्क निकालना है। साधारणतः जिस देशका जो दिशाङ्क और देशाङ्क होता है वह देशाङ्क ही नगराङ्क हो जाता है। पाँचवीं गाथा के विवेचन में हमने सभी देशों के दिशाङ्क, देशाङ्क और नगराङ्क अङ्कित किए हैं। हमारा विश्वास है कि ध्रुवाङ्कबोधक सारणीसे किसी भी ग्राम या नगरका ध्रुवाङ्क जाना जा सकता है।

छठवीं और सातवीं गाथामें जिस-जिस देशके नगर, ग्राम, पर्वत, स्थान आदिके ध्रुवाङ्क उपलब्ध न हों उस-उस देशके ग्राम, नगरादिका जो नाम हो उस नामके नक्षत्रकी संख्यामें ११ जोड़कर ९ का भाग देनेसे एकादि-शेषरूप ध्रुवाङ्कका प्रमाग आता है। नगर, ग्रामादिका ध्रुवाङ्क बनाकर चौथी और पाँचवीं गाथाके अनुसार-विंशोत्तरी दशाका आनयन कर फलादेश अवगत करना चाहिए।

दशा-क्रममें महादशा, अन्तर-दशा, प्रत्यन्तर दशा, सूक्ष्म-दशा, और प्राण-दशाका आनयन कर उनके शुभा-शुभानुसार ही फलादेश ज्ञात करना चाहिए। महादशाका फलादेश वर्ष भरके लिए रहता है पर अन्तर दशा, प्रत्यन्तर दशा, सूक्ष्म-दशा और प्राण-दशाका फलादेश निश्चित समयके लिए ही होता है। लोक-विजय-यन्त्रकी मूल गाथाओंमें इन पाँचों प्रकारकी दशाओंकी आनयन-विधि प्रतिपादित होनेपर भी इस ग्रन्थके विवेचनमें उसका समावेश किया गया है।

आठवीं गाथामें लोक-विजय-यन्त्रका प्रयोजन वर्णित है। अति-वृष्टि, अनावृष्टि, स्वदेशकी स्थिति, राष्ट्रोंके साथ सम्बन्ध, रोग-शोकका भय, धान्यकी उत्पत्ति और विनाश, राजाको कष्ट एवं सेनामें उपद्रव आदि बातोंका परिज्ञान वर्णित है। ईति-भीति आदि सात प्रकारका भय बताया गया है। अति-वृष्टि, अनावृष्टि, स्वचक्र, परचक्र, टिड्डी-मूषक, और तोता आदि पक्षियों द्वारा फसलको हानि पहुँचाना, फसलमें रोगोंका उत्पन्न होना, कीड़ोंका फसलको नष्ट करना, आदि फलादेश सांकेतिक रूपमें वर्णित हैं। इस गाथामें फसलको हानि पहुँचाने वाले सभी साधन ईति-भीतिमें परिगणित हैं। देशमें सुभिक्ष, शान्ति-सुख उपद्रव, विद्रोह, व्याघात, आन्तरिक और बाह्य संघर्ष, शासनकी सुव्यवस्था, आवश्यक वस्तुओंके मूल्य, उनका सद्भाव और अभाव, शीत, उष्ण, आतप, ओला, बादल, बिजली, महामारी, युद्ध, शत्रु आक्रमण, नेताओंकी स्थिति, शिक्षा-साहित्यकी स्थिति, कलाकी स्थिति, प्रभृति बातोंका परिज्ञान, दशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तर दशा, सूक्ष्म और प्राणदशाके आधारपर ही किया जाता है। इस प्रकार इस आठवीं गाथामें दशा, महादशा आदिके अनुसार शुभाशुभ फलादेशोंका कथन किया गया है।

नवमीं गाथामें भी फलादेशका ही वर्णन है। इस वर्णनमें पूर्वकी अपेक्षा यह विशेष बात बतलाई गई है कि संवत्सरके अधिपतिसे लेकर ही ध्रुवाङ्क, योगफलके अनुसार, दशाकी गणना की जाती है। यदि वर्षान्त तक शनि एक ही नक्षत्रमें निवास करता है तो फलादेशमें कोई परिवर्तन नहीं आता। शनि नक्षत्रके परिवर्त्तित होते ही फलादेशमें भी परिवर्तन हो जाता है। शनि नक्षत्रका सम्बन्ध संवत्सरके फलके साथ विशेष रूपसे रहता है। अतः लोक-विजय-यन्त्रमें शनि नक्षत्रको ही मुख्यता दी गई है। यों तो गुरु नक्षत्रका सम्बन्ध भी

संवत्सरके साथ कम नहीं है। क्योंकि बृहस्पतिके वर्षसे ही संवत्सरका रूप निर्धारित किया जाता है। किन्तु लोक-विजय-यन्त्रकी इस गाथाकी दृष्टिमें शनि नक्षत्रका ही सर्वाधिक महत्त्व स्वीकार किया गया है। इस प्रकार इस नवमीं गाथा द्वारा विंशोत्तरी दशा निकाल कर वृष्टि, अति-वृष्टि, अनावृष्टि एवं धान्योत्पत्तिके भविष्यको ज्ञात करना चाहिए।

दशमी गाथामें सूर्य दशाके अनुसार जनताके आरोग्य लाभ, धान्य-विशेषकी उत्पत्ति, राजाओंमें तेजस्विता, अश्व-उत्पत्ति एवं प्रजामें भय उत्पन्न होनेका वर्णन आया है। इस गाथामें सूर्यकी महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा, सूक्ष्मदशा एवं प्राणदशाके क्रमसे कृषि, उद्योग तथा वाणिज्यके विकासका वर्णन किया गया है।

लोक-विजययन्त्रमें वर्णित सूर्य दशाका राष्ट्रीय फलादेश पाराशरके फलादेशसे भिन्न है। यहाँ यह ध्यातव्य है कि पाराशरने सूर्यकी दशामें वैयक्तिक सुख-दुःखादि फलादेशोंका विवेचन किया है। किन्तु, लोक-विजययन्त्रकारकी दृष्टि राष्ट्र और समाजके भविष्य फलकी ओर है। अतएव इस दशवीं गाथामें राष्ट्रीय कार्य-क्रमोंकी पूर्ति या अपूर्तिका विचार किया गया है। सामान्यतः सूर्यकी महादशामें राष्ट्रकी समृद्धि होती है। समयपर यथेष्ट वर्षा एवं प्रचुर परिमाणमें धन-धान्यकी उत्पत्ति होती है। जिस नगर, ग्राम या प्रदेशमें सूर्यकी दशाका फल घटित होता है, वह नगर, ग्राम या प्रदेश सभी प्रकारसे उन्नति करता है। सूर्यकी महादशामें सूर्यकी अन्तर्दशा रहनेपर साधारण वर्षा, देशमें अनैक्य, नेताओंमें मतभेद, नेत्र-पीड़ा, बड़े-बड़े कार्यक्रमोंमें असफलता, खनिज पदार्थोंकी उत्पत्तिमें कमी तथा गेहूँ, गुड़, रूई आदि वस्तुओंके उत्पादनमें भी कमी आती है। सूर्यकी प्रत्यन्तर्दशा शिक्षा व्यवसाय एवं नवीन कार्योंके सम्पन्न करनेमें विशेष सहायक होती है। सूर्यकी सूक्ष्म दशामें देशमें सुख-शान्ति, सभी प्रकारके धान्योंकी उत्पत्ति एवं आम्र, जामुन आदि फलोंकी फसल अच्छे रूपमें आती है। शिल्प और स्थापत्यकी उन्नतिके लिए भी यह दशा सहायक होती है। सूर्यकी प्राणदशामें यथेष्ट वर्षा और कृषि सम्बन्धी कार्योंमें विशेष प्रगति होती है। पाट, सन और रेशमी वस्त्रोंके उद्योगमें शिथिलता आती है। मवेशियोंको नाना प्रकारके कष्ट उठाने पड़ते हैं तथा उनका मूल्य भी बढ़ जाता है। दुग्ध-घृत एवं अन्य रसोंकी उत्पत्ति प्रचुर परिमाणमें होती है। सूर्यकी प्राण दशामें मवेशियोंके बीच रोग फैलता है और कृषिमें कीड़े लगते हैं।

सूर्यकी महादशामें चन्द्र, मङ्गल, राहु, गुरु, शनि, बुध केतु एवं शुक्रकी दशाओंके सम्बन्धानुसार वर्षा, कृषि-विकास, धान्योत्पत्ति, मवेशियोंकी सुख-समृद्धि, शिक्षा-व्यवसाय, महामारी आदिका विचार किया जाता है। इस विचारका विस्तार इस गाथाके विवेचनमें अङ्कित हैं।

ग्यारहवीं गाथामें ग्राम, नगर, मण्डल, प्रदेश एवं राष्ट्रके लिए चन्द्रदशाका फल निरूपित किया गया है। चन्द्रमाकी दशामें मनुष्य और तिर्यञ्चोंको आरोग्य लाभ होता है। धन और सुखकी वृद्धि होती है। जलकी वर्षा कम होनेपर भी घासकी उत्पत्ति प्रचुर परिमाणमें होती है। तथा पृथ्वीमें अमृतरसका सञ्चार होता है। इस गाथामें देश एवं प्रान्तके विकासके हेतु क्रान्ति तथा जनान्दोलनका भी विचार किया गया है। सामूहिक नैतिकता, उद्योग, व्यापार एवं राष्ट्रहितके लिए सम्पादित किये जानेवाले कार्योंका भी विचार किया गया है। यहाँ यह स्मरणीय है कि देश और नगरके फलादेशके लिए जो दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा, सूक्ष्मदशा और प्राणदशा आती है वही वर्ष भरके लिए मानी जाती है। उसमें परिवर्तन समयके अनुसार नहीं होता। शनि नक्षत्रके परिवर्तित होनेपर वर्षके मध्यमें भी फलादेश परिवर्तित हो जाता है। दशाका विचार करते समय बृहस्पतिके नक्षत्र और उसके राशि-संक्रमणका विचार करना भी आवश्यक है। दशाके फलमें हीनाधिकताका कारण ग्रहोंका वक्री और मार्गी होना भी है। जब मंगल, शनि वक्री होते हैं तो अधिक वर्षा भी कम हो

जाती है, और फसलकी उत्पत्ति कम होती है तथा नाना प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं। बुध और शुक्रके वक्री होनेसे दशाके फलमें अधिक तारतम्य आता है और देश, ग्राम एवं नगरमें सुख-समृद्धि उत्पन्न होती है।

प्रस्तुत गाथामें चन्द्रमाकी पाँचों प्रकारकी दशाओंका फलादेश तो आया ही है साथ ही उसके साथ अन्य ग्रहोंकी दशाओंके संयोगसे विभिन्न प्रकारके फलोंका विवेचन किया गया है। भूकम्प, महामारी, पारस्परिक कलह, आकस्मिक घटनाएँ, शासन, व्यवस्था, आदिका विचार भी दशानुसार किया गया है।

.बारहवीं गाथामें देश, नगर, ग्राम एवं राष्ट्रके लिए मंगल दशाका विचार किया गया है। मंगलकी दशामें दुर्भिक्ष, शासनको कष्ट और हाथी, घोड़े, प्रभृति वाहनोंका विनाश होता है। प्रायः अग्निकृत उपद्रव होते हैं। नेताओंमें कलह होती है। शासन व्यवस्था अस्थिर रहती है और अनेक प्रकारके दुःख तथा भय उत्पन्न होते हैं। भौम (मंगल) दशा देश या राष्ट्रके लिए अनिष्टकारी है। इसमें उपद्रव, उत्पात, दुर्भिक्ष, विद्रोह, संघर्ष, धन-धान्यका अभाव एवं नाना प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं। इस दशामें अकाल, अवर्षा होनेसे फसलको क्षति उठानी पड़ती है। टिड्डी विशेष रूपमें आती है, फसलमें कीड़े लगते हैं और नदी तटके देशोंमें बाढ़ आती है। मंगल ग्रहकी महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा, सूक्ष्म दशा और प्राण दशा ये सभी अनिष्टकारी हैं। मंगलदशाका विचार करते समय शनि और मंगलके सम्बन्धपर विचार कर लेना भी आवश्यक होता है। यदि शनि और मंगल एक ही स्थानमें स्थिति हों या पूर्ण दृष्टिसे एक दूसरेको देखते हों अथवा दोनोंमें त्रिकोण सम्बन्ध हो तो दशाफलमें अधिक अशुभत्व आता है। मंगल मार्गी होकर शुक्र और बुधके साथ सम्बन्ध स्थापित करे तो देश या राष्ट्रके लिए शुभ फल होता है तथा मंगलका अशुभत्व क्षीण हो जाता है। मंगलका स्वगृही होना अथवा जलराशिमें मंगलका स्थित होना भी शुभ होता है। देशमें खनिज पदार्थ, धान्य एवं शाक-सब्जियोंकी विशेष उत्पत्ति होती है। मेवा और मशालोंके व्यापारमें सामान्यतः लाभ होता है। पशुओंमें रोग फैलता है और पशु धनकी हानि होती है।

सामान्यतः मंगलकी दशाएँ अनिष्टकर होती हैं। दुर्भिक्ष, अनावृष्टि, रोग, दुःख, शोक, ग्लानि और चिन्ता उत्पन्न होती है। स्वर्ण, ताम्र, लौह, पीतल और काँसा आदि धातुओंकी उत्पत्ति विशेष रूपसे होती है। इस गाथामें लेखकने मंगल दशाके फलादेशका विस्तारसे विवेचन किया है।

तेरहवीं गाथामें राहु दशाका फल वर्णित है। राहुकी महादशा रहनेपर धन-सम्पदादि ऋद्धियोंका विनाश होता है। नागरिकोंको नाना प्रकारके कष्ट होते हैं। भूकम्प, उल्कापात, अतिवृष्टि या अनावृष्टि, पशुओंका संहार एवं विभिन्न प्रकारके रोगोंकी उत्पत्ति होती है। मंगल और राहुकी दशाएँ समान रूपसे राष्ट्रके लिए कष्टदायक हैं। पर मंगलकी दशामें वर्षाके कम होनेपर भी फसलको उत्पत्ति होती है और राहु दशामें वर्षाके अधिक होनेपर भी फसलकी उत्पत्ति अच्छी नहीं होती। अनीति, अत्याचार और पापकी वृद्धि राहुकी दशामें मंगलकी अपेक्षा अधिक होती है। मंगलकी प्रत्यन्तर्दशा कष्टकारक है। पर राहुकी प्रत्यन्तर्दशा साधारणतः अच्छी होती है। श्रावण और भाद्रपदमें राहुकी प्रत्यन्तर्दशा होनेसे वर्षा अधिक होती है, पर मंगलकी प्रत्यन्तर्दशामें ये दोनों महीने प्रायः सूखे रह जाते हैं। व्यापार, उद्योग-धन्धे, शिक्षा आदिकी दृष्टिसे राहुकी दशा मंगलसे अधिक अच्छी होती है।

चौदहवीं गाथामें गुरु दशाका फल वर्णित है। जिस गाँव, नगर, प्रदेश या राष्ट्रमें गुरुकी दशा रहती है उस गाँव, नगर, प्रदेश और राष्ट्रमें वर्षा अच्छी होती है। धन-धान्यकी उत्पत्ति अधिक होती है। व्यापार, उद्योग एवं कल-कारखानोंका विकास होता है। पशु-सम्पत्ति वृद्धिगत होती है। गाय और भैंसें बहुत दूध देती हैं। रोग-शोक आदिका भय दूर हो जाता है।

गुरु दशाका विचार करते समय अन्य ग्रहोंकी अन्तर, प्रत्यन्तर, सूक्ष्म और प्राणदशाका भी विचार कर लेना आवश्यक है। क्रूर-ग्रहकी महादशाके साथ गुरुकी अन्तर दशा देश-वासियोंके लिए अच्छी नहीं होती। क्योंकि इस दशामें नाना-प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं। स्वास्थ्य नष्ट होता है। उपद्रव और उत्पात होते हैं। परस्पर कलह होता है। देशकी आर्थिक दशा बिगड़ जाती है। शुभग्रहके साथ गुरु दशाका संयोग होनेसे वर्षा उचित परिमाणमें समयपर होती है। तथा फसल भी अच्छी उत्पन्न होती है। गेहूँ, चना और तिल-हनकी खेती अच्छे रूपमें सम्पन्न होती है।

शुभग्रहोंकी महादशा और शुभग्रहोंकी अन्तरदशामें गुरुकी प्रत्यन्तर दशा देशके विकासके लिए बहुत ही अच्छी है। इस दशामें देशकी आर्थिक स्थिति, बहुत ही दृढ़ होती है। प्रजामें सुख और शान्ति व्याप्त रहती है।। शीत अधिक पड़ता है जिससे फसलको हानि होती है।

बृहस्पतिकी प्राण-दशामें देशमें सुख-शान्ति, समयपर वर्षा, उद्योगोंका विकास और नेताओंका सम्मान होता है। क्रूर ग्रहकी महादशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशा और सूक्ष्म दशाके साथ गुरुकी प्राणदशा अशुभ-कारक होती है। इस दशामें देशमें उपद्रव, अशान्ति; मारकाट, संघर्ष, लूट-मार आदि होते हैं। देशकी आर्थिक स्थिति विषम हो जाती है। जिससे समस्त देशको कष्ट उठाना पड़ता है। अर्थाभावके कारण जनतामें अनेक प्रकारकी अनैतिकताएँ आ जाती हैं। देशका वातावरण क्षुब्ध रहता है और सभी कार्योंकी प्रगति रुक जाती है। शुभग्रहोंकी महादशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशा और सूक्ष्म दशाके साथ बृहस्पतिकी प्राणदशा देशकी उन्नतिके लिए सभी प्रकारसे अच्छी होती है। देशमें यथेष्ट वर्षा होनेके कारण फसल बहुत अच्छी उत्पन्न होती है।

इस प्रकार इस गाथामें बृहस्पतिकी दशाका फलादेश विभिन्न दृष्टिकोणोंसे वर्णित किया गया है। यद्यपि गाथाका सामान्य अर्थ गुरु दशाके साधारण फलका विवेचन करना ही है। पर सांकेतिक रूपमें अन्य ग्रहोंके सम्बन्धके साथ गुरु दशाके फलका कथन भी प्राप्त होता है।

पंद्रहवीं गाथामें ग्राम, नगर, मण्डल, प्रदेश एवं राष्ट्रके लिए शनि दशाके फलका विवेचन किया है। अति-वृष्टि, अनावृष्टि, व्यापारिक क्षति, धन-धान्यकी विशेष उत्पत्ति, भूकम्प, आकस्मिक भय, उपद्रव, आदि बातोंपर शनि दशाकी दृष्टिसे विचार किया है। शनिकी महादशामें अल्प-वृष्टि होती है। और फसलका भी अभाव रहता है। वस्तुतः शनि महादशामें देशमें भयंकर उत्पात होता है। पड़ोसी देशोंसे युद्ध होने की भी संभावना रहती है। प्रजाको नाना प्रकारका कष्ट उठाना पड़ता है। इस दशाके प्रारम्भ होते ही देशका वातावरण क्षुब्ध हो जाता है। और नाना प्रकारकी महामारियाँ व्याप्त हो जाती हैं। धन-जनकी हानि उठानी पड़ती है।

शनि दशाका विचार अन्य ग्रहोंके सम्बन्धके साथ उसकी राशि स्थितिके आधारपर भी करना चाहिए। तुला राशिमें शनिके रहनेपर शनिकी दशा देश, समाज और राष्ट्रके अभ्युदयमें साधक बनती है। समयपर यथेष्ट परिमाणमें वर्षा होती है और गेहूँ, चना, जौ, मटर, बाजरा, उड़द, मूँग, धान आदिके फसल बहुत अच्छे रूपमें उत्पन्न होती है। मेष राशिके शनिकी महादशामें उत्पात-उपद्रव और वज्रपात होते हैं। आकाश-में बादलोंका गर्जन ही सुनाई पड़ता है वर्षण नहीं। वर्षा अभावके कारण सभीको कष्ट होता है। वृष राशिके शनिकी दशामें वज्रपात, ओला, आँधी, एवं भयंकर तूफान आते हैं। धान्योंकी विशेष उत्पत्ति होनेपर भी उनका विनाश हो जाता है। आकस्मिक दुर्घटनाएँ विशेष रूपसे घटित होती हैं। मिथुन राशिके शनिकी दशा देशके धन-धान्यका विनाश करती है। पूर्व-दिशामें वर्षा कम होती है, पश्चिममें अधिक। उत्तर और

दक्षिणके निवासी सामान्यतः सुखी और सम्पन्न रहते हैं। व्यापारियोंको धनागम होता है। बेकारीकी समस्या सुलझनेकी अपेक्षा और अधिक उलझती जाती है।

कर्क राशिके शनिकी दशामें यथेष्ट वर्षा होती है और प्रचुर परिमाणमें धन-धान्यकी उत्पत्ति होती है। लोहा, जस्ता, ताँबा, सोना, चाँदी आदि खनिज धातु पदार्थ अधिक रूपमें प्राप्त होते हैं तथा इन पदार्थोंका मूल्य भी घटता जाता है। देशके विकासके हेतु उद्योग-धन्धे भी बढ़ते जाते हैं और अन्न-वस्त्रकी समस्या, जटिल होती जाती है। इसका प्रधान कारण यह है कि अच्छी फसलके उत्पन्न होने पर भी अन्नादि पदार्थ, दूसरे प्रदेशोंमें भेज दिए जाते हैं जिससे खाद्य पदार्थोंकी सुलभता कम होती जाती है।

सिंह राशिके सिंहकी दशामें देशमें वर्षा होती है। फसल भी अच्छी होती है परन्तु व्यापार उद्योग-धन्धोंका विकास नहीं होता। अतः देशकी उन्नति नहीं हो पाती। नेताओं और महान् व्यक्तियोंमें विरोध बढ़ता है। और अनैक्य एवं फूट उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। कन्या राशिके शनिकी महादशामें अति-वृष्टि या अनावृष्टि होती है। देशमें दुर्भिक्ष पड़ता है। बाढ़ आती है और महामारियाँ फैलतीं हैं। वृश्चिक राशिके शनिकी महादशामें सब प्रकारसे अशान्ति, दरिद्रता और विभिन्न प्रकारके कष्टोंका सामना करना पड़ता है। हैजा, चेचक, एवं प्लेग जैसी बीमारियाँ वृद्धिगत होती हैं। धनु राशिके शनिकी दशामें देशकी आर्थिक स्थिति बिगड़ती है। प्रारम्भमें वर्षा होती है पर अन्तमें वर्षाका अभाव होनेसे धान्योत्पत्तिमें बाधा आती है।

मकर और कुम्भ राशिके शनिकी दशाका फल तुलाके शनिकी दशाके समान ही होता है। समय-समय-पर यथेष्ट रूपमें वर्षा होती जाती है। और फसल भी अच्छी उत्पन्न होती है। प्राकृतिक साधनोंका विकास होता है। खनिज पदार्थोंकी उत्पत्ति अधिक रूपमें होती है। लोहा, ताँबा, और स्वर्ण इन तीनों धातुओंकी उत्पत्ति विशेष रूपसे होती है। मीन राशिके शनिकी दशामें देशकी अवस्था अत्यन्त दयनीय हो जाती है। आर्थिक संकटके साथ नाना-प्रकारकी बीमारियोंका सामना करना पड़ता है। चोर, डाकू, और लुटेरोंका उपद्रव विशेष रूपसे होता है। रोगोंकी उत्पत्ति अधिक होती है। जीवन और जगत्की समस्याएँ जटिल हो जाती हैं। मीनका शनि यों भी कष्टकारक होता है तथा प्रजामें सभी प्रकारसे आतंक उत्पन्न करता है।

इस प्रकार इस गाथामें शनि दशाके फलादेशका विस्तारपूर्वक विचार किया है। जिस प्रकार शनि वैयक्तिक जीवनमें हानि पहुँचाता है अथवा अकल्पित रूपमें समृद्ध बनाता है, उसी प्रकार राष्ट्रीय जीवनमें भी शनि उन्नति या अवनतिका सूचक होता है।

सोलहवीं गाथामें बुधदशाफल आया है। बुध वर्षा एवं कृषिकी समृद्धिके लिए उत्तम है, परन्तु रोग, महामारी एवं कलहका सूचक होनेसे राष्ट्र समृद्धिमें बाधक है। बुधदशाफलका निरूपण करते हुए बताया है कि इस दशामें बालक एवं स्त्रियोंकी मृत्यु अधिक होती है, लोगोंके धनका नाश होता है और अनेक प्रकारके रोगोंकी उत्पत्ति होनेसे जनसंख्याका विनाश होता है। युद्ध स्थानमें सुभटों और राजाओंका संहार भी होता है।

राष्ट्रीय और सामाजिक जीवनके साथ अन्य ग्रहोंके समान बुधका भी महत्त्व है। बुधकी महादशा, प्रत्यन्तरदशा, सूक्ष्मदशा और प्राणदशा अन्य शुभाशुभ ग्रहोंके संयोगसे इष्टानिष्ट फल प्रदान करती है। वस्तुतः बुधको राष्ट्रका धान्येश और रोगेश माना जाता है। जब उच्चराशि या स्वग्रही बुधकी दशा आती है, तो राष्ट्रमें सभी प्रकारके अनाज प्रचुर परिमाणमें उत्पन्न होते हैं। वर्षा आवश्यकतानुसार समयपर होती है। तृण—घास आदिकी उन्नति भी यथेष्ट परिमाणमें होती है। मवेशीको किसी प्रकारका कष्ट नहीं होता।

जलवर्षा अधिक होनेके कारण तालाब, नदी और कुओंमें अधिक जल संचित होता है। देशका वातावरण सुख-शान्तिमय बना रहता है; नेताओंमें परस्पर प्रेम और सहयोगकी भावना विकसित होती है।

उद्योग-धन्धों और कल-कारखानोंका निरन्तर विकास होता है। रूई, घी, चाँदी, खनिज पदार्थ आदिकी उत्पत्ति विशेष रूपसे होती है। आन्तरिक शान्ति रहनेसे पड़ोसी राज्योंके साथ मेल-मिलाप बढ़ता है। समुद्र, पर्वत और नदी तटोंसे मूल्यवान् मणि-माणक्य प्राप्त होते हैं।

बुधदशाका फल बुधकी राशि स्थितिके अनुसार अवगत करनेसे राष्ट्रकी यथार्थ स्थितिका परिज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। मेषराशिके बुधकी महादशामें लाभ, धान्यकी उत्पत्ति, नारियों और बच्चोंकी मृत्यु, पशुओंमें नाना प्रकारके रोग एवं राष्ट्रकी आर्थिक समृद्धि होती है। वृषराशिके बुधमें वर्षा अधिक होती है। तथा नदियोंमें बाढ़ आती है, जिससे धन-जनकी हानि होती है। मिथुनराशिके बुधकी दशामें सुख-शान्तिके साथ व्यापारिक विकास होता है। देशका व्यापार समुद्र पारके देशोंके साथ बढ़ता है।

कर्क और सिंहराशिके बुधकी दशामें वर्षा कम होती है, पर फसल अच्छी उत्पन्न होती है। कृषिके लिए सिंचाईकी व्यवस्था की जाती है। राजनीतिक पार्टियोंमें पारस्परिक विरोध बढ़ता है और प्रदेशके शासन-में गड़बड़ी उत्पन्न होती है। सत्ताधारियोंके बीच पारस्परिक कलह उत्पन्न होता है। कन्या राशिके बुधकी दशामें देशमें सभी प्रकारकी सुव्यवस्थाएँ उत्पन्न होती हैं। वर्षा प्रचुर परिमाणमें होती है और खेती कार्योंमें पूर्णतया उन्नति होती है। सुभिक्ष रहनेसे आर्थिक विकासके भी अवसर प्राप्त होते हैं। बुधकी दशामें बुधकी अन्तर और प्रत्यन्तर दशाएँ भी सुख शान्तिकी सूचक होती हैं। तुला और वृश्चिक राशिका बुध कृषिकार्यमें बाधक होता है धनुराशिके बुधकी दशा कल्याणकारक होती है। मकर और कुम्भ राशिका बुध अल्प-वृष्टिका सूचक है।

मीनराशिके बुधकी दशा उत्सव, धार्मिक अनुष्ठान एवं सुभिक्षकी सूचना देती है। वस्तुतः इस गाथा-में प्रतिपादित बुधकी दशामें अच्छी वर्षा होनेके कारण कृषिका विकास होता है। देशकी आर्थिक स्थिति सबल होती है। युद्ध या विग्रहके कार्योंमें शिथिलता आती है। विदेशोंके साथ व्यापारिक और राजनीतिक सम्बन्ध सुदृढ़ होता है। सदाचार और संयमकी ओर देश और नगरवासियोंका झुकाव होता है।

सत्रहवीं गाथामें केतु दशाफल अङ्कित है। ज्योतिषशास्त्रमें केतु राष्ट्रका मस्तिस्क माना जाता है। लोकविजययन्त्रकारने भी इसका मस्तिष्कके रूपमें ही वर्णन किया है। व्यक्तिके शरीरमें विचार शक्ति और चिन्तन शक्तिके दृष्टिसे मस्तिष्कका जो स्थान है वही स्थान राष्ट्रके शरीरमें केतुका है। केतु वर्षा, कृषि एवं आर्थिक समृद्धिके साथ राजनीतिक विचारधाराओंका सूचक है। शासक और नेताओंकी चिन्तन शक्तिका विचार केतुकी दशासे किया जाता है। जिस ग्राम, देश, नगर, राष्ट्रमें केतुकी दशा विद्यमान रहती है उस ग्राम देश नगर और राष्ट्रमें क्रान्ति उत्पन्न होती है। पुरानी रीतियाँ और विचार परम्पराएँ समाप्त हो जाती हैं और इनके स्थानपर नवीन विचार उत्पन्न होते हैं, जिससे देश या नगरका कल्याण होता है। विवेकी और सदाचारी शासकके आनेसे प्रजामें सन्तोष और शान्ति उत्पन्न होती है तथा देशका आर्थिक दृष्टिसे विकास और विस्तार होता है। व्यापारकी दृष्टिसे भी यह दशा अच्छी है। व्यापारियोंको लाभ होता है। वर्षा अधिक होने के कारण फल, मेवे और अनाजकी उत्पत्ति विशेष रूपसे होती है। गन्नेकी फसल अच्छी मात्रामें उत्पन्न होने-से गुड़ और चीनीका उत्पादन विशेष रूपमें होता है।

रूई, कपास और सूतके व्यापारियोंके लिए केतुकी दशा लाभप्रद है। कृषकोंको सभी प्रकारकी समृ-द्धियाँ प्राप्त होती हैं। वर्षा पर्यन्त अच्छी वर्षा होनेके कारण धन-धान्यकी विशेष उत्पत्ति होती है। निश्चयतः केतुके दशा धन-धान्यकी समृद्धिकी सूचक है।

राष्ट्रके अभ्युदय और विकासकी दृष्टिसे भी इस गाथामें फलका प्रतिपादन किया गया है। केतुकी

दशामें देशके कला-कौशलकी वृद्धि होती है। अन्य देशोंमें प्रतिष्ठा बढ़ती है और देशवासियोंको सभी प्रकार-से सुख और शान्ति प्राप्त होती है।

लोकविजययन्त्रकारने केतुकी पाँचों प्रकारकी दशाओंका अन्य ग्रहोंके संयोगसे फलादेशोंकी तारत-म्यताका वर्णन किया है। यों तो केतुकी राशि स्थितिके अनुसार भी शुभाशुभ फलका विवेचन सङ्केत रूपमें इस गाथामें मिलता है। इस सङ्केतका स्पष्टीकरण विवेचनके अन्तर्गत किया गया है। अतएव उसे यहाँ पुनरा-वृत्ति करनेकी आवश्यकता नहीं है।

शुभ ग्रहकी महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा, सूक्ष्मदशा और प्राणदशाके साथ केतुकी कोई भी दशा देशकी समृद्धिकी सूचक है। अन्य घी, तेल, दूध, वस्त्र आदिकी उत्पत्ति इस दशामें विशेष रूपसे होती है और कृषि विकासकी योजनाओंका कार्यान्वियन किया जाता है अतएव देशकी समृद्धिकी सूचना उक्त दशासे प्राप्त होती है।

क्रूर ग्रहोंकी महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा, सूक्ष्मदशा और प्राणदशामें केतुकी कोई भी दशा देश-को हीन दशाका बोधक होती है। महामारीके कारण लाखों व्यक्तियोंकी मृत्यु होती है। देशमें क्रान्तिकारी विचार बढ़ते हैं और शासन-सूत्रमें परिवर्तन होता है। आन्तरिक कलहके कारण नवीन आर्थिक योजनाएँ सफल नहीं हो पातीं। वस्तुओंके भाव बढ़ते हैं जिससे सर्वसाधारणको कष्ट होता है। देशमें आतङ्क व्याप्त रहता है और खींचातानीकी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। ऊन, रूई और चमड़ेका व्यापार विदेशोंके साथ बढ़ता है। साधारणतः मवेशियोंको कष्ट होता है।

अठारहवीं गाथामें शुक्र दशाका फल प्रतिपादित है। शुक्र राष्ट्र या देशके आचारका सूचक है। यों तो शुक्रसे वर्षा, धान्योत्पत्ति, व्यापार, उद्योग-धन्धे, कल-कारखाने एवं वैज्ञानिक अनुसन्धान आदिका भी विचार किया गया है, पर विशेष रूपसे यह जनताके स्वास्थ्य एवं सदाचारका ही सूचक है। जिस प्रदेशकी जनता स्वस्थ, सदाचारी और संयमी होगी उस देश या राष्ट्रकी जनता ऐहिक सुखोंका भी उपभोग कर सकेगी। अतएव विंशोत्तरी दशा क्रममें शुक्रकी दशा देशवासियोंके आचरणपर प्रकाश डालती है।

शुक्र दशामें शासकोंकी कीर्ति दिग्दिगन्तमें व्याप्त हो जाती है। धन-धान्यकी उत्पत्ति प्रचुर परिमाण-में होती है। यथेष्ट वर्षा समयपर होती है तथा देशका समुचित विकास होता है। फसल बहुत अच्छी उत्पन्न होती है जिससे प्रजाको सब प्रकारसे सुख प्राप्त होता है। आर्थिक दृष्टिसे जनता सुखी रहती है। विदेशोंके साथ मधुर सम्बन्धका विकास होता है। परराष्ट्र नीतिमें अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है। उत्सव, मङ्गल, नृत्य एवं गान निरन्तर होते रहते हैं। वैज्ञानिक अनुसन्धानके साथ नवीन कल-कारखानोंकी स्थापना, देशकी भौगो-लिक सीमाओंमें संशोधन और परिवर्धन एवं अन्य देशोंमें देशका महत्त्व प्रकट होता है।

कुछ विद्वानोंने शुक्रको रसेश माना है। अतएव वे शुक्रकी दशासे राष्ट्रके घृत, दुग्ध, दधि, मधु आदि-का विचार करते हैं। रसेश होनेके कारण ही शुक्रसे वर्षा, फसलोंकी उत्पत्ति एवं देशकी आन्तरिक आर्थिक स्थितिका भी विचार करते हैं। शुक्र उच्च और स्वराशिका होनेपर देशकी सभी प्रकारसे समृद्धियोंकी सूचना देता है और वर्षके बारह महीनोंमेंसे किस महीनेमें खाद्य सामग्रीकी कैसी स्थिति रहेगी, इसपर भी प्रकाश डालता है। अन्नकी उत्पत्तिके साथ तृणकी उत्पत्तिका परिज्ञान भी शुक्रकी दशासे किया जाता है।

लोकविजययन्त्रकारने शुक्रको मूलतः चार बातोंका सूचक माना है—

(i) राष्ट्रके आचरण और रहन-सहनका सूचक।

(ii) वर्षाके परिमाणका सूचक।

(iii) भौतिक समृद्धिका सूचक।

(iv) नवीन योजनाओं और वैज्ञानिक अनुसन्धानोंके कार्यान्वियनका सूचक।

उन्नीसवीं गाथामें विशेष रूपसे ग्रहोंके स्वरूप स्वभाव और गुणोंके अनुसार देश और राष्ट्रके फलका विचार किया गया है। मङ्गल, राहु और शनिकी गणना क्रूर ग्रहोंमें कर इनसे स्वराष्ट्रभय एवं परराष्ट्रके साथ घटित होनेवाले सम्बन्धोंका विचार किया गया है। मङ्गल वक्री होनेपर विशेष रूपसे आन्तरिक अशान्तिकी सूचना देता है। मङ्गलके पांच वक्र माने गये हैं—

(१) उष्ण—अनावृष्टि द्योतक

(२) शोषमुख—अल्पवर्षा सूचक

(३) व्याल—कृषिमें रोगोत्पादक

(४) लोहित—ओला या पाला सूचक

(५) लोहमुद्गर—युद्ध और कलह सूचक

वराही संहितामें लोहितको रुधिरानन और लोहमुद्गरको असिमुसल कहा गया है। मङ्गल, कृतिकादि सात नक्षत्रोंमें गमन करनेपर राष्ट्रको कष्ट, मघादि सात नक्षत्रोंमें विचरण करनेपर भय, अनुराधादि सात नक्षत्रोंमें विचरण करनेपर अनीति और धनिष्ठादि सात नक्षत्रोंमें विचरण करनेपर निन्दित फल होता है। रोहिणी, श्रवण, मूल, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद और ज्येष्ठा नक्षत्रमें मङ्गल विचरण करता हो तो वर्षाका अभाव रहता है एवं श्रवण, मघा, पुनर्वसु, मूल, हस्त, पूर्वाभाद्रपद, अश्विनी, विशाखा और रोहिणी नक्षत्रमें विचरण करे तो शुभ फल होता है। मङ्गलके चार, प्रवास. वर्ण, दीप्ति, काष्ठा, गति, फल, वक्र और अनुवक्रके अनुसार भी फल प्रतिपादित किया जाता है।

राहुका विचार करते समय श्वेत, सम, पीत और कृष्ण वर्णका विचार करना आवश्यक है। हरे रंगका राहु रोग सूचक, कपिल वर्णका दुर्भिक्ष सूचक, अरुण वर्णका अनावृष्टि सूचक, कपोत और कपिल वर्णका भय सूचक, पीत वर्णका व्यापारियोंका विनाश सूचक, दूर्वादल या हल्दीके समान वर्ण वाला राहु महामारी सूचक एवं रक्तिमवर्णका राहु क्षत्रिय नाश सूचक होता है। लोकविजययन्त्रकारने राहुको क्रूर ग्रह मानकर उसके वर्णके अनुसार शुभाशुभका विचार किया है।

प्रस्तुत गाथाके अनुसार तृतीय अशुभ ग्रह शनि है। शनि जातकके समान ही राष्ट्रको भी कष्ट प्रदान करता है। शनिके उदय, अस्त, आरूढ, क्षत्र, दीप्त आदि अवस्थाओंके अनुसार फलोंका कथन प्राप्त होता है। श्रवण, स्वाति, हस्त, आर्द्रा, भरणी और पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रमें शनि स्थित हो तो पृथ्वीपर जलकी वर्षा होती है तथा वस्तुओंके भावोंमें समर्घता पायी जाती है। अश्विनी नक्षत्रमें शनिके विचरण करनेसे अश्वारोही, कवि, वैद्य और मन्त्रियोंको हानि उठानी पड़ती है। ग्रन्थकारने शनिके रङ्ग, अस्तोदय, परिवेष, एवं नक्षत्रानुसार वर्षाका विचार किया है।

बीसवीं गाथामें क्रूर और शुभग्रहोंका फलादेश वर्णित है। क्रूर-ग्रहोंकी दशामें राष्ट्रको कष्ट होता है और शुभग्रहकी दशामें राष्ट्रमें सुख शान्ति व्याप्त रहती है। इसी गाथामें तीन प्रकारकी दृष्टियोंका भी विवेचन आया है। सम्मुख, दक्षिण और वाम ये तीन दृष्टियाँ हैं। सम्मुख दृष्टि पूर्वसे पश्चिम और पश्चिमसे पूर्वको होती है। तथा उत्तरसे दक्षिण एवं दक्षिणसे उत्तर भी सम्मुख-दृष्टि मानी जाती है। पूर्वसे उत्तर, उत्तरसे पश्चिम, पश्चिमसे दक्षिण और दक्षिणसे पूर्वकी ओर दक्षिण दृष्टि मानी जाती है। पूर्वसे दक्षिण, दक्षिणसे पश्चिम, पश्चिमसे उत्तर, और उत्तरसे पूर्व, वाम दृष्टि मानी जाती है। इस ग्रह-दृष्टिका नाम ही वेध है। देश, काल और वस्तु इन तीनोंमें ग्रह-वेध द्वारा शुभाशुभ फलका ज्ञान करना चाहिए।

उक्त गाथामें क्रूर और शुभग्रहोंकी दृष्टि युद्ध एवं युतिका फल भी संकेतित है। ज्योतिषमें गृह-युद्धँ-के चार भेद हैं—भेद, उल्लेख, अंशुमर्दन और अपशव्य। भेद युद्धमें वर्षाका नाश, सुहृद और कुलीनोंमें भेद होता है। उल्लेख युद्धमें शस्त्रभय, मन्त्र-विरोध और दुर्भिक्ष होता है। अंशुमर्दन युद्धमें राजाओंमें युद्ध, शस्त्र, रोग, भूखसे पीड़ा और अवमर्दन होता है। तथा अपशव्य युद्धमें राजाओंका युद्ध होता है। सूर्य दोपहरमें आक्रन्द होता है। पूर्वाह्णमें पौरग्रह तथा अपराह्णमें यायी ग्रह आक्रन्द संज्ञक होते हैं। बुध, गुरु और शनि, ये सदा पौर हैं। चन्द्रमा नित्य आक्रन्द है। केतु, मङ्गल, राहु और शुक्र यायी हैं। इन ग्रहोंके हत होनेसे आक्रन्द, यायी और पौर क्रमानुसार नाशको प्राप्त होते हैं। जयी होनेपर स्ववर्गको जय प्राप्त होता है। पौर ग्रहसे पौर-ग्रहके टकरानेसे पुरवासीगण और पौर-राजाओंका विनाश होता है। इस प्रकार यायी और आक्रन्द ग्रह या पौर और यायी ग्रह परस्पर हत होनेपर अपने-अपने अधिकारियोंको नष्ट कर देते हैं। जो ग्रह दक्षिण दिशामें रूखा, कम्पायमान, टेढ़ा, क्षुद्र और किसी ग्रहसे आच्छादित हुआ विकराल प्रभावहीन और विवर्ण दिखलाई पड़ता है वह पराजित कहलाता है। इससे विपरीत लक्षण वाला ग्रह जयी कहलाता है। वर्षाकालमें सूर्यसे आगे मंगलके रहनेसे अनावृष्टि, शुक्रके आगे रहनेसे वर्षा, गुरुके आगे रहनेसे गर्मी और बुधके आगे रहनेसे वायु चलती है। सूर्य-मंगल, शनि-मंगल और गुरु-मंगलके संयोगसे वर्षाका अभाव रहता है। बुध-शुक्र और गुरु-बुधका योग वर्षाकारक है। क्रूर-ग्रहोंसे अदृष्ट और अयुत, बुध एवं शुक्र एक राशिमें स्थित हों और उन्हें बृहस्पति भी देखता हो तो अधिक वर्षा होती है। क्रूर-ग्रहोंसे अदृष्ट और अयुत, बुध और बृहस्पति एक राशिमें स्थित हों और शुक्र उन्हें देखता हो तो अच्छी वर्षा होती है। क्रूर-ग्रहोंसे अदृष्ट और अयुत गुरु और शुक्र एकत्र स्थित हों और शुक्र उन्हें देखता हो तो समयानुसार यथेष्ट वर्षा होती है। शुक्र और चन्द्रमा, अथवा मंगल और चन्द्रमा यदि एक राशिपर स्थित हों तो सर्वत्र वर्षा होती है और फसल भी उत्तम होती है। सूर्यके सहित बृहस्पति यदि एक राशिपर स्थित हो तो जब तक वह अस्त न हो जाय तब तक वर्षाका योग समझना चाहिए।

शनि और मंगलका एक राशिपर स्थित रहना महावृत्तिका सूचक है। इस योगके होनेसे दो महीने तक वर्षा होती है। पश्चात् वर्षा में रुकावट उत्पन्न होती है। सम्यक्-ग्रहोंसे अदृष्ट और अयुत शनि एवं मंगल यदि एक स्थानपर स्थित हों तो वायुका प्रकोप तथा अग्निका भय होता है। एक राशि या एक ही नक्षत्रपर राहु मंगल स्थित हों तो वर्षाका नाश होता है। गुरु और शुक्र यदि एकत्र स्थित हों तो असमयमें वर्षा होती है। सूर्यसे आगे शुक्र या बुध जाएँ तो वर्षाकालमें निरन्तर वर्षा होती रहती है। मंगलके आगे सूर्यकी गति हो तो वर्षा अच्छी होती है। पर सूर्यसे आगे मंगल हो तो वर्षाका अभाव हो जाता है।

बृहस्पतिके आगे शुक्र हो तो अवश्य वर्षा होती है। किन्तु शुक्रके आगे बृहस्पति हो तो वर्षाका अवरोध होता है। बुधके आगे शुक्रके होनेसे महावृष्टि और शुक्रके आगे बुधके होनेसे अल्प-वृष्टि होती है। यदि दोनोंके मध्यमें सूर्य या अन्य ग्रह आ जाएँ तो वर्षा नहीं होती। अनिश्चित मार्गसे गमन करता हुआ बुध यदि शुक्रको छोड़ दे तो सात दिन या पाँच दिन तक लगातार वर्षा होती है। उदय या अस्त होता हुआ बुध यदि शुक्रसे आगे चला जाय तो शीघ्र ही वर्षा होती है। जल-नाड़ियोंमें आनेपर और अधिक वर्षाके होनेकी सम्भावना रहती है।

बुध, बृहस्पति और शुक्र ये तीनों ग्रह एक ही राशिपर स्थित हों और क्रूर-ग्रहोंसे अदृष्ट और अयुत हों तो इन्हें महवृष्टि करनेवाला समझना चाहिए। शनि, मंगल और शुक्र तीनों ग्रह एक राशिपर स्थित हों और गुरु इन्हें देखता हो तो निसन्देह वर्षा होती है। सूर्य, शुक्र और बुधके एक राशिपर स्थित होनेसे अल्पवृष्टि होती है। सूर्य, शुक्र और बृहस्पतिके एक राशिपर रहनेसे अति-वृष्टि होती है। शनि, शुक्र और

मंगल, एकत्र स्थिति हों और गुरुकी उनपर दृष्टि हो तो साधारण वर्षा होती है। शनि, राहु और मंगल, इन तीनोंके एक राशिपर स्थित रहनेसे ओलोंके साथ वर्षा होती है। सभी ग्रह एक ही राशिपर स्थित हों तो दुर्भिक्ष, अवर्षा और रोगके कारण कष्ट होता है। शुक्र, मंगल, शनि और बृहस्पतिके एक स्थानपर स्थित होनेसे वर्षाका अभाव होता है और अन्न महँगा होता है। इस योगके रहनेसे विहार, आसाम, उड़ीसा, पूर्व-पाकिस्तान; बंगाल आदि पूर्वीय प्रदेशोंमें फसलकी उत्पत्ति स्वल्प मात्रामें होती है। और पंजाब, दिल्ली, राजस्थान एवं हिमांचल प्रदेशकी सरकारोंके मन्त्रिमण्डलमें परिवर्तन होता है। इटली, ईरान, अरब, मिश्र, इत्यादि मुस्लिम राष्ट्रोंमें भी खाद्यान्नोंकी कमी होती है। और उक्त राष्ट्रोंकी आर्थिक और राजनैतिक स्थिति भी बिगड़ती जाती है। मंगल, शुक्र, शनि और राहु यदि ये ग्रह एक राशिपर स्थित हों तो वर्षाका अभाव और दुर्भिक्ष होता है। मंगल, बृहस्पति, और शुक्र और शनिके एक राशिपर स्थित रहनेसे अल्प-वृष्टि या वर्षाभाव की सूचना मिलती है। कागज, कपड़ा, रेशम और चीनीके व्यवसायमें घाटा होता है।

भद्रबाहुसंहिताकारने चार या पाँच ग्रहोंको एक साथ अवस्थितिको वर्षाभावका सूचक बताया है। सूर्य, गुरु, शुक्र, शनि और राहुके एक साथ स्थित रहनेसे वर्षाभाव तो होता ही है साथ ही हैजा, प्लेग, जैसी संक्रामक बीमारियाँ भी फैलती हैं, गृह-युद्ध होता है और देशके प्रत्येक भागमें अशान्ति रहती है। इस प्रकार लोक-विजय यन्त्रकारने बीसवीं गाथामें उक्त फलादेशका संकेत उपस्थित किया है।

इक्कीसवीं और बाईसवीं गाथाओंमें सूर्य, चन्द्र, मंगल और बुधकी दृष्टियोंका फल बताया गया है। जिस ग्रह-युद्ध और वेधका पूर्वमें संकेत किया है उसका स्पष्टीकरण इन दोनों गाथाओंमें प्राप्त होता है। सूर्य की सम्मुख-दृष्टि राजा-प्रजाके तेजको नष्ट करती है और उनमें सम्मोह उत्पन्न होता है। चन्द्रमाकी सम्मुख-दृष्टि शान्तिदायक होती है और मंगलकी अग्नि, भय एवं रोगोत्पादक होती है। इसी प्रकार बुध ग्रहकी दृष्टि धन-धान्यको वृद्धि करती है और जनताको सुख-शान्ति प्रदान करती है। बृहस्पतिकी दृष्टि रहनेसे राज्य-कोप एवं धन-धान्यकी वृद्धि होती है। जिस ग्राम, नक्षत्र या वस्तु नक्षत्रसे सूर्यका वेध होता है उस ग्रामके मुखियाकी शक्ति क्षीण हो जाती है और उसका पुरुषार्थ घटने लगता है। तथा उसके स्थानपर अन्य मुखियाका निर्वाचन होता है। यदि वस्तु-नक्षत्र सूर्यसे विद्ध हो तो वह वस्तु तेज होती है, उसका अभाव होता है। तथा उसके मूल्यमें अत्यधिक वृद्धि होती है। जो व्यापारी सूर्यके विद्ध नक्षत्र नामवाली वस्तुओंका संचय करते हैं वे उन वस्तुओंसे लाभ उठाते हैं। सूर्य विद्ध, नगर या ग्रामके निवासियोंको कष्ट भोगना पड़ता है तथा उन्हें अनेक प्रकारका कष्ट होता है।

इसी प्रकार चन्द्रवेध, भौमवेध और शनिवेधका भी विचार किया जाता है। तेईसवीं गाथामें शुक्र और शनिवेधके फलका निरूपण किया गया है। शुक्रके वेधमें राजा-प्रजाकी उन्नति, सर्वांगीण विकास, जन-सामान्यको आनन्द एवं सुख प्राप्त होते हैं। शनिके वेधमें मनुष्य और पशुओंको कष्ट, भयंकर दुर्भिक्ष और भयंकर दुष्काल पड़ता है। शुक्र-वेध, ग्राम, नगर, देश और राष्ट्रके लिए सुखकारक होता है। इसमें यथेष्ट वर्षा, धन-धान्यकी उत्पत्ति, देशके निवासियोंको सुख-शान्ति एवं भौतिक सुखोंकी प्राप्ति होती है। उच्चराशिके शुक्रके वेधमें समयानुसार यथेष्ट वर्षा तो होती ही है पर देशका प्रभुत्व भी बढ़ता है, विदेशोंमें सम्मान प्राप्त होता है तथा राजनैतिक समस्याओंका समाधान भी सहजमें हो जाता है। मूल त्रिकोणके शुक्रके वेधमें देशकी आर्थिक स्थिति विकसित होती है और भौतिक सुख-समृद्धि प्राप्त होती है। जब शुक्र दक्षिणकी ओर से वेध करता है उस समय देशमें सभी सुखके साधन अनायास उपलब्ध हो जाते हैं। आर्थिक स्थिति सबल होती है। तथा तृण और धान्यकी उत्पत्ति प्रचुर परिमाणमें होती है। जिस ग्राम या नगरके नक्षत्रके साथ शुक्रका वेध होता है उस ग्राम अथवा नगरकी पूर्णतया उन्नति होती है। धन और मीनराशिके शुक्रके वेधमें

देशका आर्थिक विकास होता है। तथा नवीन योजनाएँ कार्यान्वितकी जाती हैं। नीच राशिके शुक्रका वेध सभी प्रकारसे कष्टकारक होता है। उच्चराशिके शुक्रका वेध गुरुसे संयोग होनेपर हो तो समयपर यथेष्ट वर्षा, सुख-समृद्धि एवं अधिकारोंकी वृद्धि होती है।

शनिका वेध देशके लिए अच्छा नहीं होता। इसमें देशके मनुष्य और पशुओंको अनेक प्रकारके रोग, उपद्रव और कष्ट उठाने पड़ते हैं। यह वेध जिस देश या नगरमें होता है उस नगरमें अवर्षण, अराजकता, असन्तोष और असहयोगकी भावना व्याप्त हो जाती है। देशके विकासके लिए शनिका वेध बाधक माना जाता है।

चौबीसवीं गाथामें छः मासका फल और पच्चीसवीं गाथामें मास नक्षत्रके फलादेशका वर्णन आया है। छः मासका विचार बड़े विस्तारके साथ ज्योतिष ग्रन्थोंमें मिलता है। किस महीनेकी कौन सी तिथि क्षीण होनेपर किस प्रकारका फलादेश देती है, इसका निरूपण इन गाथाओंमें है। वास्तवमें किसी भी महीने की पूर्णिमाका क्षय अशुभसूचक माना गया है। आषाढ़ी, माघी, बैशाखी और फाल्गुनी पूर्णिमाका क्षय होनेसे वर्षा-अभाव, फसलका विनाश एवं नाना प्रकारके उपद्रवोंका सामना करना पड़ता है। जिस वर्ष छः मास पड़ता है उस वर्ष देशमें दुर्भिक्ष, महँगाई, उपद्रव और अनेक प्रकारके संकट आते हैं। जिस महीनेमें दो संक्रान्तियाँ होती हैं उसमें छः मास होता है। और जिसमें सूर्य-संक्रान्ति नहीं होती वह अधिमास कहलाता है। छः मास कार्त्तिकादि तीन महीनोंमें ही होता है। और जब कभी छः मास होता है उस समय वर्षमें दो अधिमास हो जाते हैं। जब कार्तिक छः मास होता है उस वर्षमें भयंकर दुर्भिक्ष, अवर्षण, उत्पात, अराजकता और खण्ड-वृष्टि होती है। देशका व्यापार भी अवरुद्ध हो जाता है। मार्ग-शीर्ष छः मास होनेपर धन-धान्यकी कमी, अति-वृष्टि या अनावृष्टि, बाढ़, फसलमें कीड़ोंका लगना आदि फलादेश घटित होते हैं। पौष मासका छय होनेपर आन्तरिक कलह, फसलकी क्षति, उपद्रव एवं शासकोंका प्रभाव क्षीण होता है।

मास नक्षत्रके पूर्णिमाको आनेसे देशमें सुख-समृद्धि, व्यापारमें वृद्धि, जनतामें प्रेम और सहयोग, नर-नारियोंको आनन्द, पशुओंको सुख व देशका आर्थिक विकास होता है।

लोक-विजययन्त्र का महत्व

लोक-विजययन्त्रका वर्ण्य-विषय सामाजिक जीवनके सुख-दुःखका विश्लेषण करना एवं सामाजिक और राष्ट्रीय जीवनके फलादेशका प्रतिपादन करना है। वर्षा, सुभिक्ष, रोग, महामारियाँ, पारस्परिक वैर-विरोध, परचक्रभय, औद्योगिक विकास आदिका विवेचन करना ही इस ग्रन्थका प्रधान लक्ष्य है। कुल तीस गाथाओंमें इतने विस्तृत विषयको संक्षिप्त रूपमें कथन करना, इस ग्रन्थकी बहुत बड़ी सफलता है। संहिताके व्यापक प्रमेयोंको प्रामाणिकताके साथ संक्षेपमें प्रतिपादित कर देना एक सामान्य बात नहीं है। अतः विषयके साङ्गोपांग विवेचनकी दृष्टिसे यह एक ऐसा ग्रन्थ है जिसमें ध्रुवाङ्कों परसे फलादेशका विचार-विनिमय किया गया है।

ज्योतिष-शास्त्रमें हेतु या कारणोंका वही स्थान है जो न्याय-शास्त्रमें हेतु या कारणोंका है। जो हेतु जितना सबल और अन्यथानुपपन्नत्वसे युक्त होगा, वह हेतु उतना ही सबल और कार्यकारी माना जायगा। यही कारण है कि ज्योतिष-शास्त्र, गणित-प्रक्रियाका अवलम्बन लेकर हेतुओंके अन्यथानुपपन्नत्वकी सिद्धि करता है।

हेतुको अव्यभिचारी होनेके लिए उसका अविनाभावित्व रहना आवश्यक माना जाता है। लोक-विजय-यन्त्रमें ग्राम, नगर, देश, राष्ट्र आदिके ध्रुवांक पठित हैं। और इन ध्रुवांकों परसे वर्षा, सुभिक्ष, एवं अन्य राष्ट्रीय सुखासुखका विचार किया जाता है।

इस ग्रन्थकी एक अन्य विशेषता यह है कि इसमें पाराशर पद्धति द्वारा निर्णीत विंशोत्तरी दशाका समावेश भी किया गया है। विंशोत्तरी दशा द्वारा वैयक्तिक जीवनके उतार-चढ़ावोंका विश्लेषण करना ही प्रधान उद्देश्य माना गया है। लोक-विजययन्त्रकारने इस वैयक्तिक प्रकियाको सार्वजनीन बनानेका प्रयास किया है। फलतः ध्रुवांकोंके आधारपर वैयक्तिक जीवनके क्रमानुसार ही सामाजिक और राष्ट्रीय जीवनके शुभाशुभत्वका आनयन किया है। चिन्तन पद्धतिकी दृष्टिसे यह पहला ही प्रयास है, जिसमें वैयक्तिक जीवनका राष्ट्रीयकरण किया गया है। दशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशा, सूक्ष्मदशा और प्राणदशाओंका नवग्रहोंके विभिन्न रूपोंके संयोगीमंगोंके क्रमानुसार फलादेशका कथन किया है। वास्तवमें लोक-विजययन्त्रकारने विंशोत्तरी दशाको राष्ट्रीयदशाके रूपमें विवेचित कर ज्योतिष-ज्ञानके क्षेत्रमें एक नया ही चरण-चिह्न स्थापित किया है। जहाँ वर्षा और सुभिक्षका विवेचन ग्रहोंके संयोगी-क्रम एवं गोचर विधियों द्वारा किया जाता है वहाँ विंशोत्तरीकी रुपान्तरित शैली ने एक नई दिशा ही उद्घाटित की है।

संहिता ग्रन्थोंमें सामान्यतः वर्षा, सुभिक्ष,दुर्भिक्ष, महामारी आदिका निरूपण पाया जाता है। इन ग्रन्थों में किसी दशा विशेषका अवलम्बन नहीं लिया गया है। दशाके अभाव में नगर, ग्राम, एवं प्रदेशोंमें कहाँ, किस प्रकारकी वर्षा होगी, फसल में रोग उत्पन्न होंगे या नहीं, आदिका विचार विंशोत्तरी दशाके अवलम्बनसे ही सम्भव है। राष्ट्रीय जीवनमें उत्पन्न होनेवाली विभिन्न समस्याओंके समाधान भी विंशोत्तरी दशाके आलोकमें ही सम्भव हो सकते हैं। किसी निश्चित ग्राम या नगरमें सुभिक्षादि किस प्रकार सम्भव हैं इसका विचार विंशोत्तरी के आधारपर ही हो सकता है।

दिव्य-निमित्त, कार्य-कारणभाव सूचक निमित्त, अन्तरिक्ष-निमित्त, आदि निमित्तोंसे जो फलादेश प्रतिपादित होता है, वह विंशोत्तरी दशाके तुल्य कभी नहीं हो सकता। यतः निश्चित समय, निश्चित तिथि, निश्चित मास, आदिका ज्ञान विंशोत्तरी द्वारा ही संभव है। अतएव संहिता-स्कन्ध के निर्माताओंने जिन बातों तत्वोंका विवेचन केवल निमित्तप्रक्रियाके आधारपर किया है वह विवेचन पूर्णतया सत्य नहीं हो सकता। अतएव लोक-विजययन्त्रकारने राष्ट्रके प्रत्येक नगर और ग्रामके भविष्यका फल ध्रुवांकों और विंशोत्तरी दशाके समन्वय द्वारा करके एक नई पद्धतिका प्रचलन किया है। यह पद्धति इस ग्रन्थके अतिरिक्त अन्यत्र कहीं भी उपलब्ध नहीं होती है।

वस्तुतः हमारा यह देश कृषि प्रधान है। कृषिकी उन्नति और अवनतिसे ही देशकी उन्नति और अवनति मानी जाती है। अतएव ज्योतिष-शास्त्र और निमित्त-शास्त्रमें वर्षा और फसलका विचार करते हुए देशकी आर्थिक समृद्धि किस प्रकार सम्भव हो सकती है तथा कृषिकी उपजको किस प्रकार बढ़ाया जा सकता है; का विवेचन भी इस ग्रन्थमें किया गया है। अथर्ववेदमें फसलोंके रोगोंको दूर करनेके लिए जादू-टोनोंका विचार किया है तथा फसलमें उत्पन्न होनेवाले विभिन्न रोगोंके निवारणके लिए औषधियों एवं यन्त्रों-मन्त्रों एवं वैज्ञानिक प्रक्रियाओंका निरूपण भी किया गया है। अथर्ववेदके कृषिरोग निवारण सम्बन्धी विचार से ज्ञात होता है कि प्राचीन भारतमें कृषिके विकासको सर्वाधिक महत्व दिया गया था इसी कारण भारतके विचारक ज्योतिषियोंने भी कृषिविद्याका विचार ज्योतिषकी शैलीमें किया है।

जब ज्योतिषके विषयका विस्तार हुआ और सभी ज्ञान-विज्ञान इसी विषयकी सीमामें समाविष्ट हो गए तो नए चिन्तक ज्योतिषियोंने कृषि और राष्ट्रके फलादेशका विवेचन किया। लोक-विजययन्त्र ऐसा ही ग्रन्थ है जिसमें राष्ट्र और कृषिके शुभाशुभफलत्वका उपपत्यपूर्वक विवेचन किया है। इस यन्त्रकी सभी गाथाओंमें कार्यकारणसम्बन्धी निष्पत्तियाँ अंकित हैं। अतः इसे कोरा अनुमानजन्य फलादेश नहीं कहा जा सकता है। संक्षेपमें इस ग्रन्थकी निम्निलिखित विशेषताएँ हैं—

१. निमित्तोंके स्थान पर ध्रुवांकोंकी कल्पना ।
२. देश, नगर और ग्रामोंकी विंशोत्तरीदशाका विचार ।
३. दशा और ध्रुवांकोंका समन्वय तथा इस समन्वित पिण्ड-परम्परासे भविष्यकालका कथन ।
४. संवत्सरके अधिपतिका विचार ।
५. विभिन्न वस्तुओंकी तेजी-मन्दीका विचार ।
६. राजा-प्रजाकी शांति-व्यवस्थाका कथन ।
७. ईति-भीतिका विस्तारपूर्वक निरूपण ।

लोकविजययंत्रकी भाषा एवं शैली

लोकविजयन्त्रकी भाषा सामान्य प्राकृत है; इसका स्वरूप किसी एक प्राकृत भाषाके रूपमें निर्धारित नहीं किया जा सकता है । जैन शौरसेनी और जैन महाराष्ट्रीका मिश्रितरूप होनेके कारण इसे प्राचीन प्राकृत माना जा सकता है । इस ग्रन्थकी भाषाकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :—

१ इस ग्रन्थकी प्राकृतकी मूल प्रकृति संस्कृत है । स्वरों में ऋ, ॠ, लृ, ॡ, ऐ, और औ स्वरोंका अभाव है । मूल स्वर अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, और ओ ये आठ स्वर ही पाये जाते हैं । प्राकृतके सामान्य नियमोंके अनुसार औ और ऐका अस्तित्व ओ और ए में पाया जाता है ।

२ ऋ स्वरके स्थानपर रि, इ और उ पाये जाते हैं । यथा—
रिक्खं ∠ ऋक्षम्—गाथा ६
रिसही = ऋषभः—थाथा २
रिद्धिविणासो∠ऋद्धिविनाशः—गाथा १३
अमियरसो = अमृतरसः—गाथा १० (यहाँ ऋकारके स्थानपर इकारादेश हुआ है ।)
पिट्ठीए = —गाथा १९$\frac{1}{2}$ (ऋकारके स्थानपर इकार)
तिणुप्पत्ती∠तृणोत्पत्तिः —गाथा १० (ऋकारके स्थान पर इकार)
अदिवुट्ठि∠अतिवृष्टिः —गाथा ८ ('वृ'के अन्तर्गत ऋके स्थान पर उकार ।)
अणावुट्ठी∠अनावृद्धि —गाथा ८ (,, ,,)
वुड्ढि∠वृद्धि —गाथा ३ ('वृ' के अन्तर्गत ऋके स्थानपर उकार)
वुड्ढिकरो∠ वृद्धिकरः —गाथा २३ (,, ,,)

३. व्यञ्जन परिवर्तनमें 'क'के स्थानपर 'ग' और 'क' का लोप होकर अवशिष्ट स्वरके स्थानपर 'य' श्रुति पायी जाती हैं । यथा—
तिलोगे = त्रिलोकः—गाथा १ ('क'के स्थानपर ग ।)
लोगविजयं∠लोकविजयम्—गाथा १ ('क'के स्थानपर ग हुआ है ।)
सोग∠शोक—गाथा ८ ('क'के स्थान पर ग')
इगसय∠ इकशत—गाथा ३ (,, ,,)
सुहयरा = सुखकरा—गाथा १९$\frac{1}{2}$ ('क'का लोप और लुप्त स्वरके स्थानपर 'य' श्रुति ।)
लोय = लोक—गाथा १५ ('क'का लोप और लुप्त स्वरके स्थानपर 'य' श्रुति ।)
सयक्क = सकल—गाथा १५ ('क'का लोप और लुप्त स्वरके स्थान पर 'य' श्रुति ।)
लोयाणं∠लोकाताम्—गाथा ९ ('क'का लोप और लुप्त स्वरके स्थानपर 'या' ।)

४ क्वचित् मध्यवर्ती 'क' संस्कृतके प्रभावके कारण ज्योंका त्यों बना रह जाता है। यथा—
नवकोट्ठएण∠नवकोष्ठकेन—गाथा ३ (यहाँ क्रीष्ठक शब्दमें आदि 'क' ज्योंके त्यों रूपमें स्थित है।)
अंकगणियं∠अंकगणित्वा—गाथा ३ ('क' ज्यों का त्यों अवस्थित है।)
अंको∠अङ्कः—गाथा ५ (,, ,,)
भयंकरो∠भयङ्करः—गाथा १९—संस्कृत रूप होनेके कारण 'क' में विकार नहीं हुआ है।
सुहंकरा∠शुभङ्कराः—गाथा १९३—संस्कृतके समान 'क' अवस्थित।

५ कहीं-कहीं लुप्त 'क' के स्थान पर स्वर ही अवशिष्ट रहता है, 'य' श्रुति नहीं होती। यथा—
समाउला∠समाकुला—गाथा १८ ('क' लुप्त है और 'उ' स्वर अवशिष्ट है, किन्तु उसके स्थान पर 'य' श्रुति नहीं हुई।
कोट्ठएण∠कोष्ठकेन—गाथा ३ ('केन' शब्दके 'क' का लोप हुआ है और 'ए' स्वर अवशिष्ट है।

६ मध्यवर्ती ग का लोप, अवशिष्ट स्वरके स्थान पर 'य' श्रुति होती है। अनेक शब्दोंमें संस्कृतवत् 'ग' की स्थिति ज्योंके त्यों रूपमें अवस्थित मिलता है। यथा—
नयरं∠नगरम्—गाथा ५ (ग का लोप, अवशिष्ट अ स्वरके स्थान पर 'य' श्रुति।)
देसनयरे∠देशनगरे—गाथा ६ (,, ,,)
नयर∠नगर—गाथा ७ (,, ,,)
णयरस्स∠नगरस्य—गाथा १३ (,, ,,)
रोग∠रोग—गाथा १६—ग ज्योंके त्यों रूपमें अवस्थित है।
अंकगणियं∠अंकगणित्वा—गाथा ३—ग ज्योंके त्यों रूपमें स्थित है।

७ त के स्थान पर द पाया जाता है। यथा—
गणिदं∠गणितम्—गाथा ७ (त के स्थान पर द हुआ है।)
अदि∠अति—गाथा ८ (,, ,,)
भणिदा∠भणिता—गाथा ४ (,, ,,)

८ 'त' के स्थान पर त और य भी पाये जाते हैं। यह प्रवृत्ति शौरसेनीकी है। यथा—
इगसय∠इकशत—गाथा ३—(त के स्थान पर य)
इयरेहिं∠इतरेभ्भः—गाथा २ (त के स्थान पर य)
गीयत्था∠गीतार्थाः—गाथा ५ (,, ,,)
अमिय∠अमृत—गाथा ११ (त के स्थान पर य हुआ है)
जणिय∠जनित—गाथा २३
त = त
जंतूण∠जन्तून्—गाथा १

९ त का लोप होने पर केवल स्वर भी अवशिष्ट रह जाता है। यथा—
जाई∠जाति—गाथा १८
चउसु = चतुर्षु—गाथा १९
हरइ = हरति—गाथा २१
जणइ∠जनति—गाथा—२१
पूरयति∠परेइ—गाथा २२

१० लोकविजयन्त्रकी भाषामें मध्यवर्ती क, ग, च, ज, त, द और प का लोप विकल्पसे पाया जाता है अथवा यों कह सकते हैं कि इनका लोप अनियमित रूपसे पाया जाता है। यथा—
इयरेहिम∠इतरेभ्यः—गाथा २, मध्यवर्ती त का लोप हुआ है।
पयं∠पदम्—गाथा ३, मध्यवर्ती द का लोप हुआ है।
नयरं∠नगरम्—गाथा ५, मध्यवर्ती ग का लोप हुआ है।
शयलं∠शकलम्—गाथा १५—मध्यवर्ती क का लोप हुआ है।
पया∠प्रजा—गाथा १७—ज का लोप हुआ है।
तेय∠तेजस्—गाथा २१—ज का लोप हुआ है।
अइसारो∠अतिसारः—गाथा २१—मध्यवर्ती त का लोप हुआ है।
रायपयाणं∠राजाप्रजानाम्—गाथा २३—मध्यवर्ती ज का लोप हुआ है।

११ लोकविजययन्त्रकी भाषामें प के स्थान पर व का प्रयोग पाया जाता है। यथा—
नरवइ∠नरपति—गाथा २३—प के स्थान पर व हुआ है।
उवद्दवं∠उपद्रवम्—गाथा १५—प के स्थान पर व हुआ है।

१२ प्राकृतकी सामान्य प्रवृत्तिके अनुसार ध, फ, घ, ख और भ के स्थान पर ह पाया जाता है। यथा—
रिसह∠ऋषभ—गाथा २—भ के स्थान पर ह हुआ है।
णिहिभत्ते∠निधिभत्ते—गाथा ४—ध के स्थान पर ह हुआ है।
मेहसंकुलो∠मेघसङ्कुलः—गाथा १८—घ के स्थान पर ह हुआ है।
सुहंकरा∠सुभङ्करा—गाथा २०—भ के स्थान पर ह हुआ है।
सुहयरा∠सुखकरा—गाथा २०—ख के स्थान पर ह हुआ है।
पोहुवी∠पृथ्वी—गाथा १८—ख के स्थान पर ह हुआ है।

१३ संयुक्त व्यञ्जन परिवर्त्तनोंमें 'त्स' के स्थान पर 'च्छ', 'ष्ट' के स्थान पर 'ट्ठ', 'म्भ' के स्थान पर 'ब्भ', 'स्तोक' के स्थान पर 'थोव' 'भ्र' के स्थान पर 'ब्भ' और 'त्य' के स्थान पर 'च्च' पाये जाते हैं। यथा—
संवत्सर∠संवच्छरः—गाथा ३
आरब्भ∠आरम्भ—गाथा ३
आइच्चाइ∠आदित्यादि—गाथा ५
आइच्चे∠आदित्ये—गाथा १०
कोट्ठागारं∠कोष्ठागारम्—गाथा २२
तुट्ठो∠तुष्टः—गाथा २२
ब्भंसो∠भ्रष्टः—गाथा १३
थोवजलं—स्तोकजलम्—गाथा ११

१४ दन्त्य और मूर्धन्य दोनों प्रकारके 'न' और 'ण' पाये जाते हैं। यथा—
आनन्दो∠आनन्दः—गाथा २३
जणिय∠जनितः—गाथा २३
नभो∠नभः—गाथा १८
जणइ∠जनति, जनिका—गाथा २१

देसनयरे∠देशनगरे—गाथा ६
नयरं∠नगरम्—गाथा ५
नाह∠नाथ—गाथा १
नवकोट्ठएण∠नवकोष्ठकेन—गाथा ३

१५ प्रथमा विभक्तिके एकवचनमें विसर्गके स्थान पर 'ओ' कार आदेश होता है :—
अईसारो∠अतीसारः—गाथा २१
मेहसंकुलो∠मेघसंकुलः—गाथा १७
वुड्ढिकरो∠वृद्धिकरः—गाथा २३
मासक्खओ∠मासक्षयः—गाथा २९

१६ सप्तमीके एकवचनमें अर्धमागधीके प्रभावके कारण 'म्मि' विभक्ति चिह्न पाया जाता है। यथा—
जम्मि∠यस्मिन्—गाथा ७
सुहम्मि∠शुभे—गाथा २५
विकल्पाभाव पक्षमें 'ए' प्रत्यय हो पाया जाता है—
णिहिभत्ते∠निधिभक्ते—गाथा ४
आइच्चे∠आदित्ये—गाथा १०
भोमे∠भौमे—गाथा १२
सुजीवे∠सुजीवे—गाथा १४

१७ धातुरूपोंमें लट्लकारमें √भू के स्थान पर हू, हो, भव, हव आदि रूप मिलते हैं। यथा—
होइ∠भवति—गाथा ३, गाथा ११
हुंति∠भवन्ति—गाथा १४, गाथा २०
हवइ∠ भवति—गाथा १७

१८ √कृञ् के स्थान पर 'कुण' का प्रयोग पाया जाता है। यथा—
कुणंति∠कुर्वन्ति—गाथा २०

१९ कुछ धातुरूप संस्कृतके समान ही पाये जाते हैं। यथा—
विचरंति∠विचरन्ति—गाथा १९
पभणंति∠प्र + √भण् + न्ति—गाथा ५

२० क्त्वा प्रत्ययके स्थान पर य, तूण, इऊण, आय और आए प्रत्यय पाये जाते हैं। यथा—
ठवियं∠स्थपित्वा
अंकगणियं∠अङ्कगणित्वा
गणिय∠गणित्वा—गाथा ४
करिय∠कृत्वा—गाथा ६
गणिऊण∠गणित्वा—गाथा ९

२१ विधिलिङ्गके रूप भी कृदन्तके समान प्रयुक्त हैं। यथा—
वियाणिज्जा∠विजानीयात्—गाथा ३

वियाणाहि/विजानीयात्—गाथा ७
जाणए/जानीयात्—गाथा ९

२२ स्वरभक्तिके प्रयोग भी पर्याप्त मात्रामें पाये जाते हैं। यथा—
सिरि/श्री—गाथा २
सामिय/स्वामिनः—गाथा २
मिच्छाण/म्लेच्छाणाम्—गाथा १८
पुहवी/पृथ्वी—गाथा १८

२३ विध्यर्थ प्रत्ययोंमें धातुमें तव्व प्रत्ययका प्रयोग पाया जाता है। यथा—
बोधव्वो/बोधव्यः—गाथा ५

२४ संयुक्त विजातीय व्यञ्जनोंमें पूर्ववर्त्तीका लोप हो गया है और शेषमें द्वित्व पाया जाता है। इसे समीकरणकी विधि भी माना जा सकता है। यथा—
सप्परचक्कं/स्वपरचक्रम्—गाथा ८
दसाक्कमे/दशाक्रमे—गाथा ४
चमुद्दवं/चोपद्रवम्—गाथा ८
उवद्दवं/उपद्रवम्—गाथा १५
आरुग्गो/आरोग्यः—गाथा ९

२५ इस ग्रंथमें कतिपय देशी शब्द भी प्रयुक्त हैं। इन शब्दोंकी व्युत्पत्तियाँ अनिश्चित हैं। यथा—
ठाठ युद्धके अर्थमें प्रयुक्त है—गाथा १६
स्त्रीके स्थान पर इत्थी रूप पाया जाता है। इसी प्रकार 'घरि घरि' 'गृहं गृहम्'के लिए प्रयुक्त है।

शैलीकी दृष्टिसे लोकविजय ग्रन्थकी समास शैली है। थोड़ेमें अधिक कह देना तथा संकेत द्वारा भी अर्थका बोध कराना इस शैलीकी विशेषता है। अल्प शब्दोंमें विशेषताओंको निबद्ध करना तथा लक्षण द्वारा गम्भीर अर्थको व्यक्त करना भी इस ग्रन्थकी शैलीकी विशेषता है। गाथाएँ सूत्र रूप हैं, इनके अर्थबोधके लिए विशेष भाष्यकी आवश्यकता है। अतएव स्पष्टीकरणके लिए विवेचन लिखा गया है। वस्तुतः इस ग्रन्थकी शैली न्याय और व्याकरण ग्रंथोंकी शैलीके समान है। संक्षेपमें इसे समानशैलीकी संज्ञासे अभिहित किया जा सकता है।

रचना-काल—लोकविजययन्त्रके रचयिताके सम्बन्धमें आदि, मध्य या अन्तमें कोई स्पष्ट उल्लेख प्राप्त नहीं होता है। वृहज्ज्यौतिषार्णव ग्रन्थमें प्राचीन जैनी गाथा लिखकर मूल ग्रंथका पाठ दिया गया है और अन्तमें पुष्पिका वाक्य लिखते समय 'भद्रबाहुविरचिते लोकविजयग्रंथे सुभिक्ष, दुर्भिक्ष वर्णनम्' लिखा है। इस पुष्पिकासे यह ज्ञात नहीं होता कि यह पुष्पिका मूलग्रंथ रचयिताकी है अथवा वृहज्ज्यौतिषार्णवके सम्पादक महोदयकी है। इस ग्रंथके सम्पादक हरिकृष्ण शर्माने विभिन्न ग्रंथोंसे विषयोंका चयन कर अपनी संस्कृत व्याख्या लिखी है। अतः जिस मूल ग्रंथसे इन गाथाओंका चयन किया है उस मूल ग्रंथका उल्लेख हरिकृष्ण शर्माने नहीं किया।

'मेघमहोदय'में इन गाथाओंका एक पाठ मिलता है। यह ग्रन्थ भी विक्रम संवत् १७३७ के आस-पास मेघ विजय गणि द्वारा संकलित ही है। मौलिकता तो इस ग्रंथमें है नहीं। कर्पूर चक्र, पद्मिनी चक्र, मंडल प्रकरण, उत्पात्, संवत्सरफल आदि विषय संहिता ग्रन्थोंसे लेकर ज्योंके त्यों रूपमें प्रायः निबद्ध किए गए हैं।

इन गाथाओंका पाठ मेघमहोदयमें वृहज्ज्यौतिषार्णवके पाठकी अपेक्षा बिल्कुल भिन्न है। अतः दोनों पाठोंकी तुलना करनेसे यह ज्ञात होता है कि वृहज्ज्यौतिषार्णवकी गाथाएँ किसी अन्य प्राचीन ग्रंथसे संकलित की गयी हैं। मेघमहोदय और वृहज्ज्यौतिषार्णव इन दोनोंके संकलनका आधारभूत कोई अन्य ग्रंथ ही रहा होगा। मेघमहोदयमें आयी हुई गाथाओंकी भाषा और शब्दावली भी वृहज्ज्यौतिषार्णवकी गाथाओंकी शब्दावलीसे पर्याप्त भिन्न है। अतः पाठ शुद्धिकी दृष्टिसे वृहज्ज्यौतिषार्णवकी गाथाएँ अधिक प्रामाणिक हैं और इन गाथाओं की भाषाका रूप भी ऐसा है जिसे हम सामान्य प्राकृत कह सकते हैं। व्याकरणकी दृष्टिसे न तो हम इसे अर्द्धमागधी मान सकते हैं न शौरसेनी ही और न महाराष्ट्री ही। इसकी मूल प्रकृति संस्कृति है और अर्द्ध-मागधी एवं शौरसेनी दोनोंका मिश्रित रूप इस ग्रंथकी भाषामें समाहित है। संस्कृतके विचरन्ति 'नभः', 'विहरन्ति', 'नर्यान्त', आदि प्रयोग भी ज्योंके त्यों रूपमें पाए जाते हैं। अतः इसकी भाषा 'वसुदेवहिण्डी' और 'पउमचरियं'की भाषाके समकक्ष प्रतीत होती है। इस ग्रन्थकी भाषामें पाँच प्रवृत्तियाँ अर्द्धमागधीकी और पाँच ही प्रवृत्तियाँ प्राचीन शौरसेनीकी पायी जाती हैं। समास, सन्धि, कृदन्त, तद्धित एवं क्रियारूपों-की व्यवस्था संस्कृतके बहुत निकट है। हम यहाँ अर्द्धमागधीकी उपलब्ध होने वाली प्रवृत्तियोंका निर्देश करते हैं—

१. दो स्वरोंके मध्यवर्ती, असंयुक्त, क के स्थानमें विकल्पसे ग पाया जाता है।

२. दो स्वरोंके मध्यवर्ती असंयुक्त, ग, प्रायः स्थित मिलता है।

३. शब्दके आदि, मध्य और संयोगमें ण के समान क्वचित्-कदाचित् न भी पाया जाता है।

४. दीर्घ स्वरके पश्चात् आने वाले 'इतिवा'के स्थानमें 'तिवा' और इवाका प्रयोग मिलता है।

५. सप्तमी विभक्तिके एकवचनमें 'म्रि' प्रत्यय पाया जाता है।

इसी प्रकार प्राचीन शौरसेनी या जैन शौरसेनीकी प्रवृत्तियाँ भी उपलब्ध होती हैं—

१. इस ग्रन्थकी भाषामें 'त' के स्थानपर क्वचित-कदाचित द का प्रयोग भी होता है।

२. 'त' के स्थान पर 'त' और 'य' दोनों ही पाये जाते हैं।

३. 'क' के स्थान पर 'ग' के अतिरिक्त 'क' और 'य' भी पाए जाते हैं।

४. मध्यवर्त्ती क, ग, च, ज, त, द और प का लोप अनियमित रूपसे पाया जाता है।

५. विभक्ति चिन्होंमें प्रथमा विभक्तिके एकवचनमें ओ एवं सप्तमीके एकवचनमें संस्कृतके समान ए-कार प्रत्यय पाया जाता है।

६. कृदन्त रूप शौरसेनीके समान ही पाए जाते हैं।

७. इक्त्वाके स्थान पर य और त्य के स्थान पर 'च्च' पाए जाते हैं।

८. 'भू' धातुके स्थान पर हो और 'कृ' के स्थान पर 'कुण्' प्रयोग उपलब्ध होते हैं।

अतः इस ग्रंथकी भाषामें शौरसेनी और अर्द्धमागधी इन दोनों ही प्रवृत्तियोंका समन्वित रूप पाया जाता है। अतः इस ग्रंथकी भाषाको हम सामान्य प्राकृतके नामसे अभिहित कर सकते हैं। प्रारम्भमें प्राकृत-का सामान्य स्वरूप ही था। शौरसेनी, महाराष्ट्री, मागधी आदि देशज भेदोंका विकास तो साहित्यिक प्राकृत-के समयमें ही हुआ है। अतः भाषाकी दृष्टिसे इस ग्रंथका रचनाकाल ईस्वी सन्की पाँचवीं शताब्दीके बाद नहीं होना चाहिए।

वृहज्ज्यौतिषार्णवकी पुष्पिकामें अंकित 'भद्रबाहु विरचित' पद भी विचारणीय हैं। भद्रबाहु श्रुति केवलि तो इस ग्रन्थके रचयिता नहीं हैं। बहुत संभव है कि द्वितीय भद्रबाहु जिन्हें बरामेरका भाई माना जाता है

इस ग्रन्थके रचयिता हों। इस ग्रन्थकी चार गाथाएँ श्रीधरकी ज्योतिर्ज्ञानविधिमें भी उद्धृत मिलती हैं। इन गाथाओंका पाठ बृहज्ज्योतिषार्णवके पाठके समान ही है। अतः बहुत संभव है कि इस ग्रन्थकी रचना भद्रबाहु द्वितीय द्वारा पाँचवीं और छठीं शताब्दिके मध्यमें की गई हो।

संपादन करते समय ज्योतिष साहित्यके हस्तलिखित और मुद्रित समस्त ग्रन्थोंका आलोड़न कर यह जानना चाहा कि इस ग्रन्थकी गाथाएँ अन्यत्र कहाँ-कहाँ उद्धृत मिलती हैं। ज्योतिर्ज्ञानविधिमें चार गाथाएँ ज्योंके त्यों रूपमें प्राप्त हैं। मेघविजयगणि द्वारा संकलित मेघमहोदय या वर्ण प्रबोधमें इस ग्रन्थकी सभी गाथाएँ यत्-किंचित् परिवर्तनके साथ प्राप्त होती हैं। इन गाथाओंका गठन जैन महाराष्ट्रीका है और सारी प्रवृत्तियाँ महाराष्ट्री के समकक्ष हैं। अतः वर्णप्रबोधके रचयिताने इन गाथाओंको किसी अन्य ग्रन्थसे ग्रहण कर इनका पृथक् अस्तित्व सिद्ध करनेके लिए महाराष्ट्रीका पुट दिया है। अतएव संक्षेपमें वर्ण्य-विषय, भाषा-शैली एवं ज्योतिर्ज्ञानविधिमें प्राप्त उद्धरणके आधार पर इसका रचनाकाल वराहमिहिरसे पूर्व ही सिद्ध होता है। एक अन्य प्रमाण यह भी है कि लोकविजययन्त्रकी आठवीं, नौवीं और दशवीं गाथाओंकी संस्कृत छाया वाराही संहिताकी भट्टोत्पली टीकामें उद्धृत है। अतः श्रीधर और भट्टोत्पलके पूर्व इस ग्रंथका अस्तित्व सिद्ध होता है। भट्टोत्पलका समय शक संवत् ८८८ है और श्रीधरका दशम शताब्दीका अन्तिम भाग है। श्रीधरने संवत्सरोंके नाम और उनके शुभाशुभत्वके सम्बन्धमें विचार करते हुए लोकविजययन्त्रकी गाथाएँ प्रस्तुत की हैं। वाराही संहिताके प्रकरणमें लोकविजययन्त्रकी गाथाओंकी छाया भी दृष्टिगोचर होती है। अतएव हमारा अनुमान है कि इस ग्रन्थका रचना काल वराहमिहिरसे पूर्व होना चाहिए।

प्रस्तुत सम्पादन

लोकविजययन्त्रके सम्पादनकी भी एक कथा है। इसकी गाथाओंकी सूचना स्व० श्री पण्डित जवाहर लाल वैद्यने आदरणीय आचार्य पण्डित जुगलकिशोरजी मुख्तारको दी थी और उन्होंने ही इन गाथाओंका सङ्कलन कर मुख्तार साहबको दिया था। मुख्तार साहबने उस संकलनको सम्पादन और अनुवादके लिए मेरे पास भेजा। इस समय तक मेरा भारतीय ज्योतिष नामक ग्रंथ प्रकाशित हो चुका था। अतः आदरणीय मुख्तार साहबको मेरे ऊपर इस ग्रंथके सम्पादनका पूर्ण विश्वास था। मैंने उनकी आज्ञा स्वीकार कर इसका सम्पादन और अनुवाद सन् १९५०में पूर्ण कर उन्हें प्रकाशनार्थ सुपुर्द किया। मुख्तार साहबने अनुवाद और सम्पादनको देखकर मुझे सूचित किया कि दो-चार दिनों तक मेरे साथ बैठने पर ही इसकी गाथाएँ शुद्ध हो सकेंगी। आप अन्यत्र इस ग्रंथके उद्धरण कहाँ-कहाँ प्राप्त होते हैं तथा इस प्रकारका विषय किन-किन ग्रंथोंमें आया है इसकी जाँच-पड़ताल कीजिए। मैंने बृहज्योतिषार्णवके सभी खण्ड काशी विद्यापीठके पुस्तकालय से प्राप्त किये और गाथाओंका मिलान ज्योतिषार्णवमें लिखित गाथाओंसे किया।

भट्टोत्पली टीका ज्योतिषका भंडार है। मैंने इस समुद्रका भी मन्थन किया और गाथाओंकी भाव छायाको ढूँढ़ निकाला। ज्योतिर्ज्ञानविधि जो अभी तक अप्रकाशित है और जिसकी पाण्डुलिपि मूडबिद्रीके शास्त्र-भण्डार में है। मैंने उसे सन् १९४६ में मँगाया। इस ग्रंथके अध्ययनसे ज्ञात हुआ कि संवत्सर प्रकरण में लोकविजययन्त्रकी गाथाएँ उद्धृत हैं। भाव छाया तो अनेक श्लोकोंमें दिखलाई पड़ती है। ऋषिपुत्रके निमित्तशास्त्रमें कई गाथाओंकी समानता दृष्टिगोचर होती है। जैन सिद्धान्त भवन, आराके ग्रंथागारमें ऋषिपुत्र निमित्तशास्त्रकी तीन हस्तलिखित प्रतियाँ हैं। एक प्रतिमें गाथाओंकी संख्या अधिक है तथा शब्द परिवर्तनके साथ कुछ गाथायें लोकविजययन्त्रकी गाथाओंसे भी मिल जाती हैं। 'मेघमहोदय'में तो ये सभी गाथाएँ पाठान्तरके साथ उद्धृत हैं। अतएव मैंने उक्त सभी ज्योतिष-साहित्यके

आलोकमें लोकविजययन्त्रकी गाथाओंका पाठ संशोधित किया और पुनः मुख्तार साहेबको प्रकाशनार्थ दिया। मुख्तार साहबने सिद्धान्तशास्त्री पण्डित हीरालालजीके सहयोग से इन गाथाओंका पुनर्वाचन किया तथा मेरे अनुवाद और विवेचनको भी उन्होंने देखा और प्रकाशनके हेतु पाण्डुलिपि स्वीकृत की। कई वर्षों तक इस ग्रन्थका प्रकाशन अवरुद्ध रहा। इसी बीच मैंने वीर सेवा मन्दिरके सत्त्वाधिकारी, साहित्यानुरागी स्वर्गीय श्री बाबू छोटेलालजीसे अनुरोध किया कि आपके यहाँ मेरे द्वारा सम्पादित लोकविजययन्त्रकी पाण्डुलिपि पड़ी हुई है। आप उसे अपनी संस्थासे प्रकाशित कराइये अथवा मुझे वापस कर दीजिये। पाँच-छः महीनेकी तलाशके पश्चात् श्री बाबू छोटेलालजीने पाण्डुलिपि मुझे वापस लौटा दी। पाण्डुलिपिके दस-बारह पृष्ठ दीमक द्वारा चाट लिये गये थे। अतः उन्होंने लिखा कि इसे पुनः पूर्ण कर वीर सेवा मन्दिरको दीजिए। इसका प्रकाशन हो जायगा। इन दिनों तक परम पूज्य आचार्य पण्डित श्री जुगलकिशोरजी मुख्तार वार्धक्यके कारण अशक्त हो गये थे और उन्होंने भी मुझे 'एटा'से पत्र लिखा था कि लोक-विजययन्त्र और 'आयज्ञान तिलक' इन दोनों ग्रन्थोंके प्रकाशनकी मेरी आन्तरिक अभिलाषा है। इन दोनों ग्रन्थोंका प्रकाशन वीर सेवा मन्दिर ट्रस्टकी ओरसे किया जायगा। कई वर्षोंका समय यों ही निकल गया। अतः आप उसे पुनः ठीक कर शीघ्र ही ट्रस्टको दे दीजिए। अवकाश निकालकर आयज्ञानतिलकका सम्पादन और अनुवाद भी प्रारम्भ कीजिए। मेरे पास इसकी दो पाण्डुलिपियाँ हैं। एकको मैंने स्वयं संशोधित किया है जिसे मैं सम्पादनके समय आपको दे दूँगा।

पूज्य मुख्तार साहबकी रुग्णता उत्तरोत्तर बढ़ती गयी और उनके जीवनकालमें इन दोनों ग्रन्थोंका प्रकाशन न हो सका। उनकी मृत्युके पश्चात् वीर सेवा मन्दिर ट्रस्टके सुयोग्य मन्त्री डॉ० प्रो० श्री दरबारी-लालजी कोठिया एम० ए०, आचार्य, पी० एच डी० से मैंने मुख्तार साहबकी इच्छा अभिव्यक्त की। कोठियाजीने कहा कि लोकविजययन्त्रके प्रकाशनकी चर्चा बहुत पुरानी है। मुझे ज्ञात है कि पूज्य मुख्तार साहबने इसका सम्पादन और अनुवाद कराया है। वे ४९-५० ई० में ही इसका प्रकाशन वीर सेवा मन्दिरसे करना चाहते थे। पर परिस्थितियोंने वैसा नहीं करने दिया। अतएव अब मैं उनके ट्रस्टकी ओरसे इस ग्रन्थका प्रकाशन करनेकी व्यवस्था करता हूँ। फलतः उन्होंने मुझसे पाण्डुलिपि लेकर २० वर्ष पुराने इस कार्यक्रमको मूर्तरूप दिया। अतएव मैं इस सङ्कल्पको पूर्ण करनेमें सहायक और प्रेरक परम पूज्य पंडित श्रीजुगलकिशोरजी मुख्तारके प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धाञ्जलि समर्पित करता हुआ महामना स्वर्गीय श्रीबाबू छोटेलालजीके प्रति भी अपनी श्रद्धाभक्ति समर्पित करता हूँ।

इस सङ्कल्पकी पूर्तिमें सहायक सिद्धान्तशास्त्री पण्डित श्रीहीरालालजी ब्यावर एवं विद्वच्छिरोमणि प्रसिद्ध नैयायिक श्री प्रो० दरबारीलालजी कोठियाके प्रति विनम्र आभार प्रकट करता हूँ। श्रीकोठियाजीकी कृपासे ही यह ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है। अन्तमें बृहज्ज्योतिषार्णवके उद्धरणोंकी सूचना देने वाले स्व० वैद्य पण्डित जवाहरलालजीके प्रति भी श्रद्धाञ्जलि समर्पित करना पुनीत कर्त्तव्य है। मैं उन लेखकों और विद्वानोंके प्रति भी नतमस्तक हूँ जिनकी रचनाओंसे मुझे विवेचन एवं प्रस्तावना लिखनेमें सहयोग प्राप्त हुआ है।

श्रुतलेख लिखनेवाले आयुष्मान् नलिनकुमार एवं महावीर विद्यासागर इन दोनों स्नातक कक्षाके छात्रोंको उनके अभ्युदयके हेतु आशीर्वाद देता हूँ। ये दोनों छात्र अपने जीवनमें नवालोक और सर्वाङ्गीण उन्नति प्राप्त करें यही कामना है। यहाँ यह स्मरणीय है कि प्रूफ संशोधनका कार्य डा० प्रो० कोठियाजीने ही किया है। कोठियाजी श्रीवर्णी ग्रंथमाला एवं वीर सेवा मन्दिर ट्रस्ट इन दोनों संस्थाओंसे उच्च कोटिके साहित्यका प्रकाशन कर रहे हैं। उनके इस कार्यमें अहर्निश प्रगति हो यही हार्दिक भावना है।

भोला भवन,
वसन्त पञ्चमी,
विक्रम संवत् २०२७

नेमिचन्द्र शास्त्री

विषय-सूची

लोकविजय यन्त्र

मङ्गलस्तवन और प्रतिज्ञा

पणमिय पयारविंदे तिलोगनाहस्स जगपईवस्स ।
वुच्छामि लोगविजयं जंतं जंतूण सिद्धिकरं ॥ १ ॥

जो तीन लोकके नाथ और जगत्के प्रदीपरूप हैं, उन ऋषभ जिनेन्द्रके चरण-कमलोंको प्रणाम करके मैं उस लोकविजय यन्त्रको कहता हूँ, जो संसारी प्राणियोंकी कार्यसिद्धिका करनेवाला—उनकी कार्य-सिद्धिमें सहायक है ॥ १ ॥

विवेचन—लोकविजय यन्त्रकी द्वितीय गाथामें आदितीर्थङ्कर ऋषभदेवका निर्देश किया गया है, अतः प्रस्तुत मंगलाचरणमें भी प्रथम तीर्थङ्कर ऋषभदेवको नमस्कार करनेके उपरान्त जनकल्याणके हेतु लोकविजय यन्त्रको लिखनेका संकेत किया है।

लोकविजययन्त्रकी अंकसंख्याका निर्धारण तथा अंकसंख्याकी कल्पना द्वारा इस यन्त्रका विस्तार गणित-सिद्धान्तपर आधारित है। सामाजिक जीवनकी सुख-शान्ति एवं कष्ट-विपत्तिको अवगत करनेके लिए इस यन्त्रका उपयोग कई प्रकारसे किया जाता है। इसकी उपयोग-विधियोंका वर्णन यथास्थान किया जायगा। ज्योतिषशास्त्रमें मानवसमाजको सुखी और सम्पन्न सिद्ध करनेके लिए निम्नलिखित दश कारणोंका निरूपण किया है[1]। इन साधनोंमेंसे एक या अधिकके कम होने पर समाज दुःखी माना जाता है।

(१) अकाल—असमयमें वर्षाका न होना, (२) समयपर वर्षाका होना, (३) यथोचित मात्रा में धान्य—अनाजका उत्पन्न होना, (४) रोग एवं महामारियोंका अभाव, (५) साधुओंका सत्कार, (६) अनुकूल रूप, (७) अनुकूल रस, (८) अनुकूल गन्ध, (९) अनुकूल स्पर्श और (१०) अनुकूल शब्द। साधुओंके सत्कारके अन्तर्गत जान-मालकी रक्षा, पारस्परिक वैर-विरोधका आभाव एवं सुख-शान्ति सम्मिलित हैं। अनुकूल रूप-रस-स्पर्श-शब्दका आशय धान्य, दुग्ध, घृत, गुड प्रभृति उपयोगी पदार्थोंकी प्रचुर परिमाणमें उत्पत्ति होनेसे है। आर्थिक समृद्धि, आन्तरिक शान्ति एवं परराष्ट्रभयका अभाव ही अनुकूलताका परिचायक है। देशकी वास्तविक समृद्धि वर्षापर निर्भर है, वर्षा कहाँ पर कितनी होगी; इसका निर्धारण उक्त लोकविजय यन्त्र द्वारा संभव है। ज्योतिषशास्त्रमें वर्षाके हेतु देश, वायु और देव ये तीन माने गये हैं। जिस देशमें[2] जब जलयोनिके जीवोंके पुद्गलोंका विनाश और उत्पत्ति हो उस समय वहाँ वर्षा होती है। प्राचीन मान्यतानुसार नागकुमार, यक्ष और भूत जातिके व्यन्तर भी वर्षाके कारण हैं। वर्षाकालमें अनु-

---

१. दसहिं ठाणेहिं ओगाढं सुसमं जाणेज्जा तं०—अकाले न वरिसइ काले वरिसइ साहू पूइज्जति, असाहू ण पूइज्जंति गुरुसु जणो सम्मं पडिवन्नो मणुण्णा सद्दा मणुण्णा रूवा मणुण्णा रसा मणुण्णा गंधा मणुण्णा फासा। —ठाणांग १०, १०५७ सूत्र।

२. तिहिं ठाणेहिं अप्पवुट्ठिकाए सिया तं० तस्सिं च णं देसंसि वा पदेसंसि वा णो बहवे उदगजोणिया जीवा य पोग्गला य उदगत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति।
पडिलोमवाऊ समुट्ठियं वासिउकामं वाउकाए विहुणेइ इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं अप्पवुट्ठिकाये सिया। तिहिं ठाणेहिं महावुट्ठिकाए सिया…।—ठाणांग ३।३।२२९।

कूल वायुका रहना भी अच्छी वर्षाके लिए आवश्यक है। वर्षाके समय प्रचण्ड पवन चलता है, तो वर्षा छिन्न-भिन्न हो जाती है। सर्वतोभद्र, लोकविजय, सप्तनाडी, लांगल, समुद्र और रोहिणी प्रभृति चक्रोंद्वारा वर्षा का परिज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। आकाशीय और भूमिज निमित्तों द्वारा भी वर्षाका ज्ञान किया जाता है। ये निमित्त इतने सरल और परिचित हैं, जिससे एक अशिक्षित कृषक भी वर्षाके सम्बन्धमें जानकारी प्राप्त कर सकता है। घाघ और भड्डरीकी उक्तियां आज भी कृषिप्रेमी जनताके मुँहसे सुनायी पड़ती हैं। बरसातके आरम्भसे लेकर फसलकी कटाई तककी कहावतें सुप्रसिद्ध हैं।

लोकविजय यन्त्रके रचयिताको वर्षाविज्ञान, नभोमण्डल, ग्रहोंकी गति-स्थिति एवं सुभिक्षविज्ञानकी विशेष जानकारी थी। उन्होंने ग्रहोंके ध्रुवाङ्कोंपरसे ही वर्षाके सम्बन्धमें तथ्य निर्धारित किये हैं। ये केवल अनुमित आंकड़े ही नहीं हैं, बल्कि गणित-प्रक्रियापर अवलम्बित निश्चित तथ्य हैं। आजके वैज्ञानिक युगमें वेधशालाओंके द्वारा वर्षा और सुभिक्षका निरूपण उतने दृढ़ विश्वासके साथ नहीं किया जाता है, जितने दृढ़ निश्चयके साथ लोकविजय यन्त्रके रचयिताने ध्रुवाङ्कोंका निरूपण किया है। पूनाकी वेधशाला की भविष्यवाणी कभी कदाचित् गलत भी सिद्ध हो सकती है तथा इस वेधशालासे बहुत दिन पहले वर्षाकी स्थितिका पता भी नहीं चल सकता है। पर यन्त्रप्रक्रिया द्वारा किसी भी देशकी भविष्यमें होने वाली वर्षा की स्थितिको यथार्थ रूपमें जाना जा सकता है। यह यन्त्र-प्रक्रिया भारतीय मस्तिष्ककी अमूल्य उपज है।

यन्त्र-प्रक्रियामें देशोंको तीन भेदोंमें विभक्त किया है[1]—जलमय देश, जंगल देश और मिश्र देश। भारतमें आसाम, बंगाल और मालवा प्रभृतिकी गणना जलमय देशोंमें; मारवाड़, आन्ध्र, राजस्थान प्रभृति की जंगल देशोंमें एवं विहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, मद्रास, सौराष्ट्र प्रभृतिकी मिश्र देशोंमें गणना की गयी है। समान ग्रहयोगके रहने पर भी देशकी विशेषताके कारण जलमय देशोंमें अधिक वृष्टि, जंगलमय देशोंमें अल्पवृष्टि और मिश्र देशोंमें मध्यवृष्टि होती है। अतः यन्त्रों द्वारा फल अवगत करते समय देश-विशेष का विचार अवश्य करना चाहिए। इसी कारण 'मेघमहोदय' में 'मेघविजयगणि' ने वर्षाहेतुओंका बड़े ही विस्तारके साथ निरूपण किया है। देशविशेष और समयविशेष इन दोनों बातोंपर ऊहा-पोह किये बिना फल बतलाना ज्योतिषशास्त्र सम्बन्धी अनभिज्ञताका सूचक है। "अपने रहनेके स्थान और समग्र देशके कल्याणके लिए निमित्त देखना चाहिए। उद्यमी पुरुषको आने वाले उत्पातोंका पहलेसे ही विचार कर सुखी और सम्पन्न प्रदेशमें स्थान ग्रहण करना चाहिए।" पदार्थके नैसर्गिक रूपमें अकस्मात् परिवर्तन होने पर उत्पात समझा जाता है। अकारण वस्तुके स्वरूपमें विकृति होना उत्पात है। उत्पात होने पर दुष्टकाल, महामारी तथा नाना प्रकारके अरिष्ट उत्पन्न होते हैं। देशकी सुख-शान्तिका परिज्ञान निमित्तों, उत्पातों, ग्रहचार तथा यन्त्रोंसे अवगत कर चेतावनी प्राप्त करनी चाहिए॥ १॥

यन्त्रनिर्माणकी विधि

सिरि-रिसहेसरसामियपारणपारंभ गणिय धुव्वंकं।
दिस-इयरेहिं ठवियं जंतं देवाण सारमिणं॥२॥

---

१. अनूपो जाङ्गलो मिश्रस्त्रिधा देशो बुधैर्मतः। तत्तत् स्वभावं विज्ञाय जलवृष्टिर्निगद्यते॥
तस्मान् मालवदेशादौ समानेऽपि ग्रहोदये। वृष्टिः स्यादेव नियता कालात् क्षेत्रे बलिष्ठता॥
तदा दुष्टे ग्रहादीनां योगे दुर्भिक्षता न हि। किन्तु विग्रह-भार्यादिस्तत्कृतं वैकृतं भवेत्॥
एवं मरुस्थलादौ स्याद् यदा शुभाग्रहोदयः। तथाप्यवग्रहो वृष्टेर्वाच्यः स्वल्पोऽपि धीमता॥
—मेघमहोदय पृ० ४-५।

यह वक्ष्यमाण यन्त्र, जो कि ऋषमेश्वर स्वामीके पारणा-समयसे—अक्षय-तृतीयाके दिन उनकी प्रथम पारणा-ग्रहणकी वेलासे—गणित करके दिशा-विदिशाओंमें स्थापित किये हुए ध्रुवाङ्कोंको लिए हुए हैं, दैवज्ञोंका सार है, दैवाधीन घटनाओंका सूचक है ।। २ ।।

विवेचन—अक्षय-तृतीयाके दिन मेघोंका निरीक्षण कर सुभिक्ष-दुर्भिक्ष जाननेकी प्रथा भी प्राचीन-कालसे प्रचलित है। यदि इस दिन आकाशमें बादल हों तो वर्षा अच्छी होती है और देशमें सुभिक्ष होता है। प्रातःकाल आकाशमें मेघोंके दिखलायी पड़नेसे आरम्भमें अच्छी वर्षा, मध्याह्नमें मेघोंके दिखलाई पड़नेसे वर्षाका अभाव अथवा अधिक वर्षा एवं सन्ध्या समय मेघ-दर्शन हो तो अल्पवर्षा होती है। मध्याह्नकाल में आकाशमें मेघघटाएँ गर्जन-तर्जन करती हुई दृष्टिगोचर हों तो श्रावण-भादोंमें अधिक वर्षा, आश्विनमें अल्प वृष्टि एवं कार्तिक, मार्गशीर्ष और माघ मासमें भी अल्पवृष्टि होती है। अपराह्नकालमें काली-काली घटाएँ दिखलायी पड़ें तो अषाढ़, श्रावण, आश्विन और मार्गशीर्षमें पर्याप्त वर्षा होती हैं। अक्षय-तृतीयाके दिन आकाशमें बादलोंके रहनेसे आगामी वर्षाकी सूचना प्राप्त होती है।

अक्षय-तृतीया की रात्रिमें बादल दिखलायी पड़ें और साधारण वर्षा भी हो तो पूरा संवत् ही सुखप्रद नहीं होता, रोग-मरी फैलती है। अनाज अल्प परिमाणमें उत्पन्न होता है। इस दिन मध्यरात्रिके बाद आकाशमें बादल हों तो सभी प्रकारसे अशान्ति, उपद्रव और फसलमें नाना प्रकारके रोगोंकी सूचना समझना चाहिए। अक्षय तृतीयाको दिनभर बादल आकाशमें छाये रहें तो आगामी समय सुखमय व्यतीत होता है। रात्रिमें बादलोंका आकाशमें आच्छादित रहना अशुभ सूचक है।

भड्डरीने अक्षय-तृतीयाके दिन आकाशमें दिखलायी पड़नेवाले बादल, बिजली आदि निमित्तोंके द्वारा आगामी वर्षके शुभाशुभत्वका सुन्दर निरूपण किया है। उनका अभिमत है कि इस दिन प्रातःकाल से ही आकाशमें बादल दिखलायी पड़ें और मध्याह्नमें बिजली चमके तो उत्तम फसल उत्पन्न होती है। यह निमित्त सुकाल और सुख-समृद्धिका सूचक है, पशुधनकी समृद्धिकी भी सूचना इसी निमित्तसे प्राप्त होती है। आर्षग्रन्थोंमें भी निमित्तों द्वारा वर्षाको अवगत करनेका निरूपण आया है। अक्षय-तृतीया का दिन ज्योतिषशास्त्रमें कई प्रकारके निमित्तोंके लिए प्रसिद्ध है। इस तिथिको दिनमें बादलोंका रहना और रात्रिमें बादलोंका अभाव रहना शुभ सूचक बताया गया है। बादलोंकी आकृति, स्थिति एवं गतिसे भी विभिन्न प्रकारके शुभाशुभोंका विवेचन पाया जाता है।

षष्टि-संवत्सरीमें अक्षय-तृतीयाके दिन प्रहरोंके अनुसार बादलोंका फल कहा है। प्रथम प्रहरमें होनेवाली बादलोंकी गर्जना, आच्छादित होना तथा हल्के रूपमें बरसना सुभिक्षका सूचक माना गया है। दूसरे प्रहरमें बादलोंके आच्छादित होनेसे सन्तुलित रूपमें वृष्टि होती है, देशमें धन-धान्यकी वृद्धि होती है, शासक-शासितोंमें एकता और प्रेम बढ़ता है। तीसरे प्रहरमें बादलोंके होनेसे गेहूँ, चना, उड़द आदि की विशेषरूपसे उपज होती है। चौथे प्रहरमें इस दिन बादलोंका गर्जन अशुभप्रद माना है, इस दिन बरसना शुभ और सामान्यतः सुकालका सूचक है। पाँचवें प्रहरमें सुभिक्ष, व्यापारमें लाभ, देशकी सम्पत्तिकी वृद्धि एवं जनताकी धर्मकार्योंकी ओर विशेष रुचि होती है। छठवें प्रहरमें वर्षा होनेसे शान्ति और सुभिक्ष की सूचना प्राप्त होती है। सातवें प्रहरमें आकाशमें बादलोंका आच्छादित रहना बहुत शुभ और वर्षा होना अशुभ सूचक है। आठवें प्रहरमें आकाशका स्वच्छ रहना मंगलसूचक है।

अक्षय-तृतीयाके दिन मध्याह्नमें छाया-गणित द्वारा भी सुभिक्ष-दुर्भिक्षका ज्ञान प्राप्त किया जाता है। इसकी प्रक्रिया यह है कि एक नौ अंगुल लम्बी सीधी और चिकनी लकड़ीको समतल भूमि पर खड़ा कर दें।

४ : लोकविजय यन्त्र

इस लकड़ीकी छाया पूर्वाभिमुख हो तो अंगुलात्मक छाया प्रमाणको पाँचसे गुणाकर सातका भाग दें। भाग देनेसे सम संख्या शेष रहे तो दुर्भिक्षकी सूचना और विषम संख्या शेष रहे तो सुभिक्षकी सूचना समझनी चाहिए। शून्य शेष रहने पर अनाज पर्याप्त मात्रामें उत्पन्न होता है, किन्तु रोग, कष्ट, विपत्ति, या आकस्मिक विद्रोहकी सूचना भी प्राप्त होती है। छायाके पश्चिमाभिमुख होने पर उस अङ्गुलात्मक छायाको चारसे गुणा कर पाँचका भाग देने पर शेष एकमें सुभिक्ष, दोमें दुर्भिक्ष, तीनमें सुभिक्ष, चार शेषमें समता—सामान्यतः सुख-शान्ति और शून्य शेषमें सब प्रकारसे सुख-शान्तिकी प्राप्ति होती है। उत्तराभिमुख छायाके होनेपर अङ्गुलात्मक छाया मानको ग्यारहसे गुणा कर तेरहका भाग देकर शेष संख्याके अनुसार भविष्यफल अवगत करना चाहिए। एक शेष रहने पर शान्ति-सुख; दो शेष रहने पर पशुओंको कष्ट; तीन शेष रहने पर अवर्षण; चार शेष रहने पर धन-धान्यकी समृद्धि; पाँच शेष रहने पर अकाल; छः शेष रहने पर सुख-साता; सात शेष रहने पर कष्ट, महामारी और अन्नकी उत्पत्ति; आठ शेष बचने पर सुभिक्ष, रोगवृद्धि और आन्तरिक कलह; नौ शेष बचने पर देशमें उत्पात, किसी महापुरुष या नेताकी मृत्यु और सामान्यतः जलवर्षा; दश शेष रहने पर सुख, नये कार्योंका प्रचार-विकास, अन्नकी समृद्धि और जनसंख्याकी वृद्धि; ग्यारह शेष बचने पर अच्छी वर्षा, सामान्यतः सुख, वस्तुओंकी मूल्यवृद्धि और व्यापारियोंको अकस्मात् लाभ; बारह शेष बचने पर अन्नकी समृद्धि, प्रजाको सुख और राज्यकोषकी वृद्धि एवं शून्य रहने पर धन-जनकी हानि, तिलहनोंकी मूल्यवृद्धि, सामान्यतः वर्षा, प्रजामें पारस्परिक कलह, वितंडा और शत्रु-आक्रमणकी सूचना समझनी चाहिए।

दक्षिणाभिमुख छायाके होने पर अङ्गुलात्मक छाया मानमें सात जोड़कर चारसे भाग देने पर एक शेष बचनेसे अन्नवृद्धि, समयानुसार वर्षा, विशेष रूपसे तृणोत्पत्ति एवं सुख-शान्ति; दो शेष बचनेमे पशुओंकी वृद्धि, आवश्यकतानुसार वर्षा, नये नेताका पदार्पण एवं सामान्यतः सुख-लाभ; तीन शेष बचनेसे अन्न-हानि, अल्पवर्षा, धान्यरोग एवं जल-कष्ट और शून्य शेष बचनेसे व्यापारमें लाभ, सामान्यतः वर्षा एवं पशुओंकी मूल्य वृद्धिकी सूचना प्राप्त होती है। छाया-गणितकी उपयोगिता वर्षा और सुभिक्ष ज्ञानके लिए अत्यधिक है। यह गणित मेष-संक्रान्ति और अक्षयतृतीया इन दोनों दिनों करके भविष्यकी सूचना प्राप्त करनी चाहिए। यदि दोनों दिनोंका भविष्य फल समान निकलता हो तो निश्चयतः वर्षा और सुभिक्षकी सूचना समझ लेना चाहिए।

अक्षय-तृतीया तिथिको जो नक्षत्र रहता है, उस नक्षत्रसे भी भावी फलादेश अवगत किया जाता है। यदि इस तिथिको समस्त दिन व्यापी रोहिणी नक्षत्र हो तो देशमें सुभिक्ष, सस्ता अन्न, व्यापारियोंको हानि, धर्ममार्गका विकास, उत्सवोंमें उत्साह एवं सम्यक् जलवर्षाकी सूचना प्राप्त होती है। मारवाड़, राजस्थान, गुजरात, बम्बई, बिहार, अवध और मद्रासमें यथेष्ट वर्षा होती है; परन्तु आसाम, विन्ध्यप्रदेश, मध्यप्रदेश, और दक्षिणी प्रान्तमें अवर्षण या अतिवर्षणकी स्थिति रहती है। श्रावण और भाद्रपदमें अधिक वर्षा और अन्य महीनोंमें अल्पवर्षा होती है। यदि अक्षयतृतीयाके दिन कृत्तिका नक्षत्र आता है, तो अल्पवर्षा होती है। फसल भी अच्छी नहीं होती, देशमें सर्वत्र उपद्रव होते हैं, राजनैतिक दलोंमें संघर्ष होता है और आषाढ़के महीनेमें अच्छी वर्षा होती है। हाँ, श्रावण और भाद्रपदमें वर्षा कम होती है तथा आश्विनमासमें भी समयपर वर्षा होनेकी सूचना प्राप्त होती है, अतः पूर्व, दक्षिण और उत्तरके प्रदेशोंमें अच्छी फसल उत्पन्न होती है। अक्षयतृतीयाको कृत्तिका नक्षत्रके सूर्यास्तकाल पर्यन्त रहनेसे उत्तरकी स्थिति अच्छी नहीं रहती। इस दिशाके प्रदेशोंमें अकालकी सम्भावना बनी रहती है। मृगशिरा नक्षत्र जब उक्त तिथिको मध्याह्नव्यापी रहता है, तो साधारण वर्षाकी सूचना प्राप्त होती है। वस्तुओंके मूल्यमें वृद्धि होती है और फसल साधारण-

रूपमें उत्पन्न होती है। उक्त तिथिको यदि यह नक्षत्र सूर्यास्तपर्यन्त रहे तो पूर्वके प्रदेशोंमें अधिक वर्षा, दक्षिणमें सामान्य वर्षा, पश्चिमीय प्रदेशोंमें सुख-समृद्धि और उत्तरके प्रदेशोंमें जलकष्ट रहता है। यदि यह नक्षत्र उक्त तिथिको मध्यरात्रि तक रहे तो व्यापारियोंको हानि, वस्तुओंके मूल्योंमें विशेष उतार-चढ़ाव औद्योगिक कार्योंमें प्रगति, धान्यकी विशेष उत्पत्ति, गेहूँ-चना-जौकी फसलमें किञ्चित् न्यूनता एवं पशुओंको कष्ट होता है। रोहणी नक्षत्र ५० घटीसे अधिक तृतीयाके दिन हो अथवा ८ घटीसे कम हो तो अधिक जलवृष्टि होती है। अनाजके मूल्यमें विशेषरूपसे घटा-बढ़ा होती रहती है। पश्चिमके प्रदेशोंमें अधिक सुख-शान्ति रहती है।

अक्षय-तृतीयाको पड़नेवाले वारके अनुसार भी फलादेश ज्ञात करनेकी विधि प्रचलित है। यदि अक्षय-तृतीया गुरुवारके दिन पड़े तो समयानुसार पर्याप्त वर्षा, सर्वत्र सुख शान्ति, धन-जनकी वृद्धि, दुग्ध-घृतकी समृद्धि, व्यापारियोंको लाभ, औद्योगिक कार्योंमें प्रगति, धर्म-कार्योंका प्रचार-प्रसार, नेताओंमें संघर्ष और सभी दिशाओंमें सुभिक्षकी सूचना प्राप्त होती है। इस तिथिके दिन शुक्रवार हो तो पूर्वीयप्रदेशोंमें अल्पवर्षा, पश्चिमीय प्रदेशोंमें पर्याप्त वर्षा, दक्षिणीय प्रदेशोंमें सामान्य वर्षा और उत्तरीय प्रदेशोंमें जल-कष्ट रहता है। वर्षाकी उक्त स्थितिके रहने पर भी धान्य उत्पत्ति सुन्दर होती है। अनाज सस्ता रहता है और पशुधनकी वृद्धि होती है। जब अक्षयतृतीया बुधवारके दिन पड़ती है, तो मध्यम वर्षा, प्रजामें विद्रोह, धर्मात्माओंमें कलह, नेताओंको कष्ट, राजनैतिक दलोंमें परस्पर संघर्ष, राजकार्योंमें विशृंखलता एवं मध्यम रूपमें फसलकी उत्पत्ति होती है। मंगलवारको इस तिथिके आनेसे अतिवृष्टि या अनावृष्टि, असमयवृष्टि, अन्नहानि, फसलमें नाना प्रकारके रोगोंकी उत्पत्ति, व्यापारियोंको लाभ, कपासकी फसलकी हानि, गन्ना की फसलमें समृद्धि, गेहूँ-चनाकी उत्पत्तिमें कमी एवं जनताको रोगजन्य कष्ट होता है। सोमवारको इस तिथिके आने पर प्रचुर परिमाणमें धन-धान्यकी वृद्धि, यथेष्ट परिमाणमें वर्षा, देशमें शान्ति, किसानोंको लाभ, ईति भीतिका अभाव, दक्षिण-प्रदेशमें महामारी, फसलकी कमी, उत्तरमें पर्याप्त जलवर्षा एवं दुग्ध-घृतादि रसपदार्थोंके मूल्यमें कमी आती है और उक्त पदार्थोंकी उत्पत्ति प्रचुर-परिमाणमें होती है। रवि-वारको जब यह तिथि पड़ती है तो साधारण वृष्टि, सामान्य रूपसे धान्यकी उत्पत्ति, व्यापारियोंको लाभ, रस-पदार्थोंके मूल्यमें महार्घता एवं संक्रामक बीमारियाँ फैलती है। शनिवारके दिन इस तिथिका पड़ना अशुभ सूचक है। इस दिन अक्षयतृतीयाके होनेसे वर्षाकी कमी, पूर्वीय प्रदेशोंमें बाढ़, भुखमरी, पश्चिम में सुख-शान्ति, दक्षिणमें नाना प्रकारसे अशान्ति, अन्नकी कमी और नेताओंमें परस्पर कलह उत्पन्न होती है। अक्षयतृतीयाके दिन रोहिणी-नक्षत्र और गुरुवार हो तो आगामी वर्षके लिए बहुत ही शुभ सूचक है। वर्षा अच्छी होती है और फसल भी उत्तम होती है। यहाँ यह ध्यातव्य है कि इस दिन गुरुग्रहका उदित रहना आवश्यक है, गुरुग्रहके अस्त रहनेसे या बाल्यावस्थामें रहनेसे फलकी प्राप्ति नहीं होती। जब गुरु बाल्योदय अवस्थामें रहता है, तो अत्यल्प फलकी प्राप्ति होती है। मार्गी बृहस्पतिके रहनेसे भी उक्त फल उपलब्ध होता है।

अक्षय-तृतीयाके दिन बुधवारका पड़ना और साथमें कृत्तिका नक्षत्रका रहना देशकी समृद्धि, सुख, शान्ति, सुवर्षाका सूचक है। मार्गी बलवान् बुध कृत्तिका नक्षत्र सहित अक्षयतृतीयाके दिन रहनेसे देशकी समृद्धि, सुख और शान्तिका सूचक है। इस तिथिको मृगशिरा नक्षत्र शुक्रवार, बुधवार और सोमवारको पड़े तो सुकाल, सुभिक्ष और वर्षाका सूचक है।

अक्षयतृतीयाके दिन शकुन, धान्य, लोष्ठ आदि परीक्षाओं द्वारा वर्षा और शुभाशुभके फलका विवे-चन करते हुए लिखा गया है कि वैशाख शुक्ला द्वितीयाकी रात्रिमें, जिसमें तृतीया आ गयी हो, दूसरे घर

जाकर कोई वस्तु मांगनी चाहिए। यदि गृहस्वामी प्रसन्नता-पूर्वक अभिलषित वस्तु दे और मधुर-प्रिय वचन बोले तो आगामी वर्ष उत्तम रहेगा; इसके विपरीत आचरणमें अनिष्ट फल होता है। शकुन साधकर इसी रात्रिमें किसीके घर जाकर वहाँके स्त्री-पुरुषोंका वार्तालाप सुना जाय, यदि वे प्रसन्नतापूर्वक वार्तालाप कर रहे हों तो शुभ और कलह युक्त वार्तालाप हो तो अशुभ फल अवगत करना चाहिये।

अक्षय-तृतीयाके दिन कुम्हारके घरसे चार कच्चे सिकोरे—मिट्टीके कटोरी जैसे वर्तन लाकर उनमें क्रमशः आषाढ़, श्रावण, भाद्र और आश्विनकी भावना करके जल भरदे और देखे कि सबसे पहले कौन से महीने वाले सिकोरेसे किस दिशासे जल बह रहा है। जिस महीनेके सिकोरेसे जिस दिशाको शीघ्र ही जल बहेगा, उस महीनेमें उसी दिशामें प्रचुर वर्षा होगी। जिस महीनेके सिकोरेसे सबसे पीछे जल गिरे और जिस दिशामें गिरे, उस महीनेमें उस दिशामें जलकी वर्षा नहीं होती है।

अक्षय-तृतीयाके दिन प्रातःकालमें ग्रामके बाहर किसी पेड़के नीचे दही, भात, घृत, चीनीके पाँच पिण्ड बनाकर चार चारों दिशाओंमें और एक बीचमें रख दे। कौवे सर्व प्रथम जिस दिशाके पिण्डको खावें, उस दिशामें पूर्णतया सुभिक्ष होगा। यदि वे बीच वाले पिण्डको खावें तो सभी देशोंमें सुभिक्ष होगा। यहाँ एक बात ध्यान रखनेकी यह है कि कौवे जिस दिशासे आकर खायेंगे, उस दिशामें रोग-मरी एवं नाना प्रकारकी व्याधियाँ उत्पन्न होनेको सूचना समझना चाहिए।

अक्षय-तृतीयाको किसी स्वच्छ पात्रमें जल भर उसमें सूर्य प्रतिबिम्बका दर्शन करे, यदि उसमें लाल बिम्ब दिखलायी पड़े तो युद्ध, कलह; पीला दिखलायी पड़े तो रोग; श्वेत दिखलायी पड़े तो सुभिक्ष एवं धूसर-वर्ण दिखलायी पड़े तो मूषक, टिड्डी आदिसे फसलको भय रहता है।

अक्षय-तृतीयाके दिन यदि रोहिणी नक्षत्रका तारा अस्त नहीं हुआ और चन्द्रमा उससे पहले ही अस्त हो गया हो तो दुर्भिक्ष; रोहिणी नक्षत्र पहले अस्त हो गया हो और चन्द्रमा उसके बाद अस्त हुआ हो तो सुभिक्ष होता है।

इस तिथिको चन्द्रमा सूर्यसे बायीं ओर अस्त हो तो अशुभ, उत्तरकी ओर रहे तो सुभिक्ष एवं समा-नान्तर हो तो सुभिक्ष होता है। इस तिथिके अन्तिम दो प्रहरमें दो-दो घड़ीका विभाग करके क्रमशः आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद और आश्विन महीनोंकी कल्पना करनी चाहिए। प्रथम दो घड़ियोंमें पूर्वकी हवासे; द्वितीय दो घड़ियोंमें उत्तरकी हवासे; तीसरी दो घड़ियोंमें पश्चिमकी हवासे और अन्तिम दो घड़ियोंमे दक्षिण की हवासे क्रमशः आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद और आश्विन मासमें वर्षा होनेकी सूचना समझनी चाहिए। इस तिथिकी रात्रिमें पूर्व दिशाकी हवा चलनेसे धान्यकी उपज बहुत अच्छी होती है।

इस तिथिको दक्षिणी वायु चलनेसे घासकी हानि, पश्चिमी वायु चलनेसे यथेष्ट वर्षा और उत्तरीय वायु चलनेसे वर्षा ऋतुमें इक्कीस दिनों तक मेघ गर्जन होता है। यदि इस तिथिको चारों दिशाओंकी वायु चले तो अनावृष्टि या अतिवृष्टि, प्रजाको कष्ट एवं धान्य महँगा बिकता है। पूर्व और उत्तरकी हवा चलनेसे वर्षाका सद्भाव और दक्षिण तथा नैऋत्य कोणकी हवा चलनेसे वर्षाकी रुकावट सूचित होती है। पश्चिमकी वायु चलनेसे खूब वर्षा होती है। आकाशमें बादलोंकी चाल देखकर वायुकी गतिका परिज्ञान करना चाहिए।

इस तिथिसे लेकर पाँच-छः दिनों तक लगातार वायु अधिक चले तो आगामी वर्षमें धान्य उत्पत्ति की कमीकी सूचना प्राप्त होती है। यदि अक्षयतृतीयाके एक दिन बाद आकाशमें बादल दिखलाई पड़ें और हवा चले तो उक्त वर्षा होनेकी सूचना प्राप्त होती है। अक्षयतृतीया अथवा वैशाख शुक्ला चतुर्थीको वर्षा होना आगामी वर्षके लिए शुभ सूचक नहीं है।[१]

---

१. विशेष जानकारीके लिए देखिये—कादम्बिनी, जयपुर, वि० सं० १९९९; पृ० ५७-६२।

लोकविजय-यन्त्रके ध्रुवाङ्क

नवकोट्ठएण सुद्धं इगसय पणयाल अंकगणिय-पयं ।
इक्किक्क होइ बुड्ढी तेवन्नसयं वियाणिज्जा ॥३॥

नौ कोठोंसे शुद्ध चक्र बनाकर मध्यके कोष्ठकमें १४५ का अङ्क लिखे, तत्पश्चात् उसमें दिशा-विदिशाके क्रमसे एक-एक अङ्क बढ़ाकर प्रदक्षिणारूप १५३ तकके ध्रुवाङ्क स्थापित करे।

विवेचन—ज्योतिष शास्त्रमें देशोंका विचार उज्जयिनीसे किया गया है; क्योंकि रेखांशके निकट यह नगरी पड़ती है। अतः मध्यप्रान्तका ध्रुवाङ्क १४५ है; इसके पश्चात् पूर्व दिशाके देशोंके ध्रुवाङ्क १४६; अग्निकोणके देशोंके ध्रुवाङ्क १४७; दक्षिणके देशोंके ध्रुवाङ्क १४८; नैऋत्यकोणके देशोंके ध्रुवाङ्क १४९; पश्चिमके देशोंके ध्रुवाङ्क १५०; वायुकोणके देशोंके ध्रुवाङ्क १५१; उत्तरके देशोंके ध्रुवाङ्क १५२; और ईशान-कोणके देशोंके ध्रुवाङ्क १५३ हैं।

दिशाके ध्रुवाङ्क पूर्व दिशाको आदि कर स्थापित करने चाहिए। जैन गणित परम्परामें गणना एकसे होती है; परन्तु एकको संख्या नहीं माना गया है।[१] अतः पूर्व दिशाका देशाङ्क २ है, इसके आगे अग्नि-कोणका ३, दक्षिण दिशाका ४, नैऋत्यकोणका ५, पश्चिम दिशाका ६, वायुकोणका ७, उत्तर दिशाका ८ और ईशानकोणका ९ देशाङ्क है। इस प्रकार दिशा और देशोंके ध्रुवाङ्क स्थापित कर यन्त्र बना लेना चाहिए। इस यन्त्र परसे शुभाशुभ फल अवगत करना तथा उस फलादेशके अनुसार सतर्क और सावधान होकर अपनी प्रवृत्ति करना चाहिए। मध्य देशका देशाङ्क एक माना गया है।

यन्त्रसे फलादेश निकालनेकी विधि

णिहिभत्ते जं सेसं तमंकसारेण गणिय जे देसा ।
संवच्छररायाओ आरम्भ दसाक्कमे भणिदा ॥४॥

लोकविजय-यन्त्रद्वारा प्राप्त हुए देश और दिशाके ध्रुवाङ्कोंमें अश्विनी आदि जिस नक्षत्रपर शनि हो, उतनी संख्या जोड़कर योगफलमें नौका भाग देने पर जो शेष रहे, उसे वर्त्तमान संवत्सरके राजासे आरम्भ कर विंशोत्तरी दशाक्रमसे गणनाकर फलादेश अवगत करना चाहिए।

विवेचन—लोकविजय-यन्त्रमें देश, ग्राम, नगर और दिशाके ध्रुवाङ्क आये हैं, अपने नगरके ध्रुवाङ्कमें दिशाका ध्रुवाङ्क जोड़कर, अश्विन्यादिसे गिनकर शनिनक्षत्रसंख्याको जोड़ देनेसे जो योगफल आवे, उसमें ९ का भाग देनेसे एकादि शेषमें वर्त्तमान संवत्सरके राजासे विंशोत्तरी दशाक्रमसे फल अवगत करना चाहिए। यहाँ शनिनक्षत्रसंख्याको जोड़नेका कारण यह है कि संवत्सरपर शनिका प्रभाव विशेष पड़ता है। वर्षा, सुभिक्ष, उत्पात, व्यापार, रोग, आकस्मिक भय आदिका सम्बन्ध शनि और वृहस्पतिसे अधिक है। वर्तमान संवत्सरका स्वामी वृहस्पतिसे सम्बन्ध रखता है, अतः यहाँ पर गुरुनक्षत्रको जोड़ा नहीं गया है। शनिनक्षत्रकी अपेक्षा भावी फलादेशके लिए सर्वदा रहती है। अतः उपर्युक्त गाथामें शनिनक्षत्रका उल्लेख न होनेपर भी प्रसंगवश शनिनक्षत्र ग्रहण किया गया है।

उदाहरणार्थ वि० सं० २०२३ के मार्गशीर्षमें यह जानना है कि कलकत्ता, आरा, सहारनपुर, दिल्ली और वाराणसीमें सुभिक्ष, वर्षा एवं रोग आदिकी क्या स्थिति होगी? इस उदाहरणमें कलकत्ता पूर्व दिशामें

१. पयादीया गणणा बीयादीया हवंति संखेज्जा—त्रिलोकसार, गाथा १६।

हैं, अतः कलकत्ताकी दिशाका ध्रुवाङ्क १४६ हुआ तथा यहाँका देश ध्रुवाङ्क दो है। शनि मार्गशीर्षमें पूर्वा भाद्रपद नक्षत्रपर है, तथा इस वर्षका संवत्सरपति बुध है। अत एव अश्विनीसे पूर्वा भाद्रपद तक नक्षत्र गणना की तो २५ संख्या आई। अतः १४६ + २ + २५ = १७३ योगफल हुआ। इसमें ९ का भाग दिया तो १७३ ÷ ९ = १९ भागफल और शेष २ रहा। अब शेषका संवत्सर राजा—बुधसे विंशोत्तरी दशाके क्रमानुसार गणना करनी चाहिए अर्थात् आदित्य, चन्द्रमा, भौम, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु और शुक्रक्रमसे ग्रह-गणना करनी है। यहाँपर दो शेष है, अतः बुधसे गणना करने पर दूसरी संख्या केतुकी हुई। गाथा १७ में केतु दशाका फलादेश बताया गया है। क्षतः फलादेश आगे लिखे गये दशाफलके आधारपर अवगत करना चाहिए। विंशोत्तरी दशाके क्रमको संक्षेपमें स्मरण रखनेके लिए निम्नांङ्कित संक्षिप्त रूप उपादेय होगा।

आ० चं० रा० जी० श० बु० के० शु०। शुक्रसे आगे गणना करनेकी आवश्यकता पड़नेपर पुनः आ०—आदित्य—सूर्यसे गिनना होता है।

वाराणसी ईशान कोणमें स्थित है, क्योंकि दिशाका परिज्ञान उज्जयिनीसे किया जाता है। अतः वाराणसीका दिग्ध्रुवाङ्क १५३, देशध्रुवाङ्क ९ है, शनि पञ्चाङ्गमें पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रपर है, अतः इसकी संख्या २५ है। अतएव १५३ + ९ + २५ = १८७ योगफल हुआ। इसमें ९ का भाग दिया तो—१८७ ÷ ९ = २० भागफल और ७ शेप रहा। बुध संवत्सरका राजा है, अतः बुधसे विंशोत्तरी दशाके क्रमानुसार गणना की तो राहुकी दशा आई। राहुदशाका फल १३वीं गाथामें आगे आया है।

दिल्ली उत्तर दिशामें है, यहाँका ध्रुवाङ्क १५२ है और यहाँका देशध्रुवाङ्क ८ है। शनि पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रमें अवस्थित है, इसकी संख्या २५ है। अतः १५२ + ८ + २५ = १८५; १८५ ÷ ९ = २० भागफल, ५ शेप रहा। बुधसे विंशोत्तरी दशाके क्रमानुसार ५ संख्याकी गणना की तो चन्द्रमाकी दशा आयी। इस दशाका फल ११वीं गाथामें वर्णित है।

आराका दिशाध्रुवाङ्क १५३, देशध्रुवाङ्क ९ और पूर्ववत् नक्षत्रसंख्या २५ है, अतः १५३ + ९ + २५ = १८७ ÷ ९ = २० भागफल और ७ शेष। संवत्सराधिपति बुधसे विंशोत्तरी दशाके अनुसार गणना की तो राहुकी दशा आई। इसका फलादेश इस ग्रन्थकी १३ वीं गाथाके अनुसार ज्ञात करना चाहिए। इसी प्रकार धौलपुर, आगरा, मथुरा, सागर प्रभृति स्थानोंका फलादेश अवगत करना चाहिए।

सुभिक्ष, दुर्भिक्ष और वर्षाका परिज्ञान करनेके लिए इस लोकविजय-यन्त्र का उपयोग अक्षय-तृतीयाके दिन करना चाहिए। जिस प्रकार अक्षय-तृतीयाके दिन बादलोंका निरीक्षणकर वर्षाका परिज्ञान प्राप्त किया जाता है, उसी प्रकार इस लोकविजययन्त्रके उपयोग द्वारा समस्त देशोंके शुभाशुभत्वका विचारविमर्श किया जाता है।

संवत्सरद्वारा शुभाशुभ ज्ञात करनेका नियम

संवत्सर जाननेकी प्रक्रिया बतलाते हुए कहा गया है कि शकाब्दमें १२ जोड़कर ६० का भाग देनेपर एकादि शेषमें प्रभव, विभव आदि संवत्सर होते हैं अथवा विक्रम संवत्‌में ९ जोड़कर ६० का भाग देनेपर एकादि शेषमें प्रभव, विभव आदि संवत्सर होते हैं। संवत्सरोंकी संख्या ६० मानी गयी है। बीस-बीस संवत्सरोंको आचार्योंने एक-एक युगमें विभक्त किया है; अतः ब्रह्माबीसी, विष्णुबीसी और रुद्रबीसीके नामसे ये तीनों युग प्रसिद्ध हैं। संवत्सरोंकी नामावली निम्न प्रकार है :—

१ प्रभव	१३ प्रमाथी	२५ खर	३७ शोभन	४९ राक्षस
२ विभव	१४ विक्रम	२६ नन्दन	३८ क्रोधी	५० नल
३ शुक्ल	१५ वृष	२७ विजय	३९ विश्वावसु	५१ पिंगल
४ प्रमोद	१६ चित्रभानु	२८ जय	४० पराभव	५२ कालयुक्त
५ प्रजापति	१७ सुभानु	२९ मन्मथ	४१ प्लवंग	५३ सिद्धार्थी
६ अंगिरा	१८ तारण	३० दुर्मुख	४२ कीलक	५४ रौद्र
७ श्रीमुख	१९ पार्थिव	३१ हेमलंबी	४३ सौम्य	५५ दुर्मति
८ भाव	२० व्यय	३२ विलंबी	४४ साधारण	५६ दुन्दुभि
९ युवा	२१ सर्वजित्	३३ विकारी	४५ विरोधकृन्	५७ रुधिरोद्गारी
१० धाता	२२ सर्वधारी	३४ शार्वरी	४६ परिधावी	५८ रक्ताक्षी
११ ईश्वर	२३ विरोधी	३५ प्लव	४७ प्रमादी	५९ क्रोधिन्
१२ बहुधान्य	२४ विकृति	३६ शुभकृत्	४८ आनन्द	६० क्षय

जिस वर्षमें जो संवत्सर हो, उसकी संख्याको दोसे गुणाकर गुणनफलमेंसे तीन घटाकर ७ का भाग देनेसे एक अथवा चार शेष रहे तो अतिवृष्टि या अनावृष्टि, अनेक भागोंमें वर्षाभाव, बाढ़, रोग, अल्प धान्योत्पत्ति; पश्चिमीय प्रदेशोंमें सुख-समृद्धि, धान्य-प्राचुर्य, रसवृद्धि; दक्षिणीय प्रदेशोंमें तृणकष्ट, जलकष्ट, धान्यकी सामान्य उपज, पशुधनकी महंगी; उत्तरीय प्रदेशोंमें वर्षाधिक्य, बाढ़ एवं महामारी एवं पूर्वीय प्रदेशोंमें साधारण धान्यकी उत्पत्ति होती है। दो या पांच शेष रहने पर पूर्वीय प्रदेशोंमें वर्षाभाव, बाढ़, महामारी, भुखमरी, उपद्रव, पारस्परिक कलह; पश्चिमीय प्रदेशोंमें सुभिक्ष, समयानुसार जलवर्षा, धान्योत्पत्ति, अर्थ-संकट, पशुधनकी महंगी, साधारणतः जलकष्ट; दक्षिणीय प्रदेशोंमें सामान्य जलवर्षा, अर्थसंकट, तृणकष्ट, फसलकी कमी, रोगभय एवं उत्तरीय प्रदेशोंमें सुभिक्ष रहता है। वर्षा कम होने पर भी उत्तरीय प्रदेशोंमें फसल अच्छी उत्पन्न होती है। तीन अथवा छः शेष रहने पर सभी प्रदेशोंमें साधारण जलवर्षा और साधा-रण ही फसल उत्पन्न होती है। प्रजाको अन्न, वस्त्र और जलका संकट नही रहता। यद्यपि राजनैतिक सम-स्याएँ बढ़ती जाती हैं, नाना प्रकारकी नयी-नयी उलझनें उत्पन्न होती हैं, तो भी उक्त फलादेश अच्छा ही घटित होता है। शून्य शेष रहने पर पूर्व और दक्षिणके निवासियोंको महामारीका सामना करना पड़ता है। पूर्वीय प्रदेशोंमें पर्याप्त वर्षा होती है, मवेशीको सुख-शान्ति प्राप्त होती है। जीवन-निर्वाहकी आवश्यक वस्तुओंके मूल्य बढ़ते जाते हैं। साधारणतः उक्त फलादेश प्रजाकी सुख-समृद्धिकी सूचना देता है; किन्तु युद्ध, कलह, महामारी, आकस्मिक उपद्रव आदि भी सूचित होते हैं।

उदाहरण—वि० सं० २०२३ में सिद्धार्थी नामक संवत्सर है, इसकी संख्या ५३ है। अतः ५३ × २ = १०६ गुणनफल हुआ। १०६ − ३ = १०३, १०३ ÷ ७ = १४ भागफल ५ शेष रहा। उपर्युक्त फला-देशके अनुसार सिद्धार्थी संवत्सर अर्थात् संवत् २०२३ में पूर्वीय और मध्यप्रदेशीय देशोंका फल अशुभ बताया गया है।

प्रत्येक संवत्में चैत्रशुक्ला प्रतिपदाको जो वार पड़ता है, वही उस संवत्सरका राजा होता है। वि० सं० २०२३ की चैत्रशुक्ला प्रतिपदा बुधवारको है, अतः इस संवत्सरका राजा बुध माना जायगा। वि० सं० २०२४ में चैत्रशुक्ला प्रतिपदा सोमवारको है, अतः इस वर्षका राजा चन्द्रमा माना जायगा। पञ्चांगमें प्रत्येक संवत्सरके राजाका नाम लिखा रहता है, अतः पञ्चांगसे भी संवत्सरकी जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

लोकविजय यन्त्रके लिए उपयोगी शनि नक्षत्रका परिज्ञान पञ्चांगपरसे ही किया जा सकता है। प्रत्येक पञ्चांगमें शनैश्चरका नक्षत्र अंकित रहता है। यन्त्र द्वारा फलादेश अवगत करनेके लिए उपयोगी नक्षत्रोंकी नामावली निम्न प्रकार है—

(१) अश्विनी, (२) भरणी, (३) कृत्तिका, (४) रोहिणी, (५) मृगशिरा, (६) आर्द्रा, (७) पुनर्वसु, (८) पुष्य, (९) आश्लेषा, (१०) मघा, (११) पूर्वाफाल्गुनी, (१२) उत्तराफाल्गुनी, (१३) हस्त, (१४) चित्रा, (१५) स्वाति, (१६) विशाखा, (१७) अनुराधा, (१८) ज्येष्ठा, (१९) मूल, (२०) पूर्वाषाढ़ा, (२१) उत्तराषाढा, (२२) श्रवण, (२३) घनिष्ठा, (२४) शतभिषा, (२५) पूर्वाभाद्रपदा, (२६) उत्तराभाद्रपदा, (२७) रेवती। उत्तराषाढ़ाके बाद और श्रवणके पहले अभिजित् नक्षत्र भी माना जाता है, किन्तु इस फलादेशमें इसकी गणना नहीं की गयी है।

ग्राम और नगरके ध्रुवाङ्क

जो अंको जं दिस्से बोधव्वो देसगाम-नयरस्स ।
आइच्चाइ-गहाणं फलं च पभणंति गीयत्था ।। ५ ।।

जो जो अंक जिस जिस देशके हैं, वे ही उस देशके अन्तर्गत ग्राम, नगरके ध्रुवाङ्क जानना चाहिए। इन ध्रुवाङ्कोंके द्वारा ही गीतार्थ विद्वान् सूर्यादि ग्रहोंका फल कहते हैं।

विवेचन—तीसरी और चौथी गाथामें सामान्यतः देश और दिशाके ध्रुवाङ्क बतलाकर रवि आदि ग्रहोंकी दशा निर्धारित की गयी है और आगेवाली गाथाओंमें उन दशाओंका फलादेश बतलाया गया है। इस गाथामें आचार्यने इतना ही बतलाया है कि सामान्यरूपसे जिस देशका जो ध्रुवाङ्क है, वही ध्रुवाङ्क उस देशके गाँव, नगर, नदी, वन, पर्वत आदिका भी माना जायगा। फलादेशकी प्रक्रिया पूर्वोक्त ही रहेगी। विशेषरूपसे फल ज्ञात करनेके लिए आगेवाली गाथाओंमें प्रत्येक नगरके ध्रुवाङ्कोंका आनयन किया है। ध्रुवाङ्कानयनकी यह प्रक्रिया बड़ी ही सरल, विद्वत्तापूर्ण और वैज्ञानिक है। जो अधिक गणित नहीं करना चाहते हैं तथा विषयकी गहराई और विस्तारमें प्रवेश नहीं करना चाहते हैं, उन्हें पूर्वोक्त विधिसे ही ग्रहदशाका परिज्ञान कर लेना चाहिए।

लोकविजय यंत्रकी ध्रुवांक-सारणी

क्रमसंख्या	नाम नगर	राज्य	दिशाङ्क	देशाङ्क	नगराङ्क	नक्षत्र
१	अकालकोट	बम्बई	१४९	५	५	कृत्तिका
२	अकोला	महाराष्ट्र	१४८	४	५	कृत्तिका
३	अगरतल्ला	त्रिपुरा	१४६	२	५	कृत्तिका
४	अघनेरा	उत्तरप्रदेश	१५२	८	५	कृत्तिका
५	अजन्ता	हैदराबाद	१४८	४	५	कृत्तिका
६	अजमेर	अजमेर	१५२	८	५	कृत्तिका
७	अजमगढ़	मध्यप्रदेश	१४५	१	५	कृत्तिका
८	अटक	पंजाब	१५०	६	५	कृत्तिका
९	अण्डमन	अण्डमन	१४७	३	५	कृत्तिका
१०	अनन्तापुर	मैसूर	१४६	४	५	कृत्तिका

क्रमसंख्या	नाम नगर	राज्य	दिशाङ्क	देशाङ्क	नगराङ्क	नक्षत्र
११	अमरावती	महाराष्ट्र	१४८	४	५	कृत्तिका
१२	अम्बर	राजस्थान	१५२	८	५	कृत्तिका
१३	अम्बाला	पंजाब	१५२	८	५	कृत्तिका
१४	अमरोहा	उत्तरप्रदेश	१५३	९	५	कृत्तिका
१५	अमृतसर	पंजाब	१५२	८	५	कृत्तिका
१६	अयोध्या	उत्तरप्रदेश	१५३	९	५	कृत्तिका
१७	अरान्तक	मद्रास	१४८	४	५	कृत्तिका
१८	अलमोड़ा	उत्तरप्रदेश	१५३	९	५	कृत्तिका
१९	अलवर	राजस्थान	१५२	८	५	कृत्तिका
२०	अलीगढ	उत्तरप्रदेश	१५२	८	५	कृत्तिका
२१	अलीपुर	बंगाल	१५३	९	५	कृत्तिका
२२	अलीबाग	बम्बई	१४९	५	५	कृत्तिका
२३	अलीगजपुर	मध्यप्रदेश	१४५	१	५	कृत्तिका
२४	अवध	उत्तरप्रदेश	१५३	९	५	कृत्तिका
२५	अवर	राजस्थान	१५३	९	५	कृत्तिका
२६	अवोर	आसाम	१५३	९	५	कृत्तिका
२७	असम्म	हैदराबाद	१४८	४	५	कृत्तिका
२८	अहमदनगर	बम्बई	१४९	५	५	कृत्तिका
२९	अहमदाबाद	गुजरात	१५०	६	५	कृत्तिका
३०	अहमादपुर	पंजाब	१५२	८	५	कृत्तिका
३१	आगरा	उत्तरप्रदेश	१५२	८	५	कृत्तिका
३२	आजमगढ़	उत्तरप्रदेश	१५३	९	५	कृत्तिका
३३	आरकट	मद्रास	१४७	३	५	कृत्तिका
३४	आरनी	मद्रास	१४८	४	५	कृत्तिका
३५	आरा	बिहार	१५३	९	५	कृत्तिका
३६	आसनसोल	बंगाल	१४६	२	५	कृत्तिका
३७	आसाम	आसाम	१४६	२	५	कृत्तिका
३८	इटारसी	मध्यप्रदेश	१४६	२	५	कृत्तिका
३९	इन्द्रवती	मद्रास	१४७	३	५	कृत्तिका
४०	इन्दौर	मध्यभारत	१४८	४	५	कृत्तिका
४१	इलाहाबाद	उत्तरप्रदेश	१५३	९	५	कृत्तिका
४२	उज्जैन	ग्वालियर स्टेट	१४५	१	५	कृत्तिका
४३	उटकमण्ड	मद्रास	१४७	३	५	कृत्तिका
४४	उदयपुर	राजस्थान	१५१	७	५	कृत्तिका
४५	उरई	उत्तरप्रदेश	१५१	७	५	कृत्तिका

क्रमसंख्या	नाम नगर	राज्य	विशाङ्क	वेशाङ्क	नगराङ्क	नक्षत्र
४६	औरंगाबाद	हैदराबाद	१४८	४	६	रोहिणी
४७	कटक	उड़ीसा	१५०	६	७	मृगशिर
४८	कटनी	मध्यप्रदेश	१४५	१	७	मृगशिर
४९	काठियावाड़	गुजरात	१५०	६	७	मृगशिर
५०	कन्नौज	उत्तरप्रदेश	१५२	८	७	मृगशिर
५१	करनाल	पंजाब	१५२	८	७	मृगशिर
५२	कर्नाटक	दक्षिणभारत	१४७	३	७	मृगशिर
५३	करांची	पाकिस्तान	१५०	६	७	मृगशिर
५४	करीमनगर	हैदराबाद	१४८	४	७	मृगशिर
५५	करूर	मद्रास	१४९	५	७	मृगशिर
५६	करौली	राजस्थान	१५२	८	७	मृगशिर
५७	कल्याण	बम्बई	१५०	६	७	मृगशिर
५८	कलकत्ता	बंगाल	१४६	२	७	मृगशिर
५९	कलिंगपट्टम	मद्रास	१४७	३	७	मृगशिर
६०	कसौली	पंजाब	१५२	८	७	मृगशिर
६१	कांगरा	पंजाब	१५२	८	७	मृगशिर
६२	कांजीवरम्	मद्रास	१४७	३	७	मृगशिर
६३	काथर	बिहार	१४६	२	७	मृगशिर
६४	कादिरी	मद्रास	१४७	३	७	मृगशिर
६५	कानपुर	उत्तरप्रदेश	१५३	९	७	मृगशिर
६६	कामवेलपुर	पंजाब	१५२	८	७	मृगशिर
६७	काम्बे	बम्बई	१५०	६	७	मृगशिर
६८	कारकल	मद्रास	१४७	३	७	मृगशिर
६९	कालका	पंजाब	१५२	८	७	मृगशिर
७०	कालाबाग	पंजाब	१५२	८	७	मृगशिर
७१	काश्मीर	काश्मीर	१५२	८	७	मृगशिर
७२	कावली	मद्रास	१४८	८	७	मृगशिर
७३	कालीकट	मद्रास	१४८	४	७	मृगशिर
७४	कालेमियर	मद्रास	१४८	४	७	मृगशिर
७५	किशनगंज	बिहार	१५३	९	७	मृगशिर
७६	किशनगढ़	जैसलमेर	१५१	७	७	मृगशिर
७७	किशनगढ़	राजस्थान	१५१	७	७	मृगशिर
७८	कुन्दापुर	मद्रास	१४८	४	८	आर्द्रा
७९	कुद्दप्पा	मद्रास	१४७	३	८	आर्द्रा
८०	कुधालोर	मद्रास	१४७	३	८	आर्द्रा

क्रमसंख्या	नाम नगर	राज्य	दिशाङ्क	देशाङ्क	नगराङ्क	नक्षत्र
८१	कुन्नूर	मद्रास	१४७	३	८	आर्द्रा
८२	कुमाता	बम्बई	१५०	६	८	आर्द्रा
८३	कुम्मिला	बंगाल	१४६	२	८	आर्द्रा
८४	कूरनूल	मद्रास	१४७	३	८	आर्द्रा
८५	कुर्ग	दक्षिण भारत	१४८	४	८	आर्द्रा
८६	कृष्णराजधाम	मैसूर	१४८	४	७	मृगशिर
८७	केनेनूर	मद्रास	१४८	४	९	पुनर्वसु
८८	कोकोनाड़ा	मद्रास	१४७	३	९	पुनर्वसु
८९	कोचीन	मद्रास	१४७	३	९	पुनर्वसु
९०	कोटा	राजस्थान	१५१	७	९	पुनर्वसु
९१	कोटद्वार	उत्तरप्रदेश	१५२	८	९	पुनर्वसु
९२	कोलार	मैसूर	१४८	४	९	पुनर्वसु
९३	कोलूर	मद्रास	१४७	३	९	पुनर्वसु
९४	कोल्हापुर	बम्बई	१४९	५	९	पुनर्वसु
९५	कोहिया	आसाम	१४६	२	९	पुनर्वसु
९६	क्वामटोर	मद्रास	१४६	२	८	आर्द्रा
९७	खण्डवा	मध्यप्रदेश	१४५	१	६	रोहिणी
९८	खदरो	बम्बई	१४९	५	६	रोहिणी
९९	खनियाधाना	मध्यप्रदेश	१४५	१	६	रोहिणी
१००	खुरजा	उत्तरप्रदेश	१५२	८	७	मृगशिर
१०१	खुलना	बंगाल	१५३	९	७	मृगशिर
१०२	खेरकी	बम्बई	१४९	५	७	मृगशिर
१०३	खेरलू	बड़ौदा	१५१	७	७	मृगशिर
१०४	खैरपुर	बम्बई	१४९	५	७	मृगशिर
१०५	गढ़वाल	उत्तरप्रदेश	१५२	८	८	आर्द्रा
१०६	गया	बिहार	१५३	९	८	आर्द्रा
१०७	ग्वालियर	मध्यप्रदेश	१५२	८	८	आर्द्रा
१०८	गाजियाबाद	उत्तरप्रदेश	१५२	८	८	आर्द्रा
१०९	गाजीपुर	उत्तरप्रदेश	१५२	८	८	आर्द्रा
११०	गुजरात	गुजरात	१५०	६	८	आर्द्रा
१११	गुजरानवाला	पंजाब	१५२	८	८	आर्द्रा
११२	गोआ	बम्बई	१४९	५	९	पुनर्वसु
११३	गौंडा	उत्तरप्रदेश	१५२	८	९	पुनर्वसु
११४	गोरखपुर	उत्तरप्रदेश	१५३	९	९	पुनर्वसु
११५	गोलका	बंगाल	१५३	९	९	पुनर्वसु

१४ : लोकविजय यन्त्र

क्रमसंख्या	नाम नगर	राज्य	दिशाङ्क	देशाङ्क	नगराङ्क	नक्षत्र
११६	गोलकुण्डा	हैदराबाद	१४८	४	९	पुनर्वसु
११७	गोहाटी	आसाम	१५३	९	९	पुनर्वसु
११८	चकरौता	उत्तरप्रदेश	१५२	८	३	रेवती
११९	चटगाँव	बंगाल	१४६	२	३	रेवती
१२०	चतरापुर	मद्रास	१४७	३	३	रेवती
१२१	चन्द्रनगर	बंगाल	१४६	२	३	रेवती
१२२	चाइवासा	बिहार	१४६	२	३	रेवती
१२३	चाँदपुर	बंगाल	१५२	२	३	रेवती
१२४	चाँदवाड़ी	बिहार	१५३	९	३	रेवती
१२५	चाँदा	मध्यप्रदेश	१४५	१	३	रेवती
१२६	चाँदोद	बम्बई	१४९	५	३	रेवती
१२७	चिकमागालूर	मैसूर	१४८	४	३	रेवती
१२८	चिकाकोल	मद्रास	१५३	९	३	रेवती
१२९	चित्तूर	मद्रास	१५३	९	३	रेवती
१३०	चित्तौड़	राजस्थान	१५२	८	३	रेवती
१३१	चिदम्बरम्	मद्रास	१४७	३	३	रेवती
१३२	चिलारू	काश्मीर	१५२	८	३	रेवती
१३३	चुनार	उत्तरप्रदेश	१५३	९	३	रेवती
१३४	छपरा	बिहार	१५३	९	८	आर्द्रा
१३५	छोटानागपुर	बिहार	१४६	२	८	आर्द्रा
१३६	जगन्नाथगंज	बंगाल	१५३	९	५	उत्तराषाढ़ा
१३७	जनकपुर	मध्यप्रदेश	१५२	८	५	उत्तराषाढ़ा
१३८	जबलपुर	मध्यप्रदेश	१४५	१	५	उत्तराषाढ़ा
१३९	जमालपुर	बिहार	१४६	२	५	उत्तराषाढ़ा
१४०	जयनगर	बिहार	१५३	९	५	उत्तराषाढ़ा
१४१	जामपुर (जम्बू)	पंजाब	१५३	९	५	उत्तराषाढ़ा
१४२	जम्मू (जम्बू)	काश्मीर	१५२	८	५	उत्तराषाढ़ा
१४३	जालन	हैदराबाद	१४८	४	५	उत्तराषाढ़ा
१४४	जालन्धर	पंजाब	१५२	८	५	उत्तराषाढ़ा
१४५	जालपागोड़ी	बंगाल	१५२	८	५	उत्तराषाढ़ा
१४६	जालियानवाला	पंजाब	१५२	८	५	उत्तरषाढ़ा
१४७	जालौन	उत्तरप्रदेश	१५१	७	५	उत्तराषाढ़ा
१४८	जूनागढ़	सौराष्ट्र	१५०	६	६	अभिजित्
१४९	जैकोवाबाद	बम्बई	१५२	८	६	अभिजित्
१५०	जैपुर	राजस्थान	१५२	८	६	अभिजित्

क्रमसंख्या	नाम नगर	राज्य	दिशाङ्क	देशाङ्क	नगराङ्क	नक्षत्र
१५१	जैसलमेर	राजस्थान	१५२	८	६	अभिजित्
१५२	जोधपुर	राजस्थान	१५२	८	६	अभिजित्
१५३	जौनपुर	उत्तरप्रदेश	१५३	९	६	अभिजित्
१५४	झालरापाटन	राजस्थान	१५२	८	२	उत्तराभाद्रपद
१५५	झांसी	उत्तरप्रदेश	१५१	७	२	उत्तराभाद्रपद
१५६	टाटानगर	बिहार	१४६	२	४	पूर्वाफाल्गुनी
१५७	टौंक	राजस्थान	१५२	८	५	उत्तराफाल्गुनी
१५८	ट्रावङ्कौर	ट्रावङ्कौर स्टेट	१४६	२	४	पूर्वाफाल्गुनी
१५९	डलहौजी	पंजाब	१५२	८	१	पुष्य
१६०	डालटेनगंज	बिहार	१५३	९	१	पुष्य
१६१	डिब्रूगढ़	आसाम	१५३	९	२	आश्लेषा
१६२	डीमापुर	आसाम	१५३	९	२	आश्लेषा
१६३	डेरास्माइलखां	पंजाब	१५१	७	२	आश्लेषा
१६४	डेरागाजीखां	पंजाब	१५१	७	२	आश्लेषा
१६५	ढाका	बंगाल	१४६	२	४	पूर्वाषाढ़ा
१६६	तिरूपती	मद्रास	१४७	३	९	विशाखा
१६७	त्रिचनापल्ली	मद्रास	१४७	३	९	विशाखा
१६८	तंजोर	मद्रास	१४७	३	९	विशाखा
१६९	दरभंगा	बिहार	१५३	९	१	पूर्वाभाद्रपद
१७०	दानापुर	बिहार	१५३	९	१	पूर्वाभाद्रपद
१७१	दार्जिलिंग	बंगाल	१५३	९	१	पूर्वाभाद्रपद
१७२	दिनासपुर	बंगाल	१५३	९	१	पूर्वाभाद्रपद
१७३	दिल्ली	दिल्ली	१५२	८	१	पूर्वाभाद्रपद
१७४	दुमका	बिहार	१५३	९	२	उत्तराभाद्रपद
१७५	दुमदुम	बंगाल	१५३	९	२	उत्तराभाद्रपद
१७६	देमन	बम्बई	१४९	५	३	रेवती
१७७	देवका	बिहार	१५३	९	३	रेवती
१७८	देहरादून	उत्तरप्रदेश	१५३	९	३	रेवती
१७९	दौलताबाद	हैदराबाद	१४८	४	३	रेवती
१८०	धारमपुर	बम्बई	१४९	५	४	पूर्वाषाढ़ा
१८१	धारबाड़	बम्बई	१५१	७	४	पूर्वाषाढ़ा
१८२	धूलिया	बम्बई	१५१	७	४	पूर्वाषाढ़ा
१८३	धूबड़ी	आसाम	१५३	९	४	पूर्वाषाढ़ा
१८४	धौलपुर	राजस्थान	१५२	८	४	पूर्वाषाढ़ा
१८५	नरसिंहपुर	मध्यप्रदेश	१४५	१	१	अनुराधा

क्रमसंख्या	नाम नगर	राज्य	दिशाङ्क	वेशाङ्क	नगराङ्क	नक्षत्र
१८६	नागपुर	मध्यप्रदेश	१४५	१	१	अनुराधा
१८७	नारायणगंज	बंगाल	१४६	२	१	अनुराधा
१८८	नासिक	बम्बई	१५३	९	१	अनुराधा
१८९	नीमच	ग्वालियर स्टेट	१५२	८	१	अनुराधा
१९०	नैलौर	मद्रास	१४७	३	१	अनुराधा
१९१	नैनीताल	उत्तरप्रदेश	१५३	९	१	अनुराधा
१९२	पटना	बिहार	१५३	९	५	उत्तराफाल्गुनी
१९३	पटियाला	पंजाब	१५२	८	५	उत्तराफाल्गुनी
१९४	पलामू	बिहार	१५३	९	५	उत्तराफाल्गुनी
१९५	पाटन	बड़ौदा	१५२	८	५	उत्तराफाल्गुनी
१९६	पालधार	मद्रास	१४७	३	५	उत्तराफाल्गुनी
१९७	पाण्डेचेरो	मद्रास	१४७	३	५	उत्तराफाल्गुनी
१९८	पानीपत	पंजाब	१५२	८	५	उत्तराफाल्गुनी
१९९	पीलोभीत	उत्तरप्रदेश	१५२	८	५	उत्तराफाल्गुनी
२००	पुर्लिया	बिहार	१५३	९	६	हस्त
२०१	पुरी	उत्तरप्रदेश	१५२	८	६	हस्त
२०२	पुडुकोहे	मद्रास	१४७	३	६	हस्त
२०३	पूर्णिया	बिहार	१५३	९	६	हस्त
२०४	पूना	बम्बई	१५०	६	६	हस्त
२०५	पुरी	बिहार	१४६	२	६	हस्त
२०६	पेशावर	सीमाप्रान्त	१५१	७	७	चित्रा
२०७	प्रतापगढ़	राजस्थान	१५२	८	५	उत्तराफाल्गुनी
२०८	फतेहगढ़	उत्तरप्रदेश	१५१	७	४	पूर्वाषाढ़ा
२०९	फतेहपुरसीकरी	उत्तरप्रदेश	१५२	८	४	पूर्वाषाढ़ा
२१०	फतेहपुर	राजस्थान	१५२	८	४	पूर्वाषाढ़ा
२११	फरीदकोट	पंजाव	१५२	८	४	पूर्वाषाढ़ा
२१२	फरीदपुर	बंगाल	१४६	२	४	पूर्वाषाढ़ा
२१३	फरुखावाद	उत्तरप्रदेश	१५२	८	४	पूर्वाषाढ़ा
२१४	फलटन	बम्बई	१५०	६	४	पूर्वाषाढ़ा
२१५	फिरोजपुर	पंजाब	१५२	८	४	पूर्वाषाढ़ा
२१६	फैजाबाद	उत्तरप्रदेश	१५३	९	४	पूर्वाषाढ़ा
२१७	बक्सर	बिहार	१५३	९	६	रोहिणी
२१८	बखसार	उत्तरप्रदेश	१५२	८	६	रोहिणी
२१९	बघेलखंड	मध्यप्रदेश	१४५	१	६	रोहिणी
२२०	भंड़ौंच	बम्बई	१५०	६	६	रोहिणी

क्रमसंख्या	नाम नगर	राज्य	दिशाङ्क	देशाङ्क	नगराङ्क	नक्षत्र
२२१	बड़ौदा	बम्बई	१५०	६	६	रोहिणी
२२२	बद्रीनाथ	उत्तरप्रदेश	१५३	९	६	रोहिणी
२२३	बनारस	उत्तरप्रदेश	१५३	९	६	रोहिणी
२२४	बम्बई	बम्बई	१५०	६	६	रोहिणी
२२५	वर्द्धमान	बंगाल	१४६	२	६	रोहिणी
२२६	बर्द्धा	मध्यप्रदेश	१४८	४	८	रोहिणी
२२७	बरहमपुर	बंगाल	१४६	२	६	रोहिणी
२२८	बरहमपुर	मद्रास	१४८	८	६	रोहिणी
२२९	बरार	मध्यप्रदेश	१४५	१	६	रोहिणी
२३०	बरौदा	मध्यप्रदेश	१४५	१	६	रोहिणी
२३१	बरेली	उत्तरप्रदेश	१५२	८	६	रोहिणी
२३२	बलिया	उत्तरप्रदेश	१५२	८	६	रोहिणी
२३३	बलैरी	मद्रास	१४७	३	६	रोहिणी
२३४	बस्तर	मध्यप्रदेश	१४५	१	६	रोहिणी
२३५	बस्ती	उत्तरप्रदेश	१५३	९	६	रोहिणी
२३६	बहराइंच	उत्तरप्रदेश	१५३	९	६	रोहिणी
२३७	बाकरगंज	बंगाल	१५३	९	६	रोहिणी
२३८	बारकपुर	बंगाल	१५३	९	६	रोहिणी
२३९	बारपेट	आसाम	१५३	९	६	रोहिणी
२४०	बारसी	बम्बई	१५१	७	६	रोहिणी
२४१	बारौनी	मध्यप्रदेश	१४५	१	६	रोहिणी
२४२	बालसोर	बिहार	१५३	९	६	रोहिणी
२४३	बालोचा	राजस्थान	१५१	७	६	रोहिणी
२४४	बासवा	मद्रास	१४७	३	६	रोहिणी
२४५	बासिम	बरार-म. प्र.	१४८	४	६	रोहिणी
२४६	बिमलीपट्टम	मद्रास	१४८	४	६	रोहिणी
२४७	बिलासपुर	मध्यप्रदेश	१४५	१	६	रोहिणी
२४८	बिलोचिस्तान	सीमाप्रान्त	१५१	७	६	रोहिणी
२४९	बीकानेर	राजस्थान	१५२	८	६	रोहिणी
२५०	बीजापुर	बम्बई	१५०	६	६	रोहिणी
२५१	बुकुर	बम्बई	१५०	६	६	रोहिणी
२५२	बुन्देलखण्ड	मध्यप्रदेश	१४५	१	६	रोहिणी
२५३	बुरहानपुर	मध्यप्रदेश	१४५	१	६	रोहिणी
२५४	बुलसार	बम्बई	१५०	६	६	रोहिणी
२५५	बून्दी	राजस्थान	१५२	८	६	रोहिणी

क्रमसंख्या	नाम नगर	राज्य	दिशाङ्क	देशाङ्क	नगरांक	नक्षत्र
२५६	बेतिया	बिहार	१५३	९	७	मृगशिर
२५७	बेरहमपुर	बंगाल	१५३	९	७	मृगशिर
२५८	बेल्लेर	मद्रास	१४९	५	७	मृगशिर
२५९	बेलगांव	बम्बई	१५०	६	७	मृगशिर
२६०	बैंगलूर	मैसूर	१५०	६	७	मृगशिर
२६१	बोगारा	पाकिस्तान	१४६	२	७	मृगशिर
२६२	बौनीगढ़	बिहार	१४६	२	७	मृगशिर
२६३	बोब्वली	मद्रास	१४९	५	७	मृगशिर
२६४	भटिण्डा	पंजाब	१५२	८	३	मूल
२६५	भण्डारा	मध्यप्रदेश	१४५	१	३	मूल
२६६	भदौरा	मध्यप्रदेश	१४५	१	३	मूल
२६७	भरतपुर	राजस्थान	१५२	८	३	मूल
२६८	भागलपुर	बिहार	१५३	९	३	मूल
२६९	भावनगर	बम्बई	१५०	६	३	मूल
२७०	भुसावल	बम्बई	१५०	६	४	पूर्वाषाढ़ा
२७१	भेलसा	मध्यप्रदेश	१५२	८	५	उत्तराषाढ़ा
२७२	भोपाल	मध्यप्रदेश	१५२	८	५	उत्तराषाढ़ा
२७३	मऊ	उत्तरप्रदेश	१५२	८	३	मघा
२७४	मछलीपट्टम्	मद्रास	१४७	३	३	मघा
२७५	मथुरा	उत्तरप्रदेश	१५२	८	३	मघा
२७६	मदारीपुर	बंगाल	१५३	९	३	मघा
२७७	मद्रास	मद्रास	१४७	३	३	मघा
२७८	मदुरा	मद्रास	१४७	३	३	मघा
२७९	मधुपुर	बिहार	१५३	९	३	मघा
२८०	मधुबनी	बिहार	१५३	९	३	मघा
२८१	मनीपुर	आसाम	१४६	२	३	मघा
२८२	महाबलेश्वर	बम्बई	१५०	६	३	मघा
२८३	महोबा	उत्तरप्रदेश	१५२	८	३	मघा
२८४	मानिकपुर	उत्तरप्रदेश	१५२	८	३	मघा
२८५	मालिकपुर	मध्यप्रदेश	१४८	४	३	मघा
२८६	मालवा	मध्यप्रदेश	१४५	१	३	मघा
२८७	मिर्जापुर	उत्तरप्रदेश	१५२	८	३	मघा
२८८	मुकामा	बिहार	१५३	९	३	मघा
२८९	मुगलपुरा	पंजाब	१५१	७	३	मघा
२९०	मुंगेर	बिहार	१५३	९	३	मघा

क्रमसंख्या	ग्राम नगर	राज्य	दिशाङ्क	देशाङ्क	नगराङ्क	नक्षत्र
२९१	मुजफ्फरगढ़	पंजाब	१५२	८	३	मघा
२९२	मुजफ्फरनगर	उत्तरप्रदेश	१५२	८	३	मघा
२९३	मुजफ्फरपुर	बिहार	१५३	९	३	मघा
२९४	मुर्शिदाबाद	बँगाल	१४७	३	३	मघा
२९५	मुरादाबाद	उत्तरप्रदेश	१५२	८	३	मघा
२९६	मुरार	मध्यप्रदेश	१५२	८	३	मघा
२९७	मुलतान	पंजाब	१५२	८	३	मघा
२९८	मेदनीपुर	बंगाल	१४६	२	३	मघा
२९९	मेरठ	उत्तरप्रदेश	१५२	८	३	मघा
३००	मँगलूर	मद्रास	१४८	४	३	मघा
३०१	मैंनपुरी	उत्तरप्रदेश	१५२	८	३	मघा
३०२	मैंसूर	मैसूर	१५०	६	३	मघा
३०३	मोतिहारी	बिहार	१५३	९	४	पूर्वाफाल्गुनी
३०४	रतलाम	मध्यप्रदेश	१४५	१	७	चित्रा
३०५	राजकोट	बम्बई	१५०	६	७	चित्रा
३०६	राजनादगाँव	मध्यप्रदेश	१५१	७	७	चित्रा
३०७	रानीगंज	बंगाल	१५३	९	७	चित्रा
३०८	रामपुर	उत्तरप्रदेश	१५२	८	७	चित्रा
३०९	रायगढ़	मध्यप्रदेश	१५२	८	७	चित्रा
३१०	रायपुर	मध्यप्रदेश	१५२	८	७	चित्रा
३११	रायबरेली	उत्तरप्रदेश	१५२	८	७	चित्रा
३१२	रावलपिण्डी	पाकिस्तान	१५२	८	७	चित्रा
३१३	राँची	बिहार	१४७	३	७	चित्रा
३१४	रुढ़की	उत्तरप्रदेश	१५२	८	८	स्वाति
३१५	रुहेलखण्ड	उत्तरप्रदेश	१५२	८	८	स्वाति
३१६	लखनऊ	उत्तरप्रदेश	१५२	८	३	अश्विनी
३१७	ललितपुर	उत्तरप्रदेश	१५१	७	३	अश्विनी
३१८	लश्कर	मध्यप्रदेश	१५२	८	३	अश्विनी
३१९	लारकन	बम्बई	१५०	६	३	अश्विनी

२० : लोकविजय यन्त्र

क्रमसंख्या	नाम नगर	राज्य	दिशाङ्क	देशाङ्क	नगराङ्क	नक्षत्र
३२०	लाहौर	पाकिस्तान	१५२	८	३	अश्विनी
३२१	लुधियाना	पंजाब	१५५	८	४	भरणी
३२२	लोदराना	पंजाब	१५२	८	४	भरणी
३२३	विजयापट्टम	मद्रास	१४८	४	६	भरणी
३२४	विजयनगरम्	मद्रास	१४८	२	६	रोहिणी
३२५	ब्यावर	राजस्थान	१४८	४	६	रोहिणी
३२६	शाहजहाँपुर	उत्तरप्रदेश	१५२	८	६	रोहिणी
३२७	शिमला	पंजाब	१५३	९	९	शतभिषा
३२८	शिवपुरी	मध्यप्रदेश	१५२	८	९	शतभिषा
३२९	श्रीनगर	काश्मीर	१५२	८	९	शतभिषा
३३०	सतारा	बम्बई	१४९	५	९	शतभिषा
३३१	ससराम	बिहार	१५३	९	९	शतभिषा
३३२	सहारनपुर	उत्तरप्रदेश	१५२	८	९	शतभिषा
३३३	सरसावा	उत्तरप्रदेश	१५२	८	९	शतभिषा
३३४	सागर	मध्यप्रदेश	१४५	१	९	शतभिषा
३३५	सांगली	बम्बई	१४९	५	९	शतभिषा
३३६	स्यालकोट	पंजाब	१५२	८	९	शतभिषा
३३७	सिरोही	राजस्थान	१५२	८	९	शतभिषा
३३८	सिलहट	आसाम	१५३	९	९	शतभिषा
३३९	सिलीगुड़ी	बंगाल	१५३	९	९	शतभिषा
३४०	सिवान	उत्तरप्रदेश	१५२	८	९	शतभिषा
३४१	सिवनी	मध्यप्रदेश	१३५	१	९	शतभिषा
३४२	सीतापुर	उत्तरप्रदेश	१५२	८	९	शतभिषा
३४३	सीतामढ़ी	बिहार	१५३	९	९	शतभिषा
३४४	सुन्दरवन	बंगाल	१४६	२	९	शतभिषा
३४५	सुल्तानपुर	उत्तरप्रदेश	१५२	८	९	शतभिषा
३४६	सूरत	महाराष्ट्र	१५०	६	१	शतभिषा
३४७	सोमनाथ	बम्बई	१५०	६	१	पूर्वाभाद्रपदा
३४८	शोलापुर	बम्बई	१५०	६	१	पूर्वाभाद्रपदा
३४९	हुब्बली	बम्बई	१५०	६	१	पुष्य
३५०	हैदराबाद	महाराष्ट्र	१४८	४	१	पुष्य
३५१	होशंगाबाद	मध्यप्रदेश	१४५	१	१	पुष्य

ध्रुवांकबोधक लोकविजय यंत्र
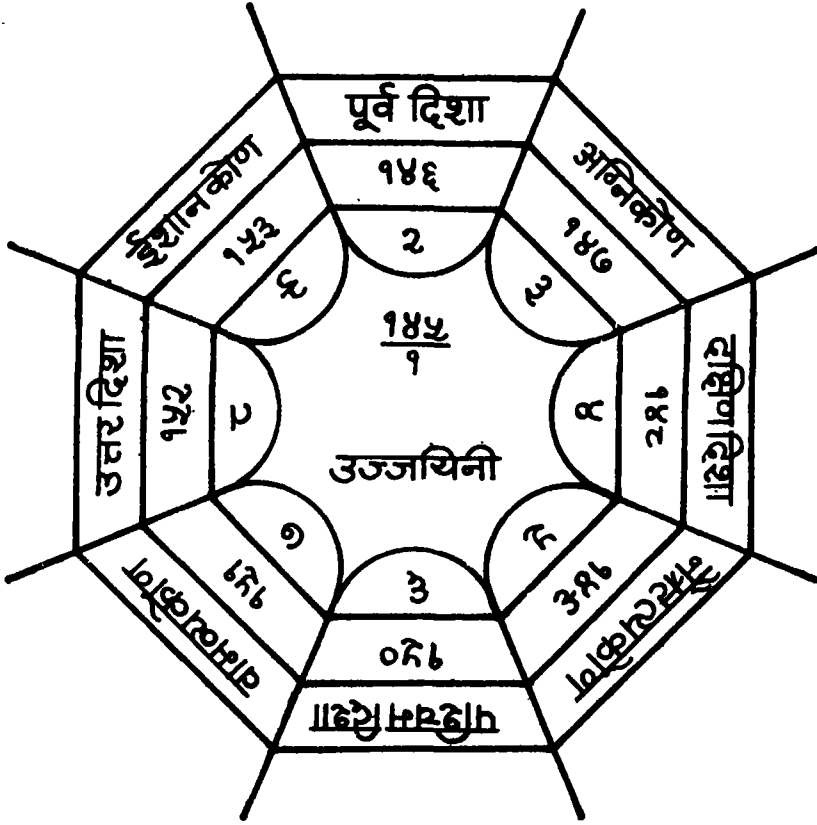
नगर और ग्रामोंके ध्रुवाङ्क निकालनेकी विधि

जं जम्मि देसनयरे गामे ठाणे वि णत्थि मूलधुवो ।
तं णामेण य रिक्खं रुद्दंकं करिय सम्मिस्सं ॥६॥
णिहि-भत्ते जं सेसं धुवगणिदं देसनयरगामाणं ।
मूलदसाक्कमगणिदं पुव्वत्तफलं वियाणहि ॥७॥

जिस जिस देशके नगर, ग्राम, पर्वत, स्थान आदिके ध्रुवाङ्क उपलब्ध न हों उस उस देशके ग्राम, नगरादिका जो नाम हो, उस नामके नक्षत्रकी संख्यामें ११ जोड़कर ९ का भाग देनेसे एकादि शेषरूप ध्रुवाङ्कका प्रमाण आता है। नगर, ग्रामादिका ध्रुवाङ्क बनाकर पूर्वोक्त क्रम-से मूलदशाके गणितानुसार दशाका ज्ञान एवं उसके फलादेशका ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

आशय यह हैं कि दिशाङ्क, देशाङ्क, नगराङ्क, संवत्सर राजाका विंशोत्तरी दशाका वर्षाङ्क और शनि नक्षत्रसे गाँव नक्षत्र तककी संख्याको जोड़कर ९ का भाग देने पर जो एकादि शेष आये, उसमें विंशोत्तरी दशाकी गणनाके अनुसार सूर्यादि ग्रहोंकी दशा अवगत करनी चाहिए।

विवेचन—आचार्यने पहले दिशा और देशके ध्रुवाङ्क परिगणित किये हैं, इन दो गाथाओंमें अभीष्ट नगर और गाँव आदिके ध्रुवाङ्क निकालनेकी प्रक्रिया बतलायी है। जिस नगर या गाँवके ध्रुवाङ्क निकालने हों, उस नगर या ग्रामके नामके आदि अक्षरपरसे नक्षत्रका परिज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिये। नक्षत्र संख्या में ११ जोड़कर ९ का भाग देनेसे जो शेष रहे, वही उस गाँव या नगरका ध्रुवाङ्क होगा। अक्षरोंके अनुसार नक्षत्रोंकी जानकारी निम्न प्रकार प्राप्त की जा सकती है।

नक्षत्रोंके अक्षर

चू चे चो ला = अश्विनी; ली लू ले लो = भरणी; आ ई उ ए = कृत्तिका।
ओ वा वी वू = रोहिणी; वे वो का की = मृगशिरा; कू घ ङ छ = आर्द्रा।
के को हा ही = पुनर्बसु; हू हे हो डा = पुष्य; डी डू डे डो = आश्लेषा।
मा मी मू मे = मघा; मो टा टी टू = पूर्वाफाल्गुनी; टो टे पा पी = उत्तराफाल्गुनी।
पू ष ण ठ = हस्त; पे पो रा री = चित्रा; रू रे रो ता = स्वाति।
ती तू ते तो = विशाखा; ना नी नू ने = अनुराधा; नो या यी यू = ज्येष्ठा।
ये यो भ भी = मूल; भू ध फ ढ = पूर्वाषाढा; भे भो ज जी = उत्तराषाढा।
खी खु खे खो = श्रवण; ग गी गू गे = धनिष्ठा गो स सी सू = शतभिषा।
से सो दा दी = पूर्वाभाद्रपदा; दू थ झ ञ = उत्तराभाद्रपदा; दे दो च ची = रेवती।

उदाहरण—आराका ध्रुवाङ्क निकालना है। इसका आद्य वर्ण 'आ' है, यह कृत्तिका नक्षत्रके अक्षरोंमें पड़ता है, अतः आराका कृत्तिका नक्षत्र हुआ। अश्विनीसे गणना करने पर कृत्तिका तीसरा नक्षत्र हुआ; अतः तीन नक्षत्र-संख्यामें ग्यारह जोड़कर नौका भाग दिया तो—३ + ११ = १४; १४ ÷ ९ = १ भागफल ५ शेष। इस प्रकार आरा नगरका ५ ध्रुवाङ्क हुआ। इसी प्रकार 'दिल्ली' का ध्रुवाङ्क बनाना हो तो 'दिल्ली' का आद्य वर्ण 'दि' पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रके अक्षरोंमें 'दि' = 'दी' मिला। अतः दिल्ली नगरका पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र माना जायगा। अश्विनीसे गणना करने पर पूर्वाभद्रपदा २५ वाँ नक्षत्र पड़ता है, अतः २५ + ११ = ३६; ३६ ÷ ९ = ४ भागफल ० शेष। शून्य शेषका अर्थ भाजककी अंक संख्याके तुल्य है। अतएव दिल्लीका ध्रुवाङ्क ९ माना जायगा।

नक्षत्रानुसार ध्रुवाङ्कबोधक सारिणी

नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुण्य	आश्लेषा
	१	२	३	४	५	६	७	८	९
ध्रुवाङ्क	३	४	५	६	७	८	९ (०)	१	२
नक्षत्र	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उत्तराफाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१६	१८
ध्रुवाङ्क	३	४	५	६	७	८	९ (०)	१	२
नक्षत्र	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपदा	उत्तराभाद्रपदा	रेवती
	१९	२०	२१	२२	२३	२४	५५	२६	२७
ध्रुवाङ्क	३	४	५	६	७	८	९ (०)	१	२

ग्राम, नगर आदिके आद्य वर्णपरसे ध्रुवाङ्कबोधक सारिणी

आद्य वर्ण	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	लृ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
	५	५	५	५	५	५	७	७	४	४	५	५	६	६	५	५

आद्य वर्ण	क	का	कि	की	कु	कू	कृ	कॄ	के	कै	को	कौ	कं	कः
ध्रुवाङ्क	७	७	७	७	८	८	७	७	९	९	९	९	७	७
आद्यवर्ण	ख	खा	खि	खी	खु	खू	खृ	खॄ	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ध्रुवाङ्क	६	६	७	७	ऽ	७	६	६	७	७	७	७	६	६
आद्यवर्ग	म	गा	गि	गी	गु	गू	गृ	गॄ	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
ध्रुवाङ्क	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	९	९	८	८
आद्यवर्ण	घ	घा	घि	घी	घु	घू	घृ	घॄ	घे	घै	घो	घौ	घं	घः
ध्रुवाङ्क	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
आद्यवर्ण	ङ	ङा	ङि	ङी	ङु	ङू	ङृ	ङॄ	ङे	ङै	ङो	ङौ	ङं	ङः
ध्रुवाङ्क	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
आद्यवर्ण	च	चा	चि	ची	चु	चू	चृ	चॄ	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
ध्रुवाङ्क	३	३	३	३	३	३	२.	३	३	३	३	३	३	३
आद्यवर्ण	छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छं	छः	छृ	छॄ
ध्रुवाङ्क	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
आद्यवर्ण	ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः	जृ	जॄ
ध्रुवाङ्क	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	५	५	५	५
आद्यवर्ण	झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः	झृ	झॄ
ध्रुवाङ्क	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
आद्यवर्ण	ञ	ञा	ञि	ञी	ञु	ञू	ञे	ञै	ञो	ञौ	ञं	ञः	ञृ	ञॄ
ध्रुवाङ्क	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
आद्यवर्ण	ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः	टृ	टॄ
ध्रुवाङ्क	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	४	४	४	४
आद्यवर्ण	ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः	ठृ	ठॄ
ध्रुवाङ्क	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६
आद्यवर्ण	ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः	डृ	डॄ
ध्रुवाङ्क	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१
आद्यवर्ण	ढ	ढा	ढि	ढी	ढु	ढू	ढे	ढै	ढो	ढौ	ढं	ढः	ढृ	ढॄ
ध्रुवाङ्क	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
आद्यवर्ण	ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णौ	णं	णः	णृ	णॄ
ध्रुवाङ्क	६	६	६	६	६	६	३	६	६	६	६	६	६	६
आद्यवर्ण	त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः	तृ	तॄ
ध्रुवाङ्क	८	८	९	९	९	९	९	९	९	९	८	८	८	८

२४ : लोकविजय यन्त्र

आद्यवर्ण	थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः	थृ	थॄ
ध्रुवाङ्क	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
आद्यवर्ण	द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	दं	दः	दृ	दॄ
ध्रुवाङ्क	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	१	१	१	१
आद्यवर्ण	ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ	धं	धः	धृ	धॄ
ध्रुवाङ्क	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
आद्यवर्ण	न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ	नं	नः	नृ	नॄ
ध्रुवाङ्क	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	१	१	१	१
आद्यवर्ण	प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	पं	पः	पृ	पॄ
ध्रुवाङ्क	५	५	५	५	६	६	७	७	७	७	५	५	५	५
आद्यवर्ण	फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फं	फः	फृ	फॄ
ध्रुवाङ्क	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
आद्यवर्ण	ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	वो	वौ	वं	वः	बृ	बॄ
ध्रुवाङ्क	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	६	६	६	६
आद्यवर्ण	भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भौ	भो	भौ	भं	भः	भृ	भॄ
ध्रुवाङ्क	३	३	३	३	४	४	५	५	५	५	३	३	३	३
आद्यवर्ण	म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	मं	मः	मृ	मॄ
ध्रुवाङ्क	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	३	३	३	३
आद्यवर्ण	य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	यं	यः	यृ	यॄ
ध्रुवाङ्क	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	२	२	२	२
आषवर्ण	र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	रं	रः	रृ	रॄ
ध्रुवाङ्क	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	७	७	७	७
आद्यवर्ण	ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	लं	लः	लृ	लॄ
ध्रुवाङ्क	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
आद्यवर्ण	व	वा	वि	वी	बु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	वः	वृ	वॄ
ध्रुवाङ्क	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	६	६	६	६
आद्यवर्ण	श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं	शः	शृ	शॄ
ध्रुवाङ्क	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	९	९	९	९
आद्यवर्ण	ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	षं	षः	षृ	षॄ
ध्रुवाङ्क	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६
आद्यवर्ण	स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	सं	सः	सृ	सॄ
ध्रुवाङ्क	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	९	९	९	९
आद्यवर्ण	ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हौ	हं	हः	हृ	हॄ
ध्रुवाङ्क	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	९	९	९	९
आद्यवर्ण	क्ष	क्षा	क्षि	क्षी	क्षु	क्षू	क्षे	क्षै	क्षो	क्षौ	क्षं	क्षः	क्षृ	क्षॄ
ध्रुवाक	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	७	७	७	७

आद्यवर्ण	त्र	त्रा	त्रि	त्री	त्रु	त्रू	त्रे	त्रै	त्रो	त्रौ	त्रं	त्रः	त्रृ	त्रॄ
ध्रुवाङ्क	८	८	९	९	९	९	९	९	९	९	८	८	८	८
आद्यवर्ण	ज्ञ	ज्ञ	ज्ञि	ज्ञी	ज्ञु	ज्ञू	ज्ञे	ज्ञै	ज्ञो	ज्ञौ	ज्ञं	ज्ञः	ज्ञृ	ज्ञॄ
ध्रुवाङ्क	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	५	५	५	५

उदाहरण—वि० सं० २०२३ में आरा, जबलपुर, मथुरा और आगराका फलादेश ज्ञात करना है, अतः इन स्थानोंके दिशाङ्क, देशाङ्क, नगराङ्क, संवत्सरके राजाके विंशोत्तरी दशा-वर्षाङ्क[1] और शनि नक्षत्रसे नगर नक्षत्र तकके नक्षत्र ध्रुवाङ्कका योग किया।

जबलपुरका दिशाङ्क १४५, देशाङ्क १, नगराङ्क ५, संवत् २०२३ का वर्षाधिपति बुध है, और विंशोत्तरी दशाके अनुसार इसका वर्षाङ्क १७ है, शनि पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्रपर है और जबलपुरका उत्तराषाढ नक्षत्र है, अतः पूर्वाभाद्रपदासे उत्तराषाढ तक गणना की तो २४ संख्या प्राप्त हुई। अतएव—

१४५ + १ + ५ + १७ + २४ = १९२ योगफल, १९२ ÷ ९—दशा अवगत करनेके लिए नौका भाग दिया जाता है। अतः १९२ ÷ ९ = २१ भागफल ३ शेष। विंशोत्तरी दशाके क्रमसे गणना की तो भौम दशा आयी। अतएव वि० सं० २०२३ में जबलपुर नगरकी महादशा भौम-मंगलकी है।

अन्तर्दशाकी विधि

किसी भी नगरकी अन्तर्दशा देशकी दशाको ही गाना जाता है। जबलपुरकी अन्तर्दशा मध्यदेशकी दशा ही मानी जायगी। यहाँके दिशाङ्क, देशाङ्क और शनि नक्षत्र संख्याको जोड़कर योगफलमें नौका भाग देना चाहिए। शेषको विंशोत्तरी दशा क्रमसे वर्षाधिपतिसे आगे गिनना चाहिए। यहाँ दिशाङ्क १४५, देशाङ्क १, शनि नक्षत्र संख्या २५ (अश्विनीसे शनि नक्षत्र पूर्वाभाद्रपदा तक गणना की) है, अतः १४५ + १ + २५ = १७१, १७१ ÷ ९ = १९ भागफल ० शेष। शून्य शेषको ९ के बराबर मानकर वर्षाधिपति बुधसे गणना की तो शनिकी दशा आयी। अतः जबलपुरकी अन्तर्दशा शनिकी है।

प्रत्यन्तरदशा ज्ञात करनेको विधि

जिस ग्राम या नगरकी प्रत्यन्तर्दशा ज्ञात करनी हो, उस ग्राम या नगरको दिशाके ध्रुवाङ्कोंमें शनि नक्षत्र संख्याको जोड़कर ९ का भाग देनेसे जो शेष आये, उसकी गणना संवत्सर राजासे विंशोत्तरी दशाके अनुसार करनी चाहिए।

सूक्ष्मदशा विधि

दिशाङ्क, देशाङ्क, वर्षके राजाका विंशोत्तरी दशाका मूल वर्षाङ्क और शनि जिस नक्षत्रपर हो उस नक्षत्रसे गाँव नक्षत्र तकके अंकोंका योगकर ११ से गुणा करना चाहिए। गुणनफलमें नौका भाग देकर शेष प्रमाणके अनुसार संवत्सर राजाको आदिकर विंशोत्तरी दशाका आनयन कर लेना चाहिए। इस प्रक्रियासे आई हुई दशा ही सूक्ष्मदशा होती है।

---

१. विंशोत्तरी दशाके अनुसार ग्रहोंके वर्षांङ्क निम्नप्रकार हैं—

षट्दिङ्नगेभविधु-भूप-नवेन्दु-शैल-
भू-भूधरा नखमिताः क्रमतो दशाब्दाः॥

सूर्य ६, चन्द्र १०, भौम ७, राहु १८, गुरु १६, शनि १९, बुध १७, केतु ७ और शुक्र २० वर्ष प्रमाण है।

प्राणदशा साधनकी विधि

दिशाङ्क, देशाङ्क, नगराङ्क और शनि जिस नक्षत्रपर हो, उस नक्षत्रसे गाँवके नक्षत्र तकके अंकोंका योगकर ११ से गुणा करना और गुणनफलमें ९ का भाग देकर शेष प्रमाणको संवत्सर राजाको आदिकर विंशोत्तरी दशाके क्रमानुसार दशाका आनयन करना चाहिए। इस विधिसे आई हुई दशा प्राणदशा होती है।

किसी भी नगरका सम्पूर्ण फलादेश, महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तरदशा, सूक्ष्मदशा और प्राणदशाका साधनकर अवगत करना चाहिए।

उदाहरणमें जबलपुर नगरका फलादेश ज्ञात करनेके हेतु महादशा गुरुकी आई है और अन्तर्दशा शनि की। अब प्रत्यन्तरदशाका साधन करना है, अतः—

जबलपुरका दिशांक १४५, शनि नक्षत्र संख्या २५, अतः १४५ + २५ = १७० योगफल १७० ÷ ९ = १८ भागफल ८ शेष। यहाँ संवत्सरका राजा बुध है, अतः बुधसे गणना की तो गुरुकी प्रत्यन्तरदशा कहलाई।

सूक्ष्मदशाके साधनके लिए—१४५ + १ + १७ + २४ (शनि पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रमें है और जबलपुरका उत्तराषाढ नक्षत्र है, अतः पूर्वाभाद्रपदसे उत्तराषाढ तक गणना की तो २४ संख्या आई) = १८७ योगफल हुआ। अतएव इस योगफलको ११ से गुणा किया—१८७ × ११ = २०५७ गुणनफल; २०५७ ÷ ९ = २२८ भागफल ५ शेष। वि० सं० २०२३ में संवत्सरका राजा बुध है, अतः बुधसे विंशोत्तरी दशाके क्रमानुसार गणना की ता चन्द्रकी प्राणदशा कहलायी। अतः जबलपुरकी महादशा भौमकी, अन्तर्दशा शनिकी, प्रत्यन्तरदशा गुरुकी और सूक्ष्मदशा चन्द्रकी कहलायेगी।

प्राणदशाके साधनके लिए १४५ + १ + ५ + २४ (शनि नक्षत्रसे अभीष्ट नगर जबलपुरके उत्तराषाढा नक्षत्रतककी संख्या) = १७५ योगफल, १७५ × ११ = १९२५ गुणनफल, १९२५ ÷ ९ = २१३ भागफल ८ शेष। संवत्सरके राजा बुधसे गणना की तो गुरुकी प्राणदशा आई।

आरा नगरका उदाहरण

आरा मध्यदेशसे ईशानकोणमें अवस्थित है, इसका दिशाङ्क १५३ हुआ। यहाँका देशाङ्क ९ है, नगराङ्क ५ है, वर्षके राजा—बुधका वर्षाङ्क १७ है, शनिके पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रसे आरा नगरके कृत्तिका नक्षत्र तक गणना की तो ६ संख्या आई। अतः—१५३ + ९ + ५ + १७ + ६ = १९० योगफल, १९० ÷ ९ = २१ भागफल १ शेष। विंशोत्तरी दशाक्रमसे गणना की तो एक शेषमें सूर्यकी महादशा कहलायी।

अन्तर्दशा साधन—दिशाङ्क १५३, देशाङ्क ९, शनि नक्षत्र संख्या २५, अतः १५३ + ९ + २५ = १८७ योगफल, १८७ ÷ ९ = २० भागफल ७ शेष। वर्षाधिपति बुधसे गणना की तो राहुकी अन्तर्दशा कहलायी।

प्रत्यन्तरदशा १५३ + २५ = १७८ योगफल (दिशांक + शनि नक्षत्र संख्या); १७८ ÷ ९ = १९ भागफल ७ शेष। वर्षाधिपति बुधसे गणना की तो राहुकी प्रत्यन्तरदशा सिद्ध हुई।

सूक्ष्मदशा—१५३ + ९ + १७ (वर्षाधिपति बुधके विंशोत्तरी दशा वर्षाङ्क) + ६ (शनि नक्षत्र पूर्वाभाद्रपदसे आराके कृत्तिका नक्षत्र तककी संख्या) = १८५ योगफल १८५ × ११ = २०३५ गुणनफल २०३५ ÷ ९ = २२६ भागफल १ शेष। विंशोत्तरी दशा क्रमसे गणना की तो सूर्यकी सूक्ष्मदशा कहलायी।

प्राणदशा—१५३ + ९ + ५ + ६ (शनि नक्षत्रसे आराके नक्षत्र तककी संख्या) = १७३ योगफल, १७३ × ११ = १९०३ गुणनफल, १९०३ ÷ ९ = २११ भागफल ४ शेष। वर्षाधिपति बुधसे दशाकी गणना की तो सूर्यकी प्राणदशा निष्पन्न हुई।

इस प्रकार आरा नगरकी सूर्यकी महादशा, राहुकी अन्तर्दशा, राहुकी प्रत्यन्तरदशा, सूर्यकी ही प्राणदशा सिद्ध हुई।

वर्षकी गणना दो प्रकारसे होती है—चान्द्रवर्ष और सौरवर्ष। चान्द्रवर्षकी दिन संख्या ३५६ और सौरवर्षकी दिन संख्या ३६५$\frac{३}{४}$ है। आजकल ही नहीं, किन्तु प्राचीनकालसे ही भारतमें चन्द्रमासान्त मास-गणना और चैत्रशुक्ला प्रतिपदासे वर्ष गणना ग्रहण की जाती हैं। चैत्रशुक्ला प्रतिपदासे चैत्रशुक्ला अमावस्या तक चान्द्रवर्ष लिया जाता है। जिस वर्ष अधिक मास पड़ता है, उस वर्ष एक चान्द्रवर्षमें ३८६ दिन होते हैं। यहाँ चान्द्रवर्षकी अन्तर्दशा बोधक कोष्ठक दिया जाता हैं, जिससे अन्तर्दशाके समयका ज्ञान होता है।

३५६ दिनके वर्षकी अन्तर्दशा बोधक सारणी

सू०	चं०	भौ०	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०	ग्रह
०	०	०	१	१	१	१	०	१	मास
१७	२९	२०	२३	१७	२६	२०	२०	२९	दिन
४८	४०	४६	२४	२८	२२	१६	४६	२०	घटी

३८६ दिनके वर्षकी अन्तर्दशाबोधक सारणी

सू०	चं०	भौ०	रां०	गु०	श०	बु०	के०	शु०	ग्रह
०	१	०	१	१	२	१	०	२	मास
१९	२	२२	२७	२१	१	२४	२२	४	दिन
१८	१०	३१	५४	२८	७	२१	३१	२०	घटी

वर्षका इष्टानिष्टफलादेश अक्षयतृतीयाके दिन निकालकर अवगत करना चाहिए। उस समय महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तरदशा, सूक्ष्मदशा और प्राणदशा जिस प्रकारकी रहती है, इष्टानिष्ट फल भी वर्ष भरके लिए उसी प्रकारका प्राप्त होता है। महादशाका फल वर्षभरके लिए और अन्तर्दशाका उपर्युक्त सारणीमें निर्दिष्ट समय तकके लिए समझना चाहिए। प्रत्यन्तरदशा, सूक्ष्मदशा और प्राणदशाका समय गणित विधिसे निकालना चाहिए।[1] संवत्सरका फलादेश ज्ञात करते समय वर्षाधिपति, धान्याधिपति रसाधिपति, मन्त्री एवं अन्य वर्षाधिकारियोंका विचार भी कर लेना आवश्यक है।

लोकविजय यन्त्रका प्रयोजन

अदिवुद्धि-अणावुट्ठी सप्परचक्कं च रोग-सोगभयं।
सस्सुप्पत्ति-विणासो हि रायाकट्ठं चमुद्दवं॥ ८॥

अतिवृष्टि, अनावृष्टि, स्वचक्र—परचक्रकी स्थिति, रोग-शोकका भय, धान्यकी उत्पत्ति और विनाश, राजाको कष्ट और सेनामें उपद्रव आदि बातोंकी जानकारी इस यन्त्रके द्वारा प्राप्त करनी चाहिए।

विवेचन—ईति-भीति भय सात प्रकारका माना गया है। अतिवृष्टि, अनावृष्टि स्वचक्र, परचक्र, टिड्डी, मूषक और तोता आदि पक्षियों द्वारा फसलको हानि पहुँचाना। ज्योतिषशास्त्रमें फसलको जितनी भी वस्तुएँ

१ देखें—भारतीय ज्योतिष, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, सन् १९६६ पृ० २८५-८५।

हानि पहुँचाती हैं, उन सबकी गणना ईति-भीतिमें की गयी है। देशमें सुभिक्ष, शान्ति, सुख, उपद्रव, विद्रोह, व्याघात, आन्तरिक और बाह्य संघर्ष शासनकी सुव्यवस्था, अव्यवस्था, आवश्यक वस्तुओंकी कमी, उनके मूल्यमें वृद्धि, शीत, उष्ण, आतप, ओला, बादल, बिजली, महामारी, युद्ध, शत्रु-आक्रमण, नेताओंकी स्थिति, शिक्षा-साहित्यकी स्थिति, कलाकी स्थिति प्रभृति बातोंका परिज्ञान उक्त लोकविजय यन्त्र द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

इस यन्त्रसे दशा, महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तरदशा, सूक्ष्मदशा और प्राणदशाका साधनकर शुभाशुभत्व, लाभ-हानि आदिका ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

यन्त्र द्वारा शुभाशुभत्व ज्ञात करनेकी विधि

संवच्छररायाओ गणिऊण देसकमेण फलं।
आइच्चाइगहाणं सुहासुहं जाणए कुसलो ॥ १ ॥

संवत्सरके अधिपतिसे लेकर देश-क्रमके अनुसार फलकी गणना करनी चाहिए और तदनुसार कुशल पुरुषोंको सूर्यादि ग्रहोंका शुभा-शुभ फल जानना चाहिए।

विवेचन—किसी नगर या गाँवका शुभाशुभत्व ज्ञात करनेके लिए पूर्वोक्त विधिके अनुसार महादशा, अन्तर्दशा आदिका साधन करना चाहिए। यहाँ यह ध्यातव्य है कि दशाओंके साधनसे जो फलादेश आता है, वह एक वर्षके लिए होता है। पर जब शनि वर्षके मध्यमें नक्षत्र परिवर्तन करता है, तब फलादेश बदल जाता है। अतः फल शनि नक्षत्रपर ही अवलम्बित रहता है, शनि नक्षत्रके परिवर्तित होते ही फलादेश भी बदल जाता है। शनि नक्षत्र तथा शनिके चरण-भेदका प्रभाव वर्षके इष्टानिष्टपर पड़ता है। शनि नक्षत्र प्रत्येक पञ्चांगमें अंकित रहता है, अतः दशाका गणित करते समय वर्षमें जब-तक शनि एक नक्षत्रपर है, तब तक एक फल और जब दूसरे नक्षत्रपर आ जाता है, तो फलादेश परिवर्तित हो जाता हैं। चरणभेदका प्रभाव भी वर्षके शुभाशुभत्वपर पड़ता है, अतः साधारणतः समान फल रहनेपर भी चरणभेदसे फलादेशमें स्वल्पान्तर अवश्य आता है। यह सर्वमान्य सिद्धान्त है कि चार चरणोंमेंसे शनिका विशेष बल मध्यके दो चरणोंपर पड़ता हैं, अन्तिम चरणका आधा फल और प्रथम चरणका तृतीय चतुर्थांश फल होता है, प्रथम चरणके आरम्भ होनेपर भी कुछ फल पूर्व नक्षत्रका और कुछ वर्तमान नक्षत्रका घटित होता है।

आचार्योंने बतलाया है कि रोहिणी और कृत्तिका नक्षत्र वर्षका शरीर है, पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़ वर्षकी नाभि हैं, अश्लिषा नक्षत्र वर्षका हृदय है और मघा नक्षत्र वर्षका कुसुम है। ये सब शुद्ध हों तो वर्ष शुभ रहता है। संवत्सर—जिस दिन वृहस्पति नवीन राशिमें प्रवेश करे—का शरीर नक्षत्र यदि पापग्रहसे युक्त या द्रष्ट हो तो अग्नि और वायुका भय; नाभि नक्षत्र पापग्रहसे युक्त या द्रष्ट हो तो अन्नाभाव, क्षुधापीड़ा; कुसुम नक्षत्र पापग्रहसे युक्त या द्रष्ट हो तो फलोंका अभाव, वृक्षोंका विनाश एवं हृदय नक्षत्र क्रूर ग्रहसे युक्त या द्रष्ट हो तो धान्यका विनाश होता है।

लोकविजय यन्त्रके कर्त्ताके अनुसार शनिका संवत्सरके शुभाशुभत्वके साथ अधिक सम्बन्ध है, अतः फलादेशका ज्ञान करते समय शनिकी द्वादश राशियोंका फल भी जान लेना आवश्यक है। ज्योतिषशास्त्रमें अनेक द्रष्टिकोणोंसे फल प्रतिपादन करनेका विधान है भी; अतः मेषादि द्वादश राशियोंमें शनिका फलादेश निम्न प्रकार अवगत करना चाहिये।

मेष[1]—इस राशिमें शनि हो तो धान्यका विनाश; बंगाल, मद्रास और तमिल प्रदेशोंमें विग्रह; उत्तर-प्रदेश, मध्यप्रदेश, विन्ध्यप्रदेशके अर्धभागमें सुख, सम धान्योत्पत्ति, अधिक रसोत्पत्ति, तृणकी कमी, शीत अधिक, वर्षाकी समता एवं हैजाका प्रकोप होता है। पूर्वी बिहारमें अकाल; दक्षिणी बिहारमें सुकाल, बिहारके पश्चिम भागमें संघर्ष, लूट-खसोट होती है। मवेशीको कष्ट रहता है तथा मवेशीकी कीमत घट जाती है। बंगाल और आसाममें प्लेग जैसी महामारियां भी होती हैं। बाढ़के आनेसे फसल नष्ट हो जाती है। धानमें एक प्रकारका कीड़ा लग जाता है जिससे फसल मारी जाती है। अश्विनी नक्षत्रपर जब तक शनि रहता है, तब तक धान्यकी कमीके कारण कष्ट उठाना पड़ता है। भरणी नक्षत्रपर शनिके आते ही वर्षा होने लगती है, पर इतनी अधिक वर्षा होती है, जिससे पूर्वीय प्रदेशोंमें बाढ़ आ जाती है तथा फसलको हानि उठानी पड़ती है। कृत्तिका नक्षत्र-के प्रथम पादमें जब शनि आता है, उन दिनों मध्यप्रदेशमें संघर्ष होता है, राजनीतिक जिच उत्पन्न हो जाती है और नेताओंमें आपसमें मनमुटाव होता है। बंगाल और मद्रासमें अकालकी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। राजस्थान और मध्यभारतमें साधारणतः स्थिति अच्छी रहती है। मेष राशिका शनि नेताओंके लिए अशुभ कारक होता है। बड़े-बड़े व्यवसायियों और कारोबार करनेवालोंको इस राशिके शनिमें लाभ होता है। सोना, चाँदी आदि मूल्यवान् धातुओंका मूल्य निरन्तर बढ़ता जाता है। रूई, कपास, सन, पाट आदिके मूल्यमें भी वृद्धि होती है। कृषकोंके लिये मेष राषिका शनि अत्यन्त अनिष्ट करनेवाला होता है। मजदूर वर्गके व्यक्तियोंके लिए यह शनि सामान्य रहता है। गुजरात, गौडमें धान्यभाव अधिक महँगा होता है। व्यापारियोंको अत्यधिक लाभ होता है।

वृष—इस राशिमें शनि हो तो विग्रह, दक्षिण दिशामें शत्रुका भय, वराडदेशमें अशान्ति, पश्चिमीय प्रदेशोंमें उथल-पुथल, देशका उजाड़, अन्नका भाव तेज, गेहूं, चना, नमक और चीनीके व्यापारमें लाभ; सोना, चाँदी, पीतल, काँसा, लोहा और अलमोनियाके वर्तनोंमें तथा इन धातुओंके कच्चे मालमें छः मास तक लाभ; आषाढ़-श्रावण-भाद्रपद मासोंमें लाभ, आसामदेशमें संघर्ष, घरेलु युद्ध या संघर्ष, पशुका नाश, महामार आदि फल प्राप्त होते हैं। रसकी कमी रहती हैं; तृण कम होता है तथा गृह-उद्योगोंकी उन्नति होती है। शनि कृत्तिकाके तीनों पादोंका योग करनेके पश्चात् जब रोहिणी नक्षत्रमें प्रवेश करता हैं, उस समय सभी वस्तुएँ अत्यन्त महँगी हो जाती हैं। यद्यपि रोहिणी नक्षत्र में शनिके आनेपर वर्षा अधिक होती है, फसल भी अच्छी होती है, फिर भी सभी वस्तुएँ अधिक महंगी होती हैं। अजवायन, अफीम, धनियाँ, जीरा आदिमें माघके महीनेमें लाभ होता है। यों तो रोहिणी नक्षत्रमें शनिके आनेसे सब प्रकारसे शान्ति मिलती है, परन्तु वस्तुओंकी कीमत अधिक बढ़ती जाती है। व्यापारियोंके लिए रोहिशी नक्षत्रका शनि अधिक अच्छा होता है। पंजाब सिन्ध और द्रविड़देशमें फसल अच्छी उत्पन्न होती है। महामारी सौराष्ट्र, अनूपदेश और राजस्थानमें फैलती है। सोनेका मूल्य अधिक बढ़ता है, काँच और मिट्टीके बर्तनोंके व्यापारमें लाभ होता है। मृगशिर नक्षत्रमें शनिके प्रवेश करते ही उत्पात आरंभ हो जाते हैं।

मिथुन—इस राशिमें शनि हो तो पश्चिममें दुर्भिक्ष, राजाओंमें विग्रह, मालवदेशमें विरोध, राशि-भोगके पाँच महीनेके उपरान्त उज्जयिनीमें उत्पात, दुर्गभंग, दो मासके पीछे, एक महीने तक दुर्भिक्ष, एक वर्ष पीछे धान्योत्पत्ति, पूर्वदेशमें उत्पात, गुड समभाव, लौंग, केसर, इलायची, पारा, हिंगुलु, रेशम, कत्था, सोंठ आदि वस्तुएँ महँगी होती हैं। मालव देशके नेताओंमें मन मुटाव होता है, राजनीतिमें जिच पैदा हो जाती है। विदेशोंसे व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ता है। शनि जब मृगशिर नक्षत्रपर रहता है तब तक प्रजामें अशान्ति रहती है। कलिंग, उत्कल, कामरूप और पंजाबमें बड़ी अशान्ति रहती है। व्यापारियोंके लिए

१—विशेषके लिए देखें—मेघ महोदय पृ० १९५-२०० ।

इस राशिका शनि विशेष अच्छा नहीं होता है। केवल मसालोंका व्यापार करनेवालोंको लाभ होता है। गल्ला, सोना, चाँदी आदिके व्यापारमें अधिक लाभ होनेकी संभावना नहीं है। इन वस्तुओंके व्यापारमें ज्येष्ठ, आषाढ़ ओर मार्गशीर्ष मासमें लाभ होता है।

आर्द्रा नक्षत्रका शनि मध्यम है, इस नक्षत्रमें शनिके पहुँचनेपर पूर्वीय भारतमें शान्ति, सुख और धन-धान्यकी वृद्धि, रसोंकी अधिक उत्पत्ति, पशुओंको सुख, ईख और धानकी खेतीमें अधिक लाभ, पाट या सनकी फसलमें कमी होती हैं। पुनर्वसु नक्षत्रके तीन पादोंमें जब शनि पहुँचता है तो पश्चिम भारतमें उपद्रव, उत्तरमें शान्ति, दक्षिणमें उत्पात और पूर्वमें धान्योत्पत्ति होती है। वर्षा अच्छी होती है; अश्विनके महीनेमें वर्षाका अभाव रहता है। पंजाब; आसाम, बंगाल, अङ्ग, कलिंग, उत्कल आदि प्रदेशोमें सामान्यतः फसल अच्छी उत्पन्न होती है।

कर्क—इस राशिमें शनि हो तो मालवा, बुन्देलखण्ड, पहाड़ी प्रदेशमें अशान्ति, नेताओमें संघर्ष, विद्रोहियोंकी प्रगति, वर्तमान शासनके प्रति बगावतकी भावना, दक्षिण दिशामें लोकका नाश, गाँवोंमें उपद्रव, रोगोंका बाहुल्य, ज्वरका अधिक प्रयोग, धनका नाश, कार्य-हानि, सेवकोंमें विरोध, देशमें चिन्ता और विषाद, पशुओंकी कमी, चोरोंकी वृद्धि, वायुका अधिक प्रकोप एवं आकस्मिक भय उत्पन्न होते हैं। श्रावणमासमें धान्यका भाव तेज, रूईका भाव सस्ता और सोना सस्ता होता है। भादोंमें वर्षा अधिक होती है; जिससे मलेरिया ज्वरका प्रकोप आसाम, बंगाल, उत्कल और बिहारमें अधिक होता है। घोड़ा, भैंस अधिक महंगे और गाय, बकरी आदि पशु सस्ते होते है। व्यापारमें लाभ होता है। अभ्रक, कोयला, सोना, चाँदी, मूंगा, मोती आदिके व्यापारमें साधारणतः लाभ होता है। पाट, गेहूँ, चना, ज्वार, बाजरा आदिमें भी लाभ होता है।

पुष्य नक्षत्रमें जब शनि आता है, उस समय प्रजाको अधिक कष्ट होता है। कहीं-कहीं भूकम्प, अवर्षण, झंझावात, तूफान, बाढ़ आदिके कारण नाना प्रकारके कष्ट होते हैं। उत्तरप्रदेशके पूर्वीय भागमें खाद्य-सामग्रीकी कमी रहती है। बंगालमें भी नानाप्रकारके उपद्रव होते हैं। वृश्चिक, मकर, मीन और मेष राशिवाले व्यक्तियोंके लिए पुष्य नक्षत्रका शनि उत्तम होता है। बैल, कुत्ता, घोड़ा आदिके लिए भी यह शनि अच्छा है। अश्लेषा नक्षत्रपर शनिके आते ही सर्वत्र आतंक छा जाता हैं। देशमें एक विचित्र प्रकारकी लहर आती है। देशके पूर्वीय भागमें वर्षाके अधिक होनेसे कष्ट होता है। रोग और बड़ी-बड़ी बीमारियाँ अधिक फैलती हैं। मध्यप्रदेश और दिल्लीके नेताओंमें मन-मुटाव हो जाता है; जिससे देशके शासनमें व्यतिक्रम भी होता है।

सिंह—इस राशिमें शनि हो तो सर्वत्र देशमें सुकाल रहता है, खूब अन्न उत्पन्न होता है। जलवर्षा विशेष, मालव देशमें लाभ, नेताओंमें विग्रह, किसी बड़े नेताकी मृत्यु, समुद्रतटके निकटवर्ती प्रदेशोंमें अच्छी फसल, शिक्षामें उन्नति, शिल्प और उद्योगके कार्योंमें विकास होता है। अनाजका भाव सस्ता होता है। घी, गुड़, गेहूँ, चना, जौ, बाजरा, मसूर, अरहर, मूँग आदि वस्तुओंके व्यापारमें साधारण लाभ होता है। इस राशिमें शनिके आनेपर पहले तो सुभिक्ष होती है, किन्तु पीछे महामारीके फैल जानेसे प्रजाको कष्ट होता है। कोंकण, मालव, अनूपदेश, कामरूप, उत्कल, अंग, कलिंग आदिमें धान्य भाव सम रहता है। तृण और पशुओं का भाव सस्ता होता है। पूर्व देशमें वस्त्रव्यवसायमें लाभ होता है, सेनामें विग्रह होता है। विरोधि पार्टियों-में संगठन होता है तथा वे वर्तमान शासनके प्रति बगावत करते हैं। मघा और पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रमें जब तक शनि रहता है, तब तक फसल अच्छी होती है। उत्तराफाल्गुनीमें शनिके प्रविष्ट होते ही फसल बिगड़ने लगती है। आसाम, उत्तरप्रदेश और उत्तरीय बिहारमें पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रपर शनिके रहनेसे फसल अच्छी नहीं होती है।

कन्या—जब इस राशिमें शनि आता है तो फसलका नाश हो जाता है, सर्वत्र हाहाकार सुनायी पड़ता है। वर्षाका अभाव और द्रविड़, तामिल, मद्रास, बंगाल आदिमें नाना तरहके उपद्रव होते हैं। राज-

स्थानमें फसल अच्छी होती है, पंजाब, सिन्धु, सौराष्ट्र और मध्यप्रदेशमें भी फसल अच्छी होती है। अन्नका भाव कुछ सस्ता होता है; जिस समय शनि वक्री होता है, उस समय धान्यको बेचना चाहिये। कन्या राशिका शनि जब आरम्भ हो उस समय आरम्भके नौ महीनेमें धान्यका संग्रह करना और पश्चात् बेचना अधिक अच्छा होता है। आरम्भके खरीदे गये अनाज, गुड़, वस्त्र, रूईमें दूना लाभ होता है, परन्तु जो कन्या राशिके शनिके अर्द्धभाग बीतनेके पश्चात् खरीदते हैं, वे हानि उठाते हैं। चित्रा नक्षत्रके शनिमें व्यापारियोंको हानि होती है। जूट, पाट, सन, सोना, चाँदी, रूई, वस्त्र आदि सभी पदार्थ सस्ते हो जाते हैं। हस्त नक्षत्रका शनि भी देशके लिए महान् अरिष्टकारक होता है; देशमें अवर्षण अथवा अतिवृष्टि होती है। समयपर वर्षाके न होनेसे फसल सूख जाती है। आसाम, बंगाल और पूर्वीय बिहारमें बाढ़ आती है। हैजा, प्लेग आदि बीमारियाँ फैलती हैं।

तुला—जब इस राशिमें शनि आता है तो धान्यका भाव सस्ता होता है। पृथ्वी रोगसे व्याप्त हो जाती है, भूकम्प, महामारी, उपद्रव, उत्पात आदि होते हैं। वर्षा बहुत मध्यम होती है; सुख और धनकी कुछ कमी हो जाती है। उत्तरप्रदेश, मध्यभारत, बिहार, पंजाब, आसाम और राजस्थानमें सुभिक्ष होता है, पर्याप्त धन-धान्यकी उत्पत्ति होती है। बंगालमें विशेषरूपसे महामारी फैलती है, चारों वर्णोंके मनुष्योंको कष्ट सहना पड़ता है। आधी राशिका उपभोग करनेके पश्चात् दक्षिण भारतमें अनाजका भाव महंगा होता है। गेहूँ, चना, चावल, उड़द और मसूरका भाव महंगा होता है। मद्रास और आसामको छोड़ अन्य सभी प्रदेशोंमें सुभिक्ष होता है, वर्ष समयपर यथोचित्त प्रमाणमें होती है, प्रजाको सब प्रकारसे सुख प्राप्त होता है।

स्वाति नक्षत्रपर जब शनि रहता है, उस समय व्यापारियोंको लाभ होता है। सन, पाट और रेशमके व्यवसायमें अधिक लाभ होता है। सोने, चाँदीका व्यापार भी खूब चलता है। अश्व, गाय, बकरी और भैंसके व्यापारमें भी पर्याप्त लाभ होता है। मवेशोमें संक्रामक रोग फैलता है। नारियोंको कष्ट होता है तथा नक्षत्रके आरम्भमें सर्वत्र सुभिक्ष, शान्ति, सुख, प्रेम और सहयोग बढ़ता है। शिल्प, उद्योग और खेतीमें विकास होता है। सट्टेके व्यापारमें हानि उठानी पड़ती है। विशाखा नक्षत्रमें शनिके प्रवेश करते ही नाना प्रकारकी आपत्तियाँ आती हैं, अल्पवृष्टि या अतिवृष्टि होती है, जिससे कृषकवर्गको नाना प्रकारके कष्ट सहन करने पड़ते हैं। फसलमें अनेक प्रकारके रोग लग जाते हैं; पशुओंका भाव सस्ता हो जाता है। रस और तृणकी भी कमी हो जाती है। मध्यभारत, विन्ध्यप्रदेश और राजस्थानमें आर्थिक संकट आता है, अन्नकी समस्या जटिल हो जाती हैं, नेताओंमें पारस्परिक संघर्ष होता है।

वृश्चिक—इस राशिमें शनिके आनेपर सैनिक उपद्रव होता है। सौराष्ट्र, मालवा, हस्तिनापुर, विराट् आदि प्रदेशोंमें आन्तरिक कलह होती है। गेहूँ, कपास, रूई, मसूर, तिल, कपड़ा आदिके व्यापारमें लाभ होता है। ऊनी कपड़ेका भाव कुछ सस्ता रहता है, रेशमी वस्त्रके व्यवसायमें पर्याप्त लाभ होता है। मालवामें टिड्डीका उपद्रव, सब वस्तुओंके मूल्यमें वृद्धि, अजवायन, मैथी, सरसों, धनिया, जीरा, कालीमिर्च लालमिर्च और इलायचीके व्यापारमें दुगुना लाभ होता है। वर्षा अधिक होती है। ज्वर, वात प्रधान रोग, निमोनिया, प्लेग आदि बीमारियोंका प्रकोप बढ़ता है।

अनुराधा नक्षत्रपर जब शनि आता है, उस समय पूर्वीय प्रदेशोंमें, विशेषत:, आसाम, बंगाल, बिहार, उत्कल, कलिंग आदिमें वर्षा इतनी अधिक होती है, जिससे प्रजाको महान् कष्टका सामना करना पड़ता है। कलिंग और बिहारके नेताओंमें मनमुटाव हो जाता है, शासनमें शिथिलता आती है तथा राजनैतिक गत्यवरोध होता है। अन्नके व्यापारियोंको अत्यल्प लाभ, वस्त्रके व्यवसाइयोंको अधिक लाभ तथा सोने-चाँदीके व्यवसायमें पर्याप्त धन कमाते हैं। जूट और रेशमके व्यवसायमें धनहानि उठानी पड़ती है। उद्योग और शिल्पके कार्यों-

में उन्नति नहीं होती है। ज्येष्ठा नक्षत्रपर जब शनि आता है, उस समय उत्तर-पश्चिमके प्रदेशोंमें नाना प्रकारके उपद्रव होते हैं। व्यवसायियोंको अपने-अपने व्यवसायमें हानि ही उठानी पड़ती है।

धन—इस राशिका शनि सब प्रकारसे अरिष्टकारक होता है। वर्षाका अभाव—कभी समस्त देशमें पायी जाती है। नैतिक पतन भी हो जाता है। गेहूँ, चना, मटर, तिल, तेल, घी, अजवाइन आदि वस्तुएँ तेज होती हैं। उत्तरप्रदेशमें रोगके कारण नाना प्रकारके कष्ट उठाने पड़ते हैं। श्रावण, भाद्रपद, आश्विन और कार्तिकमें समस्त वस्तुओंका भाव मँहगा हो जाता है। महामारीका प्रकोप सर्वत्र दिखलायी पड़ता है !

मूल नक्षत्रपर शनि जब तक रहता है, तब तकके लिए ज्यादा हानिकारक होता है, वर्षाके रुक जानेसे प्रजाको कष्ट होता है, व्यापारियोंको अनेक प्रकारका कष्ट सहन करना पड़ता है। लाल रंग और पीले रंगकी वस्तुओंके व्यवसायमें अधिक लाभ होता है। सट्टेसे हानि उठानी पड़ती है। पूर्वाषढ़ामें शनिके आते ही प्रजाको सुख और शान्ति प्राप्त होती है। धार्मिक अनुष्ठानोंमें पूर्ण सफलता प्राप्त होती है। पशुओं, लाल रंग और श्वेत रंगकी वस्तुओंके व्यवसायमें अच्छा लाभ होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्रके प्रथमपादमें शनिके आते ही जलवृष्टि होती है। जिन स्थानोंमें पानीकी वर्षा ज्येष्ठा नक्षत्रमें नहीं हुई है, उन स्थानोंमें इस नक्षत्रमें शनिके आते ही होती है। फसल भी अच्छी उत्पन्न होती हैं। ईखकी खेतीमें ज्यादा लाभ होता। गेहूँ, चना और मूंगकी खेतीमें रोग हो जाता है; धानकी फसल साधारणतया अच्छी होती है।

मकर—इस राशिपर शनिके आते हो सर्वत्र आनन्द और सुख व्याप्त हो जाता हैं। राजा प्रजा और नेताओंमें सौहार्द बढ़ता है। इस राशिमें शनिके आनेपर दो-तीन महीने तक अन्न, घी, कपूर, जायफल, नारियल और नमकका भाव तेज रहता है। इसके पश्चात् इन वस्तुओंका मूल्य भी अपने रूपमें हो जाता है। महाजन और धनिक व्यक्तियोंको अनेक प्रकारके कष्ट सहन करने पड़ते हैं। मालवा और आसाममें वर्षा इतनी अधिक होती है; जिससे बाढ़ आ जाती है तथा फसलको भी हानि उठाती पड़ती है। श्वेत रंगकी वस्तुओंमें व्यापारियोंको हानि उठानी पड़ती है। चाँदी, सोना, ताँबा, हाथी, घोड़ा, बैल, सूत, कपास, चीनी आदि वस्तुओंका भाव महंगा होता है।

उत्तराषाढ़ामें शनि जब तक रहता है तबतक जनताको साधारण सुख प्राप्त होता है; किन्तु जब शनि श्रवण नक्षत्र पर पहुँच जाता है, तब पूर्णतया सुख-शान्तिकी प्राप्ति होती हैं। केवल थोड़ेसे लोगोंमें, जो अपनेको नेता समझते हैं, कलह होती है।

कुम्भ—इस राशिका शनि होनेपर जनताको सब प्रकारसे सुख-शान्तिकी प्राप्ति होती है। देशमें सुख, अनाजकी खूब उत्पत्ति और रस, तृण आदि वस्तुओंकी उत्पत्ति भी खूब होती है। दक्षिण, कोंकणदेशमें विग्रह होता है तथा राजा-प्रजा सभीको थोड़ा कष्ट उठाना पड़ता है। मारवाड़में भी जलकी वर्षा खूब होती है तथा यहाँ फसल भी अच्छी होती है। शतभिषा नक्षत्रपर जब तक शनि रहता है, प्रजाको तब तक खूब सुख और सन्तोष प्राप्त होता है। उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बंगाल, आसाम, बिहार, पहाड़ी राज्य, हस्तिनापुर आदि प्रदेशोंमें सुकाल रहता है। यहाँके व्यापारियोंको भी पर्याप्त लाभ होता है। रूई, कपास और वस्त्र-व्यवसायमें भी लाभ होता है। मवेशियोंको कष्ट होता है।

मीन—इस राशिपर शनिके आते ही दुर्भिक्ष और संकट आते हैं। अति वृष्टि या अनावृष्टि होती है। गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, सोना, चाँदी आदिके व्यवसायमें साधारणतः लाभ होता है। वर्षारम्भमें खरीदी गयी चीजोंको पाँच महीनेके बाद बेच देनेपर दूना लाभ होता है। पाँच महीनेके पहले बेचनेपर घाटा होता है। महामारी, प्लेग, हैजा जैसे संक्रामक रोग भी इसी अवस्थामें उत्पन्न होते हैं।

उत्तराभाद्रपदपर जब तक शनि रहता है, तब तक प्रजाको नाना प्रकारका कष्ट उठाना पड़ता है। पक्षाघात—लकवा जैसी भयंकर बीमारियाँ भी इसी नक्षत्रपर शनिके आनेसे उत्पन्न होती हैं। व्यापारियोंके लिये यह समय उत्तम हैं, वे इसमें लाभ उठाते हैं। परन्तु इस नक्षत्रके चौथे पादमें जब शनि आता है, उस समय सर्वत्र हाहाकार मच जाता है। सब जगह लूट-खसोट आरम्भ हो जाती है। अनैतिकता, अधार्मिकता और पापाचारकी वृद्धि होती है। रेवती नक्षत्रपर शनिके आते ही प्रजाको सब प्रकारसे कष्ट ही उठाना पड़ता है। फसलकी कमी हो जाती है, और वर्षाके अभावके कारण सभीको कष्टका अनुभव होता है।

सूर्यदशाफल

आइच्चे आरुग्गो लोयाणं हवइ सस्सणिप्पत्ती।
राया सुतेजजुत्तो अस्सुप्पत्ती य किंचि भयं ॥१०॥

सूर्यकी दशामें जनताको आरोग्यलाभ, धान्यकी विशेष उत्पत्ति, राजाओंमें तेजस्विता, अश्व उत्पत्ति और प्रजामें कुछ भय होता है।

विवेचन—सूर्यकी महादशामें धन-धान्यकी प्राप्ति, आरोग्य, ऐश्वर्यकी वृद्धि, नेताओंके पराक्रमकी वृद्धि घोड़ोंकी उत्पत्ति, समयपर यथेष्ट वर्षा, उच्च वर्णोंके लोगोंको भय, धनिकोंको थोड़ा कष्ट होता है।

सूर्यकी अन्तरदशामें वर्षा साधारण, देशमें अनैक्य, नेत्रपीड़ा, व्यापारमें लाभ, रुई, गुड और सोनेके व्यापारमें लाभ तथा नेताओंमें मतभेद होनेसे देशको हानि उठानी पड़ती है।

सूर्यकी प्रत्यन्तरदशामें नवीन कार्योंका सम्पन्न होना, नये-नये प्रस्ताव, नयी-नयी स्कीमों और नये-नये नियमोंका निर्माण होना तथा सामूहिक उन्नतिका होना, शिक्षा-व्यवसायमें तरक्की करना आदि फलादेश घटित होते है।

सूर्यकी सूक्ष्मदशामें देशमें सुख-शान्ति, धन-धान्यकी उत्पत्ति, नेताओंमें राजनैतिक गत्यवरोध, लाल वस्तुओंके भावोंमें वृद्धि और खनिज पदार्थोंकी अधिक उत्पत्ति होती है। इस ग्रहकी सूक्ष्मदशामें देशको औद्योगिक कार्योंमें पूर्व विकास होता है। शिल्प और स्थापत्यकी उन्नति होती है।

सूर्यकी प्राणदशामें पूर्वमें निर्धारित स्कीमोंको कार्यरूपमें परिणत किया जाता है। देशमें यथेष्ट वर्षा होती है, कृषि सम्बन्धी कार्योंमें प्रगति होती है। व्यापारी इस अवसरसे पूर्ण लाभ उठाते हैं। पाट, सन और रेशमी वस्त्रोंके उद्योगमें शिथिलता आती है। इन वस्तुओंके भाव भी सस्ते हो जाते हैं। मवेशियोंको नाना-प्रकारके कष्ट उठाने पड़ते हैं तथा इनका मूल्य भी बढ़ जाता है। दूध, घी एवं अन्य रसोंकी उत्पत्ति पर्याप्त मात्रामें होती है। सूर्यकी प्राणदशामें नारियोंको कष्ट होता है।

सूर्यमें सूर्यान्तरदशा—इस दशामें सुवृष्टि, सुकाल और सुव्यापार होता है। निवासियोंको सब प्रकारसे सुख और आनन्दकी प्राप्ति होती है। मनोरंजनके साधन प्राप्त होते हैं तथा राजनैतिक और धार्मिक कार्य अधिक सम्पन्न किये जाते हैं। धार्मिक द्वेष अधिक बढ़ता है। नेताओंका सम्मान बढ़ता है और जनता अन्न-वस्त्रके लिए कष्टसे मुक्त हो जाती है।

सूर्यमें चन्द्रमाकी अन्तरदशा—इस दशामें आर्थिक लाभ, सुभिक्ष, धन-धान्यकी उत्पत्ति, चोरी और लूट-खसोट, सज्जनोंको कष्ट और दुष्टोंको सुख प्राप्त होता है। आरम्भमें यह दशा व्यापारके लिए उत्तम है। पहलेकी खरीदी वस्तुओंमें डेढ़ गुना लाभ होता है। सट्टा खेलनेवाले भी धन प्राप्त करते हैं। पाट और जूटके

सट्टेमें लाभ होता है, चाँदीके सट्टेमें हानि और सोनेके सट्टेमें लाभ होता है। बीचमें सस्ता भाव होता है, पर इस समय व्यापारियोंको घबड़ाना नहीं चाहिये। अन्तमें माल लाभ देकर ही रहता है।

सूर्यमें मंगलकी अन्तरदशा—इस दशामें भूमि स्वच्छ और उपजाऊ होती है। नदी किनारेके प्रदेशोंकी भूमि बाढ़ आ जानेसे अधिक उपजाऊ हो जाती है। बीचमें अर्थसंकट आता है, पर व्यापारीवर्गकी तत्परताके कारण वह अर्थसंकट शीघ्र ही दूर हो जाता है। गुड़, सोना, रंग एवं मूंगाके व्यापारमें पूर्ण लाभ होता है। नेताओंके पराक्रमकी वृद्धि होती है। राजनैतिक उपद्रवोंके कारण कभी-कभी अशान्ति उत्पन्न हो जाती है। जनसाधारणके लिए यह दशा अच्छी होती है।

सूर्यमें राहुदशा—इस दशामें निवासियोंको अच्छी आमदनी होती है, वर्षा समयानुसार यथेष्ट होती है। देशका सम्मान और प्रतिष्ठा निरन्तर बढ़ती जाती है। अनाज सामान्यतया अच्छा उत्पन्न होता है। कपासकी फसल अच्छी होती है। खेतीके कार्योंमें उन्नति होती हैं, बंजरभूमिमें भी अनाज उत्पन्न होता है।

सूर्यमें गुरुदशा—इस दशामें सुभिक्ष, वर्षा साधारण, ब्राह्मणोंको कष्ट, व्यापारकी वृद्धि एवं देश, नगर या गाँवकी उन्नति होती है। बड़े नेताओंका उस प्रदेशमें आगमन होता है।

सूर्यमें शनि—इस दशामें वर्षा अल्प होती हैं, अकालके लक्षण प्रकटरूपमें दिखलायी पड़ते हैं।

सूर्यमें बुध—इस दशामें पर्याप्त वर्षा, सुभिक्ष, व्यापारमें लाभ, सुख-शान्ति और पशुओंका भाव महँगा रहता है। गायोंमें बीमारी फैलती हैं, शासकोंमें मतभेद होता हैं।

सूर्यमें केतु—इस दशामें अन्नकी हानि, अतिवृष्टि या अनावृष्टि, व्यापारमें लाभ और नैतिक पतन होता है। क्रांतिविचारोंकी वृद्धि, धार्मिक भावनाओंका प्रभाव और जन-जागृति होती है।

सूर्यमें शुक्र—वर्षा समयपर होती है, अनाजका भाव महँगा होता है और नेताओंमें कलह होती है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य—सुभिक्ष, समयपर वर्षा, महामारी, व्यापारमें लाभ और धार्मिक नेताओंको कष्ट होता है।

सूर्य + सूर्य + चन्द्र—साधारण वर्षा, अन्नकी महँगाई, व्यापारियोंको कष्ट, शीतकी वृद्धि और तृण कष्ट होता है।

सूर्य + सूर्य + भौम—अतिवृष्टि, या अनावृष्टि, जनताको कष्ट, वस्तुओंकी महँगाई और विद्रोह होता है।

सूर्य + सूर्य + राहु—सम्यक् वर्षा, पर फसलका विनाश, दैवी प्रकोप, वस्तुओंकी महँगाई होती है।

सूर्य + सूर्य + गुरु—साधारण वर्षा, फसल अच्छी, धान्य-भाव तेज, जनतामें सुख और शान्ति रहती है।

सूर्य + सूर्य + शनि—वर्षाका अभाव अथवा असमयपर वर्षा, फसल साधारण, व्यापारियोंको लाभ होता है।

सूर्य + सूर्य + बुध—पर्याप्त वर्षा, सुभिक्ष, फलोंकी उत्पत्ति विशेष, तृण और रसकी अधिक उत्पत्ति होती है।

सूर्य + सूर्य + केतु—साधारण वर्षा, दुर्भिक्ष, अन्नकी कमी, वस्तुओंका अभाव और गुडकी अधिक उत्पत्ति होती है।

सूर्य + सूर्य + शुक्र—सुभिक्ष, अच्छी वर्षा, अन्नका भाव सस्ता, देशमें शान्ति और व्यापारियोंको घाटा होता है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + सूर्य—सुख-शान्ति, अनाजका भाव सस्ता, व्यापारियोंको घाटा और जनताको सुख होता है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + चंद्र—सुभिक्ष, पर्याप्त वर्षा, धन-धान्यकी वृद्धि, अन्नका भाव सस्ता और धर्मकी वृद्धि होती हैं।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + भौम—धन-धान्यकी वृद्धि, उत्पात, विद्रोह, संघर्ष, नेताओंमें अनैक्य और व्यापारियोंको लाभ होता है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + राहु—धान्याभाव, टिड्डियोंका उत्पात, भूकम्प, महामारी, पारस्परिक विद्रोह और साधारणतः वर्षा होती हैं।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + गुरु—धान्यकी खूब उत्पत्ति, व्यापारियोंको प्रसन्नता, उद्योगोंका विकास और जनताको सुख होता है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + शनि—वर्षाका अभाव, अन्नकी क्षति, मवेशियोंको रोग, व्यापारियोंको लाभ और आपसमें संघर्ष होता है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + बुध—सुभिक्ष, समयपर यथेष्ट वर्षा, व्यापारियोंको लाभ, ऐश्वर्य समृद्धि, नेताओंका सम्मान और रसकी यथेष्ट उत्पत्ति होती है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + केतु—साधारण वर्षा, धन-धान्यकी उत्पत्ति, व्यापारियोंको लाभ, सट्टेसे हानि और बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + शुक्र—यथेष्ट वर्षा, खनिज पदार्थोंकी यथेष्ट उत्पत्ति, लाभ, धन-धान्यकी वृद्धि एवं आन्तरिक संघर्ष होता है, नेताओंमें ऊपरसे प्रेमभाव रहता है, परन्तु उनमें आन्तरिक द्वन्द्व होता रहता है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + सूर्य + सूर्य—वर्षके आरम्भमें अच्छी वर्षा, धन-धान्यकी वृद्धि और व्यापारमें अल्प लाभ होता है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + सूर्य + चन्द्र—सुभिक्ष, आनन्द, आमोद-प्रमोद, संस्कृतिका विकास, पारस्परिक सहयोग आदिकी वृद्धि होती है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + सूर्य + भौम—अवर्षण, अन्नकी अल्प उत्पत्ति, देशमें उपद्रव, सेनामें विद्रोह और उत्पत्ति होता है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य – सूर्य + राहु—अतिवृष्टि या अनावृष्टि, देशमें उपद्रव, शासनकी वृद्धि, चोर और लुटेरोंकी वृद्धि होती है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + सूर्य + गुरु—धन-धान्यकी अधिक उत्पत्ति, रोगोंकी वृद्धि, व्यापारमें लाभ, रसोंका अभाव होता है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + सूर्य + शनि—आरम्भमें वर्षाका अभाव, मध्यमें अधिक वर्षा, व्यापारियोंको लाभ होता है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + सूर्य + बुध—घी, तेल, तिलहनकी अधिक उत्पत्ति, धान्यका अभाव, पशुओंको कष्ट होता है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + सूर्य + केतु—सुभिक्ष, परन्तु वर्षाकी कमी, व्यापारियोंको घाटा, महामारी, खनिज पदार्थोंकी अधिक उत्पत्ति होती है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + सूर्य + शुक्र—समृद्धि, व्यापारिक विकास, आर्थिक कष्ट, नेताओंको सम्मानप्राप्ति, भूकम्प और उद्योगोंका विकास होता है।

सूर्य + चन्द्र + भौम + राहु + गुरु—अवर्षण, सूखा, पशुओंको कष्ट, अशान्ति, रोग, पीड़ा और आर्थिक कष्ट होता है।

सूर्य + चन्द्र + भौम + राहु + शनि—अनावृष्टि, अथवा अतिवृष्टि, दुर्भिक्ष, व्यापारमें हानि, कष्ट, मंहगाई और पीड़ा होती है।

सूर्य + चन्द्र + भौम + राहु + बुध—सुभिक्ष, समयपर यथेष्ट वर्षा, व्यापारमें लाभ, धन-धान्यकी वृद्धि पशुओंमें लाभ और सुख होता है।

सूर्य + चन्द्र + भौम + राहु + केतु—उपद्रव, सूखा, वर्षाका अभाव, इतनी अधिक मंहगाई जिससे तिगुने दाम होते हैं।

सूर्य + चन्द्र + भौम + राहु + शुक्र—धन-धान्यकी वृद्धि, जनताको सुख, व्यापारियोंको लाभ और शान्ति रहती है।

सूर्य + भौम + राहु + गुरु + बुध—जनताको शारीरिक कष्ट, सुखकी प्राप्ति, धन-धान्यकी वृद्धि, घी-का भाव सस्ता और अन्नका भाव सम रहता हैं।

सूर्य + भौम + राहु + गुरु + शनि—अनावृष्टि या अतिवृष्टि, धन-धान्यका अभाव, जनताको कष्ट और भूकम्प होता है।

सूर्य + भौम + राहु + गुरु + केतु—कष्ट, अशान्ति, उपद्रव, उत्पाद, धान्याभाव, अनीतिका प्रचार और नाना तरहकी व्याधियाँ उत्पन्न होती हैं।

सूर्य + भौम + राहु + गुरु + शुक्र—सुभिक्ष, समयपर वर्षा, धान्यकी वृद्धि, व्यापारियोंको लाभ और आर्थिक समृद्धि हीती है।

सूर्य + बुध + राहु + गुरु + शुक्र—आरम्भमें कष्ट, अन्तमें सुख, सुभिक्ष, शान्ति, सुख, व्यापारमें लाभ और समस्त जनताको सुख प्राप्त होता है।

सूर्य + बुध + राहु + गुरु + केतु—अन्नका भाव सस्ता, व्यापारियोंको हानि, देशमें क्रान्ति और जागृति होती है।

सूर्य + बुध + राहु + गुरु + चन्द्र—लाभ ,हर्ष, सुभिक्ष, समयपर वर्षा, धन-धान्यकी समृद्धि, शान्ति, सुख और स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

सूर्य + बुध + राहु + गुरु + भौम—कष्ट, धन-धान्यकी वृद्धि, महामारी, पराभव तथा अशान्ति रहती है।

सूर्य + बुध + राहु + गुरु + शनि—भय, आतंक, साधारण वर्षा, प्रजाको कष्ट, शारीरिक रोग और धार्मिक नेताओंका कष्ट होता है।

सूर्य + बुध + राहु + शनि + केतु—लाभ, साधारण वर्षा, धन-धान्यकी वृद्धि, खेतीमें हानि और व्यापार साधारण रहता है।

सूर्य + गुरु + राहु + चन्द्र + भौम—आरम्भमें सूखा, मध्यमें वर्षा और अन्तमें वर्षा अच्छी होती है, सुभिक्ष और फ़सल अच्छी होती है।

सूर्य + गुरु + राहु + चन्द्र + केतु—कष्ट, पीड़ा, भय, आतंक, समयपर वर्षा, धान्योत्पत्ति और व्या-पारियोंको लाभ होता है।

सूर्य + शुक्र + राहु + केतु + भौम—आरम्भमें वर्षा, अन्तमें वर्षाका अभाव, वस्तुओंकी मंहगाई तथा जनताको कष्ट होता है।

चन्द्रदशाफल

चंदे णर-तिरयाणं आरुग्गो सुह तहेव धणवुड्ढी।
थोवजलं तिणुप्पत्ती अमियरसो होइ पुढवीए ॥ ११ ॥

चन्द्रकी दशामें मनुष्य और तिर्यञ्चोंके आरोग्य, सुख और धनकी वृद्धि होती है। जल कम बरसता है, पर घासकी प्रचुर परिमाणमें उत्पत्ति होती है तथा पृथ्वीमें अमृतरसका संचार होता है।

विवेचन—दशाफलका निरूपण तभी हो सकता है, जब महादशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशा, सूक्ष्मदशा, और प्राणदशाकी अपेक्षासे किया जाय। देश और नगरके फलादेशके लिए जो दशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशा, सूक्ष्मदशा और प्राणदशा आती है, वही वर्ष भरके लिए मानी जाती है। उसमें परिवर्तन समयके अनुसार नहीं होता। हाँ, शनि नक्षत्र बदलता हो तो वर्षके मध्यमें भी परिवर्तन हो जाता है। अतः वर्षारम्भमें दशाओं-को लोकविजययन्त्रके अनुसार निकालकर फ़लादेश अवगत करना चाहिये।

चन्द्रमाकी महादशामें—मनुष्य और पशुओंको सब प्रकारसे आरोग्य, धन-धान्यकी वृद्धि, पृथ्वीमें सब प्रकारसे शान्ति और सुख होता है। व्यापारियोंको चाँदी, सोना, रूई कपास और कपड़ेके व्यापारमें हानि होती है। गुड़, चीनी, गेहूँ और बाजराके व्यापारमें दूना लाभ होता है। नेताओंमें सहयोग और सहकारिता की भावना रहती है। देशके सुधारके लिए क्रान्ति होती है तथा साधारण जनता भी अपने देशके सुधारमें सहयोग देती है। अनेक ख्याति प्राप्त नेता आकर सुधारकी बातें बतलाते हैं, समाजमें नैतिकताका प्रचार और प्रसार होता है। कोई व्यक्ति अपने विकास द्वारा नेताके पदको प्राप्त करता है, इस व्यक्तिका प्रभाव उस प्रदेशके समस्त व्यक्तियोंपर रहता है। चन्द्रमाकी महादशा देशके अभ्युत्थान और उन्नतिके लिए अत्यन्त लाभप्रद होती है। व्यापार, कृषि-उद्योग और कुटीर-उद्योगोंमें उन्नति होती है।

चन्द्रमाकी अन्तरदशामें—दशाका विकास होता है, परन्तु वर्षा इतनी अधिक होती है, जिससे बाढ़के आ जानेसे नदीतटके प्रदेशोंमें नानाप्रकारकी हानियाँ होती हैं। अतिवृष्टिके कारण मकान और पशुओंको भी हानि उठानी पड़ती है। यद्यपि फसल अच्छी उत्पन्न होती है, परन्तु वर्षाकी अधिकताके कारण नाना तरह-के कष्ट उठाने पड़ते हैं। कफ और वायुका प्रकोप अधिक रहता हैं तथा मलेरिया ज्वर अधिक कष्ट पहुँचाता है। देश-विदेशके सम्बन्धसे निमोनिया रोग भी अपना प्रकोप बढ़ाता है। साधारणतः इस ग्रहकी अन्तर-दशामें प्रजाको सुख और शान्ति ही होती है, धर्मात्मा व्यक्तियोंको सम्मान मिलता है। धर्म और समाजके कार्योंमें वृद्धि होती है। शिक्षा, उद्योग और व्यवसायमें वृद्धि होती है। चन्द्रमाकी अन्तरदशा नारियोंके लिए भी सुख, शान्ति देती है तथा मानसिक और शारीरिक सुख प्रदान करती है। आम, लीची, नारियल, केला, अमरूद आदि फलोंकी उत्पत्ति बहुलतासे होती है, घी, दूध, नमक, अल्पमात्रामें उत्पन्न होता है; परन्तु इन वस्तुओंकी भी कमी नहीं होती है। देशकी समृद्धि और शान्ति मानवमात्रको प्राप्त होती है। खनिज वस्तुओंकी उत्पत्ति अधिक होती है तथा ये वस्तुयें समुद्रपारके देशोंमें भेजी जाती हैं।

चन्द्रमाकी प्रत्यन्तरदशामें—सब प्रकारसे सुख शान्तिकी प्राप्ति होती है। परन्तु महादशा और अन्तरदशा क्रूर ग्रहकी हो तो क्रूर ग्रहका फलादेश भी प्राप्त होता है और आधा फलादेश अनिष्टकर होता है। क्रूर ग्रहकी महदशा रहनेसे देशमें उत्पात, उपद्रव और महामारी आदि उत्पन्न होते हैं। धन-धान्यकी भी कमी होती है, अकाल और अवर्षणके कारण देशमें हाहाकार छा जाता है। जब महादशाके साथ अन्तरदशा भी पापग्रह—रवि,

मंगल, शनि, राहु, केतुकी होती है, तब वर्षारम्भमें अशान्ति और वर्षान्तमें शान्ति रहती है। धन-धान्यकी कमी रहती हैं, प्रजामें फूट और अशान्ति रहती है। नेताओंमें संघर्ष होता है, आपसके संघर्षके कारण साधारण जनतामें भय और आतंक व्याप्त हो जाता है। चन्द्रमाकी प्रत्यन्तरदशा रहनेसे थोड़ी फसल उत्पन्न होती है तथा वर्षा भी थोड़ी-थोड़ी समयपर हो जाती है। जब शुभ ग्रह—बुध, गुरु, शुक्र और चन्द्रमाकी महादशा या अन्तरदशा हो तथा चन्द्रमाकी प्रत्यन्तरदशा हो तो देशमें सब प्रकारसे सुख, शान्ति और धन-धान्यकी समृद्धि होती है।

चन्द्रमाकी सूक्ष्मदशामें—सुभिक्ष, शान्ति, धान्यकी समृद्धि, आरोग्य, शान्ति, प्रेम और व्यापारमें लाभ होता है। जब क्रूरग्रहकी महादशा, शुभग्रहकी अन्तरदशा, शुभग्रहकी प्रत्यन्तरदशा हो और चन्द्रमाकी सूक्ष्मदशा हो तो देशके व्यापारमें विकास, खेतीसे लाभ, अच्छी फसल और खनिज पदार्थोंकी उत्पत्ति अधिकतासे होती है। तेल, तिलहन, तिल, तीसी आदि पदार्थ सस्ते बिकते हैं, सट्टेके व्यापारियोंको घाटा होता है। क्रूरग्रहकी महादशा, क्रूरग्रहकी अन्तरदशा, शुभग्रहकी प्रत्यन्तरदशामें चन्द्रमाकी सूक्ष्मदशा हो तो देशके औद्योगिक कार्योंमें विकास होता है, नैतिक नियमोंमें शिथिलाचार तथा धन-धान्यकी समृद्धिमें कमी रहती है। वर्षा आरंभमें अच्छी होती है, परन्तु अन्तिम भागमें वर्षाकी कमी रहनेसे फसल खराब हो जाती है। व्यापारियोंको कष्ट होता है। क्रूरग्रहकी महादशा, शुभग्रहकी अन्तरदशा, क्रूरग्रहकी प्रत्यन्तरदशामें चन्द्रमाकी सूक्ष्मदशा अशुभप्रद होती है। देशमें कलह, संघर्ष, उपद्रव, उत्पात और अकाल बना रहता है। चन्द्रमाकी सूक्ष्मदशा रहनेसे किसी प्रकार जनसाधारणका जीवन व्यापार चलता रहता है। भाद्रपद महीनेमें जलकी वर्षा नहीं होती है, जिससे फसल सूख जाती है। आश्विनमासमें अनेक प्रकारकी बीमारियाँ भी फैलती हैं।

चन्द्रमाकी प्राणदशा—उत्तम होती है। देशमें धन, धान्य, आरोग्य, ऐश्वर्य और अभ्युदय वर्तमान रहते हैं। शासकोंपर जनताका विश्वास बढ़ता है, कारोबारमें वृद्धि होती है। कृषि-उद्योग और मिलोंके कार्योंमें प्रगति होती रहती है। चन्द्रमाकी महादशा और चन्द्रमाकी ही प्राणदशा हो तो निवासियोंके लिए सुख-शान्ति देनेवाली है। अनैतिकता और भ्रष्टाचारकी कमी होती है, देशोंमें धर्म और नैतिक नियमोंका प्रचार होता है। निम्नवर्गके लोगोंको कुछ कष्ट उठाना पड़ता है तथा उनमें आपसमें भी वैर-विरोध बढ़ता है। पशुओंकी वृद्धि होती है, उनका मूल्य घट जाता है। दूध देनेवाले चौपायोंकी कीमत कुछ बढ़ती है, परन्तु वर्षामें उनकी भी कीमत बढ़ जाती है। कार्त्तिकमासमें ओले गिरनेसे कुछ फसलको क्षति पहुँचती है।

मंगलकी महादशा, केतुकी अन्तरदशा, राहुकी प्रत्यन्तरदशा, शनिकी सूक्ष्मदशाके साथ चन्द्रमाकी प्राणदशा हो तो देशमें नाना प्रकारके उपद्रव होते हैं। मारकाट मच जाती है, महामारीके फैलनेसे सहस्रों मनुष्योंकी मृत्यु होती है। वर्षा भी बहुत कम होती है, तथा फसल सभी जगह खराब हो जाती है। चोर, लुटेरे और डाकुओंका आतंक छा जाता है, तृण और धान्यमें पर्याप्त लाभ होता है। जो संग्रह करते है, उन्हें तिगुना लाभ होता है। सोनेका मूल्य बढ़ता है, चाँदीका मूल्य सोनेके अनुपातसे कम ही रहता है। देशमें भय और आतंक छा जानेसे व्यापारियोंको भी हानि उठानी पड़ती है। शासन-प्रबन्ध भी ढीला पड़ जाता हैं तथा राजनैतिक पार्टियोंमें आपसमें संघर्ष होता है।

बुधकी महादशा, गुरुकी अन्तरदशा, शुक्रकी अन्तरदशा, मंगलकी सूक्ष्मदशा और चन्द्रमाकी प्राणदशा देशके लिए सब तरहसे सुख-समृद्धि देनेवाली है। सुभिक्ष, वर्षाका यथेष्ट परिमाणमें होना, व्यापारकी वृद्धि तृण और धान्यकी अधिकमात्रामें उत्पत्ति, देशमें सुख और शान्ति, व्यापारियोंको चिन्ता एवं सभी प्रकारके उद्योग-धंधोंके संचालकोंको लाभ होता है। सोना, चाँदी, गुड़, चीनी, गेहूँ, तिलहन और रत्नोंका भाव घटता

है। बड़े-बड़े जौहरियोंको हानि होती है। यद्यपि औद्योगिक विकासके लिए प्रयत्न किया जाता है, परन्तु देशमें सुख-सामग्रियाँ इतनी अधिक मात्रामें उत्पन्न होती हैं, जिससे लोगोंका उपयोग इस ओर लगता ही नहीं है। मोती, हीरा, नीलम आदि रत्नोंकी उत्पत्ति इस प्रकारकी दशामें अधिक होती है। शुक्रकी प्रत्यन्तरदशाका संयोग रहनेसे देशमें ज्ञान और शिक्षाका प्रचार भी अधिक होता है। शत्रु और विरोधियोंका अन्त हो जाता है, देशकी प्रतिष्ठा बहुत बढ़ती है। समुद्रपारके देशोंके साथ व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित किया जाता है। इस दशाके अन्तमें किसी नेता या महापुरुषकी मृत्यु भी होती है, जिससे देशको क्षति उठानी पड़ती है।

राहुकी महादशा, केतुकी अन्तरदशा, शनिकी प्रत्यन्तरदशा, बुधकी सूक्ष्मदशाके साथ चन्द्रमाकी प्राण-दशा हो तो देशमें साधारणतः भय, आतंक और अशान्ति रहती है, धन-धान्यकी उत्पत्ति होती है तथा वर्षा भी समयपर होती है, फिर भी देशमें अनेक प्रकारके कष्ट व्याप्त रहते हैं। वस्त्रव्यवसायमें कमी आ जाती है, बड़े-बड़े औद्योगिकोंको भी घाटा होता है तथा देशकी पूंजी घटने लगती है। उद्योगपतियोंके साथ मजदूरोंका सहयोग नहीं रहता है, इस कारण उपयोगकी वस्तुएँ उचित मात्रामें उत्पन्न नहीं हो पाती हैं। भूकम्प, महा-मारी या अन्य प्रकारकी आकस्मिक घटना घटित होती है, जिससे देशकी जनसंख्याको हानि पहुँचती है। देशकी शासन व्यवस्था भी ढीली पड़ जाती है तथा जनता स्वेच्छाचारी होकर विचरण करती है। चन्द्रमाकी प्राणदशाके कारण अन्तमें स्थिति सँभल जाती है, जिससे कोई बहुत बड़ी गड़-बड़ी नहीं होने पाती।

भौमदशाफल

दुब्भिक्ख रायकट्ठं वाहणहाणी पलीवणं बहुलं।
जुज्झंति रायपुरिसा भोमे भूमीय दुक्खभयं ॥१२॥

मंगलकी दशामें दुर्भिक्ष, राजा—शासनको कष्ट, और हाथी, घोड़े प्रभृति वाहनोंका विनाश होता है। प्रायः अग्निकृत उपद्रव होते हैं, राजगण परस्पर युद्ध करते हैं और पृथ्वीपर अनेक दुःख तथा भय उत्पन्न होते हैं।

विवेचन—जिस ग्राम या नगरकी जब मंगलकी महादशा होती है, उस समय उस ग्राम या नगरमें उपद्रव, उत्पात, दुर्भिक्ष, सेनामें विद्रोह, नेताओंमें संघर्ष, धन-धान्यका अभाव और नानाप्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं। देशके निवासियोंमें पारस्पारिक संघर्ष होता है, संक्लेश, अशान्ति, मनमुटाव और अन्न संकटका सामना करना पड़ता है। पृथ्वीपर अनेक प्रकारके उत्पात होते हैं, भूकम्प तथा अस्त्र-शस्त्रोंका प्रयोग निरन्तर होता रहता है। इस महादशामें आषाढ़, कार्त्तिक और माघके महीनोंमें प्रजाको कुछ शान्ति मिलती है, अवशेष मासोंमें अशान्ति और दुःख प्राप्त होता है। अगहन, माघ, फागुन और ज्येष्ठके महीनोंमें वस्तुएं महँगी होती हैं। व्यापारियोंको विशेष लाभ होता है, लाल रंगकी वस्तुओंके व्यापारमें अधिक लाभ होता है तथा मवेशियों-का मूल्य भी घटता है। कृषक और मजदूरोंको इस महादशामें अधिक कष्ट रहता है तथा उनके संगठन भी भंग हो जाते हैं। आपसमें अनेक प्रकारके झगड़े भी उनमें होते हैं। मिल या बड़े-बड़े व्यापारके स्वामियोंको अनेक प्रकारके कष्टोंका सामना करना पड़ता है।

मंगलकी अन्तरदशा भी अनिष्ट कारक होती है। इस दशामें अकाल, अवर्षा होनेसे फसलको क्षति उठानी पड़ती है। टिड्डी विशेषरूपमें आती है, फसलमें कीड़ा लगता है और नदीतटके देशोंमें बाढ़ आ जानेसे अनेक प्रकारके कष्ट उठाने पड़ते हैं। दूध, घी, और नमक आदि रसोंकी कमी रहती है, जिससे इन वस्तुओंका मूल्य अधिक बढ़ जाता है। जो व्यवसायी व्यक्ति वैशाखमासमें अनाज एकत्र करके रखता है और

सोना-चाँदीका संचय करता है, वह पौष मासमें दूना लाभ करता है। जनसाधारणको इस अन्तरदशामें अत्यधिक श्रम करनेपर ही भोजन प्राप्त होता है। भूखकी ज्वालाका सामना करना पड़ता है। वस्त्र-व्यवसाय बहुत ही गिर जाता है तथा इस व्यवसायके करनेवालोंको हानि ही उठानी पड़ती है।

मंगलकी प्रत्यन्तरदशामें देशमें अकाल, अवर्षा और महामारी फैलती है। जनतामें असन्तोषकी भावनाके व्याप्त हो जानेसे वर्गसंघर्ष आरम्भ हो जाता है, जिसमें समस्त देशवासियोंको नाना प्रकारके कष्ट सहने पड़ते हैं। मंगल स्वभावतः क्रूर ग्रह है, इसका स्वभाव धीरे-धीरे कष्ट पहुँचानेका है। नेताओं एवं धर्मप्रवर्तकोंके प्रति अविश्वास बढ़ता है तथा समाजमें उनकी प्रतिष्ठा इतनी गिर जाती है, जिससे उन्हें अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखनेमें बड़ी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ता है। अनेक स्थानोंपर उल्कापात विद्युत्पात तथा अन्य प्रकारकी आकस्मिक घटनाएँ घटती हैं; जिससे जनताको महान कष्ट होता है। गेहूँ,चना,मटर और उड़दके व्यापारमें लाभ होता है, व्यवसायी ज्येष्ठमें इन वस्तुओंका संग्रह करते हैं, उन्हें निश्चय लाभ होता है। बड़े-बड़े व्यवसायवालोंको, जिन्हें सट्टा या फाटका खेलना है, अच्छा लाभ होता है। माघ और फाल्गुनके महीनोंमें व्यापारमें अच्छी आमदनी होती है। देशके बड़े-बड़े व्यापारियोंको सट्टेमें पर्याप्त धन प्राप्त होता है। शुभग्रहकी महादशा, अन्तरदशा और सूक्ष्मदशाके होनेपर मंगल शान्ति प्रदान करता है। कृषिमें लाभ होता है। यद्यपि वर्षा साधारण ही होती है, फिर भी फसलमें अनुपाततः कोई हानि नहीं होती है।

मंगलकी सूक्ष्मदशा आरम्भमें कुछ कष्टकारक होती है तथा मध्यमें अनिष्ट और विपत्ति प्रदान करती है। इस सूक्ष्मदशामें विदेशोंसे व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित होता है। देशका कच्चा और पक्का माल बाहर जाता है, जिससे आर्थिक स्थितिका संतुलन बना रहता है। माघ, फाल्गुन, वैशाख और ज्येष्ठके महीनोंमें भूकम्प होता है तथा मवेशियोंमें बीमारियाँ होती हैं, जिससे सभी व्यक्तियोंको परेशान रहना पड़ता है। जलकी वर्षा अल्प मात्रामें ही होती है। शुक्रकी महादशा और बुध या गुरुकी अन्तरदशामें जब मंगलकी सूक्ष्मदशा होती है तो निश्चयतः पदवृद्धि, सम्मान और नेताओंमें मेल-मिलाप होता है। बड़े-बड़े व्यापारियोंको सट्टेसे लाभ होता है। परन्तु देशकी मध्यम परिस्थितिके लोगोंको सदा ही कष्ट भोगना पड़ता है। कार्त्तिक, पौष और माघमें महामारीका प्रकोप होता है, जिससे देशमें घोर अशान्ति होती है। प्रजाको सब प्रकारसे कष्टका ही सामना करना पड़ता है। चन्द्रमाकी महादशा, शुक्रकी अन्तरदशा, बुधकी प्रत्यन्तरदशामें भौमकी सूक्ष्मदशा सुख उत्पन्न करती है। देशमें खनिज पदार्थोंकी उत्पत्ति बढ़ती है, धान्यकी पैदावार अधिक है और शाक-सब्जी तथा तरकारियोंकी उत्पत्ति अधिक होती है। मेवा और मशालोंके व्यापारमें साधारणतः लाभ होता है। जो लोग बैल और भैंसोंका व्यापार करते हैं, उन्हें अपने व्यवसायमें पूरा लाभ होता है। क्रूर ग्रहोंकी महादशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशाके रहनेसे मंगलकी सूक्ष्मदशा हानिकारक और कष्ट देनेवाली होती है। शुभ ग्रहोंकी महादशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशाके रहनेसे मंगलकी सूक्ष्मदशा साधारणतः देशकी धन-धान्यमें वृद्धि करती है।

मंगलकी प्राणदशा साधारणतः अनिष्ट करती है। दुर्भिक्ष, अनावृष्टि, रोग, दुःख, शोक, ग्लानि, और चिन्ता उत्पन्न होती है। फसलमें कीड़े लग जाते हैं, जिससे अन्नका संकट सहन करना पड़ता है। माली,धोबी, कुम्हार आदि जातिके लोगोंका व्यवसाय अधिक चलता है। बड़े-बड़े व्यवसायियोंका व्यवसाय मन्दा पड़ जाता है और उन्हें अपनी आजिविका अर्जन करनेमें अनेक कठिनाइयोंका सामना करना पड़ता है। सोना, ताँबा, लोहा, पीतल और कांसा आदि धातुओंके व्यापारमें पर्याप्त लाभ होता है। सोने-चाँदीके व्यवसायी सट्टे द्वारा अपरिमित धनार्जन करते हैं तथा देशके सम्मानको बढ़ाते हैं।

मंगल + मंगल + मंगल + मङ्गल + सूर्य—इस दशामें दुर्भिक्ष, वर्षाका अभाव, व्यापारमें हानि और देशमें अनेक प्रकारकी बीमारियाँ होती हैं। नैतिक और आध्यात्मिक शिथिलताके कारण नेताओंमें अहर्निश संघर्ष होता रहता है। राजनीतिक वातावरण भी दूषित हो जाता है।

मंगल + मंगल + मंगल + मंगल + चंद्रमा—धनहानि, सामान्य वर्षा, जहाँ-तहाँ धान्योत्पत्ति, घरेलू व्यवसायकी वृद्धि, भूकम्प या आकस्मिक उपद्रव और कलहकी उत्पत्ति होती है।

मंगल + सूर्य + गुरु + शुक्र + मंगल—आषाढ़, श्रावणमासमें वर्षा; अश्विनमें सूखा और कार्तिकमें थोड़ी वर्षा होती है। पशुओंको कष्ट होता है। तृणका अभाव रहता है, जिससे मवेशीका मूल्य घट जाता है। खाद्यान्न सामग्री पूरी उत्पन्न नहीं होती है।

मंगल + राहु + केतु + शनि + बुध—अनावृष्टि या अतिवृष्टि, फसलका विनाश, व्यापारमें शैथिल्य, सेनामें संघर्ष, युद्ध होनेकी तैयारी और नाना प्रकारके कष्टोंका सामना करना पड़ता है।

चंद्रमा + राहु + गुरु + शनि + सूर्य—सुभिक्ष, वर्षा, गेहूँ,चावल, और कपासका मूल्य सम रहता है। देशमें आराम और मनोरंजनके साधन एकत्रित किये जाते हैं। व्यवसायियोंको अपने-अपने व्यवसायमें पूरा-पूरा लाभ होता है। विदेशोंसे संपर्क स्थापित होता है।

राहु + केतु + गुरु + बुध + मंगल—आरंभमें वर्षाका अभाव, मध्यमें साधारण वर्षा और अन्तमें फसलकी अल्पता होती है! चीनी और मिट्टीके बर्तनोंके व्यापारमें अच्छा लाभ होता है। नेताओंमें पारस्परिक विद्रोह होता है, परन्तु यह विद्रोह शीघ्र समाप्त हो जाता है। सोना-चाँदीका भाव बढ़ता है, जिससे इस व्यवसायमें भी तरक्की होती है।

मंगल + बुध + गुरु + चन्द्रमा + केतु—इस दशामें साधारण वर्षा होती है, धन-धान्यकी उत्पत्ति अधिक होती हैं। घोड़ा, हाथी, मोटर आदि सवारीकी वस्तुओंमें कमी हो जाती है। आर्थिक दशाका विचित्र ढंगसे सामना करना पड़ता है। आषाढ़, माघ, फाल्गुन और चैत्रके महीनोंके लिए यह दशा श्रेष्ट होती है।

सूर्य + चन्द्रमा + भौम + शुक्र + केतु—धान्यकी समता, उत्पत्ति, अधिक वर्षा और सुकाल रहता है। मंगल अपनी राशिपर रहता है तो और भी अच्छा फल देता है। शनिके साथ मंगल रहे तो और भी श्रेष्ठ फल देता है। देशमें समृद्धि और शान्ति व्याप्त होती हैं।

चन्द्रमा + बुध + मङ्गल + शुक्र + केतु—वर्षा अल्प होती है, अनाज साधारणतः अच्छा उत्पन्न होता है। गेहूँ और चनेकी पैदावार अधिक होती है। सोने-चाँदीके व्यवसायमें हानि होती है। सन, रेशम और पाटके व्यवसायियोंको हानि उठानी पड़ती है।

मङ्गल + गुरु + शुक्र + राहु + केतु—इस दशामें अनेक प्रकारकी अशान्तियोंका सामना करना पड़ता है। उपद्रव और उत्पात होते हैं। आषाढ़, आश्विन और माघ मासकी खरीदी वस्तुओंमें लाभ होता है। वर्षा साधारणतः अच्छी होती है। मंगलके निर्बल होनेसे समय-समयपर थोड़ा कष्ट सहन करना पड़ता है।

राहुदशा-फल

राहू रिद्धिविणासो ठाणब्भंसो य रायपज्जाणं
महि-रव परेण भंगो णयरस्स पखूण संहारो ॥१३॥

राहुकी दशामें धन-सम्पदादि ऋद्धियोंका विनाश होता है; राजा, प्रजा—नागरिक अपने-अपने स्थानसे भ्रष्ट होते हैं, भूकम्प होता है और पृथ्वी कोलाहलसे व्याप्त होती है। नगरका शत्रुओंके द्वारा भंग और पशुओंका संहार होता है।

विवेचन—राहुकी महादशा आने पर धन-सम्पत्तिका अभाव होने लगता है, वर्षा कम होती है, प्रजाको नाना प्रकारके दुःख सहन करने पड़ते हैं तथा शासकोंको भी स्थानच्युत होना पड़ता है। इस महादशामें चौपायोंको सुख रहता है। तृण अधिक उत्पन्न होता है, जिससे चारेकी कमी नहीं पड़ती। व्यापारियोंका धन लोग लूट लेते है, जिससे उन्हें अनेक प्रकारके कष्ट सहन करने पड़ते हैं। श्रावण और आश्विन मासमें वर्षा अत्यल्प होती है, भाद्रपद मासमें वर्षा अच्छी होती है, जिससे फसल साधारणतः उत्पन्न हो जाती है। राहुकी महादशाका फल सर्वदा समान नहीं मिलता है। जिस वर्ष राहु कन्या और मिथुन राशियों पर रहता है उस वर्ष राहुकी महादशा अच्छी रहती है। धन-धान्यकी उत्पत्ति खूब होती है व्यापारमें पूरा लाभ होता है। सोना-चाँदी, कासां-पीत्तल, ताबाँ-जस्ता आदि धातुओंके व्यापारमें अच्छा लाभ होता है। इन धातुओंके व्यापारियोंको पौष और माघ महीने अधिक लाभप्रद होते हैं। देशमें शान्ति, सुख और समृद्धि सर्वत्र व्याप्त रहती है। मकर और कुम्भ राशि पर जब राहु रहता है, उस समय राहुकी महादशामें बड़े-बड़े उपद्रव होते हैं। भूकम्प, युद्ध, प्लेग, हैजा आदि उत्पन्न होते हैं। नदी किनारेके प्रदेशोंमें बाढ़ आजानेसे बड़ी भारी क्षति उठानी पड़ती है। देशमें सर्वत्र हाहाकार मच जाता है; फूट, कलह और नाना प्रकारके झगड़े निरन्तर होते रहते हैं। देशके किसी बड़े नेताकी मृत्यु भी इसी समय होती है।

राहुकी अन्तरदशामें देशमें अवर्षण, दुर्भिक्ष, अशान्ति और नाना तरहके कष्ट होते हैं। यदि शुभ ग्रहकी महादशामें राहुकी अन्तरदशा रहे तो सभी प्रकारका सुख होता है। केवल निवासियोंमें संघर्ष, अनैतिकता और पारस्परिक विरोध होता है। शुभ गुरूकी महाशा रहनेसे राहुका प्रभाव वर्षके अन्तिम महीनों पर पड़ता है। आरम्भमें वर्ष अच्छा रहता है। खरीफकी फसल अच्छी होती, रवीमें कुछ हानि होती है। फसलको पाला मार जाता है जिससे गेहूँ, चना आदि कम मात्रामें उत्पन्न होने हैं। इस अन्तरदशामें गुड और चीनीकी उत्पत्ति अत्यल्प होती है। ईखकी खेती अच्छी नहीं होती है। धना, जीरा, और सुपाड़ीकी उत्पत्ति अधिक होती है। व्यापारियोंको सट्टेमें अधिक लाभ होता है तथा पौष और माघके महीनेमें सट्टा करने वालोंको अत्यधिक लाभ होता है। जो लोग सोना-चाँदीका सट्टा करते हैं, उनके लिए अगहन और पौष श्रेष्ठ हैं। फाल्गुनमें सोने-चाँदीका व्यापार कुछ ढ़ीला पड़ जाता है, जिससे व्यापारियोंको थोड़ी हानि भी उठानी पड़ती हैं। रेवती, मघा और विशाखा नक्षत्रोंमें इस दशामें जो रुई और सन का सट्टा करते हैं, उन्हें निश्चयतः लाभ होता है। व्यापारियोंको इन नक्षत्रोंमें माल खरीदना चाहिये, बेचनेसे तो हानि होती है। अनाजके व्यापारियोंको वरसातके दिनोंमें अधिक लाभ होता है; आश्विनका महीना गेहूं, चना और तिलहनके व्यापारके लिए सर्व श्रेष्ठ है।

क्रूर ग्रहोंकी महादशामें राहुकी अन्तरदशा हानिकारक रहती है। इसमें आर्थिक संकट देश या नगर के समक्ष आता है; रोग शोक आदि नाना प्रकारके उपद्रव होते हैं। देशमें दुर्भिक्ष पड़ता है। तृण, अन्न, रस और घीकी कमी रहती है। चोर, लुटेरोंका प्रकोप बढ़ता है, ये सर्वत्र अपना आतंक बढ़ाते हैं। देशकी हालत दिनों-दिन खराब होती जाती है। महामारीका प्रकोप इतना भयंकर होता है कि आदमी आदमीको नहीं पूछता इस दशामें आकस्मिक विपत्तियाँ आती हैं। अनीति, अत्याचार और पापकी वृद्धि होती है। नगर या देशके पड़ौसी शासकोंसे अनबन हो जाती है, आपसमें युद्ध या संघर्ष होते हैं। इस दशामें चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ ये

तीनों महीने अच्छे रहते हैं। बरसातके दिनोंमें कष्टारम्भ होता है, सूखा पड़ जानेसे नाना तरहकी व्याधियाँ उत्पन्न हो जातीं हैं। जाड़ेके दिनोंमें कुछ बर्षा होती है, जिससे वैशाखकी फसल कुछ उत्पन्न हो जाती है। पौषमें वर्षा होनेसे गेहूंकी फसल बहुत अच्छी उत्पन्न होती है।

राहुकी प्रत्यन्तरदशामें देशमें साधारण वर्षा होती है। श्रावण और भाद्रपदमें अच्छी वर्षा होती है। आश्विनमें अतिवृष्टि या अनावृष्टिका योग रहता है, अतः फसलको साधारणतः क्षति पहुँचती है। व्यापारीवर्गमें वस्तुओंके भावोंमें अस्थिरताके कारण तहलका मचा रहता है। इस दशामें शासक और शासितोंमें वैमनस्य उत्पन्न होता है तथा परस्पर अविश्वासके कारण संघर्ष बढ़ता चला जाता है। जब राहु मेष राशि पर रहता है, उस समय इसकी प्रत्यन्तर दशामें सुभिक्ष होता है। कर्क, मिथुन, कन्या और मीनके राहुकी प्रत्यन्तर-दशामें व्यापारियोंको खूब लाभ होता है। कृषकवर्गके लोगोंको कष्ट होता है तथा इनकी आर्थिक स्थिति भी विगड़ जाती है। धनु, मकर, कुम्भ और वृष राशिके राहुमें देश या नगरके उच्च वर्गके व्यक्तियोंको सुख-शान्ति मिलती है। धान्योत्पत्ति अच्छी होती है, और देशमें सभी तरहसे आनन्द व्याप्त रहता है। शुभ गृहकी महादशा और ग्रहकी ही अन्तरदशामें राहुकी प्रत्यन्तरदशा वर्षारम्भमें कष्टप्रद और अन्तमें सुखप्रद होती है। आर्थिक दृष्टिसे इस दशामें अशान्ति रहती है। सोने-चाँदीका व्यापार अस्थिर रहता है, बाजारका रुख अच्छा नहीं रहता, जिससे बड़े अच्छे-अच्छे व्यापारी भी इस स्थितिका सामना करनेमें असमर्थ रहते हैं। शुभ ग्रहकी महादशामें क्रूर ग्रहकी अन्तरदशाके साथ राहुकी प्रत्यन्तरदशा साधारणतः हानिप्रद होती है। व्यव-सायियोंको इस दशामें बहुत हानि पहुँचती है। कई व्यापारियोंका व्यापार तो चौपट हो जाता है तथा वे सब प्रकारसे दुखी जीवन व्यतीत करते हैं।

राहुकी सूक्ष्म दशा भी देशके लिए महान् हानिकारक होती है। इस दशामें वर्षा बहुत कम होती है, राजा और प्रजाको अनेक कष्ट और बीमारियाँ सहन करना पड़ती है। राहुकी सूक्ष्म दशा उस समय अच्छा फल देती है, जब राहु कन्या, मिथुन या मीन राशिपर रहता है और शुभ ग्रहकी महादशा, शुभ ग्रहोंकी ही अन्तरदशा और प्रत्यन्तरदशा होती है। जिस वर्ष राहुके साथ मंगल हो, उस वर्ष राहुकी महादशा और सूक्ष्म-दशा हो तथा शुभ ग्रहोंकी अन्तरदशा और प्रत्यन्तरदशा हो तो निश्चयतः देशमें सुख, शान्ति और सुभिक्ष होती है। रुई, कपास और अनाज खूब उत्पन्न होता है। देशमें कारोबार और उद्योगोंकी वृद्धि होती है। नेताओंको सम्मान प्राप्त होता, व्यापार बढ़ता है, सदाचार और नीतिका प्रचार होता है। क्रूर ग्रहोंकी महादशा, शुभ-ग्रहोंकी अन्तरदशा, शुभग्रहोंकी प्रत्यन्तरदशाके साथ राहुकी सूक्ष्मदशा देशमें साधारणतः सुख शान्ति उत्पन्न करती है। देशकी धार्मिक स्थिति सुधरती है। प्रेम और वात्सल्य भावका प्रचार होता है। पशुओंका मूल्य बढ़ता है। ऊनी कपड़ोंके व्यापारमें अधिक लाभ होता है। रेशमी और सूती वस्त्रोंके व्यवसायमें उन्नति होती है। दूध, घी और गुड़की उत्पत्ति खूब होती है। देशका वातावरण सुख-शान्तिसे पूर्ण रहता है। क्रूर ग्रहोंकी प्रत्यन्तरदशा, शुभ ग्रहोंकी महादशा और अन्तरदशाके साथ राहुकी सूक्ष्म दशा देशमें सुभिक्ष उत्पन्न करती है। आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद और आश्विन मासोंमें यथेष्ट वर्षा होती है। फसलमें रोग लग जाता है, जिससे फसल कुछ कम उत्पन्न होती है। राजनैतिक नेताओंके साथ धार्मिक नेताओंका भी सम्मान बढ़ता है। खाद्य पदार्थोंका भाव बहुत सस्ता हो जाता है। व्यापारियोंको साधारण लाभ होता है।

राहुकी प्राणदशा देशके नेताओंके लिए अच्छी नहीं होती। गेहूँ, चना, जौ, बाजरा, तूअर, मूँग, उड़द, मसूर और ज्वारकी फसल अच्छी नहीं होती है। हाँ, धान अच्छा उत्पन्न होता है। वर्षा कम होती है, वायु ज्यादा चलती है। आकाशमें बादल गर्जते हुए दिखलायी पड़ते हैं, पर वर्षा नहीं होती है। आषाढ़के

महीनेमें केवल बिजली चमकती हुई दिखलायी पड़ती है; बादल पृथ्वीकी ओर झुके हुए दिखलाई पड़ते हैं; किन्तु यों ही निकल जाते हैं। आधे श्रावणके पश्चात् वर्षा होती है, और वह भी कम मात्रामें। शुभ ग्रहोंकी महादशा, शुभ ग्रहोंकी अन्तरदशा, क्रूर ग्रहोंकी प्रत्यन्तरदशा और क्रूर ग्रहोंकी सूक्ष्मदशाके साथ राहुकी प्राणदशा साधारणतः सुखप्रद होती है। इस दशामें वर्षा कम होती है, परन्तु फसल अच्छी उत्पन्न होती है व्यापारियोंके लिए यह दशा अच्छी होती है। गेहूँ, चना आदि अनाजके व्यापारमें लाभ होता है। सोने-चाँदीके व्यापारमें भी अच्छा लाभ होता है, परन्तु भाद्रपद महीनेमें व्यापारियोंको इस व्यापारमें घाटा होता है। क्रूर ग्रहोंकी महादशा शुभ ग्रहोंकी अन्तरदशा, क्रूर ग्रहोंकी प्रत्यन्तरदशा और क्रूर ग्रहोंकी सूक्ष्म दशाके साथ राहुकी प्राण-दशा अनेक प्रकारके कष्टोंको देती है। ज्येष्ठ, श्रावण, माघ और फाल्गुन मास इस दशामें अच्छे होते हैं तथा इन महीनोंमें देशमें सभी प्रकारकी सुख-शान्ति रहती है।

गुरुदशाफल

बहुदुद्धा गोमहिसी सस्सुप्पत्ती य हुंति वहुमेहा।
रायसुहं णत्थि भयं उत्तमवणिया सुजीवे णं ॥ १४ ॥

गुरुकी दशामें गाय और भैंसें बहुत दूध देती हैं, धान्यकी उत्पत्ति अधिक होती है, वर्षा अच्छी होती है, राजाको सुख मिलता है, राज्यमें कहीं भी भय नहीं रहता और व्यापारियोंको व्यापारमें लाभ होता है।

विवेचन—गुरुकी महादशामें देशमें सर्वत्र धन-धान्यकी वृद्धि होती है, समयपर यथेष्ट वर्षा होती है, घी, दूध, दही आदि पदार्थोंकी बहुलता रहती है। देशमें सर्वत्र शान्ति और सुख व्याप्त रहता है। जनता परस्पर प्रेम और आनन्दके साथ रहती है। सभी मिलकर देशकी उन्नति और विकास करते हैं। समाजमें ज्ञानी और योगियोंका आदर होता है, जनताकी रुचि धर्मश्रवणकी ओर बढ़ती है। सभी लोगोंकी देशके अभ्युत्थानकी चिन्ता रहती है। व्यापारियोंके लिए यह दशा बहुत ही अच्छी होती है। उनका व्यापार देश-विदेशमें खूब बढ़ता है। सोने-चाँदी, गुड़ मूँगा और रंगके व्यापारमें अपरमित लाभ होता है। देशकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती जाती है। धान, गेहूँ, चना, जौ, ज्वार और मक्काकी उत्पत्ति बहुलतासे होती है। जब कर्क, धनु और मीन राशियोंपर बृहस्पति रहता है उस समय इसकी महादशामें देशकी अवस्था बड़ी ही अच्छी और सन्तोषप्रद होती है। राजा-प्रजा सभीको सुख और आनन्द प्राप्त होता है। रोग-शोक आदिका भय दूर हो जाता है। कुम्भ, मकर और सिंहराशिके बृहस्पतिकी जब महादशा रहती है, उस समय देशमें साधारण वर्षा होती है। व्यापारियोंको भी हानि उठानी पड़ती है। धन-धान्यकी उत्पत्ति भी साधारण होती है। अनाजका भाव आरम्भमें सस्ता, किन्तु पीछे महँगा हो जाता है। फसलमें रोग लग जानेके कारण उपज भी कम होती है, अतः भाव स्थिर नहीं रह पाता है।

गुरुकी महादशाके समयमें संवत्सरका राजा भी गुरु हो तो निश्चयतः देशमें सोने-चाँदी, मोती, माणिक्य आदि वस्तुओंकी उत्पत्ति होती है। आषाढ़, श्रावण इन दोनों महीनोंमें अच्छी वर्षा होती है, जिससे फसल हो जाती है। देशका वातावरण शान्त रहता है। उपद्रव या उत्पात नहीं होते। माघ और फाल्गुन महीनेमें सोने-चाँदीके व्यापारमें ज्यादा लाभ होता है। चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठके महीने व्यापारियोंके लिए अच्छे नहीं होते। इन महीनोंमें वस्तुओंके मूल्य इतने घट जाते हैं, जिससे व्यापारियोंको अधिक घाटा होता है। बुध या

शुक्र जब राजा हों, उस समय गुरुकी दशामें देशमें सुभिक्ष, समयपर वर्षा, प्रकृतिका अनुकूल रहना और स्वास्थ्य अच्छा रहता है। शनि, मंगल ओर सूर्यके राजा होनेपर गुरुकी महादशामें देशमें उपद्रव, उत्पात, अनाचार, अनावृष्टि या अतिवृष्टि होती है। वस्तुओंका मूल्य बढ़ जानेसे साधारण जनताको महान कष्ट होता है।

गुरुकी अन्तरदशामें देशमें औद्योगिक विकास, कृषि विकास तथा पूर्वकी सभी योजनाएँ सफल होती हैं। वर्षा अच्छी होती है, पशुओंको थोड़ा कष्ट होता है। उनमें कई प्रकारकी बीमारियाँ फैलती हैं, जिससे देशमें पशुओंकी क्षति भी हो जाती है। वर्षाकी अधिकताके कारण मच्छड़ अधिक उत्पन्न होते हैं, जिससे मलेरिया, टाइफाइड आदि होते हैं। देशकी आर्थिक स्थिति साधारणतः अच्छी रहती है। व्यापारीबर्गमें चिन्ता व्याप्त रहती है। व्यापारकी स्थिति सदा एक-सी नहीं रहती; किन्तु घटती-बढ़ती होते रहनेके कारण छोटे-छोटे व्यापारियोंको थोड़ा कष्ट उठाना पड़ाता है। यों तो गुरुकी अन्तरदशा व्यापारके लिए अच्छी होती है। वैशाख, ज्येष्ठ और आषाढ़ मासमें सट्टेके व्यापारियोंको खूब लाभ होता है। कर्क, धनु और मीन राशियोंपर जब गुरु रहता है, उस समय गुरुकी अन्तरदशा देशके उत्थानके लिए बहुत अच्छी होती है।

क्रूर ग्रहकी महादशाके साथ गुरुकी अन्तरदशा देशवासियोंके लिए अच्छी नहीं होती हैं; क्योंकि इस दशामें नानाप्रकारके रोग होते हैं। स्वास्थ्य नष्ट होता है। उपद्रव और उत्पात होते हैं, परस्पर कलह होता है। देशकी आर्थिक दशा बिगड़ जाती है। शुभ-गुरुकी महादशाके साथ जब गुरुकी अन्तर्दशा रहती है, उस समय देशमें शान्ति, सुख, समृद्धि और हर्ष व्याप्त रहता है। धन-धान्यकी उत्पत्ति खूब होती है, देशनिवासियोंको सब प्रकारसे सुख मिलता है। व्यापारियोंको सभी वस्तुओंके व्यापारमें ज्यादा लाभ होता है। सोने-चाँदीके सट्टेमें बहुत अच्छा लाभ होता है। हाँ, गेहूंकी उत्पत्ति कम होती है, जिससे गेहूंका भाव बढ़ जाता है। चावल, चना, ज्वार, बाजरा आदि अनाज खूब उत्पन्न होते हैं। देशकी व्यावसायिक उन्नति होनेसे संसारके अन्य स्थानोंमें इसे महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है। मेष, वृष और मिथुन राशिके गुरुमें गुरुकी अन्तरदशा देशकी राजनीतिके लिए अच्छी नहीं होती। अतः राजनैतिक नेताओंको कष्ट उठाना पड़ता है।

गुरुकी प्रत्यन्तरदशा देशकी समृद्धिके लिए बहुत उत्तम होती है। इसमें विदेशोंसे सम्पर्क बढ़ता है, ज्ञान-विज्ञानका विकास होता है। नयी-नयी योजनाएँ देशके विकासके लिए तैयार की जाती हैं, पर उन योजनाओंमें पूर्ण सफलता नहीं मिलती है। वर्षा समयपर होती है, परन्तु फसल उत्तम नहीं हो पाती। फसलमें अनेक प्रकारके रोग लग जाते हैं और असमयमें ही फसल सूख जाती है। इस दशामें शीत भी अधिक पड़ता है, जिससे खेतीको हानि उठानी पड़ती है। अगहन, पौष और माघ महीनेमें वर्षा होती है, जिससे पशुओंको कष्ट होता है। यद्यपि इस वर्षासे गेहूँ, चना और तिलहनकी खेतीको लाभ होता है; परन्तु अधिक वर्षा होनेसे फसलको हानि ही उठानी पड़ती है। व्यापारके लिए यह दशा अच्छी होती है, इसमें सब प्रकारके व्यापारमें लाभ होता है। सोने-चाँदीके व्यापारियोंको अच्छा लाभ होता है। रत्न, जवाहिरातके व्यवसायियोंको भी अच्छा लाभ होता है। रूई, कपास और सूतका मूल्य सस्ता होता है। रेशमी वस्त्रोंके उद्योगमें साधारण लाभ होता है।

शुभग्रहोंकी महादशा और शुभग्रहोंकी अन्तरदशामें गुरुकी प्रत्यन्तरदशा देशके विकासके लिए बहुत ही अच्छी है। इस दशामें देशकी आर्थिक स्थिति बहुत ही दृढ़ होती है। प्रजामें सुख और शान्ति व्यास रहती है। शीत अधिक पड़ता है, जिससे थोड़ी-सी फसलको हानि होती है। दूध और घी अधिक उत्पन्न होते हैं। खनिज पदार्थोंकी उत्पत्ति भी अधिक होती है, जिससे देशके विकासमें पूर्ण सहायता मिलती है। मिट्टीका तेल

पैट्रोल आदिका भाव गिरता है और इन वस्तुओंके व्यवसायियोंको हानि उठानी पड़ती है। महादशाकारक ग्रह जब अपनी राशि या उच्च राशिमें हो और शुभ ग्रहसे भुक्त या द्रष्ट हो तो उस समय गुरुकी प्रत्यन्तर-दशा देशके विकासके लिए और भी अच्छी रहती है। इस दशामें अनाज इतना अधिक उन्पन्न होता है कि इसका निर्यात विदेशोंके लिए करना पड़ता है। अधिक अनाज उत्पन्न होनेके कारण ही कुछ व्यक्ति विदेशोंसे व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करते हैं।

माघ, फाल्गुन और चैत्र इन महीनोंमें उपर्युक्त दशा नवीन योजनाओंको सफल करने या कार्यरूपमें परिणत करनेके लिए सबसे अच्छी है। देशका ढाँचा बदल जाता है, आर्थिक दृष्टिसे देश बहुत आगे बढ़ जाता है। जो व्यापारी पुष्य, मघा, उत्तराषाढ़ा और हस्त नक्षत्रमें व्यापार आरम्भ करते हैं, वे उक्त दशामें सहस्रों रुपये अर्जित कर लेते हैं। आश्लेषा, विशाखा और भरणी नक्षत्रमें व्यापार करनेवाले हानि उठाते हैं। क्रूर ग्रहोंकी अन्तरदशाके साथ गुरुकी प्रत्यन्तर दशा देशके विकासके लिए परमोपयोगी होती है।

गुरुकी सूक्ष्मदशामें देशकी उन्नति, धन-धान्यकी वृद्धि, सुभिक्ष, समयानुसार यथेष्ट जलवर्षा होती है। शुभ ग्रहकी महादशा, शुभग्रहकी ही अन्तरदशा शुभ ग्रहकी प्रत्यन्तरदशाके साथ, गुरुकी सूक्ष्म दशा सब प्रकारसे कल्याण करनेवाली होती है। मेष राशिके वृहहस्पतिकी सूक्ष्म दशा देशमें अनावृष्टि करती है। वृष राशिके वृहहस्पतिकी सूक्ष्मदशा समयानुसार यथेष्ट वर्षा, सुकाल और व्यापारमें विकास करती है। मिथुन राशिके वृहस्पतिकी सूश्मदशा रोग, महामारीकी उत्पत्तिमें सहायक, गुडकी महँगाई, रंगीन पदार्थो में लाभ और मवेशीको कष्ट देती हैं। कर्क राशिके वृहस्पतिकी सूक्ष्मदशा देशमें शान्ति, सुख, धान्योत्पत्ति, घी-दूधकी विशेष उत्पत्ति, खनिज पदार्थोंके व्यापारमें लाभ, और कृषिमें विकास करती है। सिंह राशिके वृह-स्पतिकी सूक्ष्म दशा देशमें आधि-व्याधि, झगड़े, कलह, अल्पवर्षा और साधारण फसल उत्पन्न करती है। कन्या राशिके वृहस्पतिकी सूक्ष्मदशामें कृषिका विकास, व्यापारियोंको लाभ, सन्तोंका सम्मान, नेताओंका उद्भव और धार्मिकताका प्रचार होता है। तुलाराशिके वृहस्पतिकी सूक्ष्मदशामें धन-धान्यकी विशेष उत्पत्ति, भूकम्प या आकस्मिक भय, देशमें उपद्रव और व्यापारमें भी घाटा होता है। वृश्चिक राशिके वृहस्पतिकी सूक्ष्मदशा में आतंक, भय, अनाचार और द्वेषभाव बढ़ता है; किन्तु फसल अच्छी उत्पत्त होती है। धनु राशिके गुरुकी सूक्ष्मदशामें समयपर यथेष्ट वर्षा, सुकाल, प्रजामें सुख-शान्ति, शिक्षा और विकासकी योजनाओंका कार्यरूपमें परिणमन और देशके व्यापारमें विकास होता है।

मकर राशिके वृहस्पतिकी सूक्ष्मदशामें देशमें कष्ट, अतिवृष्टि या अनावृष्टि, व्यापारिक क्षति, व्यापा-रियोंमें असन्तोष, और नेताओंमें संघर्ष होता है। कुम्भ राशिके वृहस्पतिकी सूक्ष्मदशामें सभी फल प्रायः मकर राशिके वृहस्पतिके समान हो होता है; परन्तु इस दशामें व्यापारिक थोड़ी प्रगति होती है जिससे व्यापारियोंका असन्तोष मिट जाता है। मीनराशिके वृहस्पतिकी सूक्ष्म दशामें देशकी समृद्धिका विकास, धन-धान्यकी वृद्धि, और व्यापारमें लाभ होता है।

वृहस्पतिकी प्राणदशामें देशमें सुख-शान्ति, समयपर वर्षा, उद्योगोंमें विकास और नेताओंका सम्मान होता है। क्रूर ग्रहकी महादशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशा और सूक्ष्म दशाके साथ गुरुकी प्राणदशा अशुभ कारक होती है। इस दशामें देशमें उपद्रव, अशांति, मारकाट, संघर्ण, लूट-मार आदि होते हैं। देशकी आर्थिक स्थिति विषम होती जाती है, जिससे समस्त देशको कष्ट उठाना पड़ता है। अर्थाभावके कारण जनतामें अनेक प्रकार की अनैनिकता आ जाती है। देशका वातावरण क्षुब्ध रहता है और व्यापारमें भी हानि होती है। शुभग्रहोंकी महादशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशा, और सूक्ष्म दशाके साथ वृहस्पतिकी प्राणदशा देशकी उन्नतिकी लिए सभी

तरहसे अच्छी होती है। धन-धान्यकी वृद्धिके साथ देशके उद्योगमें भी विकास होता है। देशमें यथेष्ट वर्षा होने के कारण फसल बहुत अच्छी उत्पन्न होतीहै। सभी निवासी अपनी-अपनी जिम्मेदारीका निर्वाह करते हैं, जिससे देशमें कल-कारखानोंकी खूब स्थापना होती है। राजनैतिक बिरोधी पार्टियाँ भी देशके विकासमें सहयोग प्रदान करती हैं।

मंगल + बुध + राहु + शुक्र + गुरु—सुख, शांति, धार्मिक प्रवृत्ति, धान्योत्पत्ति, व्यापारमें लाभ, मवेशियोंको रोग, आन्तरिक कलह, समयपर वर्षा और आध्यात्मिक विकास होता है।

चंद्र + बुध + गुरु + शुक्र + गुरु—अपार हर्ष, कृपिका विकास, सन और रेशमकी अत्यधिक उत्पत्ति, खनिज पदार्थोंकी अधिक उत्पत्ति, देशके व्यापारका विकास, सट्टेमें व्यापारियोंको लाभ, देशमें सर्वत्र शान्ति, मनोरंजनके साधनोंका विकास, आर्थिक स्थितिका सुदृढ होना एवं सुखकी प्राप्ति होती है।

केतु + शनि + मंगल + सूर्य + गुरु—कष्ट, धान्यकी क्षति; अशान्ति, उत्पात, रोग और महामारियोंका होना, देशमें आर्थिक संकट, रेशमके व्यापारमें क्षति, सोने-चाँदीके व्यापायमें अल्प लाभ; सट्टेके व्यापारमें लाभ, देशके उद्योगोंमें विकास और जनतामें मनोमालिन्य उत्पन्न होता है।

शनि + मंगल + शुक्र + राहु + गुरु—अनिष्ट, किसी नेताकी मृत्यु, धान्याभाव, अल्पवृष्टि, व्यापारमें लाभ, कृषि-उद्योगोंका विकास, देशके पशुओंको कष्ट; जनतामें परस्पर स्नेह खनिज पदार्थोके व्यापारमें लाभ, सट्टेके व्यापारमें हानि, विद्रोह और वैमनस्यकी उत्पत्ति होती है। जनतामें सहयोग और सहकारिताकी भावना उत्पन्न होती है।

रवि + चंद्र + भौम + राहु + गुरु—समयपर वर्षा, व्यापारकी उन्नति, व्यापारियोंको अल्प लाभ, अन्नकी बहुलता, वस्तुओंका सस्ता होना और देशके कारोबारमें वृद्धि होती है। यह दशा नवीन योजनाओंको कार्यरूपमें परिणत करनेके लिए अत्यन्त उपयोगी है।

शनिदशाफल

मंदे णरवइ-मरणं उवद्दवं सयललोयमज्झम्मि।
हियदुस्सीला लोया घरि-घरि हिडंति कुलबहुआ ॥१८॥

शनिकी दशामें राजाका मरण और समस्त लोकमें उपद्रव होता है। लोगोंका हृदय अत्यन्त दुःशील हो जाता है और कुलबधुएँ दुराचारिणी बनकर घर-घरमें घूमने लगती हैं।

विवेचन—शनिकी महादशामें देशमें उत्पात होता है, नेताओंमें संघर्ष होता है, पड़ोसियोंमें लड़ाई होती है; अन्याय, अत्याचार और दुराचारकी ओर देशवासियोंकी प्रवृत्ति बढ़ती है। पड़ौसी देशसे युद्ध होनेकी भी संभावना रहती है तथा देशके नैतिक पतनके कारण प्रजाको अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं। धन-धान्यकी कमी हो जानेसे नारियोंको भी भिक्षाटन करना पड़ता है। शनि महादशाके आरम्भ होते ही देशका वातावरण क्षुब्ध हो जाता है, नाना प्रकारके कलुषित विचारोंका प्रचार हो जानेसे जनताको अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं। देशमें सर्वत्र क्रूर नीतिका प्रचार दिखलायी पड़ता है, समाजमें फूट घर कर लेती है, जिससे कृषि और व्यापारमें पूरी क्षति उठानी पड़ती है। जब शनि तुला राशिका होता है, उस समय शनिकी महादशा देशके अभ्युदयमें साधक बनती है। पड़ौसी राष्ट्रों और देशोंसे मित्रता स्थापित होती है। व्यापारमें

पर्याप्त लाभ होता है तथा समुद्रपारके देशोंमें भी व्यापार बढ़ता है। मेष राषिके शनिकी महादशामें देशमें उत्पात, उपद्रव और वज्रपात होते हैं। बिजली गिरनेसे धन-जनकी हानि उठानी पड़ती है, आकस्मिक दुर्घ-टनाओंका शिकार होना पड़ता है। मिथुन राशिके शनिकी दशा देशके धन-धान्यका विनाश करती है। वर्षा कम होती है, अथवा बिल्कुल नहीं होती। सट्टेके व्यापारियोंको धनागम होता है। बेकारी अधिक बढ़ती है, जिससे देशमें अशान्ति, कष्ट और नाना प्रकारकी चिन्ताएँ उत्पन्न हो जाती हैं। जीवन एक प्रकारसे नारकीय बन जाता है; देशका वातावरण अत्यन्त विकृत रहता है, फलतः सामाजिक जीवनको अनेक प्रकारके धक्के लगते हैं।

कर्क राशिके शनिकी दशामें साधारण वर्षा होती है, देशमें उपद्रव कम होते हैं; किन्तु आन्तरिक अशान्ति ज्यों-की-त्यों बनी रहती है। जनताका आर्थिक स्तर गिरता चला जाता है, जिससे भूख और बेकारी-की समस्या अधिक बढ़ जाती है। लोहे और जस्तेकी बनी वस्तुओंके व्यापारमें लाभ होता है, शेष सभी वस्तुओंमें हानि उठानी पड़ती है। उद्योग और विकासकी योजनाएँ बीचमें ही नष्ट हो जाती हैं। रोटी और तन आच्छादनकी समस्या इतनी अधिक बढ़ती जाती है, जिससे देशमें विषमताका वातावरण पनपता जाता है और अन्तमें समाज या देशको सभी प्रकारकी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ता है।

सिंह राशिके शनिकी दशामें देशमें वर्षा होती है, फसल भी अच्छी होती है, परन्तु व्यापार और उद्योगका विकास नहीं होता, अतः देशकी उन्नति नहीं हो पाती है। नेताओं और महान् व्यक्तियोंमें विरोध बढ़ता है, अनैक्य और फूट बढ़ती जाती है। धारासभा और विधानसभाके सदस्योंमें मतभेद होता है, जिससे देशके शासनमें विश्रृंखलता आ जाती है। सोना, चाँदी, ताँबा और पीतलके व्यापारमें अधिक लाभ होता है। कन्याराशिके शनिकी महादशामें अतिवृष्टि या अनावृष्टि होती है, देशमें अकाल पड़ता है, बाढ़ आ जाती है और भी अनेक प्रकारके उपद्रव होते हैं। धान्य भाव बढ़ता है, रुपयोंकी कमी प्रत्येक व्यक्तिके पास रहती है। वृश्चिक राशिके शनिकी महादशामें सब प्रकारसे अशान्ति, दरिद्रता और विभिन्न प्रकारके कष्टोंका सामना करना पड़ता है। अनाज भी कम उत्पन्न होता है। भूखकी समस्याको हल करनेके लिए अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं, सन्तोष और शान्ति बिल्कुल नहीं प्राप्त हो पाती है।

वृश्चिक राशिके शनिकी दशामें युद्ध और महामारियोंका होना स्वाभाविक है। धनुराशिके शनिकी महादशामें देशवासियोंकी आर्थिक स्थिति डवाडोल हो जाती है। यद्यपि इस दशामें वर्षा अच्छी होती है, परन्तु फसलको हानि उठानी पड़ती है। मीन राशिके शनिकी दशामें देशकी अवस्था अत्यन्त दयनीय हो जाती है। अनेक प्रकारकी बीमारियाँ फैलती हैं, जिससे देशका धन-जन यों ही नष्ट हो जाता है। मीनराशिका शनिश्चर ऐसे ही कष्टप्रद होता है, महादशाका स्वामी हो जानेसे यह और भी अधिक भयप्रद हो जाता है। इस दशामें देशमें अनैतिकता बढ़ती है। व्यापारमें भी चोर, डाकू और लूटेरोंके उपद्रवके कारण शिथिलता आ जाती है। रोगोंकी उत्पत्ति अधिक होती है। प्रजा त्राहि-त्राहि पुकारती है। देशका वातावरण अत्यन्त क्षुब्ध रहता है। अनाजका मूल्य बढ़ जाता है; सोने-चाँदीके मूल्यमें पर्याप्त वृद्धि हो जाती है, जिससे व्यापारियोंकी अनेक प्रकारसे लाभ होता है। सट्टेवालोंके लिए यह समय सर्वोत्तम है। इसमें जितने अधिक धनका संचय करना संभव हो सकता, व्यापारी करते हैं।

कार्तिक, अगहन, पौष और चैत्रमें अनेक प्रकारकी बीमारियाँ होती हैं। युवक और शिशुओंकी मृत्यु अधिक होती है। दुःखी कुल ललनाओंको घर-घर रोटियोंके लिए भिक्षाटन करना पड़ता है। वातावरणके क्षुब्ध हो जानेसे सभीको तन-मनसे दुखी होना पड़ता है। जीवन और जगत्‌की समस्याएँ उपस्थित होती हैं,

सारा मुख किरकिरा हो जाता है। यदि मीनका शनैश्वर एक वर्ष तक बिना वक्री राशिपर रहता है, तो जनताको सामान्य लाभके साथ विशेष लाभ भी होता है। सोने-चाँदीका सट्टा खेलने वालोंको दुगुना लाभ होता है। घीका भाव कुछ महँगा होता है। नेता और महान् व्यक्तियोंका आगमन भी समय-समयपर होता है।

शनिकी अन्तरदशामें देश उन्नति करता है। यद्यपि वर्षा कम होती हैं, महामारियाँ फैलती हैं, परन्तु अनेक महत्वपूर्ण योजनाएँ इसी दशामें सफल होती हैं। उद्योग-धन्धोंका विकास होता है। क्रान्तिकी लहर आती है, जनता उन्नतिको ओर बढ़ती है। कृषिकी उन्नति होती है, सिंचाईके लिए नहर आदिका प्रबन्ध किया जाता है। जिस समय मेष राशिमें शनि रहता है, उस समय इस अन्तरदशामें नाना प्रकारके उपद्रव होते हैं। अशान्ति रहती है, विघ्न-बाधाएँ अधिक आती हैं। नेताओंमें, शासकोंमें मतभेद होता है। देश उन्नतिको अपेक्षा अवनतिकी ओर अग्रसर होता है। गेहूँ, चना और चावलकी पैदावार साधारणतः अच्छी होती है। व्यापारियोंको साधारण लाभ होता है। ऊनी और रेशमी वस्त्रके व्यवसायियोंको अधिक लाभ होता है। सोने और चाँदीके व्यापारमें कुछ घाटा रहता है। अगहन, माघ और चैत्रके महीने सोनेके व्यापारके लिए अच्छे होते हैं। इन महीनोंमें सर्राफाका बाजार ऊँचा उठता है। हीरा, मोती, पन्ना, मूँगा और नीलम रत्नोंका मूल्य बढ़ता है। मिट्टीका तेल और पेट्रोलकी उत्पत्ति अधिक होती है। खनिज पदार्थ इस अन्तरदशामें अल्प परिमाणमें उत्पन्न होते हैं।

वृष राशिके शनिमें शुभ ग्रहकी महादशा और शनिकी अन्तरदशा होनेपर देशमें सुख-समृद्धि होती है, देशका व्यापार बढ़ता है और समयपर यथेष्ट वर्षा होती हैं। धर्मकी ओर जनताकी रुचि उत्पन्न होती है। मन्दिर, देवालय और धर्मस्थानोंका निर्माण भी देशमें अत्यधिक परिमाणमें होता है। व्यवसायकी उन्नति होनेसे देशकी माली हालत बहुत अच्छी रहती है। मिथुन, सिंह, कन्या, मकर और कुम्भ राशिमें शनिके रहनेपर क्रूर ग्रहोंकी महादशामें शनिकी अन्तरदशा देशके लिये भयप्रद, अशान्तिकारक, कष्टप्रद और आर्थिक दृष्टिसे अत्यन्त अशुभ होती है। और शुभ ग्रहोंकी महादशामें शनिकी अन्तरदशा सुखकारक धन-धान्यकी उत्पत्तिमें सहायक होनेसे कर्क, तुला और वृश्चिक राशिमें शनिके रहनेपर शुभ ग्रहोंकी महादशामें शनिकी उत्तरदशा रहनेसे साधारण शान्ति, चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ मासमें उपद्रव, अशान्ति धन-धान्यका अभाव एवं क्रूर ग्रहोंकी महादशामें अनेक प्रकारके कष्ट, भुखमरी, लुट-खसोट, हत्याएँ, चोरी और अनेक प्रकारके उत्पात होते हैं। वैशाख और ज्येष्ठमें हैजा फैलता है। आश्विनका महीना देशके स्वास्थ्यके लिए अत्यन्त अशुभ है। इस महीनेमें सट्टे-वालोंको महान् हानिका सामना करना पड़ता है। धनु और मीन राशिका शनि शुभग्रहोंकी महादशामें देशके लिए शुभ फल देता है। धन-धान्यकी वृद्धि होती है, मेल-मिलाप बढ़ता है। स्वास्थ्य सुधरता है और देशकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती है। इस दशामें आश्विन, माघ और फाल्गुनके महीने देशके विकासके लिए श्रेष्ठ होते हैं। विदेशोंसे सम्पर्क बढ़ता है, सम्मानकी वृद्धि होती है। अनाज खूब उत्पन्न होता है। सोने, चाँदी, अभ्रक, कोयला आदिकी नयी-नयी खानोंका पता लगता है। प्रकृति देशके अभ्युदयमें सब प्रकारसे सहयोग देती है। देशमें नये-नये नेता उत्पन्न होते हैं, जो देशको उन्नतिकी ओर ले जाते हैं। क्रूरग्रहकी महादशामें उक्त अन्तरदशा देशके विकासमें बाधक होती है। देशको अनेक संकटोंका सामना करना पड़ता है।

शनिकी प्रत्यन्तरदशा देशके विकासके लिए साधारणतः अच्छी होती है। शुभ ग्रहोंकी महादशा और शुभ ग्रहोंकी अन्तरदशामें यह प्रत्यन्तरदशा देशका विकास करती है। शुभ ग्रहोंकी महादशा और क्रूर ग्रहोंकी अन्तरदशामें यह प्रत्यन्तरदशा धन-धान्यकी उत्पत्तिमें बाधक, असन्तोष और अशान्ति उत्पन्न करती है। क्रूर ग्रहोंकी महादशा, शुभ ग्रहोंकी अन्तरदशामें यह प्रत्यन्तरदशा देशकी उन्नतिमें साधारणतः उपयोगी होती है।

इसमें किसी नेता या धार्मिक पुरुषकी मृत्यु होती है। देशका शासन असन्तोषकजनक रहता है और चोर. लुटेरे एवं गुण्डे सब तरहसे जनताको कष्ट पहुँचाते हैं। देशका व्यापार चौपट हो जाता है तथा व्यापारियोंको देश छोड़कर अन्यत्र चला जाना पड़ता है क्रूर ग्रहोंकी महादशा और क्रूर ग्रहोंकी अन्तरदशा देशकी समृद्धि और अभ्युदयके लिए अत्यन्त विघातक होती है। अतिवृष्टि या अनावृष्टिके कारण फसल खराब हो जाती है।

शनिकी सूक्ष्मदशामें अवर्षण, अतिवृष्टि, बाढ़, धान्यका अभाव या अल्पपरिमाणमें उत्पत्ति, क्रान्ति, उपद्रव और नाना प्रकारके उत्पात होते हैं। इस सूक्ष्मदशामें व्यापारियोंको लाभ नहीं होता है। व्यापारकी स्थिति बिगड़ती चली जाती है और देशके समस्त व्यापारी कष्ट सहन करते है। आर्थिक दृष्टिसे यह वर्ष अत्यधिक खराब जाता है, नाना प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं। आश्विन, कार्तिक, फाल्गुन और चैत्रमें हैजा, प्लेग जैसे भयंकर रोग फैलते हैं, जिससे देशका विनाश होता है। महायुद्ध या छोटे-छोटे घरेलू उद्योगके होनेसे देशका विकास रुक जाता है। धन-जनकी पर्याप्त क्षति होती है। मवेशीकी कीमत बढ़ जाती है। सभी प्रकारके अनाजके व्यापारमें लाभ होता है। अनाज उत्पन्न भी कम होता है। कर्क, वृष, धनु और तुला राशिके शनिमें यह दशा धन-धान्यकी उत्पत्तिके लिए अच्छी होती है। खनिज पदार्थोंकी उत्पत्ति भी ज्यादा होती है।

शनिकी प्राणदशामें देशकी उन्नति होती है, धन-धान्यकी वृद्धि भी साधारणतः अच्छी होती है। शुभ ग्रहकी महादशा, शुभ ग्रहकी अन्तरदशा और शुभ ग्रहकी सूक्ष्मदशामें यह दशा देशकी उन्नतिके लिए अच्छी होती है। पुष्य, पुनर्वसु मघा, उत्तराफाल्गुनी और उत्तराषाढ़ामें खरीदनेवाले व्यापारियोंको सोने-चाँदीके व्यापारमें अच्छा लाभ होता है। आषाढ़, श्रावण और भाद्रपद इन तीन महीनोंमें वर्षा अधिक होती है। फसल इस दशामें बहुत अच्छी उत्पन्न होती है, देशमें सुख और शान्ति होती है। माघ, फाल्गुन इन महीनोंमें अनाजका भाव तेज रहता है, अवशेष महीनोंमें सम या मन्दा रहता है। क्रूर ग्रहकी महादशा, क्रूर ग्रहकी ही अन्तरदशा और शुभ ग्रहकी प्रत्यन्तरदशामें शनिकी प्राणदशा व्यापारके लिए अच्छी होती है। यद्यपि इस दशामें देशके वातावरणमें उथल-पुथल मच जाती है। जनता भुखमरीका कष्ट सहन करती है; परन्तु व्यापारियोंका लाभ होता है। साधारणतः शनिकी सभी प्रकारकी दशाएँ देशकी उन्नतिमें बाधक होती हैं।

बुधदशाफल

बालित्थीबहुमरणं धणणासो रोगसंभवो बहुओ।
ठाठभडाण णिवाणं संहारो खलु बुहे णेयो॥ १६॥

बुधकी दशामें बालक और स्त्रियोंका मरण अधिकतासे होता है, लोगोंके धनका नाश होता है और अनेक प्रकारके रोगोंकी उत्पत्ति होती है। युद्ध स्थानमें सुभटों और राजाओंका संहार होता है।

विवेचन—बुधकी महादशा धन-धान्यके लिए अच्छी होती है। इसमें रोगोंकी उत्पत्ति अत्यधिक होती है। इस दशामें स्त्री, बालक और वृद्धोंकी मृत्यु अत्यधिक होती है। चेचक, प्लेग, निमोनिया आदि रोग अत्यधिक उत्पन्न होते हैं। स्त्रियोंके प्रसवसम्बन्धी अनेक बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं। देशकी अधिकांश जनता रोगसे त्रस्त रहती है। वैमनस्य, विरोध और मनोमालिन्य इस दशामें विशेष रूपसे होता है। बुद्धिकी हीनता इस दशाका प्रधान फल है। देशका वातावरण सर्वदा आतंकित रहता है। अविश्वास और असन्तोषकी अग्नि धधकती रहती है। प्रधान नेताओंमें संघर्ष होता है, देशका शासनसूत्र हिल जाता है। बड़े-बड़े व्यापारियों

और उद्योगपतियोंको लाभ होता है, परन्तु माल अधिक उत्पन्न होनेसे बाजारमें प्रतिस्पर्धाकी अग्नि धधकने लगती है, जिससे लाभके स्थानपर हानि होनेकी संभावना अधिक रहती है। छोटे-छोटे नेता अपनी शक्तिका प्रदर्शन करते हैं तथा ऐसे लोग सामने आते हैं, जिनका अस्तित्व राजनीतिमें कुछ ही दिन पहले दिखलायी पड़ता है। आषाढ़, माघ और फागुनके महीनेमें इस दशामें व्यापार अधिक चलता है, परन्तु व्यापारी अधिक लाभ करनेके फेरमें रहते हैं, जिससे उन्हें अन्तमें घाटा उठाना पड़ता है। जो व्यापारी अपने मालको जल्द बेच देते हैं, उन्हें लाभ रह जाता है।

मेषराशिके बुधकी महादशामें देशमें लाभ, धन-धान्यकी उत्पत्ति, शासकोंमें मतभेद, नारियोंको कष्ट, बच्चों-की मृत्यु और चेचक आदि रोगोंकी उत्पत्ति होती है। इस राशिका बुध देशके पशुओंके लिए भी अच्छा नहीं होता है। पशुओंमें अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। भेड़, बकरियोंको इस प्रकारका रोग उत्पन्न होता है, जिससे उनका खाना-पीना छूट जाता है और तीन दिनोंमें ही उनकी मृत्यु हो जाती है। गाय और घोड़ोंके लिए यह दशा अच्छी होती है, इसमें इनका मूल्य भी बढ़ता है तथा ये चौपाये नीरोग भी रहते हैं। मेघ राशिका बुध चाँदीके व्यापारके लिए अच्छा रहता है, इसमें चाँदीका सट्टा वाले अधिक लाभ उठाते हैं। नेताओंके अभ्युदय-की वृद्धि भी इसी दशामें होती है। वृष राशिके बुधकी महादशामें धन-धान्यकी उत्पत्ति, युद्ध या विग्रह, नेताओंमें विरोध, प्लेग और राजयक्ष्माकी उत्पत्ति, शरदीका अधिक पड़ना ओर राजनैतिक पार्टियोंमें मतभेद होता है। इस दशामें देशमें अशान्ति रहती है, देशका वातावरण क्षुब्ध हो जाता है।

मिथुन राशिके बुधकी महादशामें देशमें सुख और समृद्धि होती है। धन-धान्य पर्याप्तमात्रामें उत्पन्न होते हैं। जनतामें संगठन और सहयोगकी भावना आती है। शासक धर्म और नीतिके अनुसार शासन करते हैं। गेहूं अधिक उत्पन्न होते हैं, चावलकी फसल अच्छी नहीं होती। उद्योग और कृषिके कार्योंमें विकास होता है। देशमें सुख और शान्ति रहती है। नेताओंमें प्रेमभाव रहता है, पड़ौसी राज्योंसे मित्रता बढ़ती है। शासकों का प्रभाव वृद्धिगत होता है। स्त्रियोंको प्रसूता रोग और बच्चोंको चेचक निकलती है। बुध वर्षाधिपति भी हो तो अपनी दशामें देशकी सभी प्रकारसे उन्नति करता है। देशको धनी और सुखी बनाता है। विदेशोंमें देशका व्यापारिक गठबन्धन होता है। देशकी अनेक वस्तुएँ समुद्रपारके देशोंमें जाती हैं। अनाज और कपड़ेके व्यापारियोंको अच्छा लाभ होता है। धर्म और नीतिका प्रसार होता है।

कर्क और सिंह राशिके बुधकी दशामें व्यापारकी वृद्धि होती है। फसल अच्छी नहीं होती। वर्षा अधिक होती है, जिससे बाढ़ आ जाती है तथा कृषिमें अनेक रोग उत्पन्न होते हैं। देशमें धन-धान्यकी कमी रहती है। विरोधी राजनैतिक पार्टियाँ सबल होकर देशके शासनको उलटनेका प्रयत्न करती हैं। ज्येष्ठ, आषाढ़ और श्रावणमें अनाजका भाव महँगा होता है, फसल कम उत्पन्न होती है, जिससे अनाज अन्य प्रदेशोंसे मंगाना पड़ता है। उद्योग-धंधोंमें साधारण प्रगति होती है। पौष, माघ और फाल्गुनके महीनेमें देशके व्यापारमें विकास होता है। व्यापारिक संस्थाएँ और संघोंका संगठन होता है। जनतामें साधारणतः शान्ति रहती है। चौपायोंके व्यापारमें घाटा होता है। बकरी और गायोंका मूल्य घट जाता है। उत्सव और धार्मिक अनुष्ठान इस दशामें अधिक सम्पन्न होते हैं।

कन्या राशिके बुधकी दशा देशकी समृद्धिको बढ़ाती है। वर्षा समयपर यथेष्ट होती है। समुद्रपारके देशोंसे व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ता है। देशमें सुख और शान्ति पूर्णरूपसे रहती है। देश या नगरके विकासकी

१, सीतलारोगसंभवो बहुआ—इति पाठान्तरं।

योजनाएँ कार्यान्वित की जाती हैं। ऐश-आरामकी वस्तुओंसे प्रेम उत्पन्न होता है तथा देश या नगरके लोग जुआ, सट्टा या अन्य इसी प्रकारके अर्थोंसे धनार्जन करते है। सट्टेके व्यापारियोंको इस प्रकारसे खूब लाभ होता है। यह दशा स्वास्थ्य और धनके लिए सब प्रकारसे अच्छी है। इसमें देशकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती है। वैसाख, ज्येष्ठ, पौष और माघ महीनोंमें देशका सर्वाङ्गीण विकास होता है। राजनीति सफल होती हैं, शासनमें शान्ति रहती हैं। नगर या देशमें अनाज खूब उत्पन्न होता है। शरदी अधिक पड़ती है, माघमें पाला पड़नेसे नगर या देशके दक्षिणी-पश्चिमी भागोंमें फसलकी हानि होती है। इस दशामें चावल, उड़द, अरहर और मूंगकी फसल खूब उत्पन्न होती है। खनिज पदार्थोंकी उत्पत्ति भी यथेष्ट रूपमें होती है।

तुला, वृश्चिक और धनुराशिके बुधकी महादशा देशके अभ्युदयके लिए अच्छी नहीं होती। यद्यपि धनुराशिके बुधकी महादशामें फसल बहुत अच्छी होती है, परन्तु देशमें सुख शान्ति नहीं आने पाती। रोग, विरोध और भय इतने अधिक रूपमें विद्यमान रहते हैं, जिससे निवासियोंको सुख शान्ति नहीं मिल पाती। देशकी आर्थिक स्थिति अच्छी न रहनेके कारण आपसमें मनमुटाव अधिक रहता है। तुला और वृश्चिक राशिके बुधकी दशामें वर्ष भी यथेष्ट नहीं होती। फसलमें रोग हो जानेसे देशकी अवस्था अवनतिकी ओर बढ़ती है। ओला गिरना, तूफ़ान आना, आकस्मिक भयोंका आना आदि बातें इस दशामें घटित होती हैं। दुर्घटनाओंके शिकार भी देशवासियोंको होना पड़ता है। देशका वातावरण इतना दूषित रहता है, जिससे जनताके जान-मालकी रक्षा करना दुष्कर हो जाता है। आषाढ़, श्रावण इन दो महीनोंमें वर्षा कम होती है, भाद्रपद और आश्विनमें वर्षा अच्छी होती है। व्यापारके लिए यह दशा अच्छी नहीं होती।

मकर और कुम्भ राशिके बुधकी महाशा जनताके लिए अत्यन्त अनिष्टकर होती है। देशमें सभी प्रकारकी आधि-व्याधियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। नेताओं और शासकोंका प्रभाव घटता है। किसी भी नेताका ऐसा प्रभाव अवशेष नहीं रह जाता है, जिससे देश में सुव्यवस्था कायम की जा सके। देशभर के श्रेष्ठतम विद्वानों, मनीषियों और विधान विशेषज्ञोंको अनेक प्रकार के कष्ट और अपमान सहन करने पड़ते हैं। सोने, चाँदी और हीराके व्यापारमें व्यवसायियोंको हानि उठानी पड़ती है। माघ, फाल्गुन और चैत्रके महिने व्यापारके लिए अच्छे माने गये हैं। मकर राशिके बुधकी अपेक्षा कुम्भका बुध जीवनमें अधिक सुख उत्पन्न करता है। मवेशी और धान्यके संग्रहमें अच्छा लाभ होता है। शिक्षा और उद्योगोंका इस दशा-में ह्रास होता है, देशकी नौका अच्छे नेताके अभावमें डूबती हुई-सी नजर आती है। बेकारी अधिक बढ़ जाती है। अनैतिकता का पूर्ण विकास होता है, विरोधी कार्यकर्त्ताओंमें मतभेद उत्पन्न हो जाता है; जिससे देशकी प्रगतिमें एक बहुत बड़ी रुकावट उत्पन्न हो जाती है। मशीन और कलकारखानोंकी उन्नति भी इस दशामें होती है।

मीन राशिके बुधकी महादशामें देश उन्नति करता है, परन्तु बुधके समयमें अस्थिरता रहनेसे संघठन और सहयोगकी कमी बनी रहती है। अतिवृष्टि और अनावृष्टि होती है। बाढ़के आ जानेसे मक्का, ज्वार, बाजरा और धानकी फसलको अत्यधिक सामना करना पड़ा है। धार्मिक नेताओंमें बहुत बड़ा संघर्ष होता है। आषाढ़ और फाल्गुनके महीनोंमें व्यापार खूब जमता है। खनिज पदार्थ विदेशोंमें जाते हैं। विदेशोंके साथ इस दशामें अच्छा सम्बन्ध स्थापित होता है। गेहूं, चावल कुछ कम मात्रामें उत्पन्न होते हैं। इस दशा-में देशका वातावरण कुछ उत्तेजित-सा दिखलायी पड़ता है।

बुधकी अन्तरदशामें सुख-शान्ति, यथेष्ट वर्षा, धन्धान्यकी प्रचुर मात्रामें उत्पत्ति, मवेशीको कष्ट,

राजयक्ष्मा, निमोनिया, टाईफाइड जैसी बीमारियोंकी उत्पत्ति एवं अन्न भाव सस्ता होता है। देशके नेताओं का सम्मान बढ़ता है। कृषि और विकासकी योजनाएँ कार्यान्वित की जाती हैं। सैनिक शक्ति विकसित होती है। शुभ ग्रहकी महादशामें बुधकी अन्तरदशा देशके विकास और उन्नतिके लिए बहुत अच्छी होती है। देशमें अमन-चैन रहता है, जिससे उन्नतिके लिए पूरा अवसर प्राप्त होता है। नयी-नयी योजनाएँ तैयार की जाती हैं, परन्तु कार्यमें परिणत उन्हे नहीं किया जा सकता है। एक ऐसा महान व्यक्ति जन्म लेता है, जिससे आगे चलकर देशकी दिशा रेखा बदल जाती है। इस दशामें चावल और मटरकी उत्पत्ति अत्यधिक होती है। बच्चोंको चेचक रोग, नारियोंको हैजा अधिक परिमाणमें उत्पन्न होते हैं। धन, ऐश्वर्य और अभ्युदय के लिए वर्ष अच्छा होता है।

क्रूरकी महादशामें बुधकी अन्तरदशा महामारी भूकम्प, पाला, ओला आदि बाधाओंको उत्पन्न करती है। इस दशाके आनेपर सुख-शान्ति मालूम पड़ती है परन्तु एक दो महीनोंके अनन्तर देशका वातावरण विगड़ जाता है। अनाजका भी अभाव होने लगता है। युद्धकी परिस्थिति आजानेसे जनताको कष्ट का अनुभव होता है। यद्यपि पुनरुद्धारका कार्य आरम्भ किया जाता है, परन्तु इस कार्यमें सफलता मिलना असंभव ही है। मंगल और शनिकी महादशामें बुधकी अन्तरदशा देशके उत्थानके लिए साधारणतः अच्छी होती है।

कन्या राशिका बुध, सिंह राशिका सूर्य जब महादशा और अन्तरदशाके रूपमें आपसमें आते हैं। तो देशको अनेक प्रकारके संकटोंका सामना करना पड़ता है। मेष राशिके सूर्यकी महाशामें मिथुन राशिके बुधकी अन्तर दशा देशके विकासके लिए बहुत ही अच्छी होती है। वृश्चिक राशिके मंगलमें कन्या या मिथुन राशिके बुधकी अन्तरदशा सभी प्रकारका कल्याण करती है। मोती और हीरा के व्यापारमें घाटा होता है। सट्टेके व्यापारियोंको लाभ होता है। घी, दूध और नमकका भाव सस्ता होता है। देशमें सभी प्रकारकी मूल्यवान वस्तुएँ उत्पन्न होती हैं। व्यापारिक सम्बन्ध दूर-दूरके देशोंके साथ होता है। तुला राशिके शनिकी महादशामें बुधकी अन्तरदशा देशके स्वास्थ्यके लिए अनिष्टकारक होती है। देशमें अनेक प्रकारकी बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। श्रेष्ठ पुरुषोंका अपमान होता है, धार्मिक श्रद्धा घट जाती है। और दुराचार, असंयमकी प्रवृत्ति बढ़ती जाती है। वृष राशिके चक्रमें बुधकी महादशा कल्याण और अभ्युदयको प्रदान करती है। पशुओंको सुख प्राप्त होता है। उनके व्यापारमें दुगुना लाभ होता है। मिट्टीके तेल या पेट्रोलके नवीन स्रोतका पता लगता है। भूगर्भसे अनेक महत्वपूर्ण वस्तुएँ निकाली जाती हैं।

बुधकी प्रत्यन्तरदशामें देशमें उपद्रव होते हैं, गुण्डागिरी बढ़ती है, महिलाओं और साधुओंकी इज्जत लूटी जाती है। अन्याय, अत्याचार और स्वार्थका प्रचार बढ़ता जाता है। न्यायालयोंकी अवस्था और अधिक गड़बड़ा जाती है; देशका वातावरण दूषित होता जाता है और जान-मालकी रक्षा करना कठिन हो जाता है। धनका अभाव देश या नगरके एक हिस्सेसे लेकर दूसरे हिस्से तक बराबर बना रहता है। शुभ ग्रहकी महादशा और शुभग्रहकी अन्तरदशाके साथ बुधकी प्रत्यन्तरदशा देशकी उन्नतिके लिए अच्छी होती हैं। देशके नेताओं-का सम्मान बढ़ता है, संगठन उत्पन्न होता है तथा देशकी भूमि अधिक उपजाऊ हो जाती है। क्रूर ग्रहकी महादशा और शुभ ग्रहकी अन्तरदशामें बुधकी प्रत्यन्तरदशा साधारणतः देशके लिए अच्छी होती है। धान्योत्पत्ति-का अभाव या अल्पधान्योत्पत्ति होती है।

शुभग्रहकी महादशामें क्रूर ग्रहकी अन्तरदशाके साथ बुधकी प्रत्यन्तरदशा देशके विकासके लिए साधा-

रणतः अच्छी होती है। वर्षा समयानुसार यथेष्ट होती है; परन्तु आश्विन और कार्तिकमें वर्षाके कम हो जानेके कारण फसल खराब भी हो जाती है। क्रूर ग्रहकी महादशा और क्रूर ग्रहकी अन्तरदशामें बुधकी प्रत्यन्तरदशा देशके लिए अत्यन्त अशुभ होती है। इस दशामें शिक्षाका अभाव हो जाता है, अनेक रोगोंका शिकार भी होना पड़ता है। सूर्य, मंगलमें बुधका प्रत्यन्तर देशके लिए अच्छा होता है, परन्तु चाँदीके व्यापारमें हानि होती है। सट्टे खेलनेवालोंको भी लाभ होता है। रेश आदिमें धनका अपव्यय भी किया जाता है।

गुरु और शुक्रकी महादशा और अन्तरदशामें बुधकी प्रत्यन्तरदशा बहुत अच्छी रहती है। देशमें धन-धान्य और ऐश्वर्यकी वस्तुओंका विकास होता है। राजनीति और धर्मनीतिका भी पूर्ण विकास होता है। मन्दिर, देवालय और कार्यस्थानोंका निर्माण पूर्णरूपसे होता है। शुक्रकी महादशामें चन्द्रमाकी अन्तरदशाके साथ बुधकी प्रत्यन्तरदशा धन-जनके विकासके लिए बहुत अच्छी है; परन्तु इस दशामें स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता है। केतुकी महादशा और शनिकी अन्तरदशामें बुधका प्रत्यन्तर होनेपर साधारण फसल, देशके अन्य प्रदेशोंमें महत्वपूर्ण स्थान और राजनीतिकी प्रगति होती है। औद्योगिक विकासके लिए यह दशा बहुत ही उत्तम होती गयी है। गुड़, ईख और चीनीकी उत्पत्ति अधिक रूपसे होती है। रेशम उत्पन्न करनेकी योजनामें अधिक सफलता प्राप्त होती है। महत्वपूर्ण नयी-नयी योजनाएँ बड़े भारी वाद-विवादके बाद स्वीकार की जाती हैं। कुँओं, नहरों एवं अन्य सिंचाईके साधनोंकी व्यवस्था की जाती है। फसल अच्छी होती है, देशमें सुख और समृद्धिका विकास होता है।

बुधकी सूक्ष्म दशा देशकी उन्नतिमें सहायक होती है। पूर्व और उत्तर भागमें दुष्काल पड़ता है। गाँव और नगरके फलादेशमें दुष्काल, महामारी और उपद्रव समझना चाहिए। शुभ ग्रहकी महादशा, क्रूर ग्रहकी अन्तरदशा और शुभ ग्रहकी प्रत्यन्तरदशामें बुधकी सूक्ष्म दशाके अभ्युदयमें साधक होती है। समय पर वर्षा होती है, धन-धान्य प्रचुर परिमाणमें उत्पन्न होते हैं। सदाचार और संयमकी ओर देश या नगर-वासियोंका झुकाव होता है। देशके निवासियोंको सुख-शान्ति प्राप्त होती है। आपसमें प्रेमभाव उत्पन्न होता है। चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ महीने इस दशामें कुछ अशुभ रहते हैं; इन महीनोंमें कलह, आशान्ति एवं धन-धान्यका अभाव रहता है। व्यापारियोंके लिए ये महीने उत्तम होते हैं, श्वेत और लालवर्णकी वस्तुओंके व्यापारमें दुगुना लाभ होता है। सट्टेके व्यापारियोंको स्वल्प लाभ होता है। पौष, माघ और फाल्गुनमें सट्टेके व्यापारी लाभ उठाते हैं; किन्तु साधारणतः व्यापारी वर्गको अच्छा लाभ नहीं होता है। सोनेका बाजार अस्थिर रहता, है, चाँदीमें भी घटा-बढ़ी चलती है। पाट और जूटके व्यापारियोंको अगहन महीनेकी खरीदसे लाभ होता है। माघ और फाल्गुनकी खरीदमें स्वल्प लाभ तथा वैशाखकी खरीदमें हानि उठानी पड़ती है। वस्त्रव्यव-सायियोंको साधारण लाभ होता है, कपास, रूई और सूतका बाजार घटता है। पश्चिमी और दक्षिणी भागमें वर्षा अधिक होती है तथा फसल भी अच्छी होती है। कपासकी खेती इस दशामें बहुत ही अच्छी होती है। मसाले और रंगोंकी उत्पत्तिके लिए यह दशा अच्छी नहीं है।

बुधकी प्राणदशा देशके लिए अच्छी नहीं होती है। इसमें रोग, शोक और नाना प्रकारकी विपत्तियाँ आती हैं। यद्यपि कृषि और व्यापारके लिए यह दशा अच्छी है, परन्तु इस दशामें निवासियोंको अनेक संकटोंका सामना करना पड़ता है। मवेशियोंके लिये यह दशा महान् कष्ट देती है। व्यापारिकदृष्टिसे यह दशा अधिक उथल-पुथल करती है, बाजारके भाव स्थिर नहीं रहते। बड़े-बड़े व्यापारियोंको अनेक संकटोंका सामना करना पड़ता है। भूकम्प, विद्युत्पात, अग्निभय और टिड्डी आगमन आदिके कारण देशको क्षति उठानी पड़ती है। देशका वातावरण इतना दूषित हो जाता है, जिससे अनैक्य और विरोधके कारण दिन-रात संघर्ष होते रहते

हैं। शासकवर्ग अनीतिमार्गका अनुकरण करता है। शुभ ग्रहोंकी महादशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशा और सूक्ष्मदशाके रहनेपर बुधकी प्राणदशा देशके अभ्युत्थानमें सहायक होती हैं तथा क्रूरग्रहोंकी महादशा, प्रत्यन्तरदशा और सूक्ष्मदशाके रहनेपर बुधकी प्राणदशामें युद्ध, संघर्ष, चोरी, कलह आदि अनिष्ट फल होते हैं। यों तो बुधकी सभी प्रकारकी दशाओंमें देशमें धन-धान्यकी उत्पत्ति होती है, व्यापार और कृषिकी स्थिति सुधरती है तथा सामूहिक रूपसे देशकी उन्नतिमें निवासी भाग लेते हैं। क्रूर ग्रहोंकी महादशा या अन्तरदशाके संयोगमें रोग तथा आकस्मिक संकट उत्पन्न होते हैं।

केतुदशाफल

रायाण ठाणभंसो पयासुहं तह य बहुघणा वुट्ठी।
संवच्छरपत्थाओ वासुइपुत्ते हवइ देसो ॥ १७ ॥

केतुकी दशामें राजा लोग स्थान भ्रष्ट होते हैं, प्रजा सुखी होती है। संवत्सर पर्यन्त देश वर्षासे युक्त और धन-धान्य पूर्ण रहता है अर्थात् देशमें समृद्धि रहती है।

विवेचन—केतुकी महादशामें देशमें वर्षा अच्छी होती है। धन-धान्यकी समृद्धि होती है। निवासियोंको सब प्रकारसे सुख-शान्ति प्राप्त होती है। शासक और नेताओंके लिए यह दशा उत्तम नहीं है। इसमें इन्हें नाना प्रकारके कष्टोंका सामना करना पड़ता है। नवीन निर्वाचनमें पुरानी पार्टियोंको पराजित होना पड़ता है तथा देशका शासन क्रान्तिकारी विचारोंके समर्थकोंके हाथमें आता है। पुरानी रीतियों और विचार परम्पराएँ समाप्त हो जाती हैं और इनके स्थानपर नवीन विचार आते हैं, जिससे देश या नगरका कल्याण होता है। विवेकी और सदाचारी शासकके आनेसे प्रजामें सन्तोष और शान्ति उत्पन्न होती है तथा देशका आर्थिक दृष्टिसे विकास और विस्तार होता है।

व्यापारकी दृष्टिसे यह दशा अच्छी होती है। व्यापारियोंको इस दशामें अच्छा लाभ होता है। फल, मेवे और अनाजके व्यापारियोंको इस दशामें अगहन और पौष मासमें हानि होती है। सोने, चाँदी, पीतल और काँसेके व्यापारियोंको आषाढ़, श्रावण और भाद्रपद मास अच्छे नहीं होते। इन महीनोंमें इन व्यापारियोंको घाटा होनेकी संभावना है। गुड़ और चीनीके व्यापारियोंको इस वर्षमें अच्छा लाभ होता है। चीनीका भाव तेज होता है तथा ईखकी उत्पत्ति भी इस वर्ष कम होती है। वस्त्रव्यवसायियोंको इस व्यापारमें साधारणतः लाभ होता है। रुई, कपास और सूतके व्यापारमें भी लाभ होता है। कपासका व्यापार खूब चलता है, रुईके कारोबारमें लाभ अधिक नहीं होता। विदेशोंमें भी व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित होता है, अतः व्यापारियोंके लिए यह दशा अच्छी होती है।

मेषके केतुकी महादशामें उत्पात, उपद्रव, झगड़े, कलह, शासकों और नेताओंमें मतभेद, उत्तम वर्षा, धान्योत्पत्ति, फसल साधारण, धान्यभावमें तेजी, व्यापारमें विकास, सोनेके भावमें तेजी और कृषि-उद्योगोंमें सफलता प्राप्त होती है। यह दशा व्यवसायियोंके लिए कुछ ही उत्तम होती है। कृषकोंमें भी सूर्य छाया रहता है। गेहूँ, चना, चावल, जौ, बाजरा इतने अधिक परिमाणमें उत्पन्न होते हैं, जिससे देशकी अन्न समस्याका समाधान सहजमें हो जाता है। वृषके केतुकी महादशामें वर्षा साधारण होती है, परन्तु फसल अच्छी हो जाती है। आषाढ़ और श्रावण इन दोनों महीनोंमें पश्चिमी और दक्षिणी भागमें वर्षा अल्प होती है तथा शेष महीनोंमें इन भागोंमें वर्षा अधिक होती है। सट्टेके व्यापारियोंके लिए भाद्रपद, कार्तिक, मार्गशीर्ष और माघके महीने अच्छे होते हैं। इन महीनोंमें व्यापार करनेसे अच्छा लाभ होता है। वैशाख, ज्येष्ठ और

फाल्गुन मास व्यापारियोंके लिए अच्छे नहीं हैं। इन महीनोंमें व्यापार करनेवालोंको अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं। रुपयेकी कमी हो जानेसे सूदका बाजार बढ़ जाता है; अतः उक्त महीनोंमें व्यापारियोंको अल्प लाभ या लाभका अभाव होता है। यह दशा नेताओं और शासकोंके प्रभावको बढ़ाने वाली है, अतः राजनैतिक दृष्टिसे देश या नगरका पूर्ण सुधार होता है। धार्मिक नेताओंके लिए भी दशा अच्छी है, ये नेता लोग धर्मप्रचारके कार्योंको बड़े ही सुव्यवस्थित ढंगसे सम्पन्न करते हैं।

मिथुन राशिके केतुकी महादशा देशके उत्थानके लिए अत्युत्तम है। इसमें देशका विस्तार और विकास होता है। देशकी सीमा बढ़ती है तथा देशके नेता या शासक अपने देशको आगे बढ़ानेका प्रयत्न करते हैं तथा इन्हें इस प्रयत्नमें पूर्ण सफलता भी प्राप्त होती है। इस दशामें चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ मास देशके लिए उत्तम नहीं होते। इन महीनोंमें नाना प्रकारके रोग फैलते हैं तथा देशमें आन्तरिक विरोध बढ़ता है, सोना, चाँदी और जवाहिरातके व्यापारमें साधारण लाभ होता है। सट्टेके व्यापारियोंके लिए वैशाख, अगहन, पौष, माघ और फाल्गुन अच्छे हैं। वैशाख और माघमें अच्छा लाभ होता है। व्यापारी लोग इन दोनों महीनोंमें पर्याप्त द्रव्य कमाते हैं। यद्यपि मिथुन राशिका केतु आन्तरिक विरोधका साधन बनता है, तो भी इस दशामें देशकी उन्नति होती है। कला-कौशलकी वृद्धि होती है। अन्य देशोंमें प्रतिष्ठा बढ़ती है; नगर या देशके निवासियोंका नाम सर्वत्र व्याप्त हो जाता है। कलाकारोंकी प्रतिष्ठा होती है। समर या या युद्धकी तैयारी भी हो सकती है। नेताओंका प्रभाव क्षीण होने लगता है तथा देशके नेतृत्व ऐसे लोगोंके हाथमें जाता है, जो अविवेकी और विचारहीन होते हैं। पशुबल या शारीरिक बलके द्वारा ही ये देशके शासन सूत्रको अपने हाथोंमें लेना चाहते हैं, पर इसमें इन्हें सफलता नहीं मिलती।

कर्क राशिके केतुकी महादशामें अतिवृष्टि या अनावृष्टि होती है। नदीकिनारेके प्रदेशोंमें बाढ़ भी आ जाती है तथा देशको अतिवृष्टिके कारण अनेक कष्टोंका सामना करना पड़ता है। भाद्रपद और आश्विनमें जल न बरसनेसे फसलको अपार क्षति उठानी पड़ती है। धान और मक्काकी खेती सूख जाती है तथा गेहूँ और चनेकी फसल भी अच्छी नहीं होती है। तिलहन, जौ, बाजरा और ज्वार आदि अन्न साधारणतः अच्छे उत्पन्न होते हैं। घी और दूधकी कमी रहती है, चौपायों और मनुष्योंको शरदीके कारण कष्ट उठाना पड़ता है। घीके व्यापारमें अच्छा लाभ होता है। इस दशामें मसालोंका भाव भी तेज हो जाता है। कागज, लोहा और लकड़ीके भाव अधिक तेज होते हैं। देशका कारोबार बढ़ता है, सिंचाईका प्रबन्ध किया जाता है। देशमें जलकी कमी हो जानेसे जंगली जानवरोंको विशेष कष्ट उठाना पड़ता है। शासक इस दशामें स्वेच्छाचारी हो जाते हैं, देशका स्वास्थ्य बिगड़ जाता है और अनेक प्रकारकी बीमारियोंका सामना करना पड़ता है। शिशु और माताओंके लिए भी यह दशा अच्छी नहीं है।

सिंहराशिके केतुकी महादशामें पशुओंका विकास होता है। धान, कपास और ईखकी खेती अधिक होती है। मिल और कारखानोंकी वृद्धि होती है, नये-नये कारखाने खुलते हैं, जिससे देशकी आर्थिक स्थिति सुधरती है। औद्योगिक केन्द्रोंका विकास होता है तथा देशकी समस्त वस्तुओंपर नये-नये कर लगाये जाते हैं। इन नवीन करोंके कारण जनताको महान् कष्टका सामना करना पड़ता है। आर्थिक दृष्टिसे यह दशा अच्छी नहीं होती; इसमें आर्थिक संकट सबके सामने रहता है। व्यापारी वर्गके व्यापारमें बड़ी उथल-पुथल रहती है; जिससे अनेकों व्यापारियोंकी सम्पत्ति नष्ट हो जाती है। सट्टेके व्यापारियोंको खूब सँभलकर चलना चाहिये।

कन्या राशिके केतुकी महादशा देशकी उन्नतिमें अत्यन्त साधक है। इस दशामें नवीन खानोंका पता लगता है तथा आर्थिक दृष्टिसे देशका विस्तार होता है। वर्षा समयपर यथेष्ट होती है, जिससे सभी प्रकारके

अनाज प्रचुर परिमाणमें उत्पन्न होते हैं। देशमें सुख-समृद्धि बढ़ती है तथा लोगोंमें परस्पर सहयोग और सहकारिताकी भावना आती है। देशकी शिक्षापद्धतिमें संशोधन और परिवर्तन होता है। कलाकारोंको सम्मान मिलता है तथा राजनैतिक नेता अपना प्रभुत्व बढ़ाते हैं। आषाढ़, श्रावण और भाद्रपद वर्षके लिए उत्तम माने गये हैं। इन महीनोंमें देशकी आर्थिक स्थिति भी दृढ़ होती है; विदेशोंसे सन्धियाँ होती हैं तथा कृषकवर्ग कृषि विकासके लिए नवीन योजनाएँ प्रस्तुत करता है, जिन्हें सरकारके सहयोगसे कार्यान्वित किया जाता है। माघका महीना व्यापारियोंके लिए बहुत ही अच्छा होता है, सभी प्रकारके व्यापारी इस महीनेमें कुछ अर्जन कर लेते हैं।

तुला और वृश्चिक राशिके केतुकी महादशा देशकी उन्नतिमें बाधक होती है। इस दशामें वर्षा भी कम होती है और फसल भी अच्छी उत्पन्न नहीं होती। देशका वातावरण इतना क्षुब्ध रहता है, जिससे किसीको भी शान्ति नहीं मिलती। सभी वर्ण और वर्गोंके लोग कष्ट प्राप्त करते हैं। ज्येष्ठ, आषाढ़ और आश्विनमें नाना प्रकारकी बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं तथा देशके पशुओंको अनेक प्रकारका कष्ट उठाना पड़ता है। तुलाराशिके केतुकी महादशा वृश्चिक राशिके केतुकी अपेक्षा कुछ अच्छी होती है। वृश्चिक राशिके केतुकी महादशामें देशमें नाना प्रकारके उपद्रव होते हैं। देशका व्यापार ढीला पड़ जाता है। चोर, लुटेरे और गुण्डोंकी बढ़ती होती है।

धनुराशिके केतुकी महादशामें देशकी साधारणतः उन्नति होती है। वर्षा समयपर होती है; किन्तु आश्विन मासमें वर्षा न होनेके कारण फसल अच्छी नहीं होती है। मकर और कुम्भराशिके केतुकी महादशामें देशकी उन्नति होती है, सुख-समृद्धि बढ़ती है तथा व्यापारमें भी प्रगति होती है। सट्टेके व्यापारियोंके लिए मकर और कुम्भके केतुकी महादशा अच्छी रहती है; जूट और सोनेके सट्टेमें अच्छा लाभ होता है। यों तो सभी प्रकारके सट्टेके व्यापारमें लाभ होता है; परन्तु विशेषरूपसे सोनेके सट्टेके व्यापारमें ज्यादा लाभ होता है। देशका वातावरण सट्टेके अनुकूल हो जाता है। खनिज पदार्थोंमें भी व्यापारियोंको पर्याप्त लाभ होता है, व्यापारकी स्थिति सुदृढ़ होती जाती है। मीनराशिके केतुकी दशामें देशमें अल्पवर्षा, सुभिक्ष, धान्यभाव सस्ता और विदेशोंसे अनेक वस्तुओंका आयात किया जाता है।

केतुकी अन्तरदशामें देशकी समृद्धि बढ़ती है। नेताओंमें संघर्ष होता है, नवीन निर्वाचन द्वारा नये शासकवर्ग चुने जाते हैं। विरोधी पार्टियोंमें पूरा संघर्ष होता है, जिससे देशका वातावरण दूषित होता जाता है। शासकोंमें निश्चयतः परिवर्तन होता है। ऊन, रूई और चमड़ेके व्यापारमें पूरा लाभ होता है। पशुओंको अनेक प्रकारकी बीमारियोंका सामना करना पड़ता है, अनेक पशु मृत्युको भी प्राप्त होते हैं। सोना, चाँदी और ताँबेके व्यापारमें कुछ घाटा होता है, जूट और रेशमके व्यापारमें भी हानि ही उठानी पड़ती है। आषाढ़, श्रावण और भाद्रपद महीनेमें व्यापार बहुत ही ढीला हो जाता है, जिससे सभी प्रकारके व्यापारियोंको हानि उठानी पड़ती है।

शुभग्रहकी महादशामें केतुकी अन्तरदशा देशके धन-धान्यको बढ़ाती है। समयपर वर्षा होती है, शासनमें सुधार होता है। नेताओंमें विरोध बढ़ता है। व्यापारियोंके लिये यह दशा अच्छी होती है। राजनैतिक नेताओं और धारासभाके सदस्योंके लिये यह दशा अच्छी नहीं होती। देशके धनिक नेताओंको भी कष्ट उठाना पड़ता है। वस्तुओंके भाव महँगे रहनेसे साधारण जनताको भी कष्ट होता है तथा सभी लोग कुछ आतंकित और त्रस्त-से रहते है। यद्यपि इस दशामें तृण अच्छा उत्पन्न होता है, अनाज भी पर्याप्तमात्रामें उत्पन्न होता है फिर भी देशमें अशान्ति रहती है। वस्त्रोंका अभाव भी कष्ट बढ़ानेमें सहायक होता है।

क्रूरग्रहकी महादशामें केतुकी अन्तरदशा कष्टकारक होती है, इसमें विरोधियों द्वारा नेताओंकी मृत्यु होती है। आन्तरिक संघर्ष बढ़ता है तथा देशका वातावरण अत्यन्त क्षुब्ध रहता है। विदेशोंसे भी संघर्ष मोल लेना पड़ता है। अनेक विदेशीय शासक अकारण शत्रु बन जाते हैं। यद्यपि व्यापारियोंके लिए यह दशा उत्तम है, व्यापारी इसमें हर प्रकारसे लाभ उठाते हैं तथा सट्टेमें लाखों रुपये कमाते हैं। देशकी आन्तरिक अशान्ति उन्नतिमें बाधक रहती है, जिससे पूर्व निर्मित सभी योजनाएँ असफल हो जाती हैं। शुभग्रहोंसे युक्त केतुकी महादशा उद्योगोंकी उन्नतिके लिए अच्छी होती है। परिश्रम करनेवाले मजदूर इस दशामें विशेष सुखी रहते हैं, उन्हें धन, यश और पुरस्कार प्राप्त होते हैं। सेनाके लिए यह दशा अच्छी नहीं होती, इसमें यातायातके साधनोंमें ढिलाई आती है। जल, थल और आकाशमें गमन करनेवाली सवारियोंका निर्माण अधिक होता है। देशके राजदूत विदेशोंमें अच्छी कीर्त्ति अर्जित करते हैं तथा देशके कार्योंको आगे बढ़ाते हैं।

केतुकी अन्तरदशा देशकी नैतिक उन्नतिके लिए अच्छी नहीं होती। इसमें देशका नैतिक पतन होता है। पारिवारिक और सामाजिक आदर्श गिर जाता है, अनैतिकता जीवनमें अधिक आ जाती है। स्वार्थ उत्पन्न हो जानेसे देशके कर्णधारोंमें खुलकर संघर्ष उत्पन्न होता है तथा देशके विकासकी योजनाएँ असफल हो जाती हैं। क्रूरग्रहसे युक्त और द्रष्ट होनेपर केतुकी अन्तरदशामें भयंकर युद्ध होता है। देशके कर्णधार यद्यपि इस युद्धको टालनेका यत्न करते हैं, परन्तु युद्ध अवश्य ही होता है। देशका भाग्य अनिश्चितप्राय रहता है, अतः इस दशामें अधिक संभलनेकी आवश्यकता है।

केतुकी प्रत्यन्तरदशा देशकी आर्थिक स्थितिको खराब करती है। वस्तुओंके तेज होनेसे देशवासियों-को अनेक प्रकारका कष्ट उठाना पड़ता है। इसमें विलास और मनोरंजनकी वस्तुएँ अधिक उत्पन्न होती हैं। भोजन और वस्त्रका कष्ट साधारणतः जनताको रहता है। यद्यपि इस दशामें वर्षा होती है, फसल भी उत्पन्न होती है; परन्तु फिर भी देशकी आर्थिक स्थिति बिगड़ती जाती है, जिससे निवासियोंको अनेक प्रकारके कष्ट सहन करने पड़ते हैं। शुभग्रहकी महादशा, क्रूरग्रहकी अन्तरदशामें यह प्रत्यन्तरदशा रोग और महामारीको उत्पन्न करती है। देशमें कलह, वैर-विरोध और झगड़ोंको उत्पन्न करती है। शुभग्रहकी महादशा और शुभ ग्रहोंकी ही अन्तरदशामें यह प्रत्यन्तरदशा देशकी समृद्धिको बढ़ाती है। फसल अच्छी उत्पन्न होती है। निवासियोंको शान्ति मिलती है। आषाढ़ और आश्विनमें हैजा और टाईफाइड उत्पन्न होते हैं, जिससे जनताको अधिक कष्ट उठाना पड़ता है। कार्त्तिक और अगहनमें कफका प्रकोप अधिक होता है, जिससे सामूहिकरूपमें निमोनिया देशके अधिकांश भागमें उत्पन्न होता है।

केतुकी सूक्ष्मदशा देशकी उन्नतिमें साधक होती है। देशकी सैनिक-शक्ति विशेषरूपसे बढ़ती है। अस्त्र-शस्त्रोंका निर्माण विशेषरूपसे होता है। सैनिक-शिक्षाका प्रचार भी देशमें सर्वत्र होता है। हिंसा और अधर्मकी ओर जनताका ध्यान अधिक जाता है, जिससे नैतिक पतन होनेसे देशको अनेक कष्टोंका सामना करना पड़ता है। व्यापारियोंके लिये भी यह दशा अच्छी नहीं है। व्यापारी वर्गको इस दशामें अत्यल्प लाभ होता है। वस्तुओंके भावोंमें अस्थिरता रहनेके कारण अनेक व्यापारियोंको अपार क्षति होती है। देशमें धनिक व्यक्तियोंको अधिक कष्टका सामना करना पड़ता है। धर्मात्माओंके ऊपर अनेक प्रकारकी विपत्ति आती है तथा धर्म-कर्म भ्रष्ट होता है। जनताकी श्रद्धा भी धर्मसे उठती है; दान-पूजाकी ओर बहुत ही कम लोग आकर्षित होते हैं।

शुभग्रहकी महादशा, शुभग्रहकी अन्तरदशा और शुभग्रहकी प्रत्यन्तरदशामें केतुकी सूक्ष्मदशा देशकी आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक उन्नतिमें परम साधक होती है। इस दशामें देशका व्यापारिक विकास

भी होता है तथा देशकी उत्पन्न हुई वस्तुएँ विदेशोंमें भी भेजी जाती हैं। अन्न, घी, दूध, तेल, वस्त्र आदि वस्तुओंकी उत्पत्ति अच्छी होती है। हाँ, आन्तरिक कलह इस दशामें भी बना रहता है तथा देश-निवासियोंको पारस्परिक वैमनस्यके कारण अनेक कठिनाइयोंका सामना भी करना पड़ता है। क्रूरग्रहकी महादशा, शुभ-ग्रहकी अन्तरदशा और क्रूरग्रहकी प्रत्यन्तरदशामें केतुकी सूक्ष्मदशा देशकी समृद्धिके लिये अत्यन्त बाधक होती है। इसमें वर्षा भी अल्प होती है, फसल भी अच्छी नहीं होती तथा व्यापार भी ठीक तरहसे नहीं चलता है। नेताओंमें संघर्ष रहनेसे देशको सब प्रकारसे हानि उठानी पड़ती है। इस दशाके अगहन मासमें किसी नेता या शासककी मृत्यु होती है। यह दशा देशमें उत्पात और उपद्रवकी सूचक है।

केतुकी प्राणदशामें देश रसातलको जाता है। कर्णधार अपने ही स्वार्थको देखते हैं, अतः देशकी उन्नति नहीं होती। यद्यपि वर्षाकी कमी नहीं रहती, फिर भी देशका आर्थिक-विकास नहीं हो पाता। नवीन योजनाओंका सफल होनेके पहले ही गला घोट दिया जाता है, जिससे देशका समुचित विकास नहीं होता। धार्मिक नेताओंमें भी अपार शैथिल्य आ जाता है, जिससे वे अकर्मण्य बनकर चुप-चाप जीवनके दिन पूरे करते रहते हैं। देशकी जनताकी उन्नति इस दशामें नहीं हो पाती। कृषिके विकासकी योजनाएँ भी कार्यान्वित नहीं की जाती हैं। व्यापारके लिए यह दशा अच्छी है, यद्यपि विदेशोंसे व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित नहीं किया जाता है, फिर भी देशमें व्यापारका पूरा विस्तार होता है। अनेक प्रमुख व्यापारिक केन्द्रोंपर सरकारकी ओरसे डिपो खोले जाते हैं, जिससे व्यापारी वर्गको प्रोत्साहन मिलता है।

शुभग्रहकी महादशा, शुभग्रहकी अन्तरदशा, शुभग्रहकी प्रत्यन्तरदशा और शुभग्रहकी सूक्ष्मदशामें केतु-की प्राणदशा देशकी उन्नतिमें साधक बनती है। इस दशामें देशमें पर्याप्त वर्षा होती है, फसल भी खूब उत्पन्न होती है तथा कल-कारखानोंकी स्थापनाकी जाती है। बेकारोंको रोजीसे लगाया जाता है और सभी व्यक्तियों-को कार्य मिल जाता है। इस दशामें अनाजका भाव सस्ता रहता है, घी, दूध, नमक, तेल आदि वस्तुओंका भाव भी सस्ता ही रहता है। सट्टेके व्यापारियोंको इस दशामें अधिक लाभ नहीं होता, बल्कि उल्टी हानि ही उठानी पड़ती है। साधारण व्यापारियोंको पर्याप्त लाभ होता है। सोना, चाँदी, जवाहिरातका भी भाव सस्ता ही रहता है तथा देश-निवासियोंको सब प्रकारसे सुख मिलता है। आपसमें प्रेमभाव भी बढ़ता है, अतः सभीका सहयोग देशके विकासके लिए प्राप्त होता है, सभी मिलकर देशकी उन्नतिमें लगते हैं। माघ और फाल्गुनके महीने इस दशामें देशकी उन्नतिके लिए बहुत ही अच्छे हैं। इस दशामें देशकी पूरी उन्नति होती है तथा विदेशोंमें देशका सम्मान बढ़ता है। जो व्यक्ति इस दशामें किसी भी प्रकारका व्यापार करते हैं, वे अवश्य ही लाभ उठाते हैं।

क्रूरग्रहोंकी महादशा, क्रूरग्रहकी अन्तरदशा, क्रूरग्रहकी प्रत्यन्तरदशा और क्रूरग्रहकी सूक्ष्मदशामें केतुकी प्राणदशा देशकी उन्नतिमें बाधक होती है। इसमें निश्चयतः महामारी पड़ती है, जिससे लाखोंकी संख्यामें युवकोंकी मृत्यु होती है। आषाढ़ और श्रावणमें वर्षा अधिक होती है, जिससे फसलको हानि पहुँचती है। भाद्रपद और आश्विन महीनेमें वर्षा कम होती है, इसमें भी फसलको क्षति पहुँचती है। देशका वाता-वरण क्षुब्ध रहता है। अतः शासनसूत्रके परिवर्तनकी बहुत बड़ी संभावना है। नवीन आर्थिक योजनाओं को इस दशामें सफल नहीं किया जा सकता है। शुभग्रहकी अन्तरदशाके साथ केतुकी प्राणदशा देशके विकास-में सहायक होती है, धन-धान्यकी समृद्धि करती है तथा व्यापार और नवीन उत्पादनके लिए बड़ी सहायक होती है। शुभग्रहकी प्रत्यन्तरदशाके साथ ही केतुकी प्राणदशा भी विकासमें अत्यन्त सहायक होती है।

शुक्रदशाफल

सुक्के मिच्छाण जयो बहुसस्सा मेहसंकुलो य नभो ।
उत्तमजाईपीडा धण-धण्णसमाउला पुहवी ॥ १८ ॥

शुक्रकी दशामें म्लेच्छों—हीनाचरणी राजाओंकी जय और धान्यकी अधिक उत्पत्ति होती है। आकाश मेघसे आच्छन्न रहता है, उत्तम जातिवाले लोगोंको पीड़ा होती है और पृथ्वी धन-धान्यसे समाकुल रहती है।

विवेचन—शुक्रमहादशामें शासकोंकी कीर्ति दिगदिगन्तमें व्याप्त हो जाती है, धन-धान्यकी उत्पत्ति प्रचुर परिमाणमें होती है। वर्षा समयपर यथेष्ट होती है तथा देशका समुचित विकास होता है। धार्मिक व्यक्तियोंको कष्ट उठाना पड़ता है। फसल बहुत अच्छी उत्पन्न होती है, जिससे प्रजाको सब प्रकारसे सुख होता है। इस महादशामें आर्थिकदृष्टिसे देशका पूर्ण विकास होता है तथा भौतिकदृष्टिसे देशकी शक्तिका पूर्ण विकास होता है। विदेशोंमें देशका स्थान महत्त्वपूर्ण होता है और सर्वत्र प्रशंसा की जाती है। परराष्ट्र-नीतिमें देशको अत्याधिक सफलता प्राप्त होती है। सभी कामोंमें देशकी उन्नति होती है।

मेषराशिके शुक्रकी महादशामें देशका व्यापारिक विकास होता है, शासकोंको शासनमें पूर्ण सफलता मिलती है। यद्यपि देशके विकासमें अनेक प्रकारकी बाधाएँ आती हैं, परन्तु वे बाधाएँ निकल जाती हैं और कार्य सफल हो जाता है। नेताओंके साथ सामान्य जनताका भी सहयोग रहता है, जिससे कार्य होनेमें बाधा नहीं आने पाती। खनिज पदार्थोंकी उत्पत्ति इस दशामें अधिक होती है। कोयला, मिट्टीका तेल और पेट्रोल अन्य वर्षोंकी अपेक्षा अधिक उत्पन्न होते हैं। सोना और चाँदी भी अधिक परिमाणमें निकलते हैं। संगमरमर तथा अन्य प्रकारके श्रेष्ठ पत्थर भी खानोंसे अधिक निकलते हैं। अभ्रकके व्यापारमें अच्छी मुनाफा होती है। वृषराशिके शुक्रकी दशा देशकी उन्नतिके लिये अत्यन्त उत्तम है, इस दशामें देशमें सभी प्रकारकी उन्नतियाँ होती है। उत्सव, मंगल एवं नृत्य-गान वर्षभर होते रहते हैं। वैज्ञानिक अनुसन्धान, नवीन कल-कारखानोंकी स्थापना, देशकी भौगोलिक सीमाओंमें संशोधन और परिवर्द्धन एवं अन्य देशोंमें देशका महत्त्व प्रकट होता है। वैशाख, ज्येष्ठ और आषाढ़ मासमें देशकी उन्नति अत्यधिक होती है। इन महीनोंमें व्यापारिक सम्बन्ध समुद्रपारके देशोंसे स्थापित होता है तथा विदेशोंमें अनेक वस्तुओंका आयात और देशकी निर्मित वस्तुओंका निर्माण किया जाता है। इस दशामें देशमें धन-धान्यकी पर्याप्त वृद्धि होती है। अन्याय और अनीतिसे भी धनार्जन किया जाता है, जिससे धर्मात्माओंको अनेक प्रकारसे कष्ट भोगना पड़ता है। हिंसाके साधनोंका विकास उत्तरोत्तर होता जाता है, जिससे धार्मिक और सांस्कृतिक क्षति निरन्तर होती रहती है।

मिथुन और कर्कराशिके शुक्रकी महादशामें खण्ड वृष्टि, संग्राम, पशुओंकी तेजी, नमक, कपूर श्वेत-वस्त्र और घी महगें होते हैं। वायुरोगकी पीड़ा अधिक भोगनी पड़ती है। प्रजा भयसे त्रस्त हो जाती है, इससे लोगोको देशान्तरमें जाना पड़ता है तथा नेताओंमें पारस्परिक विरोध भी बढ़ता है। यद्यपि देशका राजनैतिक वातावरण क्षुब्ध रहता है, पर आर्थिक अवस्था अच्छी रहनेके कारण गृहयुद्ध नहीं होने पाता। इस दशामें व्यापारियोंको भी विशेष लाभ नहीं होता है। सोना, चाँदी और जवाहिरातके व्यापारमें अवश्य कुछ लाभ होता है।

कन्या और तुलाराशिके शुक्रकी महादशामें देशका पूर्ण विकास होता है। धन-धान्यकी वृद्धि होती है। देशकी नवीन योजनाएँ सफल होती हैं तथा उन्नतिके लिए नवीन योजनाओंका निर्माण किया जाता है।

समस्त पृथ्वी गेंहु, जौ, चावल, फल आदिसे युक्त हो जाती है। इस दशामें व्यापारियोंको प्रचुर लाभ होता है तथा देशसे सर्वत्र सुख-शान्ति दिखलायी पड़ती है। वृश्चिक और धनराशिके शुक्रकी महादशामें देशका पूर्ण विकास होता है, धन-धान्यकी उत्पत्ति होती है। वर्षा यथेष्ट परिमाणमें होती है। मकर, कुम्भ और मीनराशिके शुक्रकी महादशामें देशमें खण्ड वृष्टि, सामान्यतः धन-धान्यकी उत्पत्ति, आर्थिक संकट, सैनिक शक्तिका विकास और देशमें सुख-समृद्धिकी उत्पत्ति होती है। देशका वातावरण इस प्रकारका रहता है जिससे आर्थिक विकाममें सहायता मिलती है। इस दशामें पौष, माघ और फाल्गुनके महीने देशोन्नतिके लिए अच्छे होते हैं। गाय, भैंसे और बकरियाँ अधिक दूध देती हैं। देशको सम्मान और ख्याति प्राप्त होती है।

शुक्रकी अन्तरदशा साधारणतः अच्छी होती है। इस दशामें नाना प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं। आर्थिक दृष्टिसे यह दशा प्रायः अच्छी रहती है विदेशोंसे आर्थिक सम्बन्ध स्थापित होता है। देशमें अनेक औद्योगिक केन्द्र खोले जाते है। नैतिक उन्नतिके लिए भी पर्याप्त प्रयत्न किया जाता है। वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावणमासमें देशका पूर्ण विकास होता है। नेताओंको सम्मान भी इस दशामें मिलता है। शिक्षा और विज्ञान के क्षेत्रमें अनेक नवीन योजनाएँ इसी दशामें प्रस्तुत की जाती हैं। व्यापारिक वैभव बढ़ानेका अवसर भी इसी दशामें प्राप्त होता है। शुक्रग्रहकी महादशामें शुक्रकी अन्तरदशा देशके सर्वाङ्गीण विकासके लिए उत्तम है। इसमें दक्षिणी और पश्चिमी भागमें वर्षा अधिक होती है, जिससे फसलको कुछ क्षति भी पहुँचती है। पूर्वी और उत्तरी भागमें फसल बहुत ही अच्छी होती है। निवासियोंकी सर्वाङ्गीण उन्नति भी इसी दशामें होती है। स्वास्थ्य, आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य और अभ्युदयोंकी प्राप्ति इसी दशामें होती है। इस दशाके आरम्भके चार महीने बहुत ही अच्छे होते हैं और अवशेष आठ महीनोंमें देशकी समृद्धि उतनी नहीं हो पाती, जितनी पहले हुयी थी। क्रूरग्रहकी महादशामें शुक्रकी अन्तरादशाकी उन्नतिमें बाधक होती है। इसमें फसल अच्छी उत्पन्न नहीं होती और न जनतामें प्रेमभाव ही रहता है।

शुक्रकी प्रत्यन्तरदशामें देशमें सुभिक्ष होती है, नेताओं और शासकोंमें मतभेद होता है। अनेक प्रकार-की जातीय और वैयक्तिक उन्नतिके लिए सभाएँ स्थापित होती हैं, जिनसे शिक्षा और उद्योग सम्बन्धी कार्य सम्पन्न किये जाते हैं। देशका आर्थिक ढाँचा सबल होता है, सिंचाईके लिए नहर और बाँध बाँधनेकी योज-नाएँ कार्यरूपमें परिणत की जाती है। गृह-उद्योग और कुटीर उद्योगोंका विकास होता है। यद्यपि खाद्य समस्या हल हो जाती है, परन्तु जनसंख्या आदि बढ़ जानेसे देशमें खाद्यान्नका अभाव रहता है, जिससे विदेश-से अनाज मंगाना पड़ता है। देशकी राजनीति गन्दी रहती है, ऐसे व्यक्ति इसमें घुस जाते हैं, जिन्हें अपना उल्लू ही सीधा करना होता है। वैज्ञानिक अनुसंधानोंके लिए यह दशा बहुत अच्छी है। इसमें सोना, लोहा, चाँदी और काँसेके व्यापारमें पर्याप्त लाभ होता है। हल्दी, धनिया और जीरा आदि मसालोंके व्यापारमें घाटा उठाना पड़ता है। पौष और माघ महीनेमें देशकी आर्थिक स्थिति बिगड़ जाती है। परराष्ट्रनीतिके विषम हो जानेसे बाह्य संघर्षके साथ आन्तरिक संघर्ष भी उठाना पड़ता है। यद्यपि देशका वातावरण क्षुब्ध रहता है, पर इसमें उन्नति करनेके लिए किसी प्रकारकी बाधाएँ नहीं आती हैं।

शुभग्रहकी महादशा और शुभग्रहकी अन्तरदशामें शुक्रकी प्रत्यन्तरदशाके रहनेसे देशमें खण्ड वृष्टि, साधारणतः अन्नकी उपज, व्यापारसे लाभ और रसोंकी उत्पत्ति होती है। घी और चावलका भाव सस्ता होता है। लोहा, काँसा, सुपारी और लोंगका भाव महँगा होता है। इस दशामें व्यापारियोंको विशेष लाभ नहीं होता है, सट्टेका व्यापार करनेवालोंके धनका क्षय होता है। धोखा, पैरवी और दन्द-फन्द उत्पन्न होना इस दशाकी विशेषता है। इस दशामें किसी धार्मिक नेताका जन्म होता है, यह नेता साधारण नहीं होता,

बल्कि विशेष प्रभावशाली होता है। आषाढ़ और श्रावणमें इस दशाके आनेपर भावोंमें चोरी होती है, वर्षा भी समयपर नहीं हो पाती है, इसमें कष्ट उठाना पड़ता है। छत्रभंग या सिंहासनसे च्युत होनेका समय भी यही है। जो राजा मूलदशामें भी स्वेच्छानुकूल शासन करते हैं, उनका राज्य-सिंहासन दूसरोंके अधिकार-में जल्द ही चला जाता है। क्रूरग्रहकी महादशा और क्रूर-ग्रहकी अन्तरदशामें वह प्रत्यन्तरदशा देशकी उन्नति-में अत्यधिक बाधक होती है। इसके आते ही देशके नेताओंमें संघर्ष आरंभ हो जाता है तथा देशके विकासकी योजनाएँ यों ही रखी रह जाती हैं। व्यापारियोंके लिए भी महादशा अच्छी नहीं है, इसमें सभी व्यवसायियों-को हानि ही उठानी पड़ती है। देशका व्यापार बिलकुल ठप हो जाता है। इस दशामें देशको दुर्घटनाओंका शिकार अधिक होना पड़ता है। पूर्वीय और दक्षिणी भागमें दुष्काल भी पड़ सकता है। वस्त्र उद्योगकी गति शिथिल हो जाती है।

शुक्रकी सूक्ष्मदशामें नगर या देशमें अनेक नवीन कार्य होते हैं नये-नये कल-कारखाने स्थापित किये जाते है। चना, मूग, उड़द और द्विदल अनाज निश्चत महगें होते हैं। देशके कारोबारकी वृद्धि होती है, राज-नीतिके क्षेत्रमें उथल-पुथल होती है। अनुसन्धानशालाओं द्वारा देशके विकास और अभ्युत्थानके लिये अनेक क्रियात्मक कार्य करनेका योग इसी दशामें आता है। अतः शुक्रकी सूक्ष्मदशा सुकाल करती है, समयपर यथेष्ट वर्षा होती है तथा खनिज पदार्थोंकी उत्पत्ति परिमाणमें होती है।

शुभग्रहकी महादशा, शुभग्रहकी अन्तरदशा और शुभग्रहकी प्रत्यन्तरदशामें शुक्रकी सूक्ष्मदशा देशमें अनेक नवीन कार्योंकी प्रगतिके लिए बड़ी ही महत्त्वपूर्ण है। इस दशामें विदेशोंसे व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित होता है, देशका आर्थिक विकास होता है। यद्यपि राज्यकी ओरसे नये-नये कर लगाये जाते हैं, जिससे जनता-को थोड़ा कष्ट होता है। परन्तु देशके सामूहिक विकासके लिए यह दशा अच्छी ही रहती है। क्रूरग्रहोंकी महादशा, क्रूरग्रहोंकी अन्तरदशा और क्रूरग्रहोंकी प्रत्यन्तरदशाके साथ शुक्रकी सूक्ष्मदशामें देशमें दुष्काल, अवर्षण, धान्योत्पत्तिमें कमी, चौपायोंका अभाव या कष्ट और देश-निवासियोंको नाना प्रकारके रोग होते हैं। राजयक्ष्मा इस दशामें बहुलतासे उत्पन्न होता है, जिससे देशमें आतंक छा जाता है। कई प्रकारकी नयी वस्तुएँ आविष्कृत होती हैं, जिससे देशका अमर यश सर्वत्र व्याप्त हो जाता है। देशकी आर्थिक-स्थिति अच्छी नहीं रहती है, व्यापारियोंको भी इस दशामें लाभ नहीं होता। ज्येष्ठ, आषाढ़ और श्रावण मासमें विचित्र घटनाएँ घटती हैं। पड़ोसी राज्योंसे संघर्ष होता है, जिसमें विजयश्री अपने ही देशको प्राप्त होती है। माघ और फाल्गुनका महीना व्यापारियोंके लिए अच्छा होता है।

शुक्रकी प्राणदशा शुभग्रहोंकी महादशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशा और सूक्ष्मदशाके सहयोगसे देशकी उन्नतिमें साधक होती है। इसमें सुभिक्ष सुवर्षा और धान्यभाव सस्ता होता है। सोने-चाँदीका भाव भी सस्ता होता है। आर्थिकदृष्टिसे यह दशा कुछ कष्टकारक रहती है। बाजारमें भी रुपयोंका अभाव दिखलायी पड़ता है, जिससे सूदकी दर बढ़ जानेसे व्यापारियोंके लिए यही एक टेढ़ी समस्या उत्पन्न हो जाती है। जंगल, बगीचे और मैदानोंकी तरक्की होती है। नगर और देशकी आर्थिक-स्थिति अत्यन्त बिगड़ जाती है, जिससे प्रजाको कष्ट होता है। क्रूर ग्रहोंकी महादशा क्रूरग्रहोंकी अन्तरदशा और क्रूरग्रहोंकी प्रत्यन्तरदशामें यह प्राणदशा देशके मनुष्य और पशुओंके लिए अत्यन्त कष्टकारक और भयप्रद होती है। बड़े-बड़े रोग और व्याधियाँ इसी दशामें उत्पन्न होती हैं। युद्ध होनेका योग भी इसी दशामें आता है। देशकी सामरिक शक्तिका विकास भी होता है। सैनिकशक्ति बढ़ती है, अस्त्र-शस्त्रोंका उत्तरोत्तर निर्माण भी होता है। अतः यह दशा देशकी शान्तिके लिए अच्छी होती।

फलादेशमें विशेष विचार

पुव्वाइदिस-चउक्के जे गह विचरंति चउसु विदिसासु।
अङ्गारय-तम-सणिया परचक्कभयङ्करा घोरा ॥१९॥

पूर्वादि चारों दिशाओं और ईशान आदि चारों विदिशाओंमें जो ग्रह विचरते हैं, उनमें मङ्गल-राहु और शनि क्रूरग्रह हैं और परचक्र—विदेशी आक्रमणसे भय उत्पन्न करनेवाले हैं।

विवेचन—विशेष फलादेश अवगत करनेके लिए ग्रहोंका स्वरूप, स्वभाव और गुण अवगत करना अत्यावश्यक है। अतः यहाँपर नव ग्रहोंका संक्षिप्त स्वरूप दिया जाता है।

सूर्य—पूर्वदिशाका स्वामी, पुरुष, समवर्ण, पित्त-प्रकृति और पापग्रह है। सूर्य आत्मा, स्वभाव, आरोग्यता, राज्य और देवालयका सूचक तथा सिद्धकारक हैं। पिताके सम्बन्धमें सूर्यसे विचार किया जाता है। नेत्र, कलेजा, मेरुदण्ड और स्नायु आदि अवयवोंपर इसका प्रभाव पड़ता है। इससे शारीरिक रोग, सिरदर्द प्रपंच, क्षय, महाज्वर, अतिसार, मन्दाग्नि, नेत्र-विकार, मानसिकरोग, उदासीनता, खेद, अपमान एवं कलह आदिका विचार किया जाता है। यह सिंहराशिका अधिपति है। सिंहके १ अंशसे २० अंश तक सूर्यका मूल त्रिकोण और २१ से ३० अंश तक स्वक्षेत्र कहलाता है। इससे वर्षाकी स्थितिका भी विचार किया जाता है। मेषराषिके १० वें अंशमें परमोच्च होता है।

चन्द्रमा—पश्चिमोत्तरदिशाका स्वामी, स्त्री, श्वेतवर्ण और जलग्रह है। वात-श्लेषमा इसकी धातु और यह रक्तका स्वामी है। माता-पिता, चित्तवृत्ति, शारीरिकपुष्टि, राजानुग्रह, सम्पत्ति और चतुर्थ स्थानका कारक है। चतुर्थ स्थानमें चन्द्रमा बली और मकरसे छः राशिमें इसका चेष्टाबल होता है। इससे शारीरिकरोग, पाण्डुरोग, जलज तथा कफज रोग, पीनसा, मूत्रकृच्छ, स्त्रीजन्यरोग, मानसिकरोग, व्यर्थ भ्रमण, उदर एवं मस्तिष्कका विचार किया जाता है। कृष्णपक्षकी ६ से शुक्लपक्षकी १० मी तक क्षीण चन्द्रमा रहनेके कारण पापग्रह और शुक्लपक्षकी १० मीसे कृष्णपक्षकी ५ मी तक पूर्व ज्योति रहनेसे शुभग्रह बली माना जाता है। बली चन्द्रमा ही चतुर्थमासमें पूर्वफल देता है। यह राशिका स्वामी है। वृषराशिके ३ अंश तक परमोच्च है और इसी राशिके ४ के अंशसे ३०वें अंश तक मूल त्रिकोण है।

मंगल—दक्षिणदिशाका स्वामी, पुरुषजाति, पित्तप्रकृति, रक्तवर्ण और आदि है। यह स्वभावतः पापग्रह है, धैर्य तथा पराक्रमका स्वामी है। तीसरे और छटवें स्थानमें बली और द्वितीयमें निष्फल होता है। दशम स्थानमें दिग्बली और चन्द्रमाके साथ रहनेसे चेष्टाबली होता है। यह भ्रातृ और भगिनी कारक है। मेष और वृश्चिकराशिका स्वामी है। इसका मेषके १८ अंश तक मूल त्रिकोण है और इससे आगे स्वक्षेत्र है। नगरकी महादशा मंगलकी होनेपर विशेषतः सेनाकी प्रगति होती है। सेना और स्वक्षेत्रका निरीक्षण यही ग्रह करता है।

बुध—उत्तरदिशाका स्वामी, नपुंसक, त्रिदोष प्रकृति, श्यामवर्ण और पृथ्वी तत्त्व है। यह पापग्रहोंके—सूर्य, मंगल, राहु, केतु और शनिके साथ रहनेसे अशुभ और शुभ ग्रहों—पूर्ण चन्द्रमा, गुरु, और शुक्रके साथ रहनेसे शुभफलदायक होता है। यह ज्योतिषविद्या, चिकित्साशास्त्र, शिल्प, कानून, वाणिज्य और चतुर्थ तथा दशम स्थानका कारक है। चतुर्थ स्थानमें रहनेसे निष्फल होता है, इससे जिह्वा और तालु आदि उच्चारणके अवयवोंका विचार किया जाता है। वाणी, गुह्यरोग, संग्रहणी, बुद्धिभ्रम, मूक, आलस्य, वातरोग एवं कुष्ठरोग आदिका विचार विशेषरूपसे किया जाता है। यह मिथुन और कन्याराशिका स्वामी

है। इसको कन्याके १५ अंशपर उच्च माना गया है। इसका कन्याके १६ अंशसे २० अंश तक मूल त्रिकोण और १२ अंशसे ३० अंश तक स्वक्षेत्र होता है।

गुरु—पूर्वोत्तरदिशाका स्वामी, पुरुषजाति, पीतवर्ण और आकाशतत्त्व है। यह लग्नमें बली और चन्द्रमाके साथ रहनेसे चेष्टावली होता है। यह चर्बी और कफ धातुको वृद्धि करनेवाला है। इससे पुत्र, पौत्र, विद्या, गृह, गुल्म, सूजन आदि रोगोंका विचार किया जाता है। यह धनु और मीन राशिका स्वामी होता हैं। कर्कके ५ अंशपर उच्च होता है। इसका धनुराशिके १ अंशसे १३ अंशतक मूलत्रिकोण और १४ अंशसे ३० अंशतक स्वगृह होता है।

शुक्र—दक्षिण-पूर्वका स्वामी, स्त्रीजाति, श्याम, गौरवर्ण एवं कार्यकुशल है। इस ग्रहके प्रभावसे जातकका रंग गेहुंआ होता है। छठवें स्थानमें निष्फल एवं सातवेंमें अनिष्टकर होता है। यह जलग्रह है, इसलिये कफ, वीर्य आदि धातुओंका कारक ग्रह माना गया है। मदनेच्छा, गानविद्या, काव्य, पुष्प, आभरण, नेत्र, वाहन, शय्या, स्त्री, कविता आदिका कारक है। सांसारिक सुखका विचार इसी ग्रहसे किया जाता है। यह वृष और तुलाका स्वामी है। मीनके २७ अंशपर इसका उच्च होता हैं। तुलाके १ अंशसे १० अंश तक मूल त्रिकोण और इसी राशिके ११ अंशसे ३० अंश तक इसका स्वक्षेत्र है।

शनि—पश्चिमदिशाका स्वामी, नपुंसक, वातश्लेषयिकप्रकृति, कृष्णवर्ण और वायुतत्व हैं। यह सप्तम स्थानमें बली और वक्रीग्रह या चन्द्रमाके साथ रहनेसे चेष्टाबली होता हैं। इससे विदेशीय भाषाओंके अध्ययनका विचार किया जाता है। रातमें बालकका जन्म होनेपर शनि मातृ और पितृ कारक होता हैं। इससे आयु शारीरिकबल, उदारता, विपत्ति, योगाभ्यास, प्रभुता, ऐश्वर्य, मोक्ष, ख्याति, नौकरी एवं मूर्च्छादि रोगोंका विचार किया जाता है। यह मकर और कुम्भराशिका स्वामी होता है। तुलाके २० अंशपर इसका उच्च माना जाता है। इसका बुध के १ अंश से लेकर १० अंश तक मूल त्रिकोण और इसो राशिके ११ अंश तक स्वक्षेत्र है।

राहु—दक्षिण दिशाका स्वामी, कृष्णवर्ण और क्रूरग्रह है। जिस स्थानपर राहु रहता है, यह उस स्थानकी उन्नतिको रोकता है। इसका वृषराषिमें उच्च, मेषमें स्वग्रह और कर्कमें मूल त्रिकोण है। वृश्चिक-राशिमें यह नीचका माना जाता है।

केतु—कृष्ण वर्ण और क्रूर ग्रह हैं। इससे चर्म रोग, मातामह, हाथ-पाँव और क्षुधा जनित कष्ट आदिका विचार किया जाता है। यह वृश्चिक राशिमें उच्चका और वृष राशिमें नीचका माना जाता है।

विशेष—यद्यपि वृहस्पति और शुक्र दोनों शुभ ग्रह हैं, पर शुक्रसे सांसारिक और व्यवहारिक सुखों का तथा वृहस्पतिसे पारलौकिक एवं आध्यात्मिक सुखोंका विचार किया जाता है। शुक्र प्रभावसे मनुष्य स्वार्थी और वृहस्पतिके प्रभावसे परमार्थी होता है। शुक्रकी महादशा या अन्तरदशामें देशमें स्वार्थकी भावना विशेष रूपसे उत्पन्न होती है। वृहस्पतिकी दशामें देशमें सहयोग, परोपकार और त्यागकी भावना उत्पन्न होती है।

शनि और मंगल ये दोनों भी पाप ग्रह हैं, पर दोनोमें अन्तर यही है कि शनिके क्रूरग्रह होने पर भी उसका अन्तिम परिणाम अच्छा होता है, यह दुर्भाग्य और यन्त्रणाएं उत्पन्न करता है, परन्तु इसकी दशामें देशकी प्रगति ही होती है। मंगल उत्तेजना देनेवाला हैं, उमंग और तृष्णासे परिपूर्ण कर देनेके कारण सर्वदा दु:खदायक होता है। इसकी दशामें देशका विकास नहीं होता। युद्ध और सैनिक शक्तिका प्रदर्शन भी इसी ग्रहकी दशामें होता है।

दशाकालका निरूपण करते समय ग्रहोंके बलाबलका भी विचार कर लेना अत्यावश्यक है, बलवान् ग्रहकी दशामें देशमें सुख, शान्ति और आनन्द वर्तमान रहता है। निर्बल ग्रहकी दशामें देशका पतन होता है। जिस वर्ष वृहस्पति, शनि और मंगल एक साथ रहते हैं, उस वर्ष दुष्काल पड़ता है तथा युद्ध होता है। मंगलके राशि परिवर्तन पर वर्षा, वृहस्पतिके उदयमें वर्षा, शुक्रके अन्तमें वर्षा और शनैश्चरकी तीनों अवस्थाओंमें वर्षा होती है। शुक्रके अन्तमें मंगलका उदय हो तो भुजाओंमें युद्ध, कहीं वर्षा और कहीं दुष्काल होता है। मेष और वृश्चिकके बीचमें मंगल स्थित हो तो दो मास तक धान्य तेज रहते है। सूर्य, राहु, शनि और मंगल इनका जब मध्यराशिमें उदय होता है, तो धन-धान्य और सुवर्णका विनाश होता है। मीन राशिपर शनि, कर्कपर गुरु और तुलापर मंगल जब रहता है तो देशमें उपद्रव होते हैं। सूर्य राशिसे आगे मंगल हो तो वर्षाको रोकता है; और चन्द्रमासे मंगल, बुध, गुरु और शुक्र ये चारों ग्रह दक्षिण होते हैं तो वृष्टिका नाश करते हैं। मंगलके वक्री होनेसे अनावृष्टि, बुधके वक्री होनेसे धनका क्षय, गुरुके वक्री होनेसे रोगकी उत्पत्ति, शुक्रके वक्री होनेसे प्रजा सुखी, और शनिके वक्री होनेसे प्रजाको कष्ट होता है। राहुके वक्री होने पर अग्निका उपद्रव विशेष रूपसे होता है। मंगलके वक्री होने पर युद्ध भी होते हैं। शनि और मंगलका वक्री होना युद्ध, दुर्भिक्ष, अनावृष्टि और उत्पात आदिका सूचक है। श्रावणमें शनि वक्री हो और मंगलका अस्त या उदय हो तो दो महीनेके पश्चात् निश्चय युद्ध होता है।

क्रूर[1] और शुभ ग्रहोंका दशाफल

कूरा कुणंति दुक्खं सेसा सव्वे सुहंकरा णेया ॥१९३॥

अर्थ—क्रूर ग्रहोंकी दशामें दुःख होता है और शेष शुभ ग्रहोंकी दशामें सुख होता है।

विवेचन—चन्द्रमा, बुध, गुरु और शुक्र अपनी,अपनी उच्चराशि, स्वराशि और मूलत्रिकोणमें रहने पर देशमें सुभिक्ष, धन-धान्यकी वृद्धि, उद्योग और शिल्पकी वृद्धि एवं देशका सर्वाङ्गीण विकास करते हैं। इन ग्रहोंकी दशामें प्रजाको सुख मिलता है। चन्द्रमा सौम्य ग्रहोंसे युक्त अपनी दशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशा, सूक्ष्मदशा और प्राणदशामें शुभ फल देता है। अमृतनाडी पर जब चन्द्रमा शुभ ग्रहोंसे युक्त होकर अपनी सूक्ष्मदशामें आता है, उस समय सुभिक्ष होती है। वस्त्र-व्यवसाय और घी-व्यवसायमें अच्छा लाभ होता है। देशमें धन-धान्यकी वृद्धि होती है तथा शत्रुभय दूर हो जाता है। गुरुकी दशा और उत्तरदशादिमें भी उत्तम फल प्राप्त होता है। जिस वर्ष गुरु, शनि, मंगलसे युक्त या द्रष्ट रहता है; उस वर्ष वर्षा अच्छी नहीं होती। देशमें विग्रह, दुर्भिक्ष, आर्थिक संकट एवं उपद्रव होते हैं। चन्द्रमा और वुध दोनों ही अपनी-अपनी दशामें देशकी सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक उन्नति करते हैं। देशका वातावरण शान्त और पवित्र रहता है, अतः इन दोनों ग्रहोंको देशकी उन्नतिमें सबसे अधिक सहायक समझना चाहिये।

शुक्र और गुरु भी अपनी-अपनी दशा या अन्तरदशामें उन्नति करते हैं, परन्तु इनकी दशामें देशका सर्वाङ्गीण विकास नहीं हो पाता है। इनकी दशाओंमें तिल, वस्त्र, सर्प, कपास और सुपाड़ी आदि पदार्थ सस्ते होते हैं, जिससे व्यापारियोंको हानि उठानी पड़ती है।

शनि और मंगलकी दशामें देशमें अशान्ति, कष्ट, उत्पात, आकास्मिक भय और अकाल पड़ते हैं। यद्यपि शनिकी महादशा स्वराशिके शनिमें देशके विकासमें सहायक होती है। निवासियोंकी बौद्धिक और मानसिक प्रगतिमें महादशा अत्यन्त सहकारी मानी जाती है। मंगलकी दशामें अकाल, अनावृष्टि या अतिवृष्टि,

---

१. 'अकुला कुणंति दुक्खं'—इत्यपि पाठान्तरं—

जन्मोत्पत्तिकी कमी और नाना प्रकारके संकट सहन करने पड़ते हैं। देशका वातावरण क्षुब्ध रहता है। यद्यपि शनि, मंगल और गुरुके विशेष योग द्वारा ही शुभाशुभ फल ज्ञात किया जा सकता है तो भी ग्रहवेध या दृष्टिका विचार बिना किये ही ग्रहोंको राशियोंके शुभाशुभत्व परसे ही फल बतलाया जा सकता है। राहु और केतुकी दशाएँ देशके लिए उत्तम नहीं होती हैं तथा इन दशाओंमें देशकी अवनति ही होती है। यों तो आगे किये जाने वाले विचारपरसे ही दशाओंका विशेष फलादेश बतलाया जा सकेगा, पर साधारणतः राहु और केतुकी दशा अनिष्टकर ही होती है। इनमें अतिवृष्टि, अन्तरवृष्टि, अकाल और महामारी आदि फल घटित होते हैं।

क्रूरग्रहोंके शुभफलका विचार

संमुह-दाहिण-वामा दिट्ठीए सुहयरा हुंति ॥२०॥

अर्थ—क्रूर ग्रह भी सम्मुख, दक्षिण और बायी दृष्टिसे सुखदायक होते हैं। यों तो शुभग्रहोंको दृष्टिका फल शुभ और अशुभ ग्रहोंकी दृष्टिका फल अशुभ होता है।

विवेचन—ग्रहोंकी दृष्टि तीन प्रकारकी होती हैं—सम्मुख, दक्षिण और वाम। चन्द्र, गुरु और शुक्र शुभ ग्रह हैं। बुध शुभ ग्रहोंके साथ रहनेसे शुभ ग्रह और पाप ग्रहोंके साथ रहनेसे पाप ग्रह होता है। क्षीणचन्द्र—कृष्णपक्षकी १० मीसे शुक्लपक्षकी रात्रि तक भी पाप ग्रह माना जाता है। कृष्णपक्षकी चतुर्दशी, अमा वस्या और शुक्लपक्षकी प्रतिपदाका चन्द्रमा अत्यन्त अशुभ समझा जाता है।
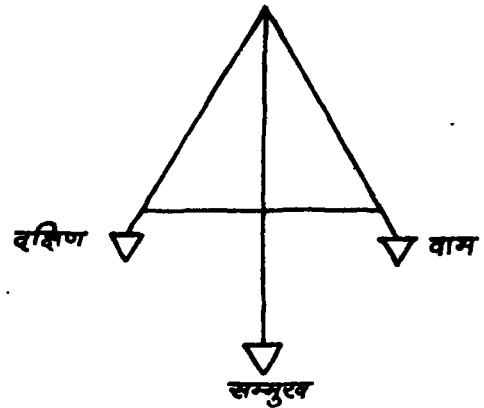
ग्रह दृष्टिसूचक चक्र

१. सम्मुख दृष्टि—पूर्वसे पश्चिम और पश्चिमसे पूर्वको होती है।
२. सम्मुखदृष्टि—उत्तरसे दक्षिणमें और दक्षिणसे उत्तरको होती है।
३. दक्षिणदृष्टि—पूर्वसे उत्तर, उत्तरसे पश्चिम, पश्चिमसे दक्षिण और दक्षिणसे पूर्वको होती है।
४. वाम दृष्टि—पूर्वसे दक्षिण, दक्षिणसे पश्चिम, पश्चिमसे उत्तर, उत्तरसे पूर्वको होती है।

ग्रहदृष्टिका नाम ही वेध है। देश, काल और वस्तु इन तीनोंमें ग्रहवेध द्वारा शुभाशुभफलको जानना चाहिये। देशका नक्षत्र क्रूर ग्रहसे विद्ध हो तो अशुभफल, शुभ ग्रह विद्ध हो तो शुभफल होती है। वस्तु और समयके अनुसार भी शुभाशुभत्व अवगत करना चाहिये।

दिशा-दृष्टिचक्र
पूर्व
ईशान
अग्नि
उत्तर
दक्षिण
वायु
नैऋत्य
पश्चिम
विदिशा-दृष्टिचक्र
पूर्व
ईशान कोण
अग्नि कोण
उत्तर
दक्षिण
वायव्य कोण
नैऋत्य कोण
पश्चिम
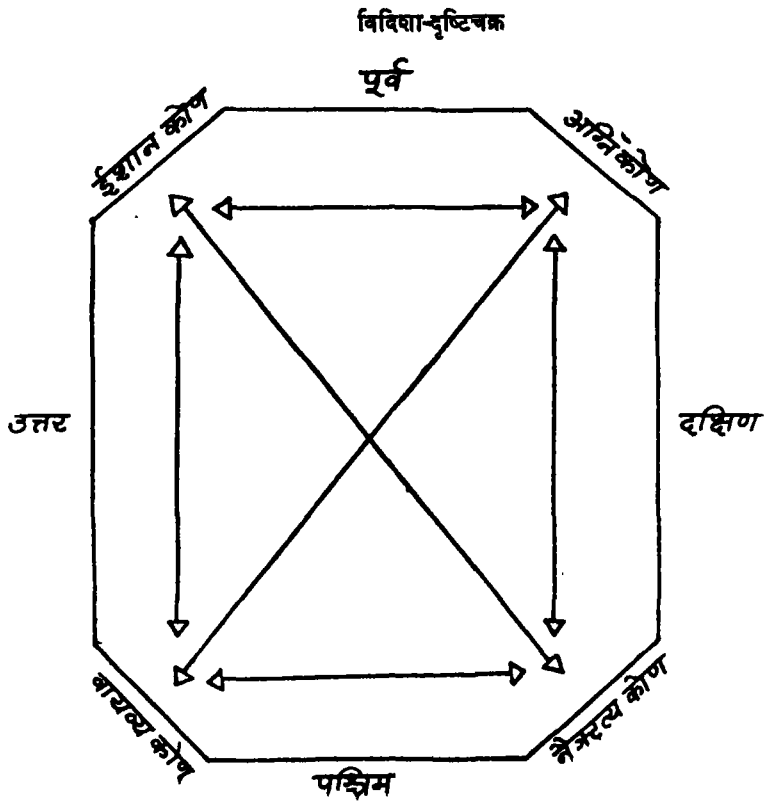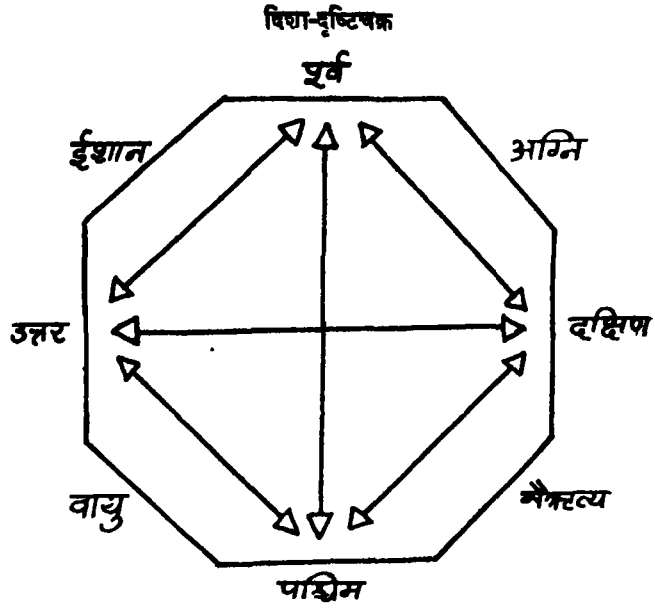
१. सम्मुख दृष्टि—अग्निसे वायुकोण, वायुकोणसे अग्निकोण, नैऋत्यसे ईशानकोण और ईसानकोणसे नैऋत्यकोणकी ओर होती है।

२—दक्षिण दृष्टि—अग्निसे ईशानकोण, नैऋत्यसे अग्निकोण, वायुसे नैऋत्यकोण और ईशानसे वायु कोणकी ओर होती है।

३—वामदृष्टि—ईशानसे अग्निकोण, अग्निसे नैऋत्यकोण, नैऋत्यकोणसे वायुकोण और वायुसे ईशान कोणकी ओर होती है।

वेधचक्र (सर्वतोभद्र)

अ	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	आ
भरणी	उ	अ	व	क	ह	ड	ऊ	मघा
अश्विनी	ल	लृ	वृष	मिथुन	कर्क	लॄ	म	पूर्वाफाल्गुनी
रेवती	च	मेष	ओ	नंदा	औ	सिंह	ट	उत्तराफाल्गुनी
उत्तराभाद्रपद	द	मीन	रिक्ता	पूर्वा	भद्रा	कन्या	प	हस्त
पूर्वाभाद्रपद	स	कुम्भ	अः	जया	अं	तुला	र	चित्रा
शतभिषा	ग	ऐ	मकर	धन	वृश्चिक	ए	त	स्वाती
धनिष्ठा	ॠ	ख	ज	भ	य	न	ऋ	विशाखा
ई	श्रवण	अभिजित	उत्तराषाढा	पूर्वाषाढा	मूल	ज्येष्ठा	अनुराधा	इ

१. उपर्युक्त चक्रमें सीधी खड़ी और आड़ी रेखाएँ तो सम्मुखवेधकी सूचक हैं।

२. तिर्छी रेखाएँ दक्षिण और वामवेधकी सूचक हैं।

३. कृत्तिकादि सात नक्षत्र पूर्व दिशाके हैं, तथा अनुराधादि सात नक्षत्र पश्चिम दिशाके हैं। पूर्वसे पश्चिम और पश्चिमसे पूर्वको सम्मुख वेध माना जाता है। धनिष्ठादि सात नक्षत्र उत्तर दिशाके और मघादि सप्त नक्षत्र दक्षिण दिशाके हैं। अतः दक्षिणसे उत्तर और उत्तरसे दक्षिण सम्मुख वेध जानना चाहिये।

४. तिर्छी रेखाके चिह्न दक्षिण और वामवेधके हैं।

५. कृत्तिकादि सात नक्षत्रोंका दक्षिणवेध धनिष्ठादि उत्तर दिशाके नक्षत्रोंकी ओर होता है।

६. कृत्तिकादि सात नक्षत्रोंका वामवेध मघादि सात नक्षत्रोंकी ओर होता है।

७. उत्तर दिशाके सात नक्षत्रोंका दक्षिणवेध अनुराधादि सात नक्षत्रोंकी ओर होता है और वामवेध कृत्तिकादि सात नक्षत्रोंकी ओर होता है।

८. अनुराधादि पश्चिम दिशाके सात नक्षत्रोंका दक्षिणवेध मघादि सात नक्षत्रोंकी ओर होता है और वामवेध धनिष्ठादि सात नक्षत्रोंकी ओर होता है।

९. दक्षिण दिशाके सात नक्षत्रोंका दक्षिणवेध कृत्तिकादि सात नक्षत्रोंकी ओर और वामवेध अनुराधादि सात नक्षत्रोंकी ओर होता है।

१०. कृत्तिका नक्षत्रका सम्मुख वेध श्रवण नक्षत्रपर, दक्षिणवेध भरणी नक्षत्रपर और वामवेध अनुराधा नक्षत्रपर होता है।

११. श्रवणका सम्मुखवेध कृत्तिकापर, वामवेध धनिष्ठापर और दक्षिणवेध मघापर होता है।

१२. भरणीका सम्मुख वेध मघा नक्षत्रपर, वामवेध कृत्तिकापर और दक्षिणवेध अनुराधापर होता है।

१३. सूक्ष्मवेध नक्षत्रोंके चरणोंका होता। एक नक्षत्रमें चार चरण होते हैं, अतः प्रथम और चतुर्थका; द्वितीय और तृतीयका तथा चतुर्थ और प्रथम चरणका वेध होता है।

१४. जिस नक्षत्रपर ग्रह स्थित है, वह ग्रह उपर्युक्त प्रकारसे सम्मुख, दक्षिण और वामवेध करता है।

१५. जिसका जन्म नक्षत्र, दिशा नक्षत्र, देश नक्षत्र, नगर नक्षत्र, ग्राम नक्षत्र और वस्तु नक्षत्र क्रूर ग्रहोंसे विद्ध हो तो अशुभ फल अवगत करना चाहिये। शुभ ग्रहसे विद्ध होनेपर शुभ और मिश्रित ग्रह शुभ और पाप दोनों प्रकारके ग्रहोंसे विद्ध होनेपर मिश्रित फल समझना चाहिये।

वेध या दृष्टिमें निम्न परिस्थिति परिवर्तन भी हो जाता है :—

१. वक्री ग्रहका वेध दक्षिणकी ओर ही माना जाता है।

२. शीघ्रगामी ग्रहकी दृष्टि बायीं ओर होती है।

३. समचालसे चलनेवाले ग्रहकी दृष्टि (वेध) वाम, सम्मुख और दक्षिण तीनों ही ओर होती है।

४. सूर्य, चन्द्र, राहु और केतु सदा समचालसे चलते हैं, अतः चारों ग्रहोंकी सदा तीनों प्रकारकी होती है।

५. मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि इनकी चाल सदा बदलती रहती है, अतः इनकी दृष्टिमें भी परिवर्तन होता रहता है। इन ग्रहोंसे जो-जो ग्रह वक्री हों उनकी दृष्टि दक्षिण ओर और जो शीघ्रगामी हों, उनकी दृष्टि बायीं ओर होती है।

६. ग्रहोंका वेध गजेन्द्रके दाँतके संस्थानकी भाँति दोनों ही तरफ अर्थात् बायीं और दक्षिण ओर राशि, अक्षर, स्वर, तिथि और नक्षत्र इन पाँचोंका होता है।

७. सम्मुख वेधसे केवल सामनेका नक्षत्र ही वेधा जाता है।[1]

---

१. यस्मिन् ऋक्षे स्थितः खेटस्ततो वेधत्रयं भवेत्। ग्रहदृष्टिवशेनात्र वामसम्मुखदक्षिणे ॥
मुक्तं भोग्यं तथा क्रान्तं विद्धं क्रूरग्रहेण भम्। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः ॥
वक्रगे दक्षिणा दृष्टिर्वामदृष्टिश्च शीघ्रगे। मध्यचारे तथा मध्या ज्ञेया भौमादिपञ्चके ॥
राहुकेतू सदा वक्रौ शीघ्रगौ चन्द्रभास्करौ। गतेरेकस्वभावत्वादेषां दृष्टित्रयं सदा ॥
क्रूरा वक्रा महाक्रूराः सौम्या वक्रा महाशुभाः। स्युः सहजस्वभावस्थाः सौम्या क्रूराश्च शीघ्रगाः ॥
—नरपतिजयचर्या पृ० ५६-५७

८. वस्तुका नक्षत्र सौम्यग्रहसे विद्ध रहनेसे वस्तुएँ सस्ती और क्रूर ग्रहसे विद्ध रहनेसे वस्तुएँ महँगी होती हैं।

सूर्य, चन्द्र और मंगलकी दृष्टिका फल

सूरो वि हरइ तेयं संमोहं जणइ राय-लोयाणं।
सोमो करइ सोम्मं भोमो अग्गी अईसारो ॥ २१ ॥

अर्थ—सूर्यकी सम्मुख दृष्टि राजा प्रजाके तेजको नष्ट करती है। और उनमें संमोह उत्पन्न करती है। चन्द्रमाकी सम्मुख दृष्टि शांतिदायक होती है और मंगलकी सम्मुख दृष्टि—वेध अग्निभयं और अतीसार रोगको उत्पन्न करती है।

विवेचन—ग्रन्थान्तरोंमें सूर्यकी दृष्टिका फल मनस्ताप, पीड़ा, शक्ति और पौरुषका अभाव एवं राजाओं, शासकोंमें विग्रह होना बतलाया गया है। जिस ग्राम नक्षत्र, या वस्तु नक्षत्रसे सूर्यका वेध होता है, उस ग्रामके मुखियाकी शक्ति क्षीण हो जाती है, उसका पुरुषार्थ घटने लगता है तथा उनके स्थानपर अन्य मुखियाका चुना जाना भी संभव है। यदि वस्तु नक्षत्र सूर्यसे विद्ध हो तो वह वस्तु तेज होती है, उसका अभाव होता है तथा उसके मूल्यमें वृद्धि अधिक हो जानेसे व्यापारियोंको अधिक लाभ होता है। जो व्यापारी सूर्यके विद्ध नक्षत्र नामवाली वस्तुओंको संचय करते हैं, वे अवश्य ही उन वस्तुओंसे लाभ उठाते हैं। सूर्य विद्ध नगर या ग्रामके निवासियोंको भी कष्ट भोगना पड़ता है, उनका भी बल-पौरुष घट जाता है।

चन्द्रमाके वेधमें शान्ति-सुखकी प्राप्ति होती है। क्षीण चन्द्रमाके वेधमें अशुभ फल होता है। देश निवासियोंको नानाप्रकारके कष्ट भोगने पड़ते हैं। सूर्यचन्द्रमाके वेधमें लाभ, हर्ष, उन्नति और सुभिक्ष आदि फल होते हैं। नेताओं, मुखियाओं और शासकोंकी शक्ति बढ़ती है। उनका प्रभाव इतना अधिक बढ़ जाता है, जिससे अन्य देश, नगर और ग्रामके शासक भी उनका सम्मान और प्रशंसा करते हैं। देशमें धन-धान्यकी पूर्ण वृद्धि होती है। व्यापारियोंको लाभ होता है। यद्यपि धन-धान्यकी वृद्धि होनेके कारण निवासियोंको सब प्रकारका सुख प्राप्त होता है, तो भी मानसिक चिन्ता कुछ रह जाती है। देशके अनुसन्धानोंमें अधिक प्रगति होती है। नयी-नयी वस्तुयें आविष्कृत होकर सामने आती हैं, जिससे देशकी प्रतिष्ठा बढ़ती है। खाद्यन्न पर्याप्त मात्रामें उत्पन्न होते हैं। घी, दूध और फलोंकी उत्पत्ति खूब होती है। अतः पूर्णचन्द्रमासे विद्ध गाँव, नगर, देश और दिशामें सभी प्रकारका सुख प्राप्त होता है।

पूर्ण चन्द्रमासे जिस वस्तुका वेध होता है, उस वस्तुमें व्यापारियोंको अधिक लाभ नहीं होता। यदि शुभ ग्रह भी चन्द्रमाके साथ हों तो निश्चयतः वह वस्तु सस्ती होती है, जिससे बेचनेवालोंको हानि और खरीदने वालोंको लाभ होता है। देशमें इस वस्तुकी उत्पत्ति भी साधारणतः अच्छी होती है। क्षीण चन्द्रमाका फल उपर्युक्त फलसे बिल्कुल विपरीत घटता है। चन्द्रमाके स्वक्षेत्रमें रहनेपर पूर्ण फल, मित्रकी राशिमें रहनेपर तीन चौथाई समकी राशिमें रहनेसे आधा फल तथा शत्रुकी राशिमें होनेपर चौथाई फल घटता है।

मंगलके विद्ध होनेपर रोग, पीड़ा, उत्पात और उपद्रव आदि फल होते हैं। जिस देश, गाँव या नगरका नक्षत्र मंगलसे विद्ध रहता है, वह गाँव, नगर या देशमें अग्नि-प्रकोप अधिक होता है। स्थान-स्थानपर अग्नि लगी हुई दिखलायी पड़ती है। जगह-जगह चोरियाँ होती हैं, चोरों और लुटेरोंका उत्साह बढ़ता है। इन्हें अपने पेशेमें अधिक सफलता मिलती है। मंगलसे विद्ध होना गाँवकी आर्थिक उन्नतिके लिए साधारणतः अच्छा है। देश या गाँवमें नानाप्रकारके उपद्रव होते हैं। द्रव्यहानि, रोग, पीड़ा आदि फल भी घटित होते

हैं। यदि अपनी राशिमें स्थित होकर मंगलने वेध किया हो तो पूर्णतः अशुभ फल मित्रकी राशिमें स्थित होकर वेध करनेसे तीन चौथाई अशुभ फल, समग्रहकी राशिमें स्थित होनेसे आधा फल और शत्रु की राशिमें स्थित होनेसे चौथाई अशुभ फल प्राप्त होता है। शुभ ग्रहसे युक्त या द्रष्ट होकर मंगल वेध करे तो कुछ अच्छा होता है। निवासियों, शासकों, नेताओं और मजदूरोंको इस वेधसे लाभ होता है। कलाकारोंको सम्मान प्राप्त होता है।

जिस वस्तुका मंगलसे वेध होता है, वह वस्तु महंगी होती है। व्यापारियोंको इस वेधसे उस वस्तुमें अपार लाभ होता है। क्रूर ग्रह द्रष्ट मंगलसे जब वेध होता है, तो और भी अधिक लाभ होता है। इस वस्तु-की उत्पत्ति बहुत कम होती है तथा देश इस वस्तुके अभावमें कष्ट पाता है। इस वस्तुकी उत्पत्तिमें अनेक रोग और बाधाएँ उत्पन्न होती हैं। यदि सुवर्णका वेध मंगलसे होता है तो इसकी उत्पत्ति देशमें कम होती है, विदेशोंसे इसका आना भी रुक जाता है। अतएव मंगलका वेध अच्छा नहीं होता है।

बुध और गुरुकी दृष्टिका फल

बुद्धिकरो बुड्ढिकरो वुट्टो वि लोयाण [तह य] दुक्खहरो ।
कोसं कोट्ठागारं पूरेइ सुरगुरू तुट्ठो ॥२२॥

अर्थ—बुध ग्रह बुद्धिकारक है, धन-धान्यकी वृद्धि करता है तथा लोगोंके दुखोंको दूर करता है। सन्तुष्ट वृहस्पति राज्यके कोष और भण्डारोंको समृद्ध बनाता है।

विवेचन—बुधसे विद्ध देशमें समयपर वर्षा होती है। व्याधियोंका अभाव, सम्मान-प्रतिष्ठाकी वृद्धि वैज्ञानिक प्रगति, कृषि और उद्योगोंका पूर्ण विकास एवं नेताओंका प्रभाव बढ़ता है। बुध जिस वस्तुका वेध करता है, उस वस्तुके व्यापारमें लाभ अल्प होता है। इस वस्तुकी उत्पत्ति भी अधिक परिमाणमें होती है तथा इस वेधसे देशमें सभी प्रकारकी सुख-शान्ति होती है। पापग्रहसे युक्त या दृष्ट बुधका वेध देशमें अराजकता, अशान्ति और महामारीको उत्पन्न करता है। शुभ ग्रहसे युक्त या दृष्ट बुधके वेधसे देशमें सुराज्य, सुव्यवस्था, आर्थिक विकास और धन-धान्यकी समृद्धि होती है। स्वगृही बुधका वेध देशमें शान्ति, व्यापारमें वृद्धि और सम्मानकी वृद्धि करता है। नेताओंमें सहयोगकी भावना उत्पन्न करता है, जिससे देशका आर्थिक विकास होता है। नारियोंकी प्रतिष्ठाके लिए इस ग्रहका वेध अत्यन्त सहकारी होता है। नारियों राजनीतिमें आगे आती हैं तथा देशके कार्योंमें भाग लेती हैं। उच्चका वेध पंचायती राज्यकी व्यवस्थाके लिये उपयोगी होता है। नीचराशिके बुधका वेध देशके सांस्कृतिक विकासके लिए अहितकर होता है। बुध देशकी राजनीतिमें गड़बड़ी पैदा करता है, परन्तु इसके वेधमें देश उन्नति करता है।

गुरुका वेध देशके धन-धान्यकी वृद्धि करता है। जिस देशके नक्षत्रको गुरु वायी ओर वेध करता है, उस देशमें अराजकता तो बढ़ती है; पर धन-धान्यकी वृद्धि पूर्णरूपसे होती है। दक्षिण दृष्टिसे होनेवाले गुरुके वेधमें देशमें सुव्यवस्था और आर्थिक शक्तिका विकास होता है। सम्मुख दृष्टिसे होनेवाले वेधमें देशकी राज-नीति सुदृढ़ होती है, नवीन योजनाएँ सफल होती हैं। और नयी-नयी योजनाएँ प्रस्तुत की जाती हैं। स्वक्षेत्री गुरुका वेध देशका विदेशोंमें सम्मान बढ़ाता है। विदेशीय नीति सफल होती है; मुखिया, सरपञ्च, प्रधानमंत्री या राष्ट्रपतिका प्रभाव स्वदेशके साथ विदेशमें भी बढ़ता है। उच्चके वृहस्पतिके वेधमें कूटनीतिमें सफलता मिलती है। योजनाएँ सफल नहीं हो पाती; आर्थिक दृष्टिसे कुछ बाधाएँ आती हैं, जिनका हल होना कठिन होता है। नीच राशिके बृहस्पतिके वेधमें देशकी आर्थिक क्षति होती है, वर्षा भी साधारण होती है तथा वैदे-

शिक व्यापारिक नीतिमें असफलता प्राप्त होती है। यों गुरुका सम्मुख और दक्षिण वेधमें समृद्धि और अभ्युदय के लिए अच्छा होता है।

शुक्र और शनिके वेधका फल

सुक्को राय-पयाणं वुड्ढिकरो जणियजणमणाणंदो।
मंदो णरवइकट्ठं दुब्भिक्खभयंकरो घोरो ॥२३॥

अर्थ—शुक्रके वेधमें राजा-प्रजाकी वृद्धि, सर्वाङ्गीण उन्नति, मनुष्योंको आनन्द और सुख प्राप्त होता है। शनिके वेधमें मनुष्य और पशुओंको कष्ट, भयंकर दुर्भिक्ष और घोर दुष्काल पड़ता है—शनिके वेधमें अनावृष्टि, अतिवृष्टि, दुर्भिक्ष और नाना प्रकारके संकट आते हैं।

विवेचन—स्वराशिके शुक्रके वेधमें देशमें समयपर यथेष्ट वर्षा, धन-धान्यकी उत्पत्ति, देशके निवासियोंको सुख-शान्ति तथा भौतिक सुखोंकी प्राप्ति होती है। इस वेधमें फसल बहुत अच्छी उत्पन्न होती है। उच्चराशिके शुक्रके वेधमें देशका प्रभुत्व बढ़ता है, विदेशोंमें देशको सम्मानित स्थान प्राप्त होता है तथा राजनैतिक नेताओंका प्रभुत्व बढ़ता है। मूलत्रिकोणके शुक्रके वेधमें देशकी आर्थिक स्थिति विकसित होती है तथा देशमें सुख शान्ति उत्पन्न होती है। जब शुक्र दक्षिणकी ओरसे वेध करता है, उस समय देशमें सभी सुखके साधन अनायास ही एकत्र हो जाते हैं तथा नर-नारियोंको सभी प्रकारका सुख मिलता है। आर्थिक स्थिति सबल होती है तथा नये-नये कर लगाये जाते हैं, जिससे साधारण जनताको कुछ कष्ट होता है; परन्तु देशकी आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी रहती है, जिससे सभीको सुख प्राप्त होता है। शासकवर्ग और नेताओंमें भी सहयोग उत्पन्न होता है। बायीं ओरसे होने वाले वेधमें देशको साधारण हानि उठानी पड़ती है, यद्यपि इस वेधमें शासकोंकी शक्ति दृढ़ होती है तथा नवीन शासकवर्ग भी आकर अपनी शक्तिको दृढ़ करते हैं। यदि किसी गाँव या नगरके साथ शुक्रका वेध हो तो उस गाँव या नगरकी भी अत्यधिक उन्नति होती है। सुव्यवस्था इतनी अच्छी होती है, जिससे वहाँ पर किसीको किसी भी तरहका कष्ट नहीं उठाना पड़ता है। शुक्र स्वभावतः शुभ ग्रह है, अतः अशुभ ग्रहोंसे युक्त या दृष्ट होने पर भी देशकी सर्वाङ्गीण उन्नतिमें शुक्र सहायक है। धनु और मीन राशिके शुक्रके वेधमें देशका आर्थिक विकास होता है तथा नवीन-नवीन योजनाएं कार्यरूप में परिणत की जाती हैं। नीच राशिके शुक्रके वेधमें देशका आर्थिक ढाँचा ढीला पड़ता है। नवीन योजनाओंको सफल या कार्यान्वित करनेका अवसर निवासियोंको कहीं मिल पाता है। उच्च राशिके शुक्रका गुरुसे संयोग होने पर देशमें पर्याप्त सुख सामग्री बढ़ती है। सिचाईका प्रबन्ध भी इसी दिशासे होता है। विधानमें परिवर्तन भी इसी दशामें होता है। शासकोंमें अनुशासनकी भावना आती है, इसीसे शासनसूत्र सुदृढ़ होता है। नागरिकोंके अधिकारोंकी वृद्धि होती है तथा उच्च अधिकारी सभी प्रकारसे आगे बढ़कर उन्नति करते हैं।

शनिका वेध देशके लिए अच्छा नहीं होता। इसमें देशके मनुष्य और पशुओंको अनेक प्रकारके रोग, उपद्रव और अनेक प्रकारके कष्ट उठाने पड़ते थे। यह वेध जिस देश या नगरमें होता है, उस नगरमें अराजकता, असन्तोष और असहयोगकी भावना उत्पन्न होती है। देशके विकासके लिए शनिका वेध अच्छा नहीं होता तथा इसमें उस देशमें नाना तरहके उपद्रव और उत्पात होते रहते हैं। जनता सर्वथा भय और आतंक से त्रस्त रहता है। यद्यपि देशमें वर्षा कम होती है, फसल भी साधारण होती है, फिर भी इस वेधमें देशका आर्थिक ढाँचा टूटने नहीं पाता। आर्थिक दृढ़ता रहनेसे ही देशके कार्योंकी विशेष प्रगति होती है। उत्तरकी ओरसे होनेवाला वेध पशुओंकी उन्नतिमें अत्यन्त बाधक है। पशुओंमें अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं,

जिससे उनकी मृत्यु होती रहती है। कलह, विसंवाद, फूट और वैर-विरोध आदि फलादेश भी इसी वेधमें उत्पन्न होते हैं।

दक्षिण या सम्मुखकी ओरसे होनेवाला शनिका वेध देशनिवासियोंके लिए सर्व प्रकारसे सुखदायक होता है। कपास, रुई और बादाम आदिकी फसलें इस दशामें अच्छी उत्पन्न होती हैं। घी, दूध और नारियलके व्यापारमें व्यवसायइयोंको अच्छी ख्याति और अच्छा धन मिलता है। देशके जो कार्य कभी भी पूरे नहीं होते हैं, वे इस प्रकारके वेधकी स्थितिमें पूर्ण हो जाते हैं। शनि अशुभ होनेपर वेधकी अवस्थामें अच्छा काम देता है। सम्मुखकी दृष्टि कार्य साधनके लिए अच्छी होती। धन-धान्यकी उत्पत्तिमें यद्यपि यह समय देशमें आर्थिक विकासमें बाधक है, तो भी देशके व्यापारमें शिथिलता नहीं आने पाती है।

शनिका वेध होनेसे दुर्भिक्ष, वर्षाका अभाव, कल-कारखानोंकी रुकावट तथा बड़े-बड़े नेताओंकी मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट भोगना पड़ता है। जब शनि अपनी मूल त्रिकोणकी राशिका होता है, उस समय इसके वेधमें देशकी धन-धान्यकी सामग्री बढ़ती है। देशमें व्यापारिक प्रगति होती है। शासक सहयोग और सहकारिताके आधारपर व्यापारिक केन्द्रोंकी स्थापना करते हैं तथा दूध देनेवाले पशुओंका व्यापार विदेशोंके साथ भी हो सकता है। इसमें जनतामें अविश्वास और असन्तोषकी भावना बढ़ती है तथा कुछ लोग देशके शासनको उलट देनेका पूर्ण प्रयास करते हैं; परन्तु ये अपने पुरुषार्थमें सफल नहीं हो पाते। उड़द, मूँग, मसूर, मौंठ और चना आदि दालवाले अनाजोंकी उत्पत्ति सामान्यतः अच्छी होती है। स्वराशिके शनिके वेधमें देशमें भयंकर अकाल पड़ता है तथा हल-चल उत्पन्न हो जाती है। अनुशासनहीनताकी प्रवृत्ति भी इसी वेधमें उत्पन्न होती है। महाजन, सेठ और पूँजीपतियोंको भी इस वेधमें कष्ट सहन करनेका अवसर मिलता है। शनिसे विद्ध देश, नगर या ग्राम अच्छा नहीं होता।

राहु और केतुके वेधका फल

राहू खप्पररज्जं धुवं विणासेइ उत्तमवहूणं।
दुप्पयपसुसंहारो अइअरित्तणासकरो केऊ ॥ २४ ॥

अर्थ—राहुका वेध खर्पर राज्यका और उत्तम वधुओंका नाश करता है और केतुका वेध मनुष्य और पशुओंका विनाश करता है। राहु वेधका फल उत्तम मनुष्योंको पीड़ा होना भी बतलाया गया है।

विवेचन—राहुका वेध जब किसी नगर, गाँव, देश या राष्ट्रके साथ होता है, तो वह उस नगर, गाँव, देश या राष्ट्रका विनाश करता है। उसके शासनमें शिथिलता आती है, नेताओंमें वैर-विरोध उत्पन्न होता है। अपनी राशिमें रहनेपर राहुका वेध देशके व्यापार, उद्योग, वृद्धि आदिके लिए अच्छा नहीं होता। उच्च राशिके राहुका वेध देशके व्यापारके लिए अच्छा माना जाता है तथा वेधकी अवस्थता भी कायम रखता है। अराजकता और उपद्रव नीच राशिके राहुके वेधमें होते हैं। यह देशको रसातलकी ओर ले जाता है। शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट राहुका वेध देशकी उन्नतिमें सहायक होता है। वर्षा समयपर होती है, फसल भी बहुत अच्छी होती है तथा देशके नाताओंका स्वास्थ्य अच्छा रहता है। परन्तु धार्मिक नेताओंको राहुके वेधमें अनेक प्रकारके कष्ट सहन करने पड़ते हैं। उत्तम सज्जन पुरुषोंको दुष्टों द्वारा अनेक तरहके दुःख दिये जाते हैं।

केतुका वेध जिस स्थानके साथ होता है, उस स्थानके पशु और मनुष्योंका विनाश, कष्ट और क्लेशकी वृद्धि, शारीरिक शक्तिकी क्षीणता, अर्थाभाव, पाखण्डका प्रचार और अन्धविश्वास बढ़ते हैं। देशका धन व्यय होता है, फसल अच्छी पैदा नहीं होती, जिससे धान्यका भाव बढ़ता जाता है। जनताको अनेक प्रकारकी पीड़ाएँ उत्पन्न होती हैं। देशकी भौगोलिक सीमाओंपर संघर्ष और युद्ध भी इसी वेधमें होता है। केतु शनिके साथ रहकर जब वेध करता है, तो उस समय देशके धनका नाश होता है। पशुओंका मरण और खण्डवृष्टि होती है। शुक्र, गुरु और बुधके साथ रहकर जब केतु वेध करता है तो देशमें साधारणतः शांति, आर्थिक विकास और नवीन योजनाओंकी कार्यरूपमें परिणति होती है। यद्यपि ये योजनाएँ सफल नहीं होती हैं। चन्द्रमाके साथ रहकर केतु जब वेध करता है तो देशका सर्वाङ्गीण विकास होता है, परन्तु नेताओंमें मनमुटाव रहनेके कारण आर्थिक अभाव बना ही रहता है। सूर्यके साथ रहकर केतु जब वेध करता है तो व्यापारके लिए अत्यन्त अशुभ होता है। जनता भूख और प्याससे त्रस्त होकर देश छोड़ देती है और अन्य देशोंकी शरण जाती है। धान्यका भाव अधिक मंहगा रहता है। सोना, चाँदी, कांसा, पीतल आदि धातुओंका भाव अधिक नहीं बढ़ता है। नवीन वैज्ञानिक अनुसन्धानों द्वारा देशकी प्रतिष्ठा विदेशों तक पहुँचती है। उच्च राशिके केतुका वेध भयकारक, अल्प धान्योत्पादक और सहयोगसूचक है। देशके केन्द्रीयकरणमें सहायक होता है।

देश, नगर और गाँवका अन्य प्रकारसे फलादेश

देसा अवरुद्धकरा सत्तुगहा हुंति सामिघुत्तकरा।
तह णरवराण पीडा गामे सेणाण णासकरा ॥ २५ ॥

अर्थ—जब देश, नगर, ग्राम शत्रु ग्रहोंके योगसे युक्त हो जाते हैं, तो वहाँके मनुष्य और पशुओंको पीड़ा होती है और ग्राममें सेनाका नाश होता है। स्वराशि अधिष्ठित ग्रहोंके वेधमें देश, नगर, गाँव और राष्ट्रके व्यक्तियोंको कष्टोंसे मुक्ति मिलती है।

विवेचन—जब शुभ और क्रूर ग्रह सम्मुख वेध करते हैं, उस समय निश्चयसे दुर्भिक्ष होता है। ग्रहोंका युद्ध हो तो राजाओंमें भी युद्ध, ग्रहोंकी वक्रतामें देशमें विभ्रम, और ग्रहोंके वेधमें सब लोगोंमें पीड़ा होती है। ज्येष्ठ महीनेमें सूर्यके साथ पाँच ग्रह हों तो श्रावणमें वर्षाका अभाव होता है तथा छत्र भंग भी होता है। शनि और मंगल सप्तमी तिथिको वक्री हों तो लोकमें हाहाकार मच जाता है तथा इसका फल दक्षिण दिशाकी ओर विशेष रूपसे घटता है। यदि शुक्रके ग्रहमें शनि, मंगल और गुरु ये तीन ग्रह हों अथवा गुरु और शुक्र इकट्ठे हों तो वर्षा अथवा युद्ध होता है। कार्त्तिक महीनेमें नवमीके दिन पाँच ग्रह एक राशिपर एकत्र हों तो असमयमें अधिक वर्षा होती है। मार्गशीर्षमें शनिके साथ पाँच ग्रह एक साथ रहें तो अधिक रोग होता है। मार्गशीर्षकी पूर्णिमाके दिन पाँच ग्रहोंका योग हो तो युद्धकी स्थिति उत्पन्न हो जाती है तथा देशमें महामारी भी फैलती है। राहु, मंगल, सूर्य और शनि ये चारों क्रूर ग्रह एक साथ हों तो ग्राम, नगर और देशके लिए अत्यन्त कष्ट होता है। बृहस्पतिसे पाँचवें स्थानमें सूर्य, मंगल, शनि और राहुका योग दुर्भिक्ष उत्पन्न करता है। यदि शनिसे पाँचवें स्थानमें राहु, केतु, मंगल और सूर्य ये चार ग्रह हों तो दुर्भिक्ष अवश्य होती है। शनि और राहुसे तीसरे स्थानमें क्रूर ग्रह हों तो सुख उत्पन्न होता है और पंचम स्थानमें क्रूर ग्रह हों तो दुःख और दुर्भिक्ष होती है। बृहस्पति, राहु, शनि और मंगल इनमेंसे कोई भी ग्रह तृतीय और पंचममें

हो तो धान्य खरीदना, बेचना चाहिये अर्थात् तृतीय भावमें अनाज खरीदनेसे लाभ होता है और पंचम भावमें बेचनेसे लाभ होता है। यदि बृहस्पतिसे सातवें, बारहवें, पाँचवें और दूसरे स्थानमें शनि, राहु, मंगल और सूर्य इनमेंसे कोई भी ग्रह हो अथवा उसकी दृष्टि हो तो देशका विनाश होता है।

मंगलकी राशिमें मेष और वृश्चिकमें कोई भी ग्रह हो तो छः महीने तक तृण और अनाज महँगे होते हैं। शुक्रकी राशिमें मंगल हो तो दो महीने तक और चन्द्रमा या सूर्य हों तो रोग और अशुभ होता है। शनि या राहु हो तो सब धान्य महँगे होते हैं तथा राजविग्रह होता है। बुधकी राशि—मिथुन और कन्यामें रवि या चन्द्रमा हों तो सब राजाओंमें विरोध होता है। शुक्रकी राशिमें—वृष और तुलामें बुध हो तो कल्याण होता है। चन्द्रमाकी राशि—कर्कमें शुक्र हो तो पाखण्डियोंकी वृद्धि तथा धान्य महँगे होते हैं। रविकी राशि—सिंहमें शुक्र हो तो पशुओंका भाव तेज होता है। बुधकी राशि—मिथुन और कन्यामें शनि या चन्द्रमा हो तो सभी प्रकारके अनाज महँगे होते हैं; देशमें अवर्षाके कारण फसल अच्छी नहीं होती। शुक्रकी राशि—वृष और तुलामें गुरु या मंगल हों तो कपास महँगा; शनिकी राशि—मकर और कुम्भमें राहु या शनि हो तो घी और अनाज दोनों ही महँगे और चन्द्रमा और सूर्य अपनी-अपनी राशिमें अथवा सूर्यकी राशिमें चन्द्रमा और चन्द्रमाकी राशिमें सूर्य हो तो सुभिक्ष और धान्य भाव सस्ता होता है। इस प्रकारकी ग्रहस्थितिमें पशुओंका विनाश, धान्यकी वृद्धि, गुड़का भाव महँगा होता है। गुरुके क्षेत्रमें शनि या राहु हो तो पशुओंका विनाश और चारेका अभाव होता है। गुरुकी राशिमें मंगल हो तो शासकोंमें विरोध, बुध हो तो बहुत वर्षा; शुक्र हो तो सुभिक्ष और शनि हो तो देशमें विग्रह, अराजकता और उत्पातकी वृद्धि होती है।

मंगलकी राशिमें राहु, मंगल, सूर्य और शुक्र हों तो छः महीने तक गुड़, कपास, घी, दूध मँहगे होते हैं। शुक्र, मंगल और चन्द्रमा हों तो मोती, पशु और शंख तेज होते हैं तथा इसी राशिमें शुक्र हो तो धान्य मँहगे होते हैं। शनिकी राशिमें चन्द्रमा और सूर्य हों तो वस्त्र मँहगे होते हैं। गुरुकी राशिमें सूर्य और मंगल हों तो देशके निवासियोंको कष्ट होता है। मंगलकी राशिमें चन्द्रमाका उदय हो तो तृण, धान्य और रसकी वृद्धि होती है। शुक्रकी राशिमें चन्द्रमाका उदय हो तो सुभिक्ष तथा धान्य भाव सस्ता होता है। रविकी राशिमें शनि, सोम और शुक्रका उदय हो तो बहुत वृद्धि होती है। चन्द्रमाकी राशिमें शुक्र, चन्द्रमा और बुधका उदय हो तो दुर्भिक्ष होती है। अतिवृष्टि होनेसे बाढ़ आती है, जिससे जनताको अनेक प्रकारके कष्ट भोगने पड़ते हैं। बुधकी राशिमें राहु और शनिका उदय हो तो पशुओंका क्षय, प्रजाको पीड़ा और धान्य मँहगे होते हैं। शुक्रकी राशिमें चन्द्रमा, सूर्य और शनिका उदय हो तो शासकोंमें संघर्ष होता है देशमें आन्तरिक संघर्ष और युद्ध भी होता है तथा अनाजका भाव मँहगा होता है। शनि राशिमें मंगल और सूर्यका उदय हो तो घी, गुड़, लाल वस्त्रकी उत्पत्ति अधिक होती है। शनिकी राशिमें शनि और शुक्रका उदय होता है तो तृण, काष्ठ और लोहेका भाव मँहगा होता है। ग्रहोंके वेधका फलादेश अवगत करनेके लिए मित्रामित्र चक्र नीचे दिया जाता है।

ग्रहोंका निसर्गमैत्रीविचार—सूर्यके मंगल, चन्द्रमा और बृहस्पति मित्र; शुक्र और शनि शत्रु एवं बुध सम हैं। चन्द्रमाके सूर्य और बुध मित्र; बृहस्पति, मंगल, शुक्र और शनि सम हैं। मंगलके सूर्य, चन्द्रमा एवं बृहस्पति मित्र; बुध शत्रु; शुक्र और शनि सम हैं। बुधके सूर्य और शुक्र मित्र; शनि, बृहस्पति और मंगल सम एवं चन्द्रमा शत्रु हैं। बृहस्पतिके सूर्य, मंगल और चन्द्रमा मित्र; शनि सम एवं शुक्र और बुध शत्रु हैं। शुक्रके शनि, बुध, मित्र; चन्द्रमा, सूर्य शत्रु; और बृहस्पति, मंगल सम हैं। शनिके सूर्य, चन्द्रमा और मंगल शत्रु; बृहस्पति सम एवं शुक्र और बुध मित्र हैं।

निसर्गमैत्रीचक्र

ग्रह	मित्र	शत्रु	उदासीन—सम
सूर्य	चन्द्र, मंगल, गुरु	शुक्र, शनि	बुध
चन्द्र	रवि, बुध	×	गुरु, मंगल, चन्द्र, शनि
मंगल	रवि, चन्द्र, गुरु	बुध	शुक्र, शनि
बुध	सूर्य, शुक्र	चंद्र	शनि, गुरु, मंगल
बृहस्पति	सूर्य, मंगल, चंद्र	शुक्र, बुध,	शनि
शुक्र	शनि, बुध	सूर्य, चन्द्र	गुरु, मंगल
शनि	शुक्र, बुध	सूर्य, चंद्र, मंगल	गुरु

तात्कालिक मैत्री-विचार—जो ग्रह जिस स्थान पर रहता है, वह उससे दूसरे, तीसरे, चौथे, दसवें, ग्यारहवें और बारहवें भावके ग्रहोंके साथ मित्रता रखता है—तात्कालिक मित्र होता है और अन्य स्थानोंमें १, ५, ६, ७, ८, ९ के ग्रह शत्रु होते हैं।

देश, नगर, गाँव और राष्ट्रका फलादेश जाननेके लिए ग्रहोंके वेधका शुभाशुभ फल मित्र और शत्रुओं-का विचार कर ही निर्णय करना चाहिये।

वेधका विशेष फल

अक्कजराहू मिलिया कत्तरिजोगेण एगससिट्ठिया ।
जं जं णक्खत्तं वेधइ तत्थेव करेइ संहारो ॥ २६ ॥

अर्थ—कर्त्तरीयोगसे शनि, राहु मिल जायें और साथमें चन्द्रमा भी हो, इस स्थितिमें जिस-जिस गाँव, नगर, देशके नक्षत्रको वेधते हैं, उस-उस गाँव, नगर और देशका विनाश होता है।

विवेचन—ग्रहोंका बलाबल जाननेके लिए उनकी आठ अवस्थाएँ मानी गयी हैं—दीप्त, स्वस्थ, हर्षित, शान्त, शक्त, लुप्त, दीन और पीड़ित। ग्रह अपनी उच्च राशिमें दीप्त, अपनी राशिमें स्वस्थ, मित्रकी राशिमें हर्षित, शुभ ग्रहके वर्गमें शान्त, षड्बल या षोड़शवर्गमें गणितागत ग्रह शक्त, रविसे युक्त ग्रह लुप्त, अपनी नीच राशिमें दीन और पापग्रह तथा शत्रुग्रहकी राशिमें पीड़ित होता है। जो ग्रह दीप्त, स्वस्थ, हर्षित, शान्त और शक्त अवस्थाओंका होता है वही उत्तम माना जाता है। वेध करनेवाला ग्रह जिस अवस्थाका होता है, फलादेश वैसा ही अवगत करना चाहिये। यदि वेध करनेवाला ग्रह हर्षित, शान्त और दीप्त अवस्थाका होता है तो जिस स्थानका वेध कर रहा है, उस स्थानपर सुख-समृद्धि होती है। व्यापारमें लाभ होता है, देशको अनेकानेक श्रेष्ठ वस्तुएँ स्वतः प्राप्त हो जाती हैं। धन-धान्यकी वृद्धि होती है, समय पर वर्षा होती है। अशुभ ग्रहका वेध होनेपर नाना तरहके कष्ट और झंझट आते हैं।

जिस समय राहु और शनिमें कर्त्तरियोग हो अर्थात्—राहुसे शनि दूसरे या बारहवें भावमें स्थित हो अथवा शनिसे राहु दूसरे या बारहवें भावमें पड़ता हो तो यह कर्त्तरियोग कहलाता है। इस योगके रहनेपर चन्द्रमा भी राहु या शनिके साथमें हो तो ये ग्रह जिस गाँव या नगरके नक्षत्रका वेध करते हैं, उस गाँव या नगरके मनुष्य और पशुओंका नाश होता है अथवा चन्द्रमासे दूसरे शनि और बारहवें राहु हो या चन्द्रमासे दूसरे राहु और बारहवें शनि हो तो शनि और राहुसे जिस-जिस नगर या गाँवका नक्षत्र वेधा जाता है, उस-उस नगर और गाँवका विनाश होता है। वहाँ शृगाल, कुत्ते और भेड़िये निवास करते हैं।

कृत्तिका नक्षत्रसे किसी ग्रहका वेध हो तो चावल, जौ, मणि, हीरा, धातु, तिलका वेध माना जाता है अर्थात् शुभ-ग्रहसे वेध होनेपर ये वस्तुएँ सस्ती होती हैं और पर्याप्त मात्रामें उत्पन्न भी होती हैं; किन्तु आठ महीने तक दक्षिण दिशामें दुःख रहता है। रोहिणीमें वेध हो तो सब प्रकारके धान्य, रस, ऊनी वस्त्र आदिका वेध माना जाता है। यदि शुभ ग्रहसे वेध हो तो ये वस्तुएँ सस्ती होती हैं और इनकी उत्पत्ति भी अधिक होती है। किन्तु पूर्व दिशामें सात दिन तक भय, आतंक और दुःख व्याप्त रहता है। आपसमें वैर-विरोध बढ़ता है और अराजकता भी फैलती है।

मृगशिरसे किसी ग्रहका वेध हो तो घोड़ा, भैंस, गौ, लाख, कोद्रव, गधा, रत्न, सुपाड़ी और जौका वेध माना जाता है। ये वस्तुएँ भी ग्रहोंकी स्थितिके अनुसार सस्ती या महँगी होती हैं; परन्तु उत्तर दिशामें आठ दिनतक पीड़ा होती रहती है। आर्द्रासे किसी भी ग्रहका वेध हो तो तेल, लवण, क्षार, रस, चन्दन आदि सुगन्धित वस्तुओंका वेध माना जाता है। इन वस्तुओंकी स्थिति और भाव भी ग्रहोंके शुभाशुभत्वके अनुसार समझना चाहिये। इस वेधमें पश्चिम दिशामें एक महीनातक कष्ट उठाना पड़ता है। पुनर्वसुसे किसी ग्रहका वेध हो तो सोना, कपास, रूई, ज्वार, रेशमी वस्त्र और सूती वस्त्रका वेध माना जाता है। इन वस्तुओं-की अवस्थाओं और भावको ग्रहोंके बलाबलानुसार अवगत करना चाहिये। यह वेध उत्तर दिशाके लिए अशुभ और भयकारक है। पुष्य नक्षत्रसे किसी ग्रहका वेध हो तो सोना, घी, चाँदी, चावल, लवण, सरसों, तेल, हींग, जीरा, धनिया आदि वस्तुओंके साथ वेध माना जाता है। इन वस्तुओंकी उपज और भाव वेध करने-वाले ग्रहके स्वभाव, गुण, बल और अवस्थाके अनुसार अवगत करना चाहिये। यह वेध दक्षिण दिशाके लिए अशुभ होता है। आश्लेष नक्षत्रसे किसी ग्रहका वेध हो तो गेहूँ, सोंठ, मिर्च, कोदों और चावलके साथ वेध होता है, इस वेधमें पश्चिम दिशामें एक मासतक दुःख रहता है। मघासे किसी ग्रहका वेध हो तो तिल, तेल, घी, पुवाल, चना, अलसी, मूंग, कांगुके साथ; पूर्वाफाल्गुनीसे वेध हो तो कंबल, रेशमी वस्त्र, ज्वार, तिल, चाँदी और रूईके साथ; उत्तराफाल्गुनीमें उड़द, मूंग, चावल, कोद्रव, नमक, सज्जी और सोड़ाके साथ; हस्तमें चन्दन, कपूर, देवदार, अगर, रक्तचन्दन, कंद आदि वस्तुओंके साथ; चित्रामें सोना, रत्न, मूँग, उड़द, मूंगा, घोड़ा, हाथी, मोटर, आदिके साथ; स्वातिमें सुपाड़ी, मिर्च, सरसों, तैल, राई, हींग, खर्जूर, छोहारा आदि वस्तुओंके साथ; विशाखामें जौ, चावल, गेहूँ, मूंग, राई, मसूर, मैथी आदि वस्तुओंके साथ; अनुराधामें अरहर, अन्य विद्दल, चावल, मूंग, कंगु आदिके साथ; ज्येष्ठामें गुग्गुल, गुड़, ईख, लाख, कपूर, पारा, हींग, कोसा आदि वस्तुओंके साथ; मूलमें श्वेत वस्तु, रस, धान्य, सैंधा नमक, कपास आदि वस्तुओंके साथ; पूर्वाषाढ़ामें अंजन, तुष, धान्य, घी, कंदमूल, चावल आदि वस्तुओंके साथ; उत्तराषाढ़ामें घोड़ा, बैल, हाथी, लोहा आदि वस्तुओंके साथ; अभिजित्में द्राक्षा, खर्जूर, सुपाड़ी, इलायची, मूंग, जायफल और घोड़ा आदि सवारीके साथ; श्रवणमें अखरोट, चिरौंजी, पीपल, सुपाड़ी, जौ, तुष, धान्य आदिके साथ; धनिष्ठामें सोना, चाँदी, पीतल, कांसा, ताँबा आदि धातुएँ, मणि, रत्न और मोती आदिके साथ; शतभिषामें तेल, कोद्रव, आवला, मद्य, आदि वस्तुओंके साथ; पूर्वाभाद्रपदमें प्रियंगु, जायफल, जावित्री, कस्तूरी, केसर, देवदारु

और सभी प्रकारकी औषधियाँ आदिके साथ; उत्तराभाद्रपदमें गुड़, चीनी, खली, मिश्री, तैल, तिल, चावल, घी, मणि आदिके साथ; रेवतीमें श्रीफल, नारियल, मोती, मणि आदि वस्तुओंके साथ; अश्विनीमें चावल, ऊँट, घी, गेहूं, ज्वार आदि वस्तुओंके साथ एवं भरणीमें तुष, धान्य, ज्वार, मिर्च और औषधियोंके साथ वेध होता है। इन वेधोंका फलादेश ग्रहोंके बलाबल और शुभाशुभत्वके अनुसार अवगत करना चाहिये।

वेध द्वारा वस्तुओंका मूल्य, भाव आदिका भी निर्णय किया जा सकता है। सबसे प्रथम योग्य देश, काल और पण्य इन तीनोंके वेधका विचार करना चाहिये। देशके तीन भेद हैं—देश, मंडल और स्थान। कालके भी तीन भेद हैं—वर्ष, मास और दिन। पण्यके भी तीन ही भेद बताये गये हैं–धातु, मूल और जीव।

देशके स्वामी राहु, शनि और बृहस्पति हैं। मंडलके स्वामी केतु, सूर्य और शुक्र हैं तथा स्थानके स्वामी चन्द्रमा, मंगल और बुध हैं। वर्षके स्वामी राहु, केतु, शनि और बृहस्पति हैं। महीनेके स्वामी मंगल, सूर्य, शुक्र और बुध हैं तथा दिनका स्वामी चन्द्रमा है। धातुके स्वामी शनि, राहु और मंगल हैं; जीवके स्वामी बुध, चन्द्रमा और बृहस्पति हैं तथा मूलके स्वामी केतु, शुक्र और सूर्य हैं। राहु, केतु, सूर्य बृहस्पति और मंगल ये पुरुषसंज्ञक; शुक्र और चन्द्रमा स्त्रीसंज्ञक एवं शनि और बुध नपुंसकसंज्ञक हैं। श्वेत वर्णके स्वामी शुक्र और चन्द्रमा, रक्तवर्णके स्वामी मंगल और सूर्य; पीतवर्णके स्वामी बुध और गुरु एवं कृष्णवर्णके स्वामी केतु, राहु और शनि हैं।

ऊपर जो देश आदिके स्वामी ग्रह बतलाये गये हैं, उनमेंसे जो ग्रह, वक्र, उदय, उच्च और क्षेत्र इन चारों प्रकारके बलोंमेंसे जो अधिक बलवाला होता है, वह बलवान् माना जाता है। ग्रह अपनी राशिपर हो तो पूर्ण, मित्रकी राशिपर हो तो तीन चौथाई, समग्रहकी राशिपर आधा और शत्रु ग्रहकी राशिपर चतुर्थांश बलवान माना जाता है।

जितने दिन ग्रह वक्री या उदय रहे, उसका आधा समय बीत जानेपर वक्री या उदयका मध्यफल होता है। इस समय ग्रह पूर्व बलवान् माना जाता है। इस मध्यकालसे जितना आगे या पीछे रहे उतना न्यून बल त्रैराशिकसे निकाल लेना चाहिये।

ग्रह उच्च राशिमें परमउच्च अंशपर पूर्ण बली तथा नीच राशिमें परम नीच, मेषपर हीनबली होता है। इन दोनोंके मध्यका त्रैराशिक द्वारा गणितसे निकाल लेना चाहिये।

इस प्रकार जो देश आदिके स्वामी हैं, वे ग्रह अपने-अपने देश आदिको वेधनेवाले ग्रहके स्वामी, मित्र, शत्रु या सम हैं, इसपरसे यत्नपूर्वक विचार करना चाहिये। देश आदिका वेध करनेवाला ग्रह अशुभ हो तो अशुभ फल, स्वयं वेध करनेवाला हो तो चतुर्थांश फल, वेधकर्त्ता मित्र ग्रह हो तो आधा फल, समान ग्रह हो तो तीन चौथाई और शत्रु ग्रह हो तो पूर्णफल प्राप्त होता है। देश आदिका वेध करनेवाला ग्रह शुभ हो तो शुभ फल देता है। स्वामी स्वयं वेधकर्त्ता हो तो पूर्णफल, मित्र ग्रह हो तो तीन-चौथाई फल, समग्रह हो तो आधा फल और शत्रुग्रह हो तो चौथाई फल होता है। वेधकर्त्ता ग्रह परिपूर्ण दृष्टिसे देखे तो उसीके अनुसार फल अवगत करना चाहिये।

मेषादि द्वादश राशि चक्रमें वेधकर्त्ताकी दृष्टि जिस वर्ण, स्वर आदिकी राशिपर हो तो वह दृष्टि उसके वर्ण, स्वर आदिपर भी मानी जाती है। सर्वतोभद्र चक्रमें स्वर और वर्णकी तिथिका वेध होनेसे स्वर और वर्ण भी बेधे जाते हैं और उन तिथिवर्णोंकी राशिपर वेध हो तो उन तिथि स्वर और वर्णपर भी दृष्टि होती है। वेधकर्त्ता ग्रह चाहे अशुभ हो या शुभ परन्तु तिथिको शुक्लपक्षमें वेधे तो पूर्वोक्त वेधफल जितना हो उतना पूर्व

फल देता है और कृष्णपक्षमें वेधे तो आधा फल देता है। अपने-अपने अंशोमें ग्रहकी पूर्ण दृष्टि समझनी चाहिये। वेधकर्ता ग्रहकी दृष्टि न हो और केवल वेध ही हो तो कुछ भी शुभाशुभ फल नहीं होता।

यदि वेधकर्ता ग्रह वर्ण आदि पांचोंको पूर्व दृष्टिसे देखे और वेधे तो शुभ-ग्रह पांच विश्वा और क्रूर ग्रह चार विश्वा फल देते हैं। वर्ण, स्वर, तिथि, नक्षत्र और राशि इन पांचोंमें वेधकर्ता ग्रहकी जितने पाद दृष्टि हो उसके अनुसार ग्रहोंके विश्वे कहना चाहिये। इस प्रकार जहां शुभ और अशुभ दोनों प्रकारके ग्रहोंके विश्वे प्राप्त हों, वहां उन दोनोंका परस्पर अन्तर करें, इसमें शेष शुभग्रहोंके विश्वा रहें तो शुभ फल और क्रूर ग्रहोंके रहें तो अशुभ फल जानना चाहिये। जिस वस्तुका वेध द्वारा निर्णय करना हो उस वस्तुका उस समय जो भाव हो उसके बीस् विश्वे अर्थात् बीस भाग कल्पना करे, उनमेंसे एक भाग तुल्य विश्वे मानकर पूर्वोक्ति क्रमसे प्राप्त शेष विश्वोंको, शुभ ग्रहके हों तो उसमें जोड़ दे और क्रूर ग्रहके हों तो घटा दें। ऐसा करनेसे यदि बीससे जितने अधिक हों, उतने विश्वे वस्तु मन्दी और जितने न्यून हों, उतने विश्वे वस्तु महंगी होती हैं। तात्पर्य यह है कि वस्तुके विश्वे बढ़े तो वस्तुकी वृद्धि और मूल्यकी हानि एवं विश्वे घटें तो वस्तुकी हानि और मूल्य-की वृद्धि होती है।

सर्वतोभद्र चक्रके अलावा सप्तशलाका चक्रसे भी तेजी मंदी, देशका सुभिक्ष दुर्भिक्ष, वर्षा-अवर्षा आदि-का ज्ञान किया जा सकता है।

सप्त शलाका चक्र बनाकर उसपर कृत्तिकासे लेकर अभिजित् सहित भरणी तक २८ नक्षत्र रखकर वेध का विचार करना चाहिये। तथा जो जो ग्रह जिस-जिस नक्षत्रपर हो, उसे भी स्थापित कर देना चाहिये। एक एक शलाकामें आमने-सामने कोई भी दो ग्रहके आनेसे वेध होता है। किन्तु रविसे शनि और चन्द्रसे बुधका वेध नहीं होता।

(चन्द्रमा) सप्तशलाका चक्र

उदाहरण—भरणी नक्षत्रपर रवि, शुक्र हैं और मघापर गुरु है, अतः इनका परस्पर वेध हुआ माना जायगा। मृगशिरापर चन्द्रमा है और उत्तराषाढ़ापर शनि है, अतः इन दोनोंका भी परस्पर वेध माना जायगा। वस्तुके स्वामीका वेध यदि शुभ ग्रहसे हो तो भाव मन्दा; रवि-मंगलसे हो तेज; शनि-केतुसे अधिक घट-बढ़ एवं राहुसे सम रहता है।

देश, नगर, ग्रामके नक्षत्रानुसार राशि ज्ञातकर उसके स्वामीके वेधसे शुभाशुभ फल अवगत करना चाहिये। नगर, ग्राम या देशका स्वामी शुभग्रहसे विद्ध हो तो उस नगर या ग्रामका कल्याण और क्रूर ग्रहसे विद्ध हो तो कष्ट होता है। नाना प्रकारकी विपत्तियाँ आती हैं। प्रमुख-प्रमुख वस्तुओंके स्वामियोंकी तालिका दी जाती है।

गेहूँ, जूट, सन, लकड़ी आदिका स्वामी सूर्य; औषधि, ज्वार, चावल, चाँदी, घी, नमक, मोती, जवाहिरात, चीनी, कपास, रूई तथा कपड़ोंके स्वामी चन्द्र और शुक्र; अलसी, तम्बाकू, गुड़, मिरच, लाल वस्त्र तथा ताँबेका स्वामी मंगल; हरे धान्य, फल, फूल, शेयर, नोट, हुण्डी, निबन्ध, लेख, कागजात और पुस्तकका स्वामी बुध; हलदी, सुवर्ण, मधुर रस और चनाका स्वामी गुरु; एवं बिनोला, तिल, मूंगफली, अफीम, खशखश, लोहा और पत्थरका स्वामी शनि होता है। जिन वस्तुओंकी तेजी-मन्दी जाननी हो उनके स्वामीका निर्णय प्रायः उनके रंग और गुणसे करना चाहिये। राशि प्रथम अक्षरसे जाननी चाहिये।

शनि और राहुके साथ मंगल और रविसंयोगका फल

अंगारो अग्गिकरो अण्णविणासो य जंतुपीलयरो।
तत्थ विदिसाविभागे दुक्खं वणियाण णिवमरणं ॥ २७ ॥

अर्थ—राहु या शनिके साथ मंगल संयुक्त हो तो अग्निका भय होता है तथा राहु या शनिके साथ सूर्य हो तो अन्नका नाश होता है और प्राणियोंको पीडा होती है। इस योगसे विदिशाओंमें व्यापारियोंको दुःख और राजाओंका मरण होता है।

तिथियोंपरसे समय-कुसमयका विचार

तिहिक्खयो सियपक्खे भद्दवयपोसमाहमासाणं।
णिवमरणं दुब्भिक्खं विहिकुलहाणिं च मासेसु ॥ २८ ॥

अर्थ—भाद्रपद, पौष और माघ महीनेमें शुक्लपक्षमें तिथिका क्षय होना—घटना राजाका मरण, दुर्भिक्ष, विधिकुल—ब्रह्मवंशकी हानि आदि फलोंको उत्पन्न करता है।

विवेचन—वर्षका शुभाशुभ जाननेके लिए ज्योतिष शास्त्रमें तिथिक्षय, तिथिवृद्धि और तिथियोंके साथ वारके सम्बन्धका विचार किया गया है।

चैत्र शुक्ला अष्टमीके दिन बुधवार या मंगलवार हो तो वर्षा नहीं होती है अथवा अत्यल्प वर्षा होती है। चैत्र शुक्ल पञ्चमीको रोहिणी नक्षत्र हो तथा आकाश बादलोंसे आच्छादित हो तो वर्षा अच्छी होती है। फसल भी अच्छी होती है। चैत्र शुक्ला द्वितीयाको चारों दिशाओंमें वायु चले और बादल न हों तो अनावृष्टि होती है। चैत्र शुक्ला पूर्णमासीके दिन स्वाति नक्षत्र हो और बादलोंके साथ बिजली भी चमके तो खण्डवृष्टि होती है। शासकोंमें विरोध होता है तथा प्रजाको अनेक प्रकारके कष्ट उठाने पड़ते हैं। चैत्र शुक्ल पक्षमें द्वितीया, पंचमी या दसमीका अभाव हो तो देशमें उपद्रव होता है, अन्नभाव सस्ता होता है।

वैशाखमासके कृष्णपक्षमें प्रतिपदाकी वृद्धि हो तो धान्यका विनाश और नक्षत्रकी वृद्धि हो तो खूब वर्षा होती है। वैशाख कृष्णा पंचमीके दिन रविवार हो तो आगामी वर्ष संक्रान्तिके दिन वर्षा नहीं होती है। वैशाख शुक्ला पंचमीके दिन शनिवार और आर्द्रा नक्षत्र हो तो सब वस्तुएँ सस्ती होती हैं और भाद्रपदमें खूब वर्षा होती है। वैशाख शुक्ला पंचमीको रविवार, सोमवार आदि जो भी वार पड़े उसके अनुसार क्रमशः मन्दवृष्टि, अतिवृष्टि, युद्ध, वायु, सुभिक्ष, कलह और अनाजका नाश होता है। वैशाख शुक्ला सप्तमीको धनिष्ठा या श्रवण नक्षत्र हो तो काली वस्तु महँगी और सफेद वस्तु सस्ती होती हैं। अक्षय तृतीयाके दिन रोहिणी नक्षत्र हो तो सुभिक्ष, कृत्तिका हो तो मध्यम वर्षा और मृगशिर नक्षत्र हो तो दुष्काल पड़ता है। वैशाख मास-में यदि पाँच मंगल हों तो सर्वत्र भय, वर्षाका अभाव और धान्य भाव तेज होता हैं। वैशाख शुक्ला अष्टमी-को शनिवार हो तो सूखा, प्रजाका नाश और छत्रभंग होता है। वैशाखमासकी नवमी मंगलवारको रोहिणी, तीनों उत्तरा, मघा या रेवती नक्षत्र हो तो पृथ्वीपर नाना प्रकारके उपद्रव होते हैं। वैशाख चतुर्दशीके दिन गुरुवार या शुक्रवार हो तो पृथ्वीपर खूब धान्य पैदा होता हैं। वैशाखकी अमावस्याको रेवती नक्षत्र हो तो सुभिक्ष, रोहिणी हो तो दु.ख; अश्विनी हो तो मध्यम, भरणी हो तो कष्ट, कृत्तिका हो तो जलवर्षा, लूट-खसोट एवं आर्द्रा हो तो भयंकर दुष्काल पड़ता हैं। अक्षय तृतीयाके दिन गुरुवार और रोहिणी नक्षत्र हो तो सभी प्रकार धान्य खूब उत्पन्न होते हैं, भाव भी इनका सस्ता रहता है।

जेष्ठ मासके प्रथम पक्षकी प्रतिपदा रविवारको हो, तो पवन अधिक चले, मंगलवारकी हो तो व्याधि करे, बुधवारकी हो तो दुर्भिक्ष और खण्ड वर्षा, गुरु या शुक्रवारकी हो तो धन-धान्यकी पूर्णता और शनिवारकी हो तो जलका अभाव, प्रजाको कष्ट एवं छत्रभंग होता है। ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया और तृतीया आर्द्रा नक्षत्र युक्त हो तो बड़ा दुर्भिक्ष, प्रजाको कष्ट एवं धान्य भाव मँहगा होता है। ज्येष्ठ कृष्ण दशमीको रेवती नक्षत्र हो तो सुखकारक, एकादशीको हो तो खण्डवृष्टि, द्वादशीको हो तो कष्टदायक है। ज्येष्ठ शुक्ला दशमी शनिवारको हो तो वर्षाका निरोध, गायोंका विनाश, प्रजाको शोक और व्याकुलता होती है। ज्येष्ठ पूर्णिमाके दिन मूल नक्षत्र आ जाय तो सर्वत्र धन-धान्यकी वृद्धि एवं जलकी वर्षा होती है। देशके नवीन उत्थानके लिए नयी-नयी योजनाएँ बनाई जाती हैं।

आषाढ़ शुक्ला प्रतिपदाके दिन पुनर्वसु नक्षत्र जितनी घटी हो उतने ही प्रमाण वर्षा हो, १५ घटी रहनेसे एक मास, ३० घटी होनेसे दो मास, ४५ घटी होने पर तीन मास और ६० घटी प्रमाण होने पर चार मास वर्षा होती है। आषाढ़ कृष्ण दशमीके दिन रोहिणी नक्षत्र हो तो सुभिक्ष, एकादशीको हो तो मध्यम और द्वादशीको हो तो दुर्भिक्ष होता है। त्रयोदशीके दिन रोहिणी हो तो पवन चले और चतुर्दशीको हो तो राजयुद्ध, प्रजाको शोक एवं फसलकी कमी होती हैं। आषाढ़ शुक्ला पञ्चमीको रविवार आदिमेंसे जो वार हो उसके अनुसार क्रमशः वर्षा, अच्छी वर्षा, अति वर्षा, उर्ध्ववायु, प्रघात, प्रलय और विनाश ये फल होते हैं। आषाढ़ शुक्ला नवमी शनिवारको अनुराधा नक्षत्र हो तो क्वचित् धान्याभाव और धान्योत्पत्ति होती है। आषाढ़के प्रथम पक्षमें प्रतिपदादि तीन तिथियोंमें श्रवण, धनिष्ठा नक्षत्र हो तो धान्य संग्रह करना अच्छा है, लाभ होता है। आषाढ कृष्ण षष्ठीको शनिवार हो तो गेहूँ खरीदनेसे कार्तिकमें दूना लाभ होता है। आषाढ़में अष्टमी शनिवारको रेवती नक्षत्र हो तो वर्षा न हो और बड़ा कष्ट हो। आषाढ़ शुक्ल एकादशीको शनिवार हो तो फसलको चूहोंका उपद्रव, रविवार हो तो टिड्डीका उपद्रव और मंगल हो तो अन्य नाना प्रकारके उपद्रव होते हैं। धान्यका भाव मँहगा होता है और दुष्काल पड़ता है। आषाढ़ शुक्ला एकादशीको सोम, गुरु या शुक्र हो तो खूब जलकी वर्षा, सुभिक्ष और पृथ्वी धन-धान्यसे पूर्ण होती है। आषाढ़ मासमें कर्क संक्रान्तिके दिन शनिवार हो तो दुर्भिक्ष और धान्य भाव मँहगा होता है। चतुर्दशीके दिन सोमवार हो तो धान्य और तृणका

अभाव होता है। आषाढ़ी पूर्णिमाके दिन पूर्वाषाढ़ा नक्षत्रके होने पर देशमें सुभिक्ष, मांगलिक कार्योंकी सम्पन्नता; मूल नक्षत्र होने पर दुर्भिक्ष, रसका अभाव और उत्तराषाढ़ा होने पर दुष्काल होता है।

श्रावण कृष्णा प्रतिपदाके दिन गुरुवार हो तो मूँग, उड़द, तिल और तैल महंगे होते हैं। श्रावणकी नवमी शनिवारके दिन हो तो संताप, देशमें उपद्रव और अराजकता बढ़ती है। श्रावणमासमें दसमी शनिवार-के दिन सिंह संक्रान्ति हो तो पृथ्वी मेघोंसे दुःखी, वर्षाकी अधिकता होती है। श्रावण कृष्णा एकादशीके दिन कृत्तिका नक्षत्र हो तो मध्यम वर्षा, रोहिणी हो तो सुभिक्ष और मृगशिरा हो तो दुर्भिक्ष होती है। श्रावण शुक्लपक्षमें किसी तिथिका क्षय हो तो कार्तिक मासमें निश्चय छत्रभंग होता है। श्रावण कृष्णा प्रतिपदाके दिन धृति योग हो तो धान्यका संग्रह करना उचित है और अवशेष योगोंके होनेपर विक्रय करना उचित है। श्रावण या भाद्रपदके कृष्णपक्षकी प्रतिपदाके दिन श्रवण या धनिष्ठा नक्षत्र हो तो लोकमें निश्चय सुभिक्ष होती है। इस महीनेकी कृष्णा द्वादशीके दिन मघा या तीनों उत्तरामेंसे कोई नक्षत्र हो और वर्षाका योग हो तो अलना जल वर्षा होती है। त्रयोदशीके दिन रविवार और रेवती नक्षत्र हो तो देशमें धन-धान्यकी खूब उत्पत्ति होती है, प्रजा सुखी रहती हैं तथा ऐश्वर्यकी वृद्धि होती है। श्रावण कृष्णा सप्तमीके दिन सोमवार हो तो पृथ्वी जलसे पूर्ण, व्यापारकी उन्नति एवं रस-धान्यकी उत्पत्ति होती है। श्रावण कृष्णा चतुर्दशी आर्द्रा नक्षत्रसे युक्त हो तो धान्यका संग्रह करना उचित है। अमावस्याके दिन विशाखा आदि आठ नक्षत्रोंमेंसे कोई नक्षत्र हो तो दुर्भिक्ष, शतभिषा आदि ग्यारह नक्षत्रोंमेंसे कोई नक्षत्र हो तो शुभ और पुष्यादि चार नक्षत्रोंमेंसे कोई नक्षत्र हो तो वर्ष मध्यम होता है। इस दिन कृत्तिका नक्षत्र हो तो ईति उपद्रव होता है। आर्द्रा, शत-भिषा, चित्रा, स्वाति, कृत्तिका और भरणी इन नक्षत्रोंमें यदि अमावस्या आ जाय और नक्षत्रके प्रमाणसे तिथिके घटी-पल कम हों तो अन्न संचय करनेसे लाभ होता है। श्रावण पूर्णिमाको स्वाति नक्षत्र हो तो सुभिक्ष, धन-धान्यकी वृद्धि और देशके व्यापारकी वृद्धि होती है।

भाद्रपद कृष्णा प्रतिपदाके दिन गुरुवार और श्रवण नक्षत्र हो तो सुभिक्ष, समयपर यथेष्ट वर्षा, एवं धन-धान्यकी वृद्धि होती है। भाद्रपद कृष्णा अष्टमीको रोहिणी नक्षत्र हो तो शुभ फल, शुक्लपक्षमें नवमीको रविवार और मूल नक्षत्र हो तो भय, आतंक और अकाल पड़ता है। भाद्रपद कृष्णा द्वितीया सोमवारको हो तो धान्यकी प्राप्ति और पशुओंकी वृद्धि; चतुर्थी शनिवारको हो तो देशभंग और दुर्भिक्ष एवं अष्टमी शनिवार और अश्लेषा नक्षत्रमें पड़े तो वर्षाका अभाव होता है। भाद्रपद शुक्ला चतुर्थीको बृहस्पति, शुक्र या सोमवार पड़े और साथ ही उत्तराफाल्गुनी, हस्त या चित्रा नक्षत्र हो तो निश्चय ही सुभिक्ष, समयपर वर्षा, शान्ति और धान्यभाव सस्ता होता है। भाद्रपद तृतीयाके दिन मंगलवार और उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र हो तो आकाशमें केवल बादल दिखलायी पड़ते हैं; वर्षा नहीं होती। भाद्रपदकी अमावस्याको रविवार हो तो घी महंगे हों, मंगल या बुधवार हों तो धान्य महँगे और शनिवार हो तो तैल महँगे होते हैं। गुरुवार हो तो अच्छी वर्षा, सुभिक्ष, कल्याण, दुःखका नाश, प्रजा सुखी और आरोग्यता होती है। अमावस्याके दिन शुक्रवार हो तो उन्नत मेघ, कृषिमें उन्नति और चोरोंका उपद्रव होता है।

आश्विन शुक्ला प्रतिप्रदाको शनिवार हो तो धानका संग्रह करना अच्छा होता है। आगे धान्य भाव महँगा होता है। शुक्ल द्वितीया सोमवार और मूल नक्षत्रमें पड़े तो भी धान्यका संग्रह करना लाभदायक होता है। तृतीयाके दिन मंगल या शनिवार हो तो पृथ्वीपर गर्मी प्रबल पड़ती है, दूसरे बार हों तो धान्य भाव सस्ता होता है। चतुर्थीको रविवार हो तो घी बेचना और अनाज खरीदना लाभदायक होता है। आश्विन शुक्ला सप्तमी शनिवारको श्रवण या धनिष्ठा नक्षत्र हो तो जगत्में सुख और शान्ति होती है। विदेशोंसे

मैत्री भाव स्थापित होता है। शुक्ला अष्टमीको बुधवार और नवमीको मंगलवार हो तो घी, मूँग, कपास, उड़द आदिका खरीदना अच्छा होता है। आश्विन शुक्ला एकादशीको शनिवार हो तो चोरोंका उपद्रव, छत्र-भंग और अनेक प्रकारका उत्पात होता है।

कार्त्तिक शुक्ला प्रतिपदाको बुधवार हो तो कहीं वर्षा और कहीं अनावृष्टिके कारण वर्ष मध्यम फल-दायक होता है। कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा बुधवार हो तो धान्यका भाव दूना, तिगुना और चौगुना भाव होता है। कार्तिक शुक्ला सप्तमीको शनिवार हो तो धान्यका विनाश और श्वेत वस्तु महँगी हो और तीन मासमें दुगुना लाभ हो। कार्तिकमें रविवार आर्द्राका योग हो तो राजाओंमें युद्ध, देशमें अशान्ति तथा रविवार और रोहिणीका योग हो तो आगे वर्षाका रोध होता है। कार्तिक पंचमीको आर्द्रा हो तो तृणका संग्रह करना उचित होता है। कार्तिकमें मंगलवारको मूल नक्षत्र हो तो मांगलिक कार्योंके अनुकूल नहीं होता। कृष्णा सप्तमीको शनिवार हो तो अन्न महँगा होता है। कार्तिक कृष्णा दशमी शनिवारको हो तो रोग, शोककी वृद्धि, एवं शनिवार और मघा नक्षत्र हो तो घी और सुपाड़ी महँगें होते हैं। कार्तिककी अमावस्याको यदि शनिवार हो तो धान्यका विनाश, मंगलवार हो तो पृथ्वीपर अग्निका उपद्रव, रविवार हो तो राजाओंमें युद्ध होता है।

मार्गशीर्ष चतुर्थीको रेवती नक्षत्रके दिन मंगलवार हो तो प्रत्येक गाँवमें अग्निभय और जगत्में क्लेश होता है। मार्गशीर्ष द्वादशीको मंगलवार हो और इस दिन सूर्यसंक्रान्ति हो तो अगला वर्ष अत्यन्त अशुभ-कारक होता है। पंचमीको गुरुवार हो तो पाँच मास सुभिक्ष, प्रतिपदाको पुष्य नक्षत्र हो तो पशुओंको कष्ट और अगले वर्षमें वर्षाका अभाव; तृतीयाको पुनर्वसु तथा आर्द्रा नक्षत्र हो तो धान्य सस्ते और राजा प्रजा प्रसन्न रहते हैं। इस महीनेमें शुक्लपक्षमें चतुर्थी और अष्टमीका क्षय होना और वृद्धिका होना अशान्तिकारक है।

पौष शुक्ला चतुर्थीको शनिवार हो तो तीन मास दुःख रहता है। पौष सप्तमी सोमवारको हो तो भैंसोंको रोग उत्पन्न होता है। पौष नवमीको शनिवार हो तो जब तक सूर्य आर्द्रामें न आवे तब तक धान्य संग्रह करना उचित है। पौष शुक्ला एकादशीको कृत्तिका हो तो लाल वस्तुओंके व्यापारमें अच्छा लाभ होता है। पौष अमावस्याको पूर्वाषाढ़ा तथा ज्येष्ठा नक्षत्र हो और शनि, रवि या मंगलवार हो तो अगले वर्षके लिये अशुभ सूचक है। पौष पूर्णिमाको पुष्य नक्षत्र हो तो देशमें धन-धान्यकी उत्पत्ति खूब होती है।

माघ मासकी प्रतिपदाको बुधवार हो तो तीन महीने तक वस्तुएँ तेज होती हैं और अगला अर्थ अच्छा नहीं रहता। माघ कृष्णा प्रतिपदा, द्वितीया या तृतीयाका क्षय हो तो देशके व्यापारियोंको अच्छा लाभ होता है। माघ शुक्ला सप्तमी रविवार या सोमवारको हो तो दुर्भिक्ष, राजाओंमें विग्रह और शनिवारको हो तो धन-धान्यकी उत्पत्ति, आरोग्यता और सुभिक्ष होता है। माघ मासकी प्रतिपदाको शनिवार हो तो रोग, देशमें सहयोगका अभाव, उपद्रव और नाना प्रकारके उत्पात होते हैं। बृहस्पति या रविवार हो तो यह वर्ष बहुत अच्छा रहता है, धन-धान्यकी वृद्धि होती है। माघकी चतुर्थी शनिवारको हो तो दुर्भिक्ष, मृत्यु, चोर और अग्निका भय होता है। माघ शुक्ला अष्टमीको कृत्तिका नक्षत्र न हो तो श्रावण वर्षाकी कमी रहती है। माघ शुक्ला सप्तमीको भरणी नक्षत्र हो तो अराजकता फैलती है, अनेक तरहके कर लगाये जाते हैं, जिससे प्रजामें असन्तोष बढ़ता है। गुप्त षडयन्त्र भी होते हैं। देशका वातावरण बहुत ही क्षुब्ध रहता है। माघके कृष्ण पक्षमें नक्षत्रकी वृद्धि हो और शुक्ल पक्षमें नक्षत्रका अभाव हो तो देशमें सुख-शान्ति रहती है। इस महीनेमें तिथिवृद्धि भी होती है, जिससे देशमें सुख-शान्ति रहती है। यदि माघ मासके शुक्ल पक्षमें तिथि क्षय हो तो देशके लिए अत्यन्त अनिष्टकारक होता है। इस पक्षमें तिथि क्षय होनेसे महामारी, रोग, उपद्रव और नाना-प्रकारके उत्पात होते हैं।

फाल्गुन कृष्णा षष्ठीको चित्रा नक्षत्र हो तो तीन महीने तक सुभिक्ष, और स्वाति नक्षत्र हो तो दुर्भिक्ष होती है। फाल्गुन शुक्ला त्रयोदशीको रविवार युक्त आर्द्रा नक्षत्र हो तो तीन महीने तक वर्ष कष्टदायक होता है और सोमवार हो तो सुभिक्ष होती है। फाल्गुनके कृष्णपक्षमें प्रतिपदाको शतभिषा नक्षत्र हो तो उसके घटी नक्षत्रोंके प्रमाण वर्षका स्वरूप अवगत करना चाहिये। फाल्गुन पूर्णिमाके दिन चारों प्रहरोंमें पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र हो तो चार महीने सुभिक्ष रहे। यदि दो प्रहर मघा नक्षत्र हो तो दो महीने महँगे रहते हैं। यदि इस दिन मघा नक्षत्र पूर्ण हो तो चारों ही महीने महँगे होते हैं। दो प्रहर प्रथम पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र हो और आगेके दो प्रहर उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र हो तो दो महीने सुभिक्ष और सुख होता है। फाल्गुन कृष्ण पक्षमें तिथिका बढ़ना और शुक्लपक्षमें तिथिका घटना देशकी उन्नतिके लिए बाधक है। यदि फाल्गुनशुक्ला चतुर्थी शनिवारको पड़े तो अकाल, रविवारको पड़े तो खण्ड वृष्टि, सोमवारको पड़े तो सुभिक्ष, मंगलवारको पड़े तो उपद्रव, महँगाई, अनाचार और लूट-खसोट, बुधवारको पड़े तो शान्ति, सुख, घृतादि पदार्थोंकी बहुलता और उद्योगोंका विकास; गुरुवारको पड़े तो सुकाल, सुव्यवस्था, सम्मान और प्रतिष्ठा एवं शुक्रको पड़े तो समयपर वर्षा, शान्ति, प्रेम और बहुधान्योत्पत्ति होती है। फाल्गुन कृष्णा पंचमी और अमावस्या इन तिथियोंको बादल और प्रकृतिके अन्य वातावरणसे सुभिक्ष, दुर्भिक्ष और समय-असमयका विचार करना चाहिये।

मासक्षयका फल

मासक्खओ य पुण्णिम तुल्ला य अहियतरी हीणा।
दुब्भिक्खं च महग्घं सुमहग्घं होइ सुब्भिक्खं ॥ २९ ॥

अर्थ—क्षय मास हो या पूर्णिमाका क्षय हो तो दुर्भिक्ष और महँगाई होती है, पूर्णिमा सम्पूर्ण हो तो समान भाव और अधिक या विशेष अधिक या कम हो तो सुभिक्ष होता है।

विवेचन—जिस वर्ष क्षय मास पड़ता है, उस वर्ष देशमें दुर्भिक्ष, महँगाई, उपद्रव और अनेक प्रकार के संकट आते हैं। जिस महीनेमें दो संक्राति होती हैं, उसमें क्षयमास होता है और जिसमें सूर्य संक्रान्ति नहीं होती है वह अधिक मास कहलाता है। क्षयमास कार्त्तिकादि तीन महीनोंमें ही होता है और जब कभी क्षय मास होता है तो उस वर्षमें दो अधिक मास होते हैं। अधिक मासकी स्थितिमें दो श्रावण हों तो दुष्काल, पृथ्वीका नाश और प्रजाका क्षय; दो भाद्रपद हों तो इच्छित धान्य प्राप्ति; दो आश्विन हों तो सैन्य, चोर और रोग भय तथा दक्षिण दुर्भिक्ष; दो कार्त्तिक हों तो सुभिक्ष परन्तु युद्धसे मनुष्योंको कष्ट; दो मार्गशीर्ष हों तो परम सुख; दो पौष हों तो सुभिक्ष, और राजाओंको जय; दो माघ मास हों तो राजाओंको भय; दो फाल्गुन हों तो सुभिक्ष, क्षत्रियोंको कुशल; दो चैत्र हों तो शुभ, धान्य प्राप्ति और व्यापारसे लाभ; दो वैशाख हों तो धान्य की निष्पत्ति और क्वचित् अशुभ; दो ज्येष्ठ मास हों तो राजाका विनाश और धान्यकी उत्पत्ति एवं दो अषाढ़ हों तो व्यथा और खण्ड वृष्टि होती है। गणित ज्योतिषके सिद्धन्तानुसार चैत्रादि सात महीनेके ही अधिक मास होते हैं, परन्तु जिस वर्ष क्षयमास पड़ता है, उस वर्ष बारह महीनोंमेंसे कोई भी दो महीने अधिक मास हो सकते हैं।

जिस वर्ष कार्त्तिक क्षयमास होता है, उस वर्ष देशमें भयंकर दुर्भिक्ष, अवर्षण, उत्पात, अराजकता और खण्ड वृष्टि होती है। देशका व्यापार भी ठप हो जाता है और सारी प्रगति रुक जाती है। मार्गशीर्ष क्षय मास होनेपर धन-धान्यकी कमी, अतिवृष्टि या अनावृष्टि, बाढ़, फसलमें कीड़ाका लगना आदि फल होते हैं। पौषमासका क्षय होनेपर आन्तरिक कलह, फसलकी क्षति, उपद्रव एवं शासकोंका प्रभाव क्षीण होता है।

प्रत्येक महीनेकी पूर्णिमाका क्षय होना अच्छा नहीं माना जाता है। पूर्णिमा जितनी अधिककी घटी-प्रमाण होती है, उतनी ही वस्तुओंकी महँगाई होती है। एक ही पक्षमें दो तिथियोंका क्षय हो तो अनाज महँगा और लोकमें वैरभाव बढ़ता है। पक्षका क्षय हो तो शासककी मृत्यु, उपद्रव और राज्यके सामने आर्थिक संकट प्रस्तुत होता है। श्रावणमें पंचमी, भाद्रपदमें सप्तमी, आश्विनमें नवमी और कार्त्तिकमें पूर्णमासीका क्षय हो तो अनिष्ट होता है। जिस महीनेमें शुक्लपक्षको तृतीया या चतुर्थीका क्षय हो तो उस महीने मूंग और घी विशेष रूपसे महँगे होते हैं। जिस महीनेमें दसमीका क्षय होता है, उस महीनेमें घी महँगा होता है। शुक्लपक्षमें प्रतिपदा; पंचमी या चतुर्दशी बढ़े तो सुभिक्ष और घटे तो दुर्भिक्ष होता है। जिस वर्षमें चतुर्दशीके घटघात्मक प्रमाणकी अपेक्षा आषाढ़ी पूर्णिमाका घटघात्मक मान कम हो तो अन्न महँगा, सम हो तो समान और अधिक हो तो अन्नभाव सस्ता होता है।

मासनक्षत्रका फल

मासरिक्खा य पुण्णमि महिला-गोउलसुहा य अहियतरा।
सुब्भिक्खं सुमहग्घं रिक्खाभावे महग्घयरं ॥ ४० ॥

अर्थ—मास नामक नक्षत्र यदि पूर्णिमाको आये तो स्त्रियोंको आनन्द और चौपाये सुखी होते हैं। दूध-घीकी वृद्धि होती है सुभिक्ष और समर्घता होती है। यदि मास नक्षत्र पूर्णिमाको न पड़े तो उस मासमें महँगाई होती है।

विवेचन—मास नक्षत्रसे तात्पर्य यह है कि प्रत्येक महीनेकी पूर्णिमासीको वह नक्षत्र अवश्य पड़ता है। जैसे चित्रा नक्षत्रसे चैत्र, विशाखासे वैशाख, ज्येष्ठासे जेष्ठ, उत्तराषाढ़ासे आषाढ़, श्रवणसे श्रावण आदि मास होते हैं।

मासनक्षत्रबोधक चक्र

चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्त्तिक	अगहन	पौष	माघ	फाल्गुन
चित्रा	विशाखा	ज्येष्ठा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	पू० भाद्रपद	अश्विनी	कृत्तिका	मृगशिर	पुष्य	मघा	उत्त० फाल्गुनी

मासनक्षत्रके पूर्णिमाको आनेसे देशमें सुखसमृद्धि, व्यापारमें वृद्धि, जनतामें प्रेम और सहयोग, नर-नारियोंको आनन्द, पशुओंको सुख एवं देशका आर्थिक विकास होता है। जिस पूर्णिमाको मासनक्षत्र नहीं आता, उस महीनेसे आगेके महीनोंमें वस्तुओंके भाव घटते हैं। घी, गुड़ और चाँदीका भाव कुछ तेज होता है। मासनक्षत्रके घटी दलोंके प्रमाणसे भी वस्तुओंके भावोंका निश्चय किया जाता है। जिस पूर्णिमासीको मासनक्षत्र न पड़कर आगेवाला नक्षत्र पड़ता है, उस पूर्णिमासीका दिन वस्तुओंके सस्ते भावका सूचक होता है। जिस पूर्णिमामें पहलेवाला नक्षत्र पड़ता है, उस पूर्णिमाका दिन वस्तुओंकी महँगाईका सूचक होता है। मासनक्षत्रपरसे देशके स्वास्थ्य, आयु, आरोग्य और ऐश्वर्यके सम्बन्धमें भी निश्चय किया जाता है। इसप्रकार सभी दृष्टियोंसे लोकविजय-यन्त्र द्वारा वर्षका शुभाशुभ फल अवगतकर सावधानीपूर्वक अपना जीवनयापन करना चाहिये।

परिशिष्ट १

लोकविजय-यन्त्रके अतिरिक्त अन्य यन्त्रोंके द्वारा भी वर्षाका परिज्ञान प्राप्त किया जाता है । यहाँ आवश्यक समुद्र-चक्र, नाड़ी-चक्र, कुम्भ-चक्र, कुलाल-चक्र, विजय-चक्र आदि कतिपय चक्रोंको अंकित किया जाता है । इससे वर्षा एवं सुभिक्षके सम्बन्धमें जानकारी प्राप्त होनेमें सुविधा होती है ।

समुद्रचक्र

सन्धिः उत्तराभाद्रपद
सन्धिः शतभिषा
पू. भा. शृङ्गः
तट रेवती
सिन्धुः अश्वनी भरणी
तट कृत्तिका
सन्धिः रोहिणी
शृङ्गः मृगशिर
आर्द्रा सन्धिः
तट धनिष्ठा
तट पुनर्वसु
सिन्धु अभिजित् श्रवण
२ १२ ३ १ ११ ४ १० ७ ५ ६ ८ ९
सिन्धुः पुष्य-अश्लेषा
तट उ० षाढ
तट मघा
सन्धिः पू० षाढ
मूल शृङ्गः
सन्धिः ज्येष्ठा
तट अनुराधा
सिन्धुः स्वाति-विशाखा
तट चित्रा
पू० फाल्गुनी सन्धिः
हस्त सन्धिः

चक्रमें अनुमान-विधि और फलादेश

मेष सङ्क्रान्तिसे राशिचक्र लिखकर उनमें २८ नक्षत्रोंका स्थापन करना चाहिए। प्रारम्भमें दो नक्षत्र समुद्रमें लिखे । तदनन्तर एक-एक लिखना चाहिए । अर्थात् तटपर एक, समुद्रपर दो, पर्वत-शृङ्गपर एक और सन्धिमें एक इस क्रमसे नक्षत्रोंकी स्थापना करनी चाहिए ।

इस क्रमानुसार स्थापित नक्षत्रोंमें चार सागर, आठ तट, आठ सन्धि और चार गिरि-शृङ्ग होते हैं । फलादेश रोहिणी नक्षत्रके अनुसार ज्ञात किया जाता हैं । रोहिणी यदि सन्धि स्थानोंमें हो तो खण्ड-वृष्टि, पर्वत पर हो तो बिन्दुमात्र वर्षा, तटपर होनेसे सुवर्षा और समुद्रपर होनेसे महावृष्टि होती है ।

समुद्रचक्रके निर्माणकी अन्य विधि यह है कि कृतिकासे प्रारम्भकर नक्षत्रोंको दो, दो, एक और पुनः दो इस क्रमसे विभक्त करें और इन चारों भागोंको सिन्धु, तट, गिरि एवं सन्धि इस चक्रमें, बाँट दें । शनि और चन्द्रमा अथवा सूर्यऔर मङ्गल गिरिपर स्थित हों तो प्रचुर वर्षा, सुभिक्ष और धान्यकी समृद्धि होती है ।

मेष-संक्रान्तिके दिन जहाँ दैनिक नक्षत्र दिखलाई पड़े उसीके अनुसार वर्षा और सुभिक्षका विचार करना चाहिए । समुद्र-नक्षत्र होनेसे अतिवृष्टि, तटका नक्षत्र होनेसे सुवृष्टि, सन्धिका नक्षत्र होनेसे खण्ड वर्षा और पर्वतका नक्षत्र होनेसे वर्षाभाव होता है ।

सप्तनाड़ी-चक्र

दिशा	दक्षिणमें निर्जलनाड़ी			मध्य	उत्तरमें सजल नाड़ी		
नाड़ीके नाम	चण्ड	समीरा	दहना	सौम्या	नीरा	जला	अमृता
स्वामी	शनि	गुरु या सूर्य	मंगल	सूर्य या गुरु	शुक्र	बुध	चन्द्रमा
नक्षत्र	कृत्तिका विशाखा अनुराधा भरणी	रोहिणी स्वाति ज्येष्ठा अश्विनी	मृगशिर चित्रा मूल रेवती	आर्द्रा हस्त पू० षा० उ. भाद्र.	पुनर्वसु उ० फा० उ० षा० पू० भा०	पुष्य पू०फा० अभिजित् शतभिषा	अश्लेषा मघा श्रवण घनिष्ठा

चक्र-निर्माण-विधि और फलादेश

शनि, गुरु, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध और चन्द्रमाकी क्रमशः चण्डा, समीरा, दहना, सौम्या, नीरा, जला और अमृता ये सात नाड़ियाँ मानी गई हैं। कृत्तिकासे प्रारम्भकर अभिजित् सहित २८ नक्षत्रोंको सातों नाड़ियोंमें चार बार घुमाकर विभक्त करना चाहिए। कृत्तिकासे अनुराधा तक सरल क्रमसे और मघासे घनिष्ठा तक विपरीत क्रमसे नक्षत्रोंकी स्थापना करनी चाहिए। सातों नाड़ियोंके मध्यमें सौम्य नाड़ीकी स्थिति है और इसके आगे-पीछे तीन-तीन नाड़ियाँ हैं। दक्षिण दिशाकी नाड़ियोंकी संज्ञा क्रूर है और उत्तर दिशाकी सौम्य है। मध्यमें रहनेवाली मध्यनाड़ी कहलाती है।

चण्ड नाड़ीमें दो, तीनसे अधिक स्थित हुए ग्रह प्रचण्ड वायुके सूचक हैं। समीर नाड़ीमें स्थित होनेपर वायु और दहना नाड़ीमें स्थित होनेपर उष्मा—गर्मीके सूचक है। सौम्या नाड़ीमें स्थित होनेसे समता, नीरा नाड़ीमें स्थित होनेपर मेघोंका सञ्चय, जलानाड़ीमें प्रविष्ट होनेपर वर्षा एवं अमृता नाड़ीमें ग्रहोंके प्रविष्ट होने पर अतिवृष्टि होती है। मंगल ग्रह जिस संज्ञक नाड़ीमें स्थित रहता है उसी संज्ञक नाड़ीका फल घटित होता है।

गुरु, मंगल और सूर्य पुरुष-ग्रह हैं, चन्द्रमा और शुक्र स्त्रीग्रह है तथा शनि और बुध नपुंसक ग्रह कहलाते हैं। पुरुषग्रहोंके संयोग होनेसे धूम्र, स्त्री और पुरुष ग्रहोंके संयोगसे वर्षा एवं स्त्रीग्रहोंके संयोगसे बादल दिखलाई पड़ते हैं। जिस नाड़ीमें क्रूर और सौम्य ग्रह संयुक्त हों और इनके साथ जिन दिन चन्द्रमाका संयोग होता है, उस दिन अच्छी वर्षा होती है। जब एक ही नक्षत्रपर कई ग्रह संयुक्त होते हैं तो महावृष्टि होती है। चन्द्रमा जब पाप-ग्रहोंके साथ स्थित रहता हैं तो वर्षा कम होती है और आकाशमें बादल छाये रहते हैं।

चन्द्रमा सौम्य एवं क्रूर ग्रहोंके साथ जब अमृतनाड़ीमें स्थित रहता है तो एक, तीन, पाँच या सात दिनों तक लगातार वर्षा होती है। जला नाड़ीमें चन्द्रमाके स्थित होनेसे दो दिनोंतक लगातार वर्षा होती है। जब चन्द्रमा केवल क्रूर ग्रहोंसे युक्त होकर जलानाड़ीमें स्थित रहता है तो तीन दिनोंतक वर्षा होती है। जब सभी ग्रह अमृता नाड़ीमें स्थित हों तो १८ दिन प्रमाण वर्षा होती है। जलानाड़ीमें सभी ग्रहोंके स्थित होनेसे वर्ष में बारह दिन वर्षा और नीरा नाड़ीमें ग्रहोंके स्थित होनेसे छः दिनोंतक वर्षा होती है।

मध्यनाड़ीमें समस्त ग्रहोंके स्थित होनेसे वर्षा और सुभिक्ष होती है तथा तीनों दिनोंतक लगातार घोर वर्षा होती है। अधिक शुभ ग्रहोंके योगमें निर्जलानाड़ी भी जलप्रदायिनी होती है और अधिक क्रूर ग्रहोंके योगमें सजला नाड़ी भी वर्षाभाव उत्पन्न करती है। जला नाड़ीमें स्थित चन्द्र और शुक्र यदि क्रूर ग्रहोंसे मुक्त हों तो अल्प वर्षा होती है और शुभग्रहोंसे मुक्त हों तो उत्तम वर्षा होती है। जलानाड़ीमें स्थित चन्द्रमा वर्षाका सूचक है।

राशिचक्रयोगानुसार वर्षा-विचार

मिथुन राशिपर मंगल और गुरु, तुला राशिपर शनि और धन राशिपर राहु स्थित हो तो अत्यधिक वर्षा होती है। कर्कपर गुरु, सिंहपर शुक्र, तुलापर मंगल और मीन राशिपर शनिके स्थित होनेसे तृण और धान्य का तो अभाव होता ही है पर वर्षा भी नहीं होती। सिंहमें सूर्य, तुलामें मंगल और कर्क राशिमें बृहस्पतिके होनेसे आँधी और तूफान आते हैं—अनाज महँगा होता है, ग्राम, नगर और देशवासियोंको कष्ट होता है। मीनराशिमें शनि, कर्कमें गुरु और तुलामें मंगलके स्थित होनेसे अथवा मीन राशिमें शुक्र, चन्द्रमा और मंगलके स्थित होनेसे दुर्भिक्ष होता है।

वर्षाकालमें सूर्यसे आगे मंगलके रहनेपर अनावृष्टि, शुक्रके आगे रहनेपर वर्षा, बुधके आगे रहनेपर गर्मी और गुरुके आगे रहनेपर वायु चलती हैं। सूर्य-मंगल, शनि-मंगल और गुरु-मंगलसे अवर्षा होती है। बुध, शुक्र और गुरु-बुधका योग अवश्य वर्षासूचक हैं। क्रूर ग्रहोंसे अदृष्ट और अयुत, बुध और शुक्र एक राशिमें स्थित हों और उनपर बृहस्पतिकी दृष्टि हो तो महावृष्टिकी सूचना मिलती है।

क्रूर ग्रहोंसे अदृष्ट और अयुत, गुरु एवं शुक्र एक स्थानपर स्थित हों और उनपर बुधकी दृष्टि हो तो उत्तम वर्षा होती है। शुक्र और चन्द्रमा अथवा मंगल और चन्द्रमा यदि एक राशिपर स्थित हों तो जलका पूर्ण योग बनता है। शनि और मंगलका एक राशिपर स्थित होना महावृष्टिका कारण है। इस योगके होनेसे वर्षा और फसल अच्छी होती है। एक राशि अथवा एक ही नक्षत्रपर राहु और मंगल स्थित हों तो ये दोनों वर्षाके अभावकी सूचना देते हैं। एक स्थानमें यदि गुरु और शुक्र स्थित हों तो असमयमें वर्षा होती है। सूर्यके आगे बुध या शुक्रके स्थित रहनेसे भी वर्षा कालमें निरन्तर वर्षा होती है।

मंगलके आगे सूर्यकी गति हो तो वह वर्षाको अवरूद्ध नहीं करता। यदि सूर्यके आगे मंगल हो तो वह वर्षाको तत्काल अवरूद्ध होनेकी सूचना देता है। बृहस्पतिसे आगे शुक्रके होनेपर अवश्य वर्षा होती है, किन्तु शुक्रके आगे बृहस्पतिके रहनेसे वर्षाभाव होता है।

बुधके आगे शुक्रके होनेपर महावृष्टि और शुक्रसे आगे बुधके होनेपर अल्पवृष्टि एवं इन दोनोंके मध्य में सूर्य या अन्य ग्रह आ जावें तो वर्षा नही होती है। उदय या अस्त होता हुआ बुध यदि शुक्रके आगे स्थित हो तो शीघ्र ही वर्षा होती है। जलानाड़ीमें बुध या शुक्रके आनेसे अधिक वर्षा होनेकी सूचना मिलती है और फसल भी अच्छी उत्पन्न होती है।

शुक्रके आगे मंगलके रहनेपर उत्तरापथमें वर्षाका अभाव रहता है और बिजलीका प्रकोप, रजो-वर्षा एवं अग्निदाहका भय रहता है शुक्रके आगे बृहस्पतिके रहनेपर मेघ आकाशमें स्थित रहते हैं पर वर्षा नहीं होती है। अथवा पूर्व दिशामें ओले गिरते हैं और देशमें अशान्ति व्याप्त रहती है।

बृहस्पति और मंगल चन्द्रमाके साथ हों तो वर्षाका अच्छा योग होता है। शुक्रसे आगे बुध और इसके पश्चात् सूर्य हो तो अन्नकी महँगाई होती है। शुक्र और बुधके मध्यमें सूर्यका स्थित होना अनावृष्टिका

सूचक है। शुक्र और शनिके पीछे बुधके रहनेसे धन-धान्यकी समृद्धि रहती है। यदि सूर्य व चन्द्रमाके आगे मंगल हो तो हिमपात होता है। आगे बुध, मध्यमें सूर्य और पीछेके भागमें शुक्र हो तो वर्षाका अभाव होता है। पर यदि आगे शुक्र हो मध्यमें सूर्य हो और पृष्ठ भागमें बृहस्पति हो तो खूब वर्षा होती है।

आगे सूर्य, मध्यमें बुध और पृष्ठमें मंगल हो तो सुभिक्ष होता है। इसी तरह आगे शुक्र, मध्यमें शनि और पृष्ठमें बुध हो तो सुभिक्ष होता है। बुध, वृहस्पति और शुक्र ये तीनों एक ही राशिपर स्थित हों और क्रूर ग्रहोंसे अदृष्ट और अयुत हों तो इनसे महावृष्टिकी सूचना मिलती है। गुरुसे दृष्ट, शनि मंगल और शुक्र ये तीनों एक राशिपर स्थित हों तो निस्सन्देह वर्षा होती है। सूर्य, शुक्र और बुधके एक राशिपर स्थित होनेसे अल्प वृष्टि एवं सूर्य, शुक्र और गुरु के एक राशिपर स्थित होनेसे अतिवृष्टि होती है।

गुरुसे दृष्ट शनि, शुक्र और मंगलके एकत्र स्थित रहनेसे अच्छी वर्षा होती है। शनि, राहू और मंगल यदि एक स्थानपर स्थित हों तो युद्ध और अनावृष्टि होती है। देशमें नाना प्रकारके उपद्रव उत्पन्न होते हैं। मवेशियोंको अनेक प्रकारसे कष्ट उठाना पड़ता है। शनि, मंगल और राहुका एक ही राशिपर स्थित होना वर्षाभावका सूचक है। शुक्र, मंगल, शनि और गुरुके एक राशिमें स्थित होनेसे वर्षाभावकी सूचना मिलती है। किन्तु शुक्र, राहु और शनि और गुरुके एक राशिमें स्थित होनेसे श्रावण और भाद्रपदमें अच्छी वर्षा होती है। किन्तु आश्विन मासमें वर्षाका अभाव हो जाता है।

मंगल, बुध, गुरु और शुक्र एक राशिमें स्थित हों तो धूलभरी आँधियाँ आती हैं। कहीं-कहीं वर्षाके छींटे पड़ते हैं तथा फसलमें नाना प्रकारके कीड़े लगते हैं। मंगल, शुक्र, शनि और राहुका एक राशिमें स्थित होना दुर्भिक्षका सूचक है। मंगल, वृहस्पति, शुक्र और शनि यदि ये चारों ग्रह एक ही स्थानमें स्थित हों तो वर्षाभावकी सूचना मिलती है और दुर्भिक्ष होता है। चार या पाँच ग्रहोंके एक स्थानमें स्थित होनेसे सम्पूर्ण पृथ्वी जलसे प्लावित हो जाती है और नदियोंमें बाढ़ आती है। धानकी फसलकी अपेक्षा गेहूँ अच्छी पैदा होती है।

सूर्य, बुध, वृहस्पति, शुक्र और चन्द्रमाके एक स्थानमें रहनेसे नैर्ऋत्य दिशाकी प्रजाको कष्ट होता है तथा दुर्भिक्ष होता है। बुध, गुरु, शनि, राहु और सूर्य इन ग्रहोंके एक राशिपर स्थित होनेसे सुभिक्ष, कुश-लता, आरोग्यता और सर्वत्र सुख प्राप्त होता है। शुक्र, शनि, मंगल, बुध और गुरु एक राशिपर स्थित हों तो अनावृष्टिका योग बनता है। सूर्य, चन्द्रमा, बुध, वृहस्पति और शुक्र इन ग्रहोंके आगे मंगल न हो और ये ग्रह एक ही राशिपर स्थित हों तो वर्षा अधिक होती है। जब सभी ग्रह सूर्यके पीछे या आगे रहते हैं तो महा-वृष्टिका योग बनता है।

मेष राशिपर शुक्र और राहुका साथमें रहना दुर्भिक्षका सूचक है। वृष राशिपर सूर्य मंगल और शनिके स्थित रहनेसे अनावृष्टिकी सूचना मिलती है। मिथुन राशिपर शनि और राहुका होना भी दुर्भिक्षका सूचक है। मीन और धनुपर शनि, मंगल और राहुके होनेसे दुर्भिक्षकी सूचना मिलती है। मकर या कुम्भ राशिपर बुधके होनेसे पर्याप्त वर्षा होती है। बुधके क्षेत्रमें सूर्य और चन्द्रमाके रहनेसे सुभिक्ष होता है और वर्षा होती है।

●

परिशिष्ट २

यात्राकालीन

ब्राह्मण, घोड़ा, हाथी, फल, अन्न, दूध, दही, गौ, सरसों, कमल, वस्त्र, वेश्या, बाजा, मोर, पपैया, नेवला, बंधा हुआ पशु, मांस, श्रेष्ठ वाक्य, फूल, ऊख, भरा कलश, छाता, मृत्तिका, कन्या, रत्न, पगड़ी, बिना बँधा हुआ सफेद बैल, मदिरा, पुत्रवती स्त्री, जलती हुई अग्नि और मछली आदि पदार्थ यात्राके लिए गमन करते हुए दिखलाई पड़ें तो शुभ शकुन समझना चाहिए। सीसा, काजल, धुला वस्त्र, अथवा धोये हुए वस्त्र लिए हुए धोबी, मछली, घृत, सिंहासन, रोदनरहित मुर्दा, ध्वजा, शहद, मेढा, धनुष, गोरोचन, भरद्वाज पक्षी पालकी, वेदध्वनि, श्रेष्ठ स्तोत्रपाठकी ध्वनि, मांगलिक गायन और अंकुश ये पदार्थ यात्राके समय सम्मुख आवें और बिना जलका घड़ा लिये हुए आदमी पीछे जाता हो तो अत्युत्तम है।

बाँझ स्त्री, चमड़ा, धानकी भूसी, हाड़, सर्प, लवण, अङ्गार, इन्धन, हिजड़ा, विष्टा लिये हुए पुरुष, तैल, पागल व्यक्ति, चर्बी, औषध, शत्रु, जटावाला व्यक्ति, सन्यासी, तृण, रोगी, मुनि और बालकके अतिरिक्त अन्य नंगा व्यक्ति, तेल लगाकर बिना स्नान किये हुए, छूटे केश, जातिसे पतित, कान-नाक कटा व्यक्ति, भूखा रुधिर, रजस्वला स्त्री, गिरगिट, निज घरका जलना, बिलावोंका लड़ना और सम्मुख छींक यात्रामें अशुभ है। गेरूसे रंगा कपड़ा या इस प्रकारके वस्त्रोंको धारण करनेवाला व्यक्ति, गुड़, छाछ, कीचड़, विधवा स्त्री, कुबड़ा व्यक्ति, लड़ाई, शरीरसे वस्त्र गिर जाना, भैंसोंकी लड़ाई, काला अन्न, रूई, वमन, दाहिनी ओर गर्दभ शब्द, अति क्रोध, गर्भवती, शिरमुण्डा, गीले वस्त्रवाला, दुष्ट वचन बोलनेवाला, अन्धा और बहिरा ये सब यात्रा समयमें सम्मुख आवें तो अति निन्दित हैं।

गोहा, जाहा, शूकर, सर्प और खरगोशका शब्द शुभ होता है। निज या परके मुखसे इनका नाम लेना शुभ है, परन्तु इनका शब्द या दर्शन शुभ नहीं है। रीछ और वानर नाम लेना और सुनना अशुभ है, पर शब्द सुनना शुभ होता है। नदीमें तैरना, भयकार्य, गृह प्रवेश और नष्ट वस्तुका देखना साधारण शुभ है। कोयल, छिपकली, पोतकी, शूकरी, रता, पिंगला, छछुन्दरि, सियारिन, कपोत, खञ्जन, तीतर इत्यादि पक्षी यदि राजाकी यात्राके समय वाम भागमें हों तो शुभ हैं। छिक्कर, पपीहा, श्रीकण्ठ, वानर और रूरूमृग यात्रा समय दक्षिण भागमें हों तो शुभ हैं। दाहिनी ओर आये हुए मृग और पक्षी यात्रामें शुभ होते हैं। विषम संख्यक मृग अर्थात् तीन, पाँच, सात, नौ, ग्यारह, तेरह, पन्द्रह, सत्रह, उन्नीस, इक्कीस आदि संख्यामें मृगोंका झुण्ड चलते हुए साथ दें तो शुभ है। यात्रा समय बायीं ओर गदहेका शब्द शुभ है। यदि सिरके ऊपर दहीकी हाडी रखे हुए कोई ग्वालिन जा रही हो और दहीके कण गिरते हुए दिखलाई पड़ें तो यह शकुन यात्राके लिए अत्यन्त शुभ है। यदि दहीकी हण्डी काले रंगकी हो और वह काले रंगके वस्त्रसे आच्छादित हो तो यात्रामें आधी सफलता मिलती है। श्वेत रंगकी हण्डी श्वेतवस्त्रसे आच्छादित हो तो पूर्ण सफलता प्राप्त होती है। यदि रक्त वस्त्रसे आच्छादित हो तो यश प्राप्त होता है, पर यात्रामें कठिनाइयाँ अवश्य सहन करनी पड़ती हैं। पीतवर्णके वस्त्रसे आच्छादित होनेपर धन लाभ होता है तथा यात्रा भी सफलतापूर्वक निर्विघ्न हो जाती है। हरे-रंगका वस्त्र विजयकी सूचना देता है तथा यात्रा करनेवालेकी मनोकामना सिद्ध होनेकी ओर सङ्केत करता है। यदि यात्रा करनेके समय कोई व्यक्ति खाली घड़ा लेकर सामने आवे और तत्काल भरकर साथ-साथ वापस चले तो यह शकुन यात्राकी सिद्धिके लिए अत्यन्त शुभकारक है। यदि कोई व्यक्ति भरा घड़ा लेकर सामने आवे और तत्काल पानी गिराकर खाली घड़ा लेकर चले तो यह शकुन अशुभ है। यात्राकी कठिनाइयोंके साथ धनहानिकी सूचना देता है।

यात्रा समयमें काकका विचार—यदि यात्राके समय काक वाणी बोलता हुआ वाम भागमें गमन करे तो सभी प्रकारके मनोरथोंकी सिद्धि होती है। यदि काक मार्गमें प्रदक्षिणा करता हुआ बायें हाथ आ जावे तो कार्यकी सिद्धि, क्षेम, कुशल तथा मनोरथोंकी सिद्धि होती है। यदि पीठ पीछे काक मन्द रूपमें मधुर शब्द करता हुआ गमन करे अथवा शब्द करता हुआ उसी ओर मार्गमें आगे बढ़े, जिधर यात्राके लिए जाना है, अथवा शब्द करता हुआ काक आगे हरे वृक्षकी हरी डालीपर स्थित हो और अपने परसे मस्तकको खुजला रहा हो तो यात्रामें अभीष्ट फलकी सिद्धि होती है। यदि गमन कालमें काक हाथीके ऊपर बैठा दिखलाई पड़े या हाथीपर बजते हुए बाजोंपर बैठा हुआ दिखलाई पड़े तो यात्रामें सफलता मिलती है; साथ ही धन-धान्य, सवारी, भूमि आदिका लाभ होता है। यदि काक घोड़ेके ऊपर स्थित दिखलाई पड़े तो भूमि-लाभ, मित्र-लाभ एवं धन-लाभ करता है। देव-मन्दिर, ध्वजा, ऊँचे महल, धान्यकी राशि, अन्नके ढेर एवं उन्नत भूमिपर बैठा हुआ काक मुँहमें सूखी घास लेकर चबा रहा हो तो निश्चय ही यात्रामें अर्थ लाभ होता है। इस प्रकारकी यात्रा-में सभी प्रकारके सुख साधन प्रस्तुत रहते हैं। यह यात्रा अत्यन्त सुखकर मानी जाती है। आगे-पीछे काक गोबरके ढेरपर बैठा हो या दूधवाले—बड़, पीपल आदिपर स्थित होकर बीट कर रहा हो अथवा मुँहमें अन्न, फल, मूल, पुष्प आदि हों तो अनायास ही यात्राकी सिद्धि होती है। यदि कोई स्त्री जलका भरा हुआ कलश लेकर आवे और उसपर काक स्थित होकर शब्द करने लगे तथा जलके भरे हुए घड़ेपर स्थित हो काक शब्द करे तो स्त्री और धनकी प्राप्ति होती है। यदि शैय्याके ऊपर स्थित होकर काक शब्द करे तो आप्त जनोंकी प्राप्ति होती है। गायकी पीठपर बैठकर या दूर्वापर बैठकर अथवा गोबरपर बैठकर काक चोंच घिसता हो तो अनेक प्रकारके भोज्य पदार्थोंकी प्राप्ति होती है। धान्य, दूध, दही, मनोहर अंकुर, पत्र, पुष्प, फल, हरे-भरे वृक्षपर स्थित होकर काक बोलता जाय तो सभी प्रकारके इच्छित कार्य सिद्ध होते हैं। वृक्षोंके ऊपर स्थित होकर काक शान्त बोले तो स्त्री प्रसङ्ग हो, धन-धान्यपर स्थित होकर शान्त शब्द करे तो धन-धान्यका लाभ हो एवं गायकी पीठपर स्थिर होकर शब्द करे तो स्त्री, धन, यश और उत्तम भोजनकी प्राप्ति होती है। ऊँटकी पीठपर स्थित होकर शान्त शब्द करे, गदहेकी पीठपर स्थित होकर शान्त शब्द करे तो धन लाभ और सुखकी प्राप्त होती है। यदि शूकर, बैल, खाली घड़ा, मुर्दा मनुष्य या मुर्दा पशु, पाषाण और सूखे वृक्षकी डालीपर स्थित होकर काक शब्द करे तो यात्रामें ज्वर, अर्थहानि, चोरों द्वारा धनका अपहरण एवं यात्रामें अनेक प्रकारके कष्ट होते हैं। यदि काक दक्षिणकी ओर गमन करे, दक्षिणकी ओर ही शब्द करे, पीछेसे सम्मुख आवे, कोलाहल करता हो और प्रतिलोम गति करके पीठ पीछेकी ओर चला आवे तो यात्रामें चोट लगती है, रक्तपात होता है तथा और भी अनेक प्रकारके कष्ट होते है। बलि भोजन करता हुआ काक बायीं ओर शब्द करता हो और वहाँसे दक्षिणकी ओर चला आवे एवं वाम प्रदेशमें प्रतिलोम गमन करता हो तो यात्रामें अनेक प्रकारके विघ्न होते हैं। आर्थिक हानि भी होती है। यदि गमनकालमें काक दक्षिण बोलकर पीठ पीछेकी ओर चला जाय तो किसीकी हत्या सुनाई पड़ती है। गायकी पूँछ या सर्पके बिलपर बैठा हुआ काक दिखाई पड़े तो मार्गमें सर्प दर्शन, नाना तरहके संघर्ष और भय होते हैं। यदि काक आगे कठोर शब्द करता हुआ स्थित हो तो हानि, रोग, पीठ पीछे स्थित हो कठोर शब्द करे तो मृत्यु एवं खाली बैठकर शब्द कर रहा हो तो यात्रा सदा निन्दित है। सूखे काठके टूँकको तोड़कर चोंचके अग्र भागमें दबाकर रखा हो और बायें भागमें स्थित हो तो मृत्यु, नाना प्रकारके कष्ट होते हैं। यदि चोंचमें काक हड्डी दबाये हो तो अशुभ फल होता है। वाम भागमें सूखे वृक्षपर काक स्थित हो तो अतिरोग, खाली या तीखे वृक्षपर बैठा हो तो यात्रामें कलह और कार्य नाश एवं काँटेदार वृक्षपर स्थित होकर रूखा शब्द करे तो यात्रामें मृत्यु होती है।

भग्नशरणके वृक्षपर स्थित काक कठोर शब्द करता हो तो यात्रामें धनक्षय, कुटुम्बी-मरण एवं नाना

तरहसे अशुभ होता है। यदि छतपर बैठकर काक बोलता हो तो यात्रा नहीं करनी चाहिए। इस शकुनके होनेपर यात्रा करनेसे वज्रपात–बिजली गिरती है। यदि कूड़ेके ढेरपर या राख–भस्मके ढेरपर स्थित होकर काक शब्द करे तो कार्यका नाश होता है। अपयश, धनक्षय एवं नाना तरहके कष्ट यात्रामें उठाने पड़ते हैं। लता, रस्सी, केश, सूखी लकड़ी, चमड़ा, हड्डी, फटे पुराने जिथड़े, वृक्षोंकी छाल, रुधिरयुक्त वस्तु, जलती लकड़ी एवं कीचड़ काककी चोंचमें दिखलाई पड़े तो यात्रामें पाप युक्त कार्य करने पड़ते हैं, यात्रामें कष्ट होता है, धनक्षय, या धनकी चोरी, अचानक दुर्घटनाएँ आदि घटित होती हैं। छाया, आयुध, छत्र, घड़ा, हड्डी, वाहन, काष्ठ एवं पाषाण चोंचमें रखे हुए काक दिखलाई पड़े तो यात्रा करनेवाले-की मृत्यु होती है। एक पाँव समेटकर चञ्चल चित्त होकर जोर-जोरसे कठोर शब्द करता हो तो काक युद्ध, झगड़े, मार-पीट आदिकी सूचना देता है। यदि यात्रा करते समय काक अपनी बीट यात्रा करनेवालेके मस्तक-पर गिरा दे तो यात्रामें विपत्ति आती है। नदीतट या मार्गमें काक तीव्र स्वर बोले तो अत्यन्त विपत्तिकी सूचना समझ लेनी चाहिए। यात्राके समयमें यदि काक रथ, हाथी, घोड़ा और मनुष्यके मस्तकपर बैठा दीख पड़े तो पराजय, कष्ट, चोरी और झगड़ेकी सूचना समझनी चाहिए। शास्त्र, ध्वजा, छत्रपर स्थित होकर काक आकाशकी ओर देख रहा हो तो यात्रामें सफलता समझनी चाहिए।

यात्रामें उल्लूका विचार—यदि यात्राकालमें उल्लू बाईं ओर दिखलाई पड़े तथा उल्लू अपना भोजन भी साथमें लिये हो तो यात्रा सफल होती है। यदि उल्लू वृक्षपर स्थित होकर अपना भोजन सञ्चय करता हुआ दिखलाई पड़े तो यात्रा करनेवाला इस यात्रामें अवश्य धनलाभ कर लौटता है। यदि गमन करनेवाले पुरुषके वाम भागमें उल्लूका प्रशान्तमय शब्द हो और दक्षिण भागमें असम शब्द हो तो यात्रामें सफलता मिलती है। किसी भी प्रकारकी बाधा नहीं आती है। यदि यात्रीके वामभागमें उल्लू शब्द करता हुआ दिखलाई पड़े अथवा बाईं ओरसे उल्लूका शब्द सुनाई पड़े तो यात्रा प्रशस्त होती है। यदि पृथ्वीपर स्थित होकर उल्लू शब्द कर रहा हो तो धनहानि, आकाशमें स्थित होकर शब्द कर रहा हो तो कलह, दक्षिण भागमें स्थित होकर शब्द कर रहा हो तो कलह या मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। यदि उल्लूका शब्द तैजस् और पवनयुक्त हो तो निश्चयतः यात्रा करनेवालेकी मृत्यु होती है। यदि उल्लू पहले बायीं ओर शब्द करे, पश्चात् दक्षिणकी ओर शब्द करे तो यात्रामें पहले समृद्धि, सुख और शान्ति, पश्चात् कष्ट होता है। इस प्रकारके शकुनमें यात्रा करनेसे कभी-कभी मृत्यु तुल्य भी कष्ट भोगना पड़ता है।

नीलकण्ठ विचार—यदि यात्राकालमें नीलकण्ठ स्वस्तिक गतिमें भक्ष्य पदार्थोंको ग्रहणकर प्रदक्षिणा करता हुआ दिखलाई पड़े तो सभी प्रकारके मनोरथोंकी सिद्धि होती है। यदि दक्षिण—दाहिनी ओर नीलकण्ठ गमन समयमें दिखलाई पड़े तो विजय, धन, यश और पूर्ण सफलता प्राप्त होती हैं। यदि नीलकण्ठ काकको पराजित करता हुआ सामने दिखलाई पड़े तो निर्विघ्न यात्राकी सिद्धि करता है। यदि वनमध्यमें रुदन करता हुआ नीलकण्ठ सामने आवे अथवा भयङ्कर शब्द करता हुआ या घबड़ाकर शब्द करता हुआ आगे आवे तो यात्रामें विघ्न आते हैं। धन चोरी चला जाता है और जिस कार्यकी सिद्धिके लिए यात्रा की जाती है वह सफल नहीं होता। यदि यात्राकालमें नीलकण्ठ मयूरके समान शब्द करे तो यशप्राप्ति, धनलाभ, विजय एवं निर्विघ्न यात्रा सिद्ध होती है। गमन करनेवाले व्यक्तिके आगे-आगे कुछ दूरतक नीलकण्ठके दर्शन हों तो यात्रा सफल होती है। धन, विजय और यश प्राप्त होता है। शत्रु भी यात्रामें मित्र बन जाते हैं तथा वे भी सभी तरहके सहायता करते हैं।

खञ्जन विचार—यदि यात्राकालमें खञ्जन पक्षी हरे पत्र, पुष्प और फलयुक्त वृक्षपर स्थित दिख-लाई पड़ें तो यात्रा सफल होती है, मित्रोंसे मिलन, शुभ कार्योंकी सिद्धि एवं लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है। हाथी,

घोड़ेके बाँधनेके स्थानमें, उपवन, घरके समीप, देवमन्दिर, राजमहल आदिके शिखरपर खञ्जन बैठा हो और शब्द करता हुआ दिखलाई पड़े तो यात्रा सफल होती है। दही, दूध, घृत आदिको मुखमें लिये हुए खञ्जन पक्षी दिखलाई पड़े तो नियमतः लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है। यात्रामें इसप्रकारके शुभ शकुन मिलते हैं, जिनसे चित्त प्रसन्न रहता है तथा बिना किसी प्रकारके कष्टके यात्रा सिद्ध हो जाती है। सहस्रों व्यक्ति सहायक मिल जाते हैं। छाया सहित, सुन्दर, फल-पुष्पयुक्त वृक्षपर खञ्जन पक्षी दिखलाई पड़े तो लक्ष्मीकी प्राप्तिके साथ विजय, यश और अधिकारोंकी प्राप्ति होती है। खञ्जनका दर्शन यात्राकालमें बहुत ही उत्तम माना जाता है। गधा, ऊँट, श्वानकी पीठपर खञ्जन पक्षी दिखलाई पड़े अथवा अशुचि और गन्दे स्थानोंपर बैठा हुआ खञ्जन दिखलाई पड़े तो यात्रामें बाधाएँ आती हैं, धनहानि होती है और पराजय भी होता है।

तोता विचार—यदि गमन समयमें दाहिनी ओर या सम्मुख तोता दिखलाई पड़े तथा यह मधुर शब्द कर रहा हो, बन्धन मुक्त हो तो यात्रामें सभी प्रकारसे सफलता प्राप्त होती है। यदि तोता मुखमें फल दबाये और बायें पैरसे अपनी गर्दन खुजला रहा हो तो यात्रामें धन-धान्यकी प्राप्ति होती है। हरित फल, पुष्प और पत्तोंसे युक्त वृक्षके ऊपर तोता स्थित हो तो यात्रामें विजय, सफलता, धन और यशकी प्राप्ति समझनी चाहिए। किसी विशेष व्यक्तिसे मिलनेके लिए यदि यात्रा की जाय और यात्राके आरम्भमें तोता जयनाद करता हुआ दिखलाई पड़े तो यात्रा पूर्ण सफल होती है। यदि गमनकालमें तोता बाईं ओरसे दाहिनी ओर चला आवे और प्रदक्षिणा करता हुआ-सा प्रतीत हो तो यात्रामें सभी प्रकारकी सफलता समझनी चाहिए। यदि तोता शरीरको कँपाता हुआ इधरसे उधर घूमता जाय अथवा निन्दित, दूषित और घृणित स्थलोंपर जाकर स्थित हो जाय तो यात्राकी सिद्धिमें कठिनाई होती है। मुक्त विचरण करनेवाला तोता यदि सामने फल या पुष्पको कुरेदता हुआ दिखलाई पड़े तो धन प्राप्तिका योग समझना चाहिए। यदि तोता रुदन करता हुआ या किसी प्रकारके शोक शब्दको करता हुआ सामने आवे तो यात्रा अत्यन्त अशुभ होती है। इसप्रकारके शकुनमें यात्रा करनेसे प्राणघातका भी भय रहता है।

चिड़िया विचार—यदि छोटी लाल मुनैया सामने दिखलाई पड़े तो विजय, पीठ पीछे शब्द करे तो कष्ट, दाहिनी ओर शब्द करती हुई दिखलाई पड़े तो हर्ष एवं बाईं ओर धनक्षय, रोग या अनेक प्रकारकी आपत्तियोंकी सूचना देती है। जिस चिड़ियाके सिरपर कलंगी हो, यदि वह सामने या दाहिनी ओर दिखलाई पड़े तो शुभ, बाईं ओर और पीठ पीछे उसका रहना अशुभ होता है। मुँहमें चारा लिये हुए दिखलाई पड़े तो यात्रामें सभी प्रकारकी सिद्धि, धन-धान्यकी प्राप्ति, सांसारिक सुखोंका लाभ एवं अभीष्ट मनोरथोंकी सिद्धि होती है। यदि किसी भी प्रकारकी चिड़ियाँ आपसमें लड़ती हुई सामने गिर जायँ तो यात्रामें कलह, विवाद, झगड़ाके साथ मृत्यु भी प्राप्त होती है। चिड़ियाके परोंका टूटकर सामने गिरना यात्रीको विपत्तिकी सूचना देता है। चिड़ियाका लंगड़ाकर चलना और धूलमें स्नान करना यात्रामें कष्टोंकी सूचना देता है।

मयूर विचार—यात्रामें मयूरका नृत्य करते हुए देखना अत्यन्त शुभ होता है। मधुर शब्द करते एवं नृत्य करते हुए मयूर यदि यात्रा करते समय दिखलाई पड़े तो यह शकुन अत्यन्त उत्तम है। इसके द्वारा धन-धान्यकी प्राप्ति, विजय प्राप्ति, सुख एवं सभी प्रकारके अभीष्ठ मनोरथोंकी सिद्धि समझ लेनी चाहिए। मयूरका एक ही झटकेमें उड़कर सूखे वृक्षपर बैठ जाना यात्रामें विपत्तिकी सूचना देता है।

हाथी विचार—यदि प्रस्थान कालमें हाथी सूँड़को ऊपर किये हुए दिखलाई पड़े तो यात्रामें इच्छाओं-की पूर्ति होती है। यदि यात्रा करते समय हाथीका दाँत ही टूटा हुआ दिखलाई पड़े तो भय, कष्ट और मृत्यु होती है। गर्जना करता हुआ मदोन्मत्त हाथी यदि सामने आता हुआ दिखलाई पड़े तो यात्रा सफल होती

है। जो हाथी पीलवानको गिराकर आगे दौड़ता हुआ आवे तो यात्रामें कष्ट, पराजय, आर्थिक क्षति आदि फलोंकी प्राप्ति होती है।

अश्व-विचार—यदि प्रस्थानकालमें घोड़ा हिनहिनाता हुआ दाहिने पैरसे पृथ्वीको खोद रहा हो और दाहिने अंगको खुजला रहा हो तो वह यात्रामें पूर्ण सफलता दिलाता है तथा पदवृद्धिकी सूचना देता है। घोड़ेका दाहिनी ओर हिनहिनाते हुए निकल जाना, पूंछको फटकारते हुए चलना एवं दाना खाते हुए दिखलाई पड़ना शुभ है। घोड़ेका लेटे हुए दिखलाई पड़ना, कानोंको फटफटाना, मल-मूत्र त्याग करते हुए दिखलाई पड़ना यात्राके लिए अशुभ होता है।

गधा-विचार—वामभागमें स्थित गर्दभ अतिदीर्घ शब्द करता हुआ यात्रामें शुभ होता है। आगे या पीछे स्थित होकर गधा शब्द करे तो भी यात्राकी सिद्धि होती है। यदि प्रयाणकालमें गधा अपने दाँतोंसे अपने कन्धेको खुजलाता हो तो धनकी प्राप्ति, सफल मनोरथ और यात्रामें किसी भी प्रकारका कष्ट नहीं होता है। यदि सम्भोग करता हुआ गधा दिखलाई पड़े तो स्त्रीलाभ, युद्ध करता हुआ दिखलाई पड़े तो वध-बन्धन एवं देह या कानको फटफटाता हुआ दिखलाई पड़े तो कार्य नाश होता है। खच्चरका विचार भी गधेके विचारके समान ही है।

वृषभ-विचार—प्रयाणकालमें वृषभ बाईं ओर शब्द करे तो हानि, दाहिनी ओर शब्द करे और सींगोंसे पृथ्वीको खोदे तो शुभ, घोर शब्द करता हुआ साथ-साथ चले तो विजय एवं दक्षिणकी ओर गमन करता हुआ दिखलाई पड़े तो मनोरथ सिद्धि होती है। बैल या सांड़ बाईं ओर आकर बायें सींगसे पृथ्वीको खोदे, बाईं करवट लेता हुआ दिखलाई पड़े तो अशुभ होता है। यात्राकालमें बैल या सांड़का बाईं ओर आना भी अशुभ कहा गया है।

महिष-विचार—दो महिष सामने लड़ते हुए दिखलाई पड़ें तो अशुभ, विवाद, कलह और युद्धकी सूचना देते हैं। महिषका दाहिनी ओर रहना, दाहिने सींगसे या दाहिनी ओर स्थित होकर दोनों सींगोंसे मिट्टीका खोदना यात्रामें विजयकारक है। बैल और महिष दोनोंकी छींक यात्रामें वर्जित है।

गाय-विचार—गर्भिणी गाय, गर्भिणी भैंस और गर्भिणी बकरीका यात्राकालमें सम्मुख या दाहिनी ओर आना शुभ है। रम्भाती हुई गाय सामने आवे और बच्चेको दूध पिला रही हो तो यात्राकालमें अत्यधिक शुभ माना जाता है। जिस गायका दूध दुहा जा रहा हो, वह भी यात्राकालमें शुभ होती है। रम्भाती हुई, बच्चेको देखनेके लिए उत्सुक, हर्षयुक्त गायका प्रयाणकालमें दिखलाई पड़ना शुभ होता है।

विडाल-विचार—यात्राकालमें बिल्ली रोती हुई, लड़ती हुई, छींकती हुई दिखलाई पड़े तो यात्रामें नाना प्रकारके कष्ट होते हैं। बिल्लीका रास्ता काटना भी यात्रामें संकट पैदा कराता है। यदि अकस्मात् बिल्ली दाहिनी ओरसे बाईं ओर आवे तो किञ्चित् शुभ और बाईं ओरसे दाहिनी ओर आवे तो अत्यन्त अशुभ होता है। इस प्रकारका बिल्लीका आना यात्रामें संकटोंकी सूचना देता है। यदि बिल्ली चूहेको मुखमें दबाये सामने आ जाय तो कष्ट, रोटीका टुकड़ा दबाकर सामने आवे तो यात्रामें लाभ एवं दही या दूध पीकर सामने आवे तो साधारणतः यात्रा सफल होती है। बिल्लीका रुदन यात्राकालमें अत्यन्त वर्जित है, इससे यात्रामें मृत्यु या तत्तुल्य कष्ट होता है।

कुत्ता-विचार—यात्राकालमें कुत्ता दक्षिण भागसे वाम भागमें गमन करे तो शुभ और कुत्तिया वाम भागसे दक्षिण भागकी ओर आवे तो शुभ; सुन्दर वस्तुको मुखमें लेकर यदि कुत्ता सामने दिखलाई पड़े तो यात्रामें लाभ होता है। व्यापारके निमित्त की गयी यात्रा अत्यन्त सफल होती है। यदि कुत्ता थोड़ी-सी दूर

आगे चलकर, पुनः पीछेकी ओर लौट आवे तो यात्रा करनेवालेको सुख; प्रसन्न क्रीड़ा करता हुआ कुत्ता सम्मुख आनेके उपरान्त पीछेकी ओर लौट जाय तो यात्रा करने वालेको धन-धान्यकी प्राप्ति होती है। इस प्रकारके शकुनसे यात्रामें विजय, सुख और शान्ति रहती है। यदि श्वान ऊँचे स्थानसे उतर कर नीचे भागमें आ जाय तथा यह दाहिनी ओर आ जावे तो शुभ कारक होता है। निर्विघ्न यात्राकी सिद्धि तो होती ही है, साथ ही यात्रा करने वालेको अत्यधिक सम्मानकी प्राप्ति होती है। हाथीके बाँधनेके स्थान, घोड़ाके स्थान शैय्या, आसन, हरी घास, छत्र, ध्वजा, उत्तम वृक्ष, घड़ा, ईंटोंके ढेर, चमर, ऊँची भूमि आदि स्थानों पर मूत्र करके कुत्ता यदि मनुष्यके आगे गमन करे तो अभीष्ट कार्योंकी सिद्धि होती है। यात्रा सभी प्रकारसे सफल होती हैं। सन्तुष्ट, पुष्ट, प्रसन्न, रोगरहित, आनन्दयुक्त, लीलासहित एवं क्रीड़ासहित कुत्ता सम्मुख आवे तो अभीष्ट कार्योंकी सिद्धि होती है। नवीन अन्न, घृत, विष्ठा, गोबर—इनको मुखमें धारण कर दाहिनी ओर और बाईं ओर देखता हुआ श्वान सामने आवे तो सभी प्रकारसे यात्रा सफल होती है। यदि श्वान आगे पृथ्वीको खोदता हुआ यात्रा करने वालेको आकर सूँघे, अनुलोम गतिसे आगे बढ़े, पैरसे मस्तकको खुजलावे तो यात्रा सफल होती है। श्वान गमनकर्त्ताके साथ-साथ बाईं ओर चले तो सुन्दर रमणी, धन और यशकी प्राप्ति कराता है। श्वान जूता मुँहमें लेकर सामने आवे या साथ-साथ चले, हड्डी लेकर सामने आवे या साथ साथ चले; केश, वल्कल, पाषाण, जीर्ण वस्त्र, अंगार, भस्म, इंधन, ठीकरा इन पदार्थोंको मुँहमें लेकर श्वान सामने आवे तो यात्रामें रोग, कष्ट, मरण, धन-हानि आदि फल प्राप्त होते हैं। काष्ठ, पाषाणको कुत्ता मुँहमें लेकर यात्रा करने वालेके सामने आवे; पूँछ कान और शरीरको यात्रा करने वालेके सामने हिलावे तो यात्रामें धन हरण, कष्ट एवं रोग आदि होते हैं। यदि यात्रा करने वाला कुत्ताको जल, वृक्षकी लकड़ी, अग्नि, भस्म, केश, हड्डी, काष्ठ, सींग, श्मशान, भूसा, अंगार, शूल, पाषाण, विष्ठा, चमड़ा आदिपर मूत्र करते हुए देखे तो यात्रामें नाना प्रकारके कष्ट होते हैं।

शृगाल विचार—जिस दिशामें यात्रा की जा रही हो, उसी दिशामें शृगाल या शृगालीका शब्द सुनाई पड़े तो यात्रामें सफलता प्राप्त होती है। यदि पूर्व दिशाकी यात्रा करने वाले व्यक्तिके समक्ष शृगाल या शृगाली आ जाय और वह शब्द भी कर रही हो तो यात्रा करने वालेको महान् संकटकी सूचना देती है। यदि सूर्य सम्मुख देखती हुई शृगाली बाईं ओर बोले तो भय, दाहिनी ओर बोले तो अर्थनाश और पीठ पीछे बोले तो कार्य-हानि फल होता है। दक्षिणदिशाको यात्रा करने वाले व्यक्तिके दाहिनी ओर शृगाली शब्द करे तो यात्रामें सफलताकी सूचना देती है। इसी दिशाके यात्रीके आगे सूर्यकी ओर मुँह कर शृगाली बोले तो मृत्युकी प्राप्ति होती है। पश्चिम दिशाको गमन करने वालेके सम्मुख शृगाली बोले तो किञ्चत् हानि और सूर्यकी ओर मुँह करके बोले तो अत्यन्त संकटकी सूचना देती है। यदि पश्चिम दिशाके यात्रीके पीठ पीछे शृगाली शब्द करती हुई चले तो अर्थनाश, किन्तु बाईं ओर शब्द करे तो अर्थागम होता है। उत्तरदिशा को गमन करने वाले व्यक्तिके पीठ पीछे शृगाली सूर्यकी ओर मुँह करके बोले तो यात्रामें अर्थहानि और मरण होता है। यदि यात्रा-कालमें शृगाली दाहिनी ओरसे निकलकर बाईं ओर चली जाय और वहीं पर शब्द करे तो यात्रामें सफलताकी सूचना समझनी चाहिए। शृगालीके शब्दकी कर्कशता और मधुरताके अनुसार फलमें ही अनाधिकता हो जाती है।

यात्रामें छींक-विचार—छींक होने पर सभी प्रकारके कार्योंको बन्द कर देना चाहिए। गमन कालमें छींक होनेसे प्राणोंकी हानि होती है। सामने छींक होने पर कार्यका नाश, दाहिने नेत्रके पास छींक हो तो कार्यका निषेध, दाहिने कानके पास छींक हो तो धनका क्षय, दक्षिण कानके पृष्ठ भागमें छींक हो तो शत्रुओंकी वृद्धि, बायें कानके पास छींक हो तो जय, बायें कानके पृष्ठ भागकी ओर छींक हो तो भोगोंकी प्राप्ति, बायें

नेत्रके आगे छींक हो तो धन लाभ होता है। प्रयाण कालमें सम्मुख छींक अत्यन्त अशुभकारक है और दाहिनी छींक धन नाश करने वाली है। अपनी छींक अत्यन्त अशुभ कारक होती है। ऊँचे स्थानकी छींक मृत्युभय है; पीठ पीछेकी छींक भी शुभ होती है। छींकका विचार 'डाक'ने निम्न प्रकार किया है—

दक्षिन छींकै धन लै दीजै, नैरित कोन सिंहासन दीजै ॥
पच्छिम छींकै मिठ भोजाना, गेलो पलटै वायब कोना ॥
उत्तर छींकै मान समान, सर्व सिद्ध लै कोन ईशान ॥
पूरब छींक्का मृत्यु हुंकार, अग्नि कोनमें दुःखके भार ॥
सबके छिक्का कहिगेल 'डाक' अपने छिक्का नहिं कस काज ॥
आकाशक छिक्के जे नर जाय, पलटि अन्न मन्दिर नहिं खाय ॥

अर्थात्—दक्षिण दिशासे होने वाली छींक धन हानि करती है, नैऋत्य कोणकी छींक सिंहासन दिलाती है। पश्चिम दिशाकी छींक मीठा भोजन और वायव्य कोणकी छींक द्वारा गया हुआ व्यक्ति सकुशल वापस लौट आता है। उत्तरकी छींक मान-सम्मान दिलाती है, ईशान कोणकी छींक समस्त मनोरथकी सिद्धि करती है। पूर्वकी छींक मृत्यु और अग्निकोणकी दुःख देती है। यह अन्य लोगोंकी छींकका फल है। अपनी छींक तो सभी कार्योंको नष्ट करने वाली होती है। अतः अपनी छींकका सदा त्याग करना चाहिए। ऊँचे स्थानकी छीकमें जो व्यक्ति यात्राके लिए जाता है, वह पुनः वापस नहीं लौटता है। नीचे स्थानकी छींक विजय देती है।

'वसन्तराज शाकुन'में दशों दिशाओंकी अपेक्षा छींकके दस भेद बतलाये गये हैं। पूर्व दिशामें छींक होनेसे मृत्यु, अग्निकोणमें शोक, दक्षिणमें हानि, नैऋत्यमें प्रियसंगम, पश्चिममें मिष्ट आहार, वायव्यमें श्री-सम्पदा, उत्तरमें कलह, ईशानमें धनागम, ऊपरकी छींकमें संहार और नीचेकी छींकमें सम्पत्तिकी प्राप्ति होती है। नीचे आठों दिशाओंमें प्रहर-प्रहरके अनुसार छींकका शुभाशुभत्व दिखलाया जाता है।

आठो दिशाओंमें प्रहरानुसार छींकफल बोधक चक्र

ईशान	पूर्व	आग्नेय
१. हर्ष	१. लाभ	१. लाभ
२. नाश	२. धन-लाभ	२. मित्र-दर्शन
३. व्याधि	३. मित्र-लाभ	३. शुभ-वार्त्ता
४. मित्र-सङ्गम	४. अग्नि-भय	४. अग्नि-भय
उत्तर		**दक्षिण**
१. शत्रु-भय		१. लाभ
२. रिपु-सङ्ग	यात्रा	२. मृत्यु-भय
३. लाभ		३. नाश
४. भोजन		४. काल
वायव्य कोण	**पश्चिम**	**नैऋत्य**
१. स्त्री-लाभ	१. दूर गमन	१. लाभ
२. लाभ	२. हर्ष	२. मित्र भेंट
३. मित्र-लाभ	३. कलह	३. शुभ वार्त्ता
४. दूर गमन	४. चोर	४. लाभ

परिशिष्ट ३

उत्पात-विचार

स्वभावके विपरीत होना उत्पात है। ये उत्पात तीन प्रकारके होते हैं—दिव्य, अन्तरिक्ष और भौम। देव-प्रतिमाओं द्वारा जिन उत्पातोंकी सूचना मिलती है, वे दिव्य कहलाते हैं। नक्षत्रोंका विचार, उल्का, निर्घात, पवन, विद्युत्पात, गन्धर्वपुर एवं इन्द्रधनुषादि अन्तरिक्ष उत्पात हैं। इस भूमिपर चल एवं स्थिर पदार्थोंका विपरीत रूपमें दिखलायी पड़ना भौम उत्पात हैं। आचार्य ऋषिपुत्रने दिव्य उत्पातोंका वर्णन करते हुए बतलाया है कि तीर्थङ्कर प्रतिमाका छत्रभङ्ग होना, हाथ-पाँव, मस्तक, भामण्डलका भंग होना अशुभ सूचक है। जिस देश या नगरमें प्रतिमाजी स्थिर या चलित भंग हो जायँ तो उस देश या नगरमें अशुभ होता है। छत्रभंग होनेसे प्रशासक या अन्य किसी नेताकी मृत्यु, रथ टूटनेसे राजाका मरण, तथा जिस नगरमें रथ टूटता है, उस नगरमें छः महीनेके पश्चात् अशुभ फलकी प्राप्ति होती है। शहरमें महामारी, चोरी, डकैती या अन्य अशुभ कार्य छः महीनों के भीतर होता है। भामण्डलके भंग होनेसे तीसरे या पाँचवें महीनेमें आपत्ति आती है। उस प्रदेशके शासक या शासन परिबारमें किसीकी मृत्यु होती है। नगरमें धन-जनकी हानि होती है। प्रतिमाके हाथ भंग होनेसे तीसरे महीनेमें कष्ट और पाँव भंग होनेसे सातवें महीनेमें कष्ट होता है। हाथ और पाँवके भंग होनेका फल नगरके प्रशासक मुखिया एवं पञ्चायतके प्रमुखको भी भोगना पड़ता है। प्रतिमाका अचानक भंग होना अत्यन्त अशुभ है। यदि रखी हुई प्रतिमा स्वयमेव ही मध्याह्न या प्रातःकालमें भंग हो जाय तो उस नगरमें तीन महीनेके उपरान्त महान् रोग या संक्रामक रोग फैलते हैं। विशेष रूपसे हैजा, प्लेग एवं इनफ्लुएँजाकी उत्पत्ति होती है। पशुओंमें भी रोग उत्पन्न होता है।

यदि स्थिर प्रतिमा अपने स्थानसे हटकर दूसरी जगह पहुँच जाय या चलती हुई मालूम पड़े तो तीसरे महीने अचानक विपत्ति आती है। उस नगर या प्रदेशके प्रमुख अधिकारीको मालूम पड़े तो तीसरे महीने अचानक विपत्ति आती है उस नगर या प्रदेशके प्रमुख अधिकारीको मृत्यु तुल्य कष्ट भोगना पड़ता है जनसाधारणको भी आधि-व्याधिजन्य कष्ट उठाना पड़ता है। यदि प्रतिमा सिंहासनसे नीचे उतर आवे अथवा सिंहासनसे नीचे गिर जाये तो उस प्रदेशके प्रमुखकी मृत्यु होती है। उस प्रदेशमें अकाल, महामारी और वर्षाभाव रहता है। यदि उपर्युक्त उत्पात लगातार सात दिन या पन्द्रह दिन तक हों तो निश्चयतः प्रतिपादित फलकी प्राप्ति होती है। यदि एकाध दिन उत्पात हाकर शान्त हो जाय तो पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है। यदि प्रतिमा जीभ निकाल कर कई दिनोंतक रोती हुई दिखलाई पड़े तो जिस नगरमें यह घटना घटती है, उस नगरमें अत्यन्त उपद्रव होता है। प्रशासक और प्रशास्योंमें झगड़ा होता है, धन-धान्यकी क्षति होती है। चोर और डाकुओंका उपद्रव अधिक बढ़ता है। संग्राम, मारकाट, एवं संघर्षकी स्थिति बढ़ती जाती है। प्रतिमाका रोना, राजा, मन्त्री या किसी महान नेताकी मृत्युका सूचक, हँसना पारस्परिक विद्वेष, संघर्ष एवं कलहका सूचक, चलना और काँपना बीमारी, संघर्ष, कलह, विषाद, आपसी फूट एवं गोलाकार चक्कर काटना भय, विद्वेष, सम्मानहानि तथा देशकी धन-जन-हानिका सूचक हैं। प्रतिमाका हिलना, रंग बदलना अनिष्ट सूचक एवं तीन महीनोंमें नाना-प्रकारके कष्टोंका सूचक अवगत करना चाहिए। प्रतिमाका पसीजना अग्निभय, चोरभय एवं महामारीका सूचक है। धुँआ सहित प्रतिमासे पसीना निकले तो जिस प्रदेशमें यह घटना घटित होती हैं, उससे सौ कोशकी दूरीमें चारों ओर धन-जनकी क्षति होती है। अतिवृष्टि या अनावृष्टिके कारण जनताको महान् कष्ट होता हैं।

तीर्थङ्करकी प्रतिमासे पसोना निकला धार्मिक विद्वेष एवं संघर्षकी सूचना देता है। मुनि और श्रावक

दोनोंपर किसी प्रकारकी विपत्ति आती है तथा दोनोंको विधर्मियों द्वारा उपसर्ग सहन करना पड़ता है। अकाल और अवर्षणकी स्थिति भी उत्पन्न हो जाती है। यदि शिवकी प्रतिमासे पसीना निकले तो ब्राह्मणोंको कष्ट, कुबेरकी प्रतिमासे पसीना निकलेतो वैश्योंको कष्ट, कामदेवकी प्रतिमासे पसीना निकले तो आगमकी हानि कृष्णकी प्रतिमासे पसीना निकले तो सभी जातियोंको कष्ट; सिद्ध और बौद्ध प्रतिमाओंसे धुँआ सहित पसीना निकले तो उस प्रदेशके ऊपर महान् कष्ट, चण्डिका देवीकी प्रतिमामेंसे पसीना निकले तो स्त्रियोंको कष्ट, वाराही देवीकी प्रतिमासे पसीना निकले तो हाथियोंका ध्वंस; नागिनी देवीकी प्रतिमासे धुँआ सहित पसीना निकले तो गर्भनाश, रामकी प्रतिमासे पसीसा निकले तो देशमें महान् उपद्रव, लूट-पाट, धननाश; सीता या पार्वतीकी प्रतिमासे पसीना निकले तो नारी समाजको महान् कष्ट एवं सूर्यकी प्रतिमासे पसीना निकले तो संसारको अत्यधिक कष्ट और उपद्रव सहन करने पड़ते हैं। यदि तीर्थङ्करकी प्रतिमा भग्न हो और उससे अग्निकी लपट या रक्तकी धारा निकलती हुई दिखलाई पड़े तो संसारमें मार-काट निश्चय होती है। आपसमें मार-काट हुए बिना किसीको भी शान्ति नहीं मिलती है। किसीभी देवकी प्रतिमाका भङ्ग होना, फूटना या हँसना, चलना आदि अशुभकारक है। उक्त क्रियाएँ एक सप्ताह तक लगातार होती हों तो निश्चय तीन महीनेके भीतर अनिष्टकारक फल प्राप्त होता है। ग्रहोंकी प्रतिमाएँ, चौबीस शासन देवों वा शासन देवियोंकी प्रतिबाएँ, क्षेत्रपाल और दिक्पालोंकी प्रतिमाओंमें उक्त प्रकारकी विकृति होनेसे व्याधि, धनहानि, मरण एवं अनेक प्रकारकी व्याधियाँ उत्पन्न होती हैं। देवकुमार, देवकुमारी, देववनिता एवं देवदूतोंके जो विकार उत्पन्न होते हैं, वे समाजमें अनेक प्रकारकी हानि पहुँचाते हैं। देवोंके प्रासाद, भवन, चैत्यालय, वेदिका, तोरण, केतु आदिके जलने या बिजली द्वारा अग्नि प्राप्त होनेसे उस प्रदेशमें अत्यन्त अनिष्टकर कियाएँ होती हैं। उक्त क्रियाओंका फल छः महीनेमें प्राप्त होता है। भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी और कल्पवासी देवोंके प्रकृति विपर्दय लोगों के नानाप्रकारके कष्टोंका सामना करना पड़ता है।

आकाशमें असमयमें इन्द्रधनुष दिखलायी पड़े तो प्रजाको कष्ट, वर्षाभाव और धन-हानि होती है। इन्द्रधनुषका वर्षा ऋतुमें होना ही शुभ सूचक माना जाता है। अन्य ऋतुमें अशुभ सूचक कहा गया है। आकाश से रुधिर, मांस, अस्थि और चर्बीकी वर्षा होनेसे संग्राम, जनताको भय, महामारी एवं प्रशासकोंमें मतभेद होता है। धान्य, सुवर्ण, वल्कल, पुष्प और फलकी वर्षा हो तो उस नगरका विनाश होता है, जिसमें यह घटना घटती है। जिस नगरमें कोयले और धूलिकी वर्षा होती है, उस नगरका सर्वनाश होता है। बिना बादलके आकाशसे ओलोंका गिरना, बिजलीका तड़पना तथा बिना गर्जनके अकस्मात बिजलीका गिरना उस प्रदेशके लिए भयोत्पादक तथा नाना प्रकारकी हानियाँ होती हैं। किसी भी व्यक्तिको शान्ति नहीं मिल सकती है। निर्मल सूर्यमें छाया दिखलायी न दे अथवा विकृत छाया दिखलायी दे तो देशमें महाभय होता है। जब दिन या रातमें मेघहीन आकाशमें पूर्व या पश्चिम दिशामें इन्द्रधनुष दिखलायी देता है; तब उस प्रदेशमें घोर दुर्भिक्ष पड़ता है। जब आकाशमें प्रतिध्वनि हो, तूर्य-तुरईकी ध्वनि सुनाई दे एवं आकाशमें घण्टा, झालरका शब्द सुनाई पड़े तो दो महीने तक महाध्वनिसे प्रजा पीड़ित रहती है। अकाशमें किसी भी प्रकारका अन्य उत्पात दिखलायी पड़े तो जनताको कष्ट, व्याधि, मृत्यु एवं संघर्ष जन्य दुःख उठाना पड़ता है।

दिनमें धूलिका बरसना, रात्रिके समय मेघ विहीन आकाशमें नक्षत्रोंका नाश या दिनमें नक्षत्रोंका दर्शन होना संघर्ष, मरण, भय और धन-धान्यका विनाश-सूचक है। आकाशका बिना बादलोंका रंग-विरंग होना, विकृति आकृति और संस्थानका होना भी अशुभ सूचक है। जहाँ छः महीनों तक लगातार हर महीने उल्का दिखलाई देती रहे, वहाँ मनुष्यका मरण होता है। सफेद और धूसर रंगकी उल्काएँ पुण्यात्मा कहे जाने वाले व्यक्तियोंको कष्ट पहुँचाती है। पञ्चरंगी उल्का महामारी और इधर-उधर टकराकर नष्ट होने वाली उल्का

देशमें उपद्रव उत्पन्न करती है। अन्तरिक्ष निमित्तोंका विचार करते समय पूर्वोक्त विद्युत्पात, उल्कापात आदिका विचार अवश्य कर लेना चाहिए।

भूमि पर प्रकृति विपर्यय—उत्पात दिखलाई पड़ें तो अनिष्ट समझना चाहिए। ये उत्पात जिस स्थानमें दिखलायी देते हैं, अनिष्ट फल उसी जगह घटित होता है। अस्त्र-शस्त्रोंका जलना, उनके शब्द होना, जलते समय अग्निसे शब्द होना तथा ईन्धनके बिना जलाये अग्निका जल जाना अनिष्ट सूचक है। इस प्रकारके उत्पातमें किसी आत्मीयकी मृत्यु होती है। असमयमें वृक्षोंमें फल-फूलका आना, वृक्षोंका हँसना, रोना, दूध निकलना आदि उत्पात धनक्षय, शिशुओंमें रोग तथा आपसमें झगड़ा होनेकी सूचना देते हैं। वृक्षोंसे मद्य निकले तो वाहनोंका नाश, रुधिर निकलनेसे संग्राम, शहद निकलनेसे रोग, तेल निकलनेसे दुर्भिक्ष, जल निकलनेसे भय और दुर्गन्धित पदार्थ निकलनेसे पशु क्षय होता है। अङ्कुर सूख जानेसे वीर्य और अन्नका नाश, रोगहीन वृक्ष अकारण सूख जाँय तो सेनाका विनाश और अन्न क्षय, आपही वृक्ष खड़े होकर उठ बैठें तो देवका भय, कुश-मयमें फल-फूलोंका आना, प्रशासक और नेताओंका विनाश, वृक्षोंसे ज्वाला और धुँआ निकले तो मनुष्योंका क्षय होता है। वृक्षोंसे मनुष्यके जैसा शब्द निकलता हुआ सुनाई पड़े तो अत्यन्त अशुभकारी होता है। इससे मनुष्योंमें अनेक प्रकारकी बीमारियाँ फैलती हैं, जनतामें अनेक प्रकारसे अशान्ति आती है।

कमल आदिके एक कालमें दो या तीन बालकी उत्पत्ति हो अथवा दो फूल या फल दिखलायी पड़े तो जिस जगह यह घटना घटित होती है, वहाँके प्रशासकका मरण होता है। जिस किसानके खेतमें यह निमित्त दिखलायी पड़ता है, उसकी भी मृत्यु होती है। जिस गाँवमें यह उत्पात दिखलायी पड़ता है, उस गाँवमें धन-धान्यके विनाशके साथ अनेक प्रकारके उपद्रव होते हैं। फल-फूलोंमें विकारका दिखलायी पड़ना, प्रकृति विरुद्ध फल-फूलोंका दृष्टिगोचर होना ही उस स्थानकी शान्तिको नष्ट करने वाला तथा आपसमें संघर्ष उत्पन्न करने वाला है। शीत और ग्रीष्ममें परिवर्तन हो जानेसे अर्थात् शीत ऋतुमें गर्मी और ग्रीष्म ऋतुमें शीत पड़नेसे अथवा सभी ऋतुओंमें परस्पर परिवर्तन हो जानेसे दैवभय, राजभय, रोगभय, और नाना प्रकारके कष्ट होते हैं। यदि नदियाँ नगरके निकटवर्ती स्थानको छोड़कर दूर हटकर बहने लगें तो उन नगरोंकी आबादी घट जाती है, वहाँ अनेक प्रकारके रोग फैलते हैं। यदि नदियोंका जल विकृत हो जाय, वह रुधिर, तैल, घी, शहद आदिकी गन्ध और आकृतिके समान बहता हुआ दिखलायी पड़े तो भय, अशान्ति और धन-क्षय होता है। कुओंसे धूम निकलता हुआ दिखायी पड़े, कुओंका जल स्वयं ही खौलने लगे, रोने और गानेका शब्द जलसे निकले तो महामारी फैलती है। जलका रूप, रस, गन्ध और स्पर्श परिवर्तित हो जाय तो भी महामारीकी सूचना समझनी चाहिए।

स्त्रियोंका प्रसव-विकार होना, उनके एक साथ तीन-चार बच्चोंका पैदा करना, उत्पन्न हुए बच्चोंकी आकृति पशुओं और पक्षियोंके समान हो तो, जिस कुलमें यह घटना घटित होती है, उस कुलका विनाश, जिस गाँव या नगरमें घटना घटित होती है, उस गाँव या नगरमें महामारी, अवर्षण और अशान्ति रहती है। इस प्रकारके उत्पातका फल छः महीनेसे लेकर एक वर्ष तक प्राप्त होता है। घोड़ी, ऊँटनी, भैंस, गाय और हथिनी एक साथ दो बच्चे पैदा करें तो इनकी मृत्यु हो जाती है तथा उस नगरमें मारकाट होती है। एक जातिका पशु दूसरे जातिके पशुके साथ मैथुन करे तो अमङ्गल होता है, दो बैल परस्परमें स्तनपान करें तथा कुत्ता गायके बछड़ेका स्तनपान करे तो महान् अमङ्गल होता है। पशुओंके विपरीत आचरणसे भी अनिष्टकी आशङ्का समझनी चाहिए। यदि दो स्त्री जातिके प्राणी आपसमें मैथुन करें तो भय, स्तनपान अकारण करें तो हानि, दुर्भिक्ष एवं धन-विनाश होता है।

रथ, मोटर, बहली आदिकी सवारी बिना चलाये चलने लगे और बिना किसी खराबीके चलाने पर

भी न चले तथा सवारियाँ चलाने पर भूमिमें गड़ जाँय तो अशुभ होता है। बिना बजाये तुरहीका शब्द होने लगे और बजाने पर बिना किसी प्रकारकी खराबीके तुरही शब्द न करे तो इससे परचक्रका आगमन होता है अथवा शासकका परिवर्तन होता है। नेताओंमें मतभेद होता है और वे आपसमें झगड़ते हैं। यदि पवन स्वयं ही साँय-साँयकी विकृत ध्वनि करता हुआ चले तथा पवनसे घोर दुर्गन्ध आती हो तो भय होता है, प्रजाका विनाश होता है तथा दुर्भिक्ष भी होता है। घरके पालतू पक्षीगण वन-गमन करें और बनैले पक्षी निर्भय होकर पुरमें प्रवेश करें, दिनमें चरने वाले रात्रिमें अथवा रात्रिके चरने वाले दिनमें प्रवेश करें तथा दोनों सन्ध्याओंमें मृग और पक्षी मण्डल बाँध कर एकत्रित हों तो भय, मरण, महामारी एवं धान्यका विनाश होता है। सूर्यकी ओर मुँह करके गीदड़ रोवें, कबूतर या उल्लू दिनमें राजभवनमें प्रवेश करे, प्रदोषके समय मुर्गा शब्द करे, हेमन्त आदि ऋतुओंमें कोयल बोले, आकाशमें बाज आदि पक्षियोंका प्रतिलोम मण्डल विचरण करे तो भयदायी होता है। घर, चैत्यालय और द्वारपर अकारण ही पक्षियोंका झुण्ड गिरे तो उस घर या चैत्यालयका विनाश होता है। यदि कुत्ता हड्डी लेकर घरमें प्रवेश करे तो रोग उत्पन्न होनेकी सूचना देता है। पशुओंकी आवाज मनुष्योंके समान मालूम पड़ती हो तथा वे पशु मनुष्योंके समान आचरण भी करें तो उस स्थान पर घोर सङ्कट उपस्थित होता है। रातमें पश्चिम दिशाकी ओरसे कुत्ता शब्द करे और उसके उत्तरमें शृगाल शब्द करे अर्थात् पहले कुत्ता बोले, पश्चात् शृगाल अनन्तर पुन: कुत्ता, पश्चात् शृगाल इस प्रकार शब्द करें तो उस नगरका विनाश छः महीनेके बाद होने लगता है और तीन वर्षों तक उस नगरपर आपत्ति आती रहती है। भूकम्प हुए बिना पृथ्वी फट जाय, बिना अग्निके धुँआ दिखलायी पड़े और बालक-गण मार-पीटका खेल-खेलते हुए कहें—मार डालो, पीटो, इसका विनाश कर दो तो उस प्रदेशमें भूकम्प होने-की सूचना समझनी चाहिए। बिना बनाये किसी व्यक्तिके घरकी दीवालों पर गेरूके लाल चिह्न या कोयलेसे काले चित्र बन जायें तो उस घरका पाँच महीनेके बाद विनाश होता है। जिस घरमें अधिक मकड़ियाँ जाला बनाती हैं, उस घरमें कलह होती है। गाँव या नगरके बाहर दिनमें शृङ्गाल और उल्लू शब्द करें तो उस गाँवके विनाशकी सूचना समझनी चाहिए। वर्षाकालमें पृथ्वीका काँपना, भूकम्प होना, बादलोंकी आकृतिका बदल जाना, पर्वत और घरोंका चलायमान होना, भयङ्कर शब्दोंका चारों दिशाओंसे सुनायी पड़ना, सूखे हुए वृक्षोंमें अङ्कुरका निकल आना, इन्द्रधनुषका काले रूपमें दिखलायी पड़ना एवं श्यामवर्णकी विद्युतका गिरना, भय, मृत्यु और अनावृष्टिका सूचक है। जब वर्षाऋतुमें अधिक वर्षा होनेपर भी पृथ्वी सूखी दिखलायी पड़े तो उस वर्ष दुर्भिक्षकी स्थिति समझनी चाहिए। ग्रीष्मऋतुमें आकाशमें बादल दिखलायी पड़ें, बिजली कड़के और चारों ओर वर्षाऋतुकी बहार दिखलायी पड़े तो भय तथा महामारी होती है। वर्षाऋतुमें तेज हवा चले और त्रिकोण या चौकोर ओले गिरें तो उस वर्ष अकालकी आशङ्का समझनी चाहिए। यदि गाय, बकरी घोड़ी, हथिनी और स्त्रीके विपरीत गर्भकी स्थित हो तथा विपरीत सन्तान प्रसव करें तो राजा और प्रजा दोनोंके लिए अत्यन्त कष्ट होता है। ऋतुओंमें अस्वाभाविक विकार दिखलायी पड़े तो जगत्में पीड़ा, भय, संघर्ष आदि होते हैं। यदि आकाशमें धूलि, अग्नि और धुँआकी अधिकता दिखलायी पड़े तो दुर्भिक्ष, चोरोंका उपद्रव एवं जनतामें अशान्ति होती है।

रोग सूचक उत्पात—चन्द्रमा कृष्ण वर्णका दिखलायी दे तथा ताराएँ विभिन्न वर्णकी टूटती हुई मालूम पड़ें तो, सूर्य उदयकालमें कई दिनों तक लगातार काला और रोता हुआ दिखलायी पड़े तो दो महीने उप-रान्त महामारीका प्रकोप होता है। बिल्ली तीन बार रोकर चुप हो जाय तथा नगरके भीतर आकर शृगाल-सियार तीन बार रोकर चुप हो जाय तो उस नगरमें भयंकर हैजा फैलता है। उल्कापात हरे वर्ण का हो, चन्द्रमा भी हरे वर्णका दिखलायी पड़े तो सामूहिक रूपमें ज्वरका प्रकोप होता है। यदि सूखे वृक्ष अचानक

हरे हो जाँय तो उस नगरमें सात महीनेके भीतर महामारी फैलती है। चूहोंका समूह-सेना बनाकर नगरसे बाहर जाता हुआ दिखलाई पड़े तो प्लेगका प्रकोप समझना चाहिए। पीपल वृक्ष और वट वृक्षमें असमयमें फल-पुष्प आवें तो नगर या गाँवमें पाँच महीनोंके भीतर संक्रामक रोग फैलता है, जिससे सभी प्राणियोंको कष्ट होता है। गोधा, मेंढक और मोर रात्रिमें भ्रमण करें तथा श्वेत काक एवं गृद्ध घरोंमें घुस आवें तो उस नगर या गाँवमें तीन महीनेके भीतर बीमारी फैलती है। काक मैथुन देखनेसे छः मासमें मृत्यु होती है।

धन-धान्यनाश सूचक उत्पात—वर्षाऋतुमें लगातार सात दिनों तक जिस प्रदेशमें ओले बरसते हैं, उस प्रदेशके धन-धान्यका नाश हो जाता है। रात या दिन उल्लू किसीके घरमें प्रविष्ट होकर बोलने लगे तो उस व्यक्तिकी सम्पत्ति छः महीनेमें विलीन हो जाती है। घरके द्वार पर स्थित वृक्ष रोने लगें तो उस घरकी सम्पत्ति विलीन होती है, घरमें रोग एवं कष्ट फैलते हैं। अचानक घरकी छतके ऊपर स्थित होकर श्वेत काक पाँच बार जोर-जोरसे काँव-काँव करे, पुनः चुप होकर तीन बार धीरे-धीरे काँव-काँव करे तो उस घरकी सम्पत्ति एक वर्षमें विलीन हो जाती है। यदि यह घटना नगरके बाहर पश्चिमी द्वार पर घटित हो तो नगरकी सम्पत्ति विलीन हो जाती है। नगरके मध्यमें किसी व्यन्तरकी बाधा या व्यन्तरका दर्शन लगातार कई दिनों तक हो तो भी नगरकी श्री विलीन हो जाती है। यदि आकाशसे दिन भर धूल बरसती रहे, तेज वायु चले और दिन भयङ्कर मालूम हो तो उस नगरकी सम्पत्ति नष्ट होती है, जिस नगरमें यह घटना घटती है। जङ्गलमें गयी हुयी गायें यदि मध्याह्नमें ही रम्भाती हुई लौट आवें और वे अपने बछड़ोंको दूध न पिलावें तो सम्पत्तिका विनाश समझना चाहिए। किसी भी नगरमें कई दिनों तक संघर्ष होता रहे, वहाँके निवासियोंमें मेल-मिलाप न हो तो पाँच महीनोंमें समस्त सम्पत्तिका विनाश हो जाता है। वरुण नक्षत्रका केतु दक्षिणमें उदय हो तो भी सम्पत्तिका विनाश समझना चाहिए। यदि लगातार तीन दिनों तक प्रातः सन्ध्या काली, मध्याह्न सन्ध्या नीली और सायं सन्ध्या मिश्रित वर्णकी दिखलायी पड़े तो भय और आतङ्कके साथ द्रव्य विनाशकी भी सूचना मिलती है। रातको निरभ्र आकाशमें तारोंका अभाव दिखलायी पड़े या ताराएँ टूटती हुई मालूम हों तो रोग और धन नाश दोनों फल प्राप्त होते हैं। यदि ताराओंका रङ्ग भस्मके समान मालूम हो, दक्षिण दिशा रुदन करती हुई और उत्तर दिशा हँसती हुई-सी दिखलायी पड़े तो धन-धान्यका विनाश होता है। पशुओंकी वाणी यदि मनुष्यके समान मालूम हो तो धन-धान्यके विनाशके साथ सग्रामकी सूचना भी मिलती है। कबूतर अपने पंखोंको पटकता हुआ जिस घरमें उल्टा गिरता है और अकारण ही मृत जैसा हो जाता है, उस घरकी सम्पत्तिका विनाश हो जाता है। यदि गाँव या नगरके बीस-पच्चीस बच्चे जो नग्न होकर धूलिमें खेल रहे हों, वे अकस्मात् 'नष्ट हो गया' 'नष्ट हो गया' इस शब्दका व्यवहार करें तो उस नगरसे सम्पत्ति रूठकर चली जाती है। रथ, मोटर, इक्का, रिक्सा, साइकिल आदिकी सवारी पर चढ़ते ही कोई व्यक्ति पानी गिराते हुए दिखलायी पड़े तो भी धनका नाश होता है। दक्षिण दिशाकी ओरसे शृगालका रोते हुए नगरमें प्रवेश करना धन-हानिका सूचक है।

वर्षाभाव-सूचक उत्पात—ग्रीष्म ऋतुमें आकाशमें इन्द्रधनुष दिखलायी पड़े, माघ-मासमें गर्मी पड़े तो उस वर्ष वर्षा नहीं होती है। वर्षा ऋतुके आगमनमें कुहासा छा जावे तो उस वर्ष वर्षाका अभाव जानना चाहिए। आषाढ़ महीनेके प्रारम्भमें इन्द्रधनुषका दिखलायी पड़ना भी वर्षा भावका सूचक है। सर्पको छोड़कर अन्य जातिके प्राणी सन्तानका भक्षण करें तो वर्षाभाव और घोर दुर्भिक्षकी सूचना समझनी चाहिए। यदि चूहे लड़ते हुए दिखलायी पड़ें, रातके समय श्वेत धनुष दिखलायी दे, सूर्यमें छेद मालूम पड़ें, चन्द्रमा टूटा हुआ-सा दिखलायी पड़े, धूलिमें चिड़ियाँ स्नान करें और सूर्यके अस्त होते समय सूर्यके पास ही दूसरा उद्योत वाला सूर्य दिखलायी दे तो वर्षाभाव होता है तथा प्रजाको कष्ट उठाना पड़ता है।

अग्निभय-सूचक उत्पात—सूखे काठ, तिनके, घास आदिका भक्षण कर घोड़े सूर्यकी ओर मुँहकर हींसने लगें तो तीन महीनोंमें नगरमें अग्निप्रकोप होता है। घोड़ोंका जलमें हींसना, गायोंका अग्नि चाटना या खाना, सूखे वृक्षोंका स्वयं जल उठना, एकत्र घास या लकड़ोमेंसे स्वयं धुँआ निकलना, लड़कोंका आगसे खेल करना या खेलते-खेलते बच्चे घरसे आग ले आवें, पक्षी आकाशमें उड़ते हुए अकस्मात् गिर जावें तो उस गाँव या नगरमें पाँच दिनसे लेकर तीन महीने तक अग्निका प्रकोप होता है।

राजनैतिक-उपद्रव-सूचक—जिस स्थान पर मनुष्य गाना गा रहे हों, वहाँ गाना सुननेके लिए यदि घोड़ी, हथिनी, कुतिया एकत्र हों तो राजनैतिक उपद्रव होते हैं। जहाँ बच्चे खेलते-खेलते आपसमें लड़ाई करें, क्रोधसे झगड़ा आरम्भ करें वहाँ युद्ध अवश्य होता है तथा राजनीतिके मुखियोंमें आपसमें फूट पड़ जानेसे देशकी हानि भी होती है। बिना बैलोंका हल यदि आप-से-आप खड़ा होकर नाचने लगे तो परचक्र—जिस पार्टीका शासन है, उससे विपरीत पार्टीका शासन होता है। शासन प्राप्त पार्टी या दलको पराजित होना पड़ता है। शहरके मध्यमें कुत्ते ऊँचा मुँह कर लगातार आठ दिन तक भूँकते दिखलायी पड़ें तो भी राजनैतिक झगड़े उत्पन्न होते हैं। जिस नगर या गाँवमें गीदड़, कुत्ते और चूहे बिल्लीको मार लगावे, उस नगर या गाँवमें राजनीतिको लेकर उपद्रव होते हैं। उसमें अशान्ति इस घटनाके बाद दस महीने तक रहती है। जिस नगर या गाँवमें सूखा वृक्ष स्वयं ही उखड़ता हुआ दिखलायी पड़े, उस नगर या गाँवमें पार्टीबन्दी होती है। नेताओं और मुखियोंमें परस्पर वैमनस्य हो जाता है, जिससे अत्यधिक हानि होती है। जनतामें भी फूट हो जानेसे राजनीतिकी स्थिति और भी विषम हो जाती है। जिस देशमें बहुत मनुष्योंकी आवाज सुनाई पड़े, पर बोलने वाला कोई नहीं दिखलाई दे, उस देश या नगरमें पाँच महीनों तक अशान्ति रहती है। रोग-बीमारीका प्रकोप भी बना रहता है। यदि सन्ध्या समय गीदड़, लोमड़ी किसी नगर या ग्रामके चारों ओर रुदन करें तो भी राजनैतिक झंझट रहता है।

वैयक्तिक हानि-लाभ सूचक उत्पात—यदि कोई व्यक्ति बाजोंके न बजाने पर भी लगातार सात दिनों तक बाजोंकी ध्वनि सुने तो चार महीनेमें उसकी मृत्यु तथा धन-हानि होती है। जो अपनी नाकके अग्रभाग पर मक्खीके न रहने पर भी मक्खी बैठी हुई देखता है, उसे व्यापारमें चार महीने तक हानि होती है। यदि प्रातःकाल जागने पर हाथोंकी हथेलियों पर दृष्टि पड़ जाय तथा हाथमें कलश, ध्वजा और छत्र यों ही दिखलायी पड़ें तो उसे सात महीने तक धनका लाभ होता है तथा भावी उन्नति भी होती है। कहीं गन्धके साधन न रहने पर भी सुगन्ध मालूम पड़े तो मित्रोंसे मिलाप, शान्ति एवं व्यापारमें लाभ तथा सुखकी प्राप्ति होती है। जो व्यक्ति स्थिर चीजोंको चलायमान और चञ्चल वस्तुओंको स्थिर देखता है, उसे व्याधि, मरणभय एवं धन-नाशके कारण कष्ट होता है। प्रातःकाल यदि आकाश काला दिखलायी पड़े और सूर्यमें अनेक प्रकारके दाग दिखलायी दें तो उस व्यक्तिको तीन महीनेके भीतर रोग होता है।

सुख-दुःखकी जानकारीके लिए अन्य फलादेश

नेत्रस्फुरण—आँख फड़कनेका विशेष फलादेश—दाहिनी आँखका नीचेका हिस्सा कानके पासका फड़कनेसे हानि, नीचेका मध्य हिस्सा फड़कनेसे भय और नाकके पास वाला नीचेका हिस्सा फड़कनेसे धन हानि, आत्मीयको कष्ट या मृत्यु, क्षय आदि फल होते हैं। इसी आँखका ऊपरी भाग अर्थात् बरौनीका कानके निकटवाला हिस्सा फड़कनेसे सुख, मध्यका भाग फड़कनेसे धन लाभ और ऊपर ही नाकके पास वाले भागके फड़कनेसे हानि होती है। बायीं आँखका नीचे वाला भाग नाकके पासका फड़कनेसे सुख, मध्यका हिस्सा फड़कनेसे भङ्ग और कानके पास वाला नीचेका हिस्सा फड़कनेसे सम्पत्ति लाभ होता है। ऊपर बरौनीका नाकके पास वाला भाग फड़कनेसे भय, मध्यका हिस्सा फड़कनेसे चोरी या धनहानि और कानके पास वाला

हिस्सा फड़कनेसे कष्ट, मृत्यु अपनी या किसी आत्मीयकी अथवा अन्य किसी भी प्रकारकी अशुभ सूचना मिलती है। साधारणतया स्त्रीकी बायीं आँखका फड़कना और पुरुषकी दाहिनी आँखका फड़कना शुभ माना जाता है, पर विशेष जाननेके लिए दोनों ही नेत्रोंके पृथक्-पृथक् भागोंके फड़कनेका विचार करना चाहिए।

अङ्गस्फुरण फल—अङ्ग फड़कनेका फल

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक स्फुरण	पृथ्वी लाभ	नासिका स्फुरण	प्रीति सुख	वृषण स्फुरण	पुत्र प्राप्ति
ललाट स्फुरण	स्थान लाभ	हस्त स्फुरण	सद् द्रव्य लाभ	ओष्ठ स्फुरण	प्रियवस्तु लाभ
कन्धा स्फुरण	भोग समृद्धि	वक्ष: स्फुरण	विजय	हनु स्फुरण	भय
भ्रूमध्य	सुख प्राप्ति	हृदय स्फुरण	वांछित सिद्धि	कण्ठ स्फुरण	ऐश्वर्य लाभ
भ्रूयुग्म	महान् सुख	कटि स्फुरण	प्रमोद-बल	ग्रीवा स्फुरण	रिपु भय
कपाल स्फुरण	शुभ	कटि पार्श्व	प्रीति	पृष्ठ स्फुरण	युद्ध, पराजय
नेत्र स्फुरण	धन प्राप्ति	नाभि स्फुरण	स्त्री नाश	कपोल स्फुरण	वरांगना प्राप्ति
नेत्रकोण स्फुरण	लक्ष्मी लाभ	आंत्रक स्फुरण	कोश वृद्धि	मुख स्फुरण	मित्र प्राप्ति
नेत्र समीप	प्रिय समागम	भग स्फुरण	पति प्राप्ति	बाहु स्फुरण	मधुर भोजन
नेत्रपक्ष स्फुरण	सफलता, राज-सम्मान	कुक्षि स्फुरण	सुप्रीति लाभ	बाहु मध्य	धनागम
नेत्रपक्ष-पलक स्फुरण	मुकदमेमें विजय	उदर स्फुरण	कोश प्राप्ति	वस्ति देश स्फुरण	अभ्युदय
नेत्रकोपाङ्ग-देश स्फुरण	कलत्र लाभ	लिङ्ग स्फुरण	स्त्री लाभ	उर: स्फुरण	वस्त्र लाभ
		गुदा स्फुरण	वाहन प्राप्ति	जानु स्फुरण	शत्रु वृद्धि
जंघा स्फुरण	स्वामि-प्राप्ति	पादोपरि स्फुरण	स्थान लाभ	पादतल स्फुरण	नृपत्व
पाद स्फुरण	अलाभ				

पल्लीपतन और गिरगिट आरोहण फलबोधक चक्र

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
शिर	लाभ	ललाट	बन्धुदर्शन	भ्रूमध्य	राज्य सम्बन्ध
नासाग्र	व्याधि	दक्षिण कं०	आयुवृद्धि	वाम कर्ण	बहुलाभ
वाम-भुजा	राजभय	कण्ठ	शत्रु नाश	स्तन द्वय	दुर्भाग्य
जानुद्वय	शुभागम	जंघा	शुभ	हस्त द्वय	वस्त्रलाभ
कटि भाग	सवारी लाभ	दक्षिण मणिबन्ध	कष्ट, धन-नाश	वाम मणिबन्ध	कीर्तिनाश
गुल्फ	बन्धन	केशान्त	मरण	दक्षिण पाद	गमन
उत्तरोष्ठ	धननाश	नेत्र	धन प्राप्ति	उदर	भूषण लाभ
स्कन्ध	विजय	हृदय	धन लाभ	वामपाद	नाश
अधरोष्ठ	नवतुल्यता	द० भुज	बुद्धि नाश	पृष्ठ देश	बहुधन-प्राप्ति
नासिका	मिष्टान्न भोजन	मुख	स्त्री नाश	पादमध्य	मरण

पैर, जंघा, घुटने, गुदा और कमर पर छिपकली गिरनेसे बुरा फल होता है; अन्यत्र प्राय: शुभ फल होता है। पुरुषोंके बायें अङ्गका जो फल बतलाया गया है, उसे स्त्रियोंके दाहिने भागका तथा पुरुषोंके दाहिने अङ्गके फलादेशको स्त्रियोंके बायें भागका फल जानना चाहिए। छिपकलीके गिरनेसे और गिरगिटके ऊपर चढ़नेसे बराबर ही फल होता है। संक्षेपमें बतलाया गया है—

यदि पतति च पल्ली दक्षिणाङ्गे नराणां, स्वजनजनविरोधो वामभागे च लाभम् ।
उदरशिरसि कण्ठे पृष्ठभागे च मृत्युं, करचरणहृदिस्थे सर्वसौख्यं मनुष्यः ॥

अर्थात् दाहिने अङ्गपर पल्ली पतन हो तो आत्मीय लोगोंमें विरोध हो और वाम अङ्गपर पल्लीके गिरनेसे लाभ होता है। पेट, सिर, कण्ठ, पीठ पर पल्लीके गिरनेसे मृत्यु तथा हाथ, पाँव और छातीपर गिरनेसे सब सुख प्राप्त होते हैं।

गणित द्वारा पल्ली पतनके प्रश्नका उत्तर

'तिथिप्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता । नवभिस्तु हरेद् भागं शेषं ज्ञेयं फलाफलम् ॥
घातं नाशं तथा लाभं कल्याणं जयमङ्गले । उत्साहहानी मृत्युञ्च छिक्का पल्ली च जाम्बुकः ॥

अर्थात्—जिस दिन जिस प्रहरमें पल्ली पतन हुआ हो—छिपकली गिरी हो उस दिनकी तिथि शुक्ल प्रतिपदासे गिनकर लेना, प्रातःकालसे प्रहर और अश्विनीसे पतनके नक्षत्र तक लेना अर्थात् तिथि संख्या, नक्षत्र संख्या, और प्रहर संख्याको योग कर देना, इस योगमें नौ का भाग देनेपर एक शेषमें घात, दोमें नाश, तीनमें लाभ, चारमें कल्याण, पाँचमें जय, छःमें मङ्गल, सातवेंमें उत्साह, आठमें हानि और नौ शेषमें मृत्यु फल कहना चाहिए। उदाहरण—रामलालके ऊपर चैत्र कृष्णकी द्वादशीको अनुराधा नक्षत्रमें दिनमें १० बजे छिपकली गिरी है। इसका गणित द्वारा विचार करना है। अतः तिथि संख्या २७ (फाल्गुन शुक्ला १ से चैत्र कृष्णा द्वादशी तक), नक्षत्र संख्या १७ (अश्विनीसे अनुराधा तक), प्रहर संख्या २ (प्रातःकाल सूर्योदयसे तीन-तीन घण्टेका एक-एक प्रहर लेना चाहिए)। अतः २७ + १७ + २ = ४६ – ९ = ५ लं० शेष १। यहाँ उदाहरणमें एक शेष रहा है। अतः इसका फल घात होता है। किसी दुर्घटनाका शिकार यह व्यक्ति होगा।

पल्ली-पतनका फलादेश इस प्रकार भी मिलता है कि प्रातःकालसे लेकर मध्याह्नकाल तक पल्ली पतन होनेसे विशेष अनिष्ट, मध्याह्नसे सायंकाल तक पल्लीपतन होनेसे साधारण अनिष्ट और सन्ध्याकालके उपरान्त पल्ली-पतन होनेसे फलाभाव होता है। किसी-किसीका यह भी मत है कि तीनों कालोंकी सन्ध्याओंमें पल्ली-पतन होनेसे अधिक अनिष्ट होता है। इसका फल किसी न किसी प्रकारकी अशुभ घटनाका घटित होना है। दिनमें सोमवारको पल्ली-पतन होनेसे साधारण फल, मङ्गलवारको पल्लीपतनका विशेष फल, बुधवारको पल्लीपतन होनेसे शुभ फलकी वृद्धि तथा अशुभ फलकी हानि, गुरुवारको पल्लीपन होनेसे शुभ फलका अधिक प्रभाव तथा अशुभ फल साधारण, शुक्रवारको पल्लीपतन होनेसे सामान्य फलादेश, शनिवारको पल्लीपतन होनेसे अशुभ फलकी वृद्धि और शुभ फलकी हानि एवं रविवारको पल्लीपतन होनेसे शुभ फल भी अशुभ फलके रूपमें परिणत हो जाता है। पल्लीपतनका अनिष्ट फल तभी विशेष होता है, जब शनि या रविवारको भरणी या अश्लेषा नक्षत्रमें चतुर्थी या नवमी तिथिको सन्ध्याकालमें पल्ली—छिपकली गिरती है। इसका फल मृत्युकी सूचना या किसी आत्मीयकी मृत्यु-सूचना अथवा किसी मुकदमेकी पराजयकी सूचना समझनी चाहिए।

परिशिष्ट ४

गाथानुक्रमणिका

●